प्रकाशक

मुक्तवाणी प्रकाशन

प्रकाशक व विक्रेता

मॉडर्न मार्केट

बीकानेर–33 4001

★ लेखक श्री शंकर सहाय सक्सेना

★ संस्करण 1988–89

★ मूल्य 80 रुपये मात्र

मुद्रक

शिक्षा-भारती प्रेस

फड़ बाजार,

बीकानेर–334 001

निवेदन

१८५७ का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम असफल हो जाने के उपरात देश में मृत्यु जैसी निस्तब्धता और निष्क्रियता छा गई। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो समस्त राष्ट्र निश्चेष्ट और निर्जीव हो गया हो। क्रूर ब्रिटिश शासन के भयानक दमन देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने वालों के विरुद्ध क्रूरता को भी भयभीत कर देने वाली नृशंसता, तोपों के मुंह पर बांध कर उनके शरीरों की धज्जियां उड़ा देने का वीभत्स और क्रूर प्रदर्शन, पेड़ों से लटके हुए निरपराध व्यक्तियों के शव, सब मिला कर ब्रिटिश शासन की अमानवीय क्रूरता से समस्त देश आतंकित होकर सहम गया। यही कारण था कि देश जैसे निश्चेष्ट और निर्जीव हो गया हो ऐसा प्रतीत होता था। सम्पूर्ण देश में भय और आतंक छा गया था। जिस किसी पर तनिक भी सदेह हो गया कि उसकी सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी उन्हें बिना किसी जांच पड़ताल अथवा अभियोग के फांसी पर लटका दिया गया अथवा गोली मार दी गई।

१८५७ में जिन बलिदानी वीर देशभक्तों ने ब्रिटिश दासता के अपमान जनक जुए को अपने कंधों पर से उतार कर फेंक देने का प्रयत्न किया उनमें से अधिकांश या तो रणभूमि पर देश के स्वतन्त्रता संग्राम में वीर गति को प्राप्त हो गए, अथवा मानवता को लज्जित और कलंकित करने वाले अंग्रेजों के नृशंस अत्याचारों के शिकार होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी आहुति दे चुके थे। व कतिपय स्वतन्त्रता संग्राम के नेता जिनका देश में छिप कर रह सकना सम्भव नहीं था देश छोड़ कर नैपाल, अफगानिस्तान तथा अन्य पड़ोसी देशों में चले गए। परन्तु उनमें से कुछ देश में ही रह कर भूमिगत हो, संन्यासियों अथवा फकीरों का वेश धारण कर अनुकूल समय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अंग्रेजों के अमानवीय नृशंस अत्याचारों से जो भय और आतंक देश में फैल गया था उसके कारण बाह्य रूप से ऐसा अवश्य लगता था कि मानो देश निस्तेज और निष्क्रिय हो गया हो परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। भूमिगत क्रांतिकारी देशभक्त देश में पुनः क्रांतिकारी भावना को जाग्रत करने का प्रयत्न कर रहे थे। वे उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में थे।

उन भूमिगत क्रांतिकारियों, राष्ट्रीय संन्यासियों, और फकीरों के प्रयत्नों के फलस्वरूप देश में पुनः जागृति उत्पन्न होने लगी। भदेभक्त स्वाभिमानी भारतीयों को अपमान जनक और राष्ट्र का पद दलित करने वाली दासता अखरने लगी थी। वे देश पर विजातियों का शासन सहन नहीं कर सकते थे। पर चतुर अंग्रेजों ने देश को निशस्त्र कर दिया था बंदूक पिस्तौल आदि विस्फोटक शस्त्र ही नहीं तलवार कटार आदि पर भी कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया और एक ऐसा देशद्रोही वर्ग देश में उत्पन्न कर दिया था कि गौरांग प्रभुओं की चाटुकारिता में ही अपने जीवन का साफल्य मानता था। अंग्रेजों की सत्ता स्थापित होने के पूर्व देश में जो अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी उसके कारण एक वर्ग ऐसा भी उत्पन्न हो गया था कि जो अंग्रेजों के शासन का प्रशंसक बन गया था। भारत के परम्परागत राजवंश हतप्रभ और शक्तिहीन हो गए। वे अंग्रेजों की दया और मुकुट पर अवलम्बित रहने लगे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कोई संगठित अभियान करना असम्भव हो गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि सर्व साधारण

म स्वतंत्र होने की भावना सर्वथा लुप्त हो गई हो। शासन का ऐसा आतंक छाया हुआ था कि राष्ट्रीय विचारों के शिक्षित भारतीय जन एकांत में और छिप कर ही देश की दुर्दशा पर परस्पर बात करते थे। प्रकट में कोई भी राष्ट्रीय विचारों का व्यक्ति देशभक्ति की बातें करने का साहस नहीं करता था।

ऐसे निराशा और अंधकार के समय में क्रांतिकारी बलिदानियों ने स्वतंत्रता की भावना को जागृत करने, निर्जीव और निश्चेष्ट राष्ट्र में स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना को जगा कर एक बार पुनः उठ खड़े होने का संदेश दिया। गुप्त षडयंत्रों और सशस्त्र विद्रोहों के द्वारा देश को स्वतंत्र बनाने का अत्यंत जोखिम भरा प्रयत्न किया। देश में सशस्त्र क्रांति करने के इस खतरनाक प्रयास में लाखों क्रांतिकारी देशभक्त मारे गए, हजारों 'वंदे मातरम्' का जयघोष करते हुए फांसी के तख्ते पर चढ़ गए, लाखों को आजन्म देश से निर्वासित कर काले पानी (अंडमन तथा निकोबार) भेज दिया गया। बहुत अमानवीय क्रूर अत्याचारों के कारण या तो वे मर गए अथवा पागल हो गए।

यद्यपि सशस्त्र क्रांति करने के उनके प्रयत्न सफल नहीं हुए परंतु साधारण भारतीयों के हृदयों में जो अंग्रेजों का आतंक बैठ गया था, अंग्रेज अजेय हैं उनकी महान शक्ति को चुनौती नहीं दी जा सकती भारत को उनकी दासता में रहना ही होगा, देश पुनः कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता—ऐसी राष्ट्र में व्याप्त शौर्य हीन भावना और नैराश्य को उन्होंने अपने साहसी आत्म बलिदान से छिन्न भिन्न कर दिया।

जब क्रांतिकारी बलिदानी युवक दम्भी और अत्याचारी अंग्रेज अधिकारियों और देशद्रोही भारतीयों को गोली मारते, उन पर बम फेंकते और पकड़े जाने पर 'वंदे मातरम' का जयघोष करते हुए अपने प्राणों की मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आहुति देते तो जैसे निस्तेज शौर्यहीन भारत में शौर्य जाग उठता। सर्व साधारण के हृदय में गहरा बैठा हुआ मनोवैज्ञानिक अंग्रेजों का आतंक नष्ट हो जाता, स्वतंत्रता की चाह जनसाधारण में तीव्र हो उठती। एक क्रांतिकारी बलिदानी का बलिदान लाखों करोड़ों भारतीयों को झकझोर देता, देश को स्वतंत्र करने की भावना से अनुप्राणित कर देता, उनमें आशा का संचार करता और अंग्रेजों की अजेयता की गलत धारणा को चकनाचूर कर देता।

जब वीर क्रांतिकारी चापेकर बंधुओं ने अत्याचारी 'रैण्ड' की हत्या की, युवक कनाईलाल दत्त को फांसी हुई और लाखों भारतीयों ने उसके अंतिम संस्कार के समय शव के जुलूस में "जब जाने जीवन चोले" का गाकर लाखों अश्रुपूरित भारतीयों ने कलकत्ते को गुंजायमान कर दिया, जब वीर शहीद मदनलाल धींगरा ने लंदन में कर्नल वायली को गोली मार दी और केवल भारतीयों ने ही नहीं संसार के सभी परतंत्र देशों के देशभक्तों ने एक स्वर से कहा आत्म बलिदानी वीर धींगरा हम तुम्हें शतशत नमस्कार करते हैं, जब खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी के आत्म बलिदान से सम्पूर्ण भारत क्रोध से उन्मत्त हो उठा और खुदीराम की भस्मि को मंगलमय प्रभु के पावन प्रसाद की भांति लाखों भारतीयों ने सोने, चांदी, हाथीदांत और साधारण धातु की डिब्बियों में भर कर अर्चना और पूजा के लिए सुरक्षित रक्खा, वीर भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के आत्म बलिदान से समस्त देश जिस प्रकार रोष और शोक से सन्तप्त हो उठा तो लोगों ने देखा कि एक क्रांतिकारी के आत्म बलिदान से जैसी प्रबल क्रांतिकारी शक्ति उत्पन्न होती है, राष्ट्र के मानस पर जैसा चमत्कारी प्रभाव पड़ता है,

जन साधारण के अन्तर म देशभक्ति और स्वतन्त्रता का चाह जैसी गहरा होती है, वैसी शक्ति और भावना लाखो सभायें करने, भाषण देने और प्रस्ताव पारित करने से भी उत्पन्न नही हो सकती। यही कारण था कि भविष्य म सरकार जिन क्रांतिकारियो आत्म बलिदानियो और देशभक्तो को फासी दती थी उनके शवो को उनके सम्बन्धियो को नही देती थी। उनका जेल म अथवा गुप्त रूप से अतिम सस्कार करवा देती थी क्योंकि वह उनके शव के जुलूस और आत्म बलिदान का जन साधारण के मानस पर चमत्कारी प्रभाव को देख चुकी थी।

उदात्त भावनाओ से प्रेरित देशभक्त क्रातिकारियो के आत्म बलिदान से उत्पन्न होने वाली राष्ट्र व्यापी प्रेरक शक्ति के रहस्य को जो नही समझते वे अन्य व्यक्ति देश की स्वतन्त्रता के लिए देशभक्त क्रांतिकारी आत्म बलिदानियो द्वारा किए गए आत्म बलिदान की गरिमा और महत्व को भी नही समझ सकते। परन्तु प्रत्यक विचारवान विज्ञ भारतीय उन क्रांतिकारी आत्म बलिदानियो के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हुए बिना नही रह सकता जिनके साहसी क्रातिकारी कार्यों और आत्म बलिदान के परिणाम स्वरूप ही देश में मातृभूमि को स्वतन्त्र बनाने की भावना बलवती हो उठी थी, और जिसका राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने लोकशक्ति को उत्पन्न करने के लिए उपयोग किया था। यदि मातृभूमि की दासतान की शृखलाओ को काटने के लिए उन देशभक्त दीवानो ने अपने प्राणो की आहुति न दी होती तो महात्मा गाधी के नेतृत्व म जो राष्ट्र व्यापी लोक शक्ति उत्पन्न हुई वह नही होती।

वास्तविकता यह थी कि भारत की स्वतन्त्रता के सग्राम म क्रातिकारी आत्म बलिदानी 'हर वल अगली पक्ति मे थे और असहयोग आदोलन म जेल जाने वाले और लाठी खाने वाले पिछली पक्ति म थे। भारतीय स्वतन्त्रता के उस युद्ध म दुर्भाग्यवश उन दो राष्ट्रीय विचार धाराओ का मिलन नही हो सकता। प्रात स्मरणीय नेताजी सुभाषचन्द्र क्रांतिकारी बलिदानी राष्ट्रीय विचारधारा का चरम सफलता के प्रतीक थे। उन्होने प्रयत्न किया कि भारत को स्वतन्त्र बनाने के लिए द्वितीय महायुद्ध के समय जो दैवी प्रदत्त अनुकूल और सुविधाजनक अवसर आया था उसका उपयोग कर बृटेन को भारत से बलपूर्वक खदेड दिया जावे। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के ज्ञाता प्रात स्मरणीय नेता जी का कहना था कि द्वितीय विश्व युद्ध म ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियो का उदय हो गया है कि यदि मित्र राष्ट्रो की उस युद्ध म विजय भी हो जावे। (उस समय मित्र राष्ट्रो की स्थिति अत्यन्त निर्बल थी) तो भी बृटिश साम्राज्य का विघटन होना अवश्यम्भावी है। भारत अवश्य स्वतन्त्र होगा कोई शक्ति भारत को स्वतन्त्र होने से नहीं रोक सकती। परन्तु यदि अग्रेजो को बलपूर्वक भारत से खदेड दिया गया तो भारत अविभाजित स्वतन्त्र होगा परन्तु यदि अग्रेजो से समझौता करके और बातचीत करके देश स्वतन्त्र हुआ तो देश विभाजित होकर स्वतन्त्र होगा। पर देश के अविभाजित स्वतन्त्र होने के लिए दोनो ही राष्ट्रीय विचार धाराओ का मिलन होना आवश्यक था। दुर्भाग्यवश वे नही मिल सकी और उसका मूल्य भारत को विभाजित और खडित होकर चुकाना पडा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरात प्रत्येक विचारवान देशभक्त भारतीय ने आश्चर्य और क्षोभ के साथ अनुभव किया कि भारत को स्वतन्त्र बनाने म उन पागल देशभक्त बलिदानी क्रांतिकारियो का जो अत्यन्त गौरवपूर्ण हिस्सा रहा है उसकी उपेक्षा की जा

रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास लेखकों ने उनकी उपेक्षा की, देश ने उनकी प्रेरणादायक स्मृति को चिर स्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। कृतघ्नता की पराकाष्ठा हो गई जब वीर आत्म बलिदानी क्रांतिकारियों को भुला देने का प्रयत्न किया जाने लगा। आज की पीढ़ी यह भी नहीं जानती कि भारत की स्वतंत्रता के लिए लाखों बलिदानी क्रांतिकारियों ने हंसते हंसते अपने प्राणों की आहुति दी थी। जिन्होंने मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए यह शपथ ली थी कि उनका जीवन केवल मातृभूमि को स्वतंत्र करने के कार्य में ही लगेगा। उन्होंने अपना व्यक्तिगत सुख, परिवार, प्रियजनों को छोड़ दिया और जो 'करो सब निछावर बनो तुम फकीर" मंत्र का जाप करते हुए, बलिदान यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए कूद पड़े थे। जिनके रुधिर और हड्डियों से, मातृभूमि की स्वतंत्रता का यह भवन खड़ा हुआ है—उनको हम भारतीयों ने भुला दिया। हमारे इस अशोभनीय आचरण पर स्वयं कृतघ्नता लज्जित हुई होगी।

उन देशभक्त क्रांतिकारियों द्वारा अपना सर हथेली पर रख कर, मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की परम्परा से आत्म विभोर हो कर कवि की वाणी से फूट पड़ा।

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

तो सम्भवतः वह भूल गया कि स्वतंत्रता के उपरांत देश उन हुतात्माओं को सर्वथा भूल जावेगा। कवि, लेखक साहित्यकार तथा इतिहास की लेखनी उनकी यशो-गाथा लिखने और कीर्ति रक्षा के लिए नहीं उठेगी वह तो ऊपर लिखी पंक्तियों को क्रांतिकारी बलिदानियों की ऊंची त्यागी भावना को गुन कर लिखने के लिए प्रेरित हुआ था।

"सर फरोशी की तमन्ना आज मेरे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"

राजस्थान के महान क्रांतिकारी स्वर्गीय विजय सिंह पथिक ने देश वासियों को क्रांतिकारियों के प्रति अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दिलाते हुए "भूल न जाना" शीर्षक कविता में लिखा था।

"न भूल जाना खुशी के दिन,
तुम वतन परस्ता के वे फिसाने।
कि जिनके बदले हुए मुयस्सर है,
ये जशन, महफिल और तराने।
लेटो पलंग पर तब याद करना,
उन नौजवानों की जाबाजी।
जिन्होंने फांसी के तख्त पर ही,
थे नींद लेने को पैर ताने। इत्यादि।

उन्हें क्या पता था कि स्वतंत्र हो जाने पर भारत, अपने उन शहीदों की प्रेरणादायक जीवनी को भुला देगा। स्वतंत्रता के उपरांत राष्ट्रीयता और गहन देश-भक्ति की भावना क्षीण हो गई। गहन राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना को देश में बलवती बनाने का हमने कोई प्रयत्न नहीं किया। देश यह भूल गया कि जितना त्याग, तपस्या और बलिदान देश को स्वतंत्र बनाने के लिए आवश्यक था उससे दस गुना

अधिक त्याग, तपस्या और बलिदान की आवश्यकता देश का निर्माण करने उसको समृद्धि शाली और शक्तिशाली बनाने के लिए अपर्याप्त है। देश सर्वोपरि है—जाति धर्म, सम्प्रदाय, प्रदेश, वर्ग, भाषा, लिंग के भेद देश भक्ति का स्थान नहीं ले सकते। देश वासियो को आज भी क्रांतिकारियो का यह प्रेरणादायक मंत्र सदैव याद रखने की आवश्यकता है। देश के लिए—"करो सब निछावर बनो तुम फकीर"

देश की स्वतंत्रता के लिए जिन देशभक्तो ने अपना सर्वस्व माता के चरणों में अर्पित कर दिया उनके इस मंत्र को भूल जाने का परिणाम आज हमारे सामने प्रत्यक्ष है। सत्ता के लिए देश में अशोभनीय प्रतिस्पर्धा, आया राम गया राम का लज्जाजनक आचरण, प्रदेशवाद, वर्ग विद्वेष, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद का ताण्डव नृत्य देश में सर्वत्र देखने को मिल सकता है। भ्रष्टाचार चरम सीमा को पहुच गया है और जनतंत्र को खतरा उत्पन्न हो गया है। यही नहीं देश की स्वतंत्रता और एकता के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। अतएव आज देश में पुन गहन देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को उत्पन्न करने की आवश्यकता है। इसके लिए हम नई पीढ़ी को, देश की तरुणाई को उन देशभक्त बलिदानियो के प्रेरणादायक जीवन की गाथा सुनाना होगी जिनके रुधिर और हड्डियो पर स्वतंत्रता का यह भव्य भवन खड़ा हुआ है।

देश की नई पीढ़ी उन बलिदानियो के प्रेरणादायक जीवन से यह प्रेरणा ले सके कि जननी जन्म भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है हम उसके लिए जियेंगे और उसके लिए मरेंगे, इसी उद्देश्य को लेकर लेखक ने कतिपय क्रांतिकारी बलिदानियो की जीवनियां लिखने का प्रयास किया है।

आज प्रकाशको के लिए सत्ता धारियो का यशगान करने वाली कृतियां प्रकाशित करना अधिक लाभदायक है अस्तु मैं इस पुस्तक के प्रकाशक को साधुवाद देना नही भूल सकता जिन्होने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का साहस किया है। यदि हिन्दी संसार ने इस पुस्तक का स्वागत किया तो लेखक "जिन्हें देश भूल गया" माला में अन्य क्रांतिकारियो की जीवन गाथा लेकर उपस्थित होगा।

—शंकर सहाय सक्सेना

राजस्थान

सरकार

मुख्यमन्त्री, राजस्थान
जयपुर
CHIEF MINISTER OF RAJASTHAN
JAIPUR

क्र 4943/CMOG/82 Date 27-12 82

भूमिका

प्रो० शकर सहाय सक्सेना राजस्थान के जाने-माने शिक्षा शास्त्रियो म से हैं। लम्बे समय तक महाराणा भूपाल कालेज, उदयपुर के आचाय रहने के उपरान्त वे राजस्थान के कालेज शिक्षा निदेशक के रूप मे राजस्थान की सेवा करते रहे। कालेज शिक्षा निदेशक पद से अवकाश प्राप्त करने के उपरान्त उन्होने वनस्थली विद्यापीठ महाविद्यालय के आचाय तथा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के राजस्थान कालेज के निदेशक पद पर काय किया। शिक्षा के क्षेत्र मे काय करते समय उन्होने राजस्थान के युवको तथा विद्यार्थियों म अनुशासन तथा देश प्रेम की भावना जागृत करने का प्रयास किया। शिक्षा के क्षेत्र मे अवकाश प्राप्त करने के उपरान्त वे अपनी सशक्त लेखनी से उन देशभक्त क्रान्तिकारियो तथा देश सेवको की प्रेरणादायक जीवनियो को लिखकर जिनके त्याग और बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतन्त्र हुआ देशवासियो मे देश के लिए और बलिदान करने तथा देश सेवा की भावना को जागृत करने का काय कर रहे हैं।

उन्होने राजस्थान की जागृति के अग्रदूत महान् क्रान्तिकारी श्री विजयसिंह पथिक तथा उनके निकट सहयोगी और देश के लिए अपना जीवन अपण करने वाले तथा राजस्थान म उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए सतत् सघष करने वाले श्री माणिक्यलाल वर्मा की जीवनी लिखी। भारतवष म सबसे पहिले किसान सत्याग्रह मेवाड के बिजोलियाँ ठिकाने म श्री पथिक तथा श्री माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व म हुआ उसका इतिहास (बिजोलियाँ किसान आन्दोलन का इतिहास) लिख कर श्री सक्सेना ने आने वाली पीढियो को राजस्थानी स्वातत्र्य सग्राम के इस स्वर्णिम तथा प्रेरणादायी अध्याय की जानकारी देकर प्रेरित किया है।

उन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (एक भारतीय तीर्थयात्री) की जीवनी तथा "बलिदानों की प्रशस्ति या शहीद पुराण" लिखकर उन देशभक्त क्रान्तिकारियों की प्रेरणा दायक जीवन गाथा हमें सुनाई है जिन्होंने मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए अपना बलिदान दिया था।

प्रस्तुत पुस्तक "देश जिन्हें भूल गया" उसी शृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें आजादी की लड़ाई के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि की बलि वेदी पर अर्पित करने वाले क्रान्तिकारी वीरों की जीवनियां हैं।

इस पुस्तक में मैडम कामा, श्यामजी कृष्ण वर्मा मदनलाल धींगरा लाला हरदयाल, रासबिहारी बोस, ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी, सरदारसिंह रावा राणा, केसरीसिंह बारहट, जोरावरसिंह बारहट प्रतापसिंह बारहट, राव गोपालसिंह खरवा, जब लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया और सूफी अम्बा प्रसाद शीर्षक अध्यायों में लेखक ने खोजपूर्ण तथ्यों पर आधारित अपनी ओजस्वी भाषा में उन क्रान्तिकारी देश भक्तों की प्रेरणादायक जीवनियां लिखी हैं। इनमें केसरीसिंह बारहट, जोरावरसिंह बारहट प्रतापसिंह बारहट तथा राव गोपालसिंह खरवा राजस्थान के हैं। "लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका" यह अभी तक विवादग्रस्त है। उस पर लेखक ने एक नवीन दृष्टिकोण से खोजपूर्ण तथ्यों पर आधारित विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है।

पुस्तक सरल और हृदय को स्पर्श करने वाली मर्मस्पर्शी भाषा में लिखी गई है। वह इतनी अधिक रोचक तथा प्रेरणादायक है कि एक बार उसको पढ़ना आरम्भ करने के उपरान्त अन्त तक पढ़ने की इच्छा बलवती हो उठती है और पाठक का हृदय देश प्रेम की गहन भावना से अनुप्राणित हो उठता है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक हिन्दी जगत में सर्वप्रिय होगी और प्रत्येक पुस्तकालय में अपना सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी। शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालयों में तो इस पुस्तक का विशेष रूप से उपयोग इसलिये भी आवश्यक है कि इस प्रकार के साहित्य के पठन से नई पीढ़ी के तरुण छात्र छात्राओं में इन प्रेरणादायक जीवनियों को पढ़कर मातृभूमि की सेवा करने राष्ट्रहित पर सर्वस्व उत्सर्ग करने की और देशभक्ति की उदार भावना उनमें पैदा हो।

लेखक तथा प्रकाशक ऐसी प्रेरणादायक पुस्तक प्रकाशित करने के लिए बधाई के पात्र हैं।

प्रेषिति
श्री अरुण सकसेना
मुक्तवाणी प्रकाशन
माडर्न मार्केट बीकानेर
(राज)

शिवचरण माथुर

अध्याय 1
मैडम कामा

भारत की स्वतन्त्रता के लिए जिन लाखों स्त्री पुरुषों ने अपने जीवन को मातृभूमि की बलवेदी पर अर्पण कर दिया उनमें श्रीमती के आर कामा का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जावेगा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में और विशेषकर इङ्गलैंड, जरमनी और फ्रांस में जो क्रान्तिकारी संगठन बने, वहां भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति का आन्दोलन हुआ उसको तेजवान बनाने में मैडम कामा का बहुत बड़ा हाथ था। भारत में जो क्रान्तिकारी संगठन देश व्यापी विप्लव करने की योजना बना रहे थे उन्हें अस्त्र शस्त्रों की सहायता पहुंचाना विदेशी सरकारों की भारतीय स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन के लिए सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करना और विदेशों में भारतीय क्रान्तिकारियों को संगठित करने का जो खतरनाक काम उठाने किया वह भुलाया नहीं जा सकता। वास्तव में वे योरोप में भारतीय क्रान्तिकारियों की संरक्षक और प्रेरणा श्रोत थीं। उनके प्रेरणास्पद जीवन से प्रेरणा पाकर अनेक भारतीय युवकों ने मातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने का व्रत लिया था। श्रीमती कामा ने तो अपना समस्त जीवन ही देश के लिए अर्पित कर दिया था, उनका अपना जीवन जैसे कुछ था ही नहीं। वे अपने जीवन काल में वस्तुतः प्रति क्षण केवल भारत की आजादी के लिए जीवित रहीं। उनके हृदय में देश प्रेम का जो अविरल श्रोत बहता था उससे हजारों भारतीय युवकों को प्रेरणा और देश भक्ति की दीक्षा मिली थी। जो भी उनके सपर्क में आता उसको वे मातृभूमि के उस बलिदान यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए तैयार करती थी। उनके व्यक्तित्व में ऐसा अद्भुत तेज और आकर्षण था कि कोई भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि श्रीमती कामा ने एक अत्यन्त धनी और समृद्धिशाली परिवार में जन्म लिया था। उनके पति एक प्रसिद्ध सालिसिटर थे और उनके ससुर एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे परन्तु वे स्वयं उग्र क्रान्तिकारी विचारों की थी। उन जैसी महिला ने उस वैभव पूर्ण ऐश्वर्यशाली पारिवारिक जीवन को तिलांजलि देकर कटकाकीर्ण क्रान्तिकारी जीवन को अपनाया यह एक वास्तव में एक अनहोनी बात थी। परन्तु उनके हृदय में जो मातृभूमि को स्वतन्त्र करने की अमिट प्यास थी। उसने उन्हें उस ऐश्वर्यशाली जीवन और अपने परिवार को छोड़कर विदेश में भारत की स्वतन्त्रता के लिये काम करने की ओर आकर्षित किया था।

अत्यन्त खेद और लज्जा की बात है कि उस वीर क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता की देवी को देश भूल गया। हम भारतीयों की कृतघ्नता का इससे अधिक लज्जाजनक प्रमाण क्या हो सकता है कि स्वतन्त्रता की उस महान देवी का आज तक कोई जीवन चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ, कोई स्मारक नहीं बना। जिसने तिल तिल करके अपना समस्त जीवन देश के लिए अर्पित कर दिया उसके सम्बन्ध में देश में इतना घोर अज्ञान है कि भारत के एक विश्वविद्यालय के विद्वान अध्यापक ने अपनी पी एच डी उपाधि के शोधग्रंथ में उनके सम्बन्ध में लिखा कि वे फ्रैंच महिला थीं*

मैडम कामा का जन्म २० सितंबर १८६१ को बंबई के एक अत्यन्त धनी और समृद्धिशाली पारसी परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री सोराबजी फ्रामजी पटेल

---

*Indian Revolutionary Movement in the United States of America - by Dr L P, Mathur Page 31 Line - 6

बंबई के प्रसिद्ध व्यापारी थे और उन्होंने अपनी पुत्री का लालन-पालन अत्यंत स्नेह और वात्सल्य प्रेम से वैभव और ऐश्वर्य के बीच किया था। उनकी शिक्षा बंबई के अलकजेंडरा पारसी स्कूल में हुई थी। शिक्षा समाप्त होने पर उनका विवाह श्री रुस्तम कामा के साथ हुआ। श्री रुस्तम कामा राष्ट्रीय विचारों के उच्च शिक्षा प्राप्त युवक थे। उन्होंने १९१५ से १९२८ तक बाम्बे क्रानिकल दैनिक पत्र निकाला था।

मैडम कामा में आरंभ से ही देश भक्ति की उत्कृष्ट भावना उत्पन्न हो गई थी। मातृभूमि की दासता उन्हें बहुत अखरती थी। वे सशस्त्र क्रांति के द्वारा मातृभूमि को विदेशियों की दासता से मुक्त करने का स्वप्न देखती थी। यही कारण था कि एक समृद्धिशाली परिवार में जन्म लेने और सुधारवादी पतिगृह की गृहणी बनने पर भी उनकी क्रांतिकारी भावना कुंठित नहीं हुई और वे नवनिर्मित क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारत समिति' की सदस्या और कार्यकर्त्ता बन गईं। वे क्रांतिकारी साहित्य को तरुणों में छिप छिप बांटती और उन्हें अभिनव भारत समिति' के क्रान्तिकारी उद्देश्य से अवगत कराकर स्वतन्त्रता के उस यज्ञ में सम्मिलित करती। यह उनके प्रयत्नों का ही परिणाम था कि 'अभिनव भारत समिति' एक अत्यन्त प्रभावशाली क्रांतिकारी संगठन बन गया और महाराष्ट्र के तरुण उसकी ओर आकर्षित हुए।

सन १९०१ में वे रोग ग्रस्त हो गई। बहुत चिकित्सा हुई किन्तु रोग उग्र होता गया। चिकित्सकों ने उन्हें इङ्गलैंड जाकर चिकित्सा कराने का परामर्श दिया। स्वास्थ्य लाभ और चिकित्सा के लिए वे १९०१ में इङ्गलैंड गईं। कुछ विद्वानों का मत है कि चिकित्सकों का इङ्गलैंड जाकर चिकित्सा कराने तथा स्वास्थ्य लाभ करने का परामर्श एक बहाना था कि जिससे वे अपने क्रांतिकारी कार्य को आगे बढ़ा सकें, और भारत से बाहर रहकर भारत सरकार की पहुंच के बाहर हो जावें। इङ्गलैंड जाकर उन्होंने अपने राजनीतिक तथा क्रांतिकारी कार्यों की गति को तीव्र कर दिया। वे अपने स्वास्थ्य की चिंता न कर वहां भी क्रांतिकारी कार्यों में जुट गईं।

वे बहुधा लंदन के हायड पार्क में जहां बहुत बड़ी संख्या में लंदनवासी प्रतिदिन एकत्रित होते थे भारत की राजनीति के सम्बंध में भाषण देती और ब्रिटेन की जनता को बतलाती कि ब्रिटेन जिस प्रकार तलवार और संगीनों के बल पर भारत पर शासन कर रहा है और भारत में स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन करने वाले देश भक्तों का जैसी क्रूरता और कठोरता से दमन किया जा रहा है यदि वह बन्द न हुआ और अंग्रेजों ने भारतवासियों की भावनाओं का आदर कर भारत पर से अपना पंजा हटा न लिया तो भारत में १८५७ की भांति पुनः विप्लव होगा क्रांति फूट पड़ेगी उसका उत्तरदायित्व ब्रिटिश शासकों का होगा। वे इङ्गलैंड में केवल भाषण देकर ही नहीं पत्रों में लिखकर भारत के पक्ष में धुआंधार प्रचार करती रही। शीघ्र ही वे योरोप के भ्रमण के लिए निकलीं। योरोप में भ्रमण करने का उनका एकमात्र उद्देश्य योरोप के राजनीतिज्ञों से सम्पर्क स्थापित कर भारत के क्रांतिकारियों के लिए अस्त्र शस्त्र प्राप्त करना और उनका भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्थन प्राप्त करना था। वे एक वर्ष जरमनी में, एक वर्ष स्काटलैंड और एक वर्ष पेरिस में रहीं और १९०६ में लंदन आकर स्थायी रूप से भारतीय क्रांतिकारी दल का कार्य करने लगी।

उस समय तक विदेशों में भारतीय क्रांतिकारियों के अग्रदूत श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में प्रचार करने के लिए अपना प्रसिद्ध

पत्र "इंडियन सोश्योलाजिस्ट प्रकाशित कर दिया था और भारतीय युवकों में जो बृटेन में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे उनमें क्रांतिकारी भावना उत्पन्न कर उनको देश की स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने की दीक्षा देने के लिए इंडिया हाऊस की स्थापना कर दी थी। यहां मैडम कामा का श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, वीरेन चट्टोपाध्याय, तथा मुकुन्द देसाई आदि प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों से परिचय हुआ। वे भी उन क्रांतिकारियों के साथ मिलकर कार्य करने लगीं। परन्तु बृटिश सरकार को श्याम जी कृष्ण वर्मा की क्रांतिकारी गतिविधियों का अपने गुप्तचरों से परिचय मिल गया था। लंदन में रहना सुरक्षित न समझकर श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा लंदन छोड़कर पेरिस चले गए और मैडम कामा ने लंदन के क्रांतिकारी दल का कार्य सम्भाल लिया। वे लंदन की 'अभिनव भारत समिति' का कार्य उसके उत्साही मंत्री श्री ज्ञानचन्द्र वर्मा के सहयोग से बहुत उत्साहपूर्वक करने लगीं। यह उन्हीं के अथक परिश्रम और प्रेरणा का परिणाम था कि भारतीय युवक बहुत बड़ी संख्या में क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गए। श्रीमती कामा निरंतर भारतीय क्रांति के लिए कार्य करती रहतीं। अपने शरीर की ओर तनिक भी ध्यान न देकर व निरंतर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति से कार्य करती रहीं। वे सभाओं के द्वारा लेखनी के द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता के पक्ष में विदेशों में प्रचार करती थीं। अमरिका में भारत की स्वतन्त्रता के के लिए समर्थन के लिए तथा अमरिकनों को भारत में अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले शोषण और अत्याचार से अवगत कराने के लिए वे संयुक्त राज्य अमरिका गईं और न्यूयार्क तथा अन्य नगरों में भाषणों तथा लेखों के द्वारा भारत के पक्ष में प्रचार किया। अमेरिका में उन्होंने भारतीय क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें संगठित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

उसी समय २२ अगस्त, १९०७ को जरमनी के स्टटगार्ट नगर में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया गया। भारतीय क्रांतिकारियों ने मैडम कामा को उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधि चुन कर भेजा। उस अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में योरोप के सभी प्रमुख समाजवादी नेता उपस्थित थे। योरोप के मुख्य समाजवादी नेता हायडमैन, रैम्जे मैक्डानल्ड, स्वीगर (जरमनी) भी उपस्थित थे।

जब मैडम कामा स्टटगार्ट के उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंची तो बृटिश समाजवादी प्रतिनिधि श्री रैमजे मैक्डानल्ड ने उनके बोलने पर आपत्ति की किंतु इङ्गलैंड के श्री हाइडमैन तथा फ्रांस के श्री जीन जास के समर्थन करने पर अध्यक्ष ने उनको बोलने की आज्ञा दे दी। उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि अपने-अपने राष्ट्रीय ध्वज को फहरा रहे थे। भारत का कोई राष्ट्र ध्वज नहीं था जब भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में बृटेन का यूनियन जैक फहराया जाने वाला था तो मैडम कामा ने उसका घोर विरोध किया और उन्होंने भारत के उस प्रथम राष्ट्रीय ध्वज को फहराया जिसको उन्होंने तैयार किया था और अपने साथ ले गई थी। उन्होंने उस तिरंगे झंडे को फहरा कर समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए कहा "यह भारतीय स्वतन्त्रता की ध्वजा है। साथियो देखिए अब इसका आविर्भाव हुआ है। भारतीय युवकों के बलिदानों से यह पुनीत हो चुका है। सज्जनो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप खड़े होकर भारतीय स्वतन्त्रता के इस ध्वज का अभिवादन करें।

मैं इस पवित्र ध्वज के नाम पर ससार के समस्त स्वतत्रता प्रेमी व्यक्तियो से अनुरोध करती हू कि वे उस ध्वज से सहयोग कर समस्त मानव जाति के पाचवें भाग को दासता से मुक्त कराने म सहायता दें।

जब वे उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के मच पर बोलने के लिए खडी हुई तो उन्होंने इस आशय का प्रस्ताव रखा कि वह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन घोषणा करे कि बृटेन का शासन भारत पर जारी रहना भारत के हिता के लिए अत्यन्त हानिकारक और निश्चित रूप से खतरनाक है और विश्व के सभी स्वतत्रता प्रेमी उस अत्याचार से पीडित देश को जिसमे मानव जाति का पाचवा भाग निवास करता है दासता से मुक्त कराने मे उसकी सहायता करे। बृटिश प्रतिनिधिया ने उस प्रस्ताव का सम्मेलन के द्वारा इस आधार पर स्वीकार करने का विरोध किया कि वह अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो को सम्मेलन मे रखने से पहले नही दिया गया था।

अपना प्रस्ताव रखकर मैंडम कामा ने भारत के लिए पूर्ण स्वतत्रता की माग की। यहा यह उल्लेखनीय है कि मैंडम कामा ने भारत के लिए डोमीनियन स्टेटस, स्वायत्त शासन अथवा अन्य प्रकार के शासनाधिकारी की माग न कर भारत के राजनीतिक इतिहास मे प्रथम बार पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वतत्रता की माग की थी। हाईडमैन ने मैंडम कामा की पूर्ण स्वतत्रता की माग का समर्थन किया किन्तु रैम्जे मकडानल्ड ने उसका विरोध किया। मैंडम कामा की माग का बहुमत ने समर्थन किया और उनका प्रस्ताव स्वीकार हो गया।

वह दिन भारत के लिए स्वर्णिम दिवस था जब उस वीर महिला ने भारत का प्रथम बार एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे राष्ट्रीय ध्वज फहराया था और भारत के लिए प्रथम बार पूर्ण स्वतत्रता का दावा किया था। रैमजे मैंकडानल्ड के विरोध करने पर भी जब सम्मेलन के अध्यक्ष ने मैंडम कामा को बोलने की अनुमति दे दी और जब मैडम कामा उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे बोली तो मानो उनकी आत्मा और वाणी एकाकार हो गई। अत्यन्त भावावेश मे उन्होने भारत ब्रिटिश शासन के अत्याचारो और ब्रिटिश पू जीपतियो के शोषण की ममस्पर्शी कथा सुनाई। उन्होने अपने ओजस्वी भाषण मे उस अन्तर्राष्टीय सम्मलन को कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन भारत में दमन के द्वारा उसका भीषण शोषण कर रहा है बतलाया और अन्त मे जब उन्होने भारत के उस राष्ट्रीयध्वज को फहरा कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रतिनिधिया का उसे अभिवादन करने का आह्वान किया तो सभी प्रतिनिधि उठ खडे हुए और उन्होने खड होकर स्वतत्रत भारत के उस राष्ट्रीयध्वज को सलामी दी। मडम कामा के ओजस्वी भाषण ने उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को जैसे मोहित कर लिया। लम्बे समय तक सभी प्रतिनिधि करतल ध्वनि करते रहे। उन्होने मैंडम कामा के उस ऐतिहासिक भाषण की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए कहा "इस भारतीय राजकुमारी ने हम जिस प्रकार उद्बोधित किया है हम उसे कभी भूल नही सकते" वास्तव मे मडम कामा ने उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन म अपने उस ओजस्वी भाषण द्वारा भारत की स्वतत्रता के प्रश्न को अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बना दिया था। यह मैंडम कामा के प्रयत्नो का ही परिणाम था कि जरमनी के सम्राट विलियम कैंसर ने प्रैसीडट विलसन को अपनेप्रसिद्ध पत्र म, जो उन्होने प्रसाडट विलसन के पत्र के उत्तर म भारत की स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए लिखा था "भारत की पूर्ण स्वतत्रता विश्व शान्ति की एक अनिवार्य बात है।"

स्टटगाट में उस अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन के अध्यक्ष हरसिंगर ने मैडम कामा के उस दैवीप्रेरणायुक्त भाषण के उपरान्त उठकर घोषणा की कि अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो और यह अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस मैडम के प्रस्ताव की भावना को स्वीकार करती है और उसका समर्थन करती है।

मैडम कामा ने उस अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में स्वतन्त्र भारत की जिस राष्ट्रीय ध्वज को फहराया था उसमें तीन रंग थे हरा, पीला, और लाल तथा बीच की पट्टी में "वन्दे मातरम्" शब्द नागरी अक्षरों में अंकित था। पहली पट्टी में तारे अंकित थे और नीचे की पट्टी में एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चन्द्रमा बना हुआ था। मैडम कामा पहली भारतीय थी जिन्होंने विदेश में स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज को एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में फहराया था।

स्टटगाट की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित होने के उपरान्त मैडम कामा जरमनी से संयुक्त राज्य अमरिका गई। संयुक्त राज्य अमेरिका जाने का एकमात्र उनका उद्देश्य यह था कि वे संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे महान जनतन्त्र की सहानुभूति भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन के लिए प्राप्त करें। उनकी मान्यता थी कि विदेशों में और विशेषकर योरोप तथा संयुक्त राज्य अमरिका में यदि भारत की स्वतन्त्रता के लिए सहानुभूति उत्पन्न हो जाय और भारत की स्वतन्त्रता के आन्दोलन को महत्वपूर्ण राष्ट्रों का नैतिक समर्थन मिल जाय तो भारत की स्वतन्त्रता का आन्दोलन और अधिक प्रभावशाली और तेजवान बनेगा और अंग्रेजी साम्राज्यवाद का भारत पर पंजा उतना ही निर्बल होगा। अतएव वे संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे महान गणतन्त्र की भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अमेरिका पहुंचीं।

२८ अक्टोबर १९०७ को मैडम कामा ने प्रसिद्ध 'मिनर्वा क्लब' के सदस्यों के सामने 'वल्डोफ अस्टोरिया होटल' न्यूयार्क में भारत के सम्बन्ध में भाषण दिया। श्रोता मैडम कामा की ओजस्वी वाणी सुनकर चकित और मन्त्रमुग्ध हो गए। एक श्रोता ने पूछा कि आपका लक्ष्य क्या है? मैडम कामा ने दृढ़ता और स्पष्ट वादिता से उत्तर दिया "मैं भारत के लिए स्वतन्त्रता, पूर्ण स्वराज्य और स्वशासन की मांग करती हूं।' मैडम कामा के उस भाषण का उपस्थित श्रोताओं पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्हें अनेक संस्थाओं से निमन्त्रण मिलने लगे और संयुक्त राज्य अमेरिका में उनके भाषणों की धूम मच गई। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न नगरों में घूम-घूम कर भारत की स्वतन्त्रता के लिए संयुक्त राज्य अमरिका में भारत के पक्ष में प्रचार करने लगी। उनके प्रचार का परिणाम यह हुआ कि संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत की स्वतन्त्रता के लिए गहरी सहानुभूति उत्पन्न हो गई।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भ्रमण कर नवम्बर १९०८ में वे पुनः लंदन वापस लौटीं और पुनः क्रांतिकारी कार्य में जुट गई। उन्होंने इण्डिया हाऊस में एक बहुत बड़ी सभा में भाषण दिया और उस सभा में उन्होंने दृढ़ता और साहस के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन और राष्ट्र की मुक्ति संघर्ष में हिंसा के औचित्य का समर्थन किया। उस भाषण में उन्होंने कहा था —

"—हम स्वतन्त्रता के संघर्ष में हिंसा के उपयोग के लिए खेद प्रगट क्यों करें जबकि हमारा शत्रु ब्रिटेन हमें ऐसा करने के लिए विवश कर देता है। हम तभी बल और हिंसा का प्रयोग करते हैं जबकि हमें हिंसा का उपयोग करने पर विवश कर दिया

जाता है। स्वतत्रता के सघष म असाधारण उपायो को काम मे लाना आवश्यक है।"
इडिया हाऊस का मैडम कामा का भाषण एक ऐतिहासिक भाषण था। सम्पूण वृटेन मे उनकी चर्चा हुई उस भाषण की लाखो की सख्या मे प्रतिया छपवाकर क्रातिकारियों ने भारत तथा विदेशो मे उसे बाटा। मडम कामा का वह भाषण भारतीय क्रातिकारियों का घोषणा पत्र बन गया।

मैडम कामा ने अपना समस्त जीवन मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अर्पित कर दिया था। वे भारत की स्वतत्रता के लिए विदेशो म प्रचार करती। इङ्गलड तथा अन्य योरोपीय देशो मे जो भारतीय युवक शिक्षा प्राप्ति के लिए आते उन्हें भारतीय स्वतत्रता क यज्ञ म अपनी आहुति दने के लिए प्रेरित करती और आजन्म देश सेवा के व्रत की दीक्षा दती। व भारतीय क्रातिकारियो के लिए विदेशा स अस्त्र शस्त्र भिजवाती तथा गुप्त रूप से क्रातिकारी साहित्य भारत मे भिजवाती। भारतीय क्रातिकारियो से उनका बराबर सम्पक बना हुआ था व विदेश म रहकर भी उनका माग दशन करती थी।

ब्रिटिश सरकार उन्ह अब खतरनाक क्रातिकारी के रूप म देखन लगी थी। उनके पीछे प्रत्येक क्षण अग्रेज गुप्तचर लगा रहता था। जहा वे रहती वहा भी स्काटलैंडयाड के गुप्तचर कडी निगाह रखने। मैडम कामा के लिए अब इङ्गलड म रहकर क्रातिकारी काय कर सकना सम्भव नही रहा। अतएव उन्होन इङ्गलड छोडकर फ्रास से भारतीय स्वतत्रता के काय को आगे बढान का निश्चय किया। व लदन से पेरिस चली गइ और वही स्थायी रूप से रहकर भारतीय स्वतत्रता के आदोलन का काय करने लगी।

उसी समय 'स्वराज्य' के सम्पादक विपिनचन्द्र पाल को क्रातिकारी लेख लिखने के कारण सजा हो गई और स्वराज्य बद हो गया तो मैडम कामा को विदेशो म भारत की स्वतनत के लिए प्रचार काय करन के लिए एक पत्र की आवश्यकता का अनुभव हुआ और उन्होन १६०६ म पेरिस से वन्देमातरम पत्र निकालना आरम्भ किया। सौभाग्यवश मडम कामा को लाला हरदयाल जैसे मधावी प्रकाण्ड पडित और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न क्रातिकारी पत्र के लिए सम्पादक के रूप मे मिल गए। 'वन्देमातरम' पत्र को भारतीय तथा भारत से सहानुभूति रखन वाले व्यक्ति स्वेच्छादान देकर उसके प्रकाशन के व्यय को पूरा करते थे क्योकि वन्दमातरम का कोई वार्षिक चन्दा नही लिया जाता था। वन्देमातरम् के द्वारा मैडम कामा क्रातिकारी विचारधारा का भारतीयो मे प्रचार करने लगी। लाला हरदयाल तथा मैडम कामा वन्देमातरम के द्वारा भारत तथा विदेशो मे क्राति की अग्नि प्रज्ज्वलित करन लगे। पत्र योरोप मे तो सवत्र पहुचता ही था भ रत मे भी छिपाकर बहुत बडी सख्या मे भेजा जाता था। देखते दखते 'वन्देमातरम्' भारतीय स्वतत्रता का अत्यन्त प्रभावशाली सदेशवाहक बन गया।

वन्देमातरम क मुखपृष्ठ पर दो चित्र रहते थ—एक भारत के राष्ट्रीय ध्वज का जिसे मडम कामा ने स्टटगाट (जरमनी) की अतर्राष्ट्रीय समाजवादी काग्रेस के अधिवेशन म फहराया था और दूसरा भारत माता का जो म्यान स तलवार निकाल रही होती थी। भारत माता के चरणो म भगवद्गीता का नीचे लिखा श्लोक देवनागरी म लिखा रहता था —

अथ चेन्त्वमिम धर्म्यं सग्रामम न करिष्यसि ।
तत स्वधम कीर्तिञ्च हित्वा पापभवाप्स्यसि ॥

अर्थात् इसके बाद भी यदि तुम धमयुद्ध नही करते तो इससे स्वधम और कीर्ति का त्यागकर पाप को प्राप्त होंगे। राष्ट्रीय ध्वज के नीचे लिखा रहता "भारतीय सस्कृत का मासिक मुख पत्र। उसके नीचे लिखा रहता" अत हे आनद, अपने आप के लिए तुम ही दीप बनो। बाहर के किसी आश्रय की खोज मत करो। अपना निर्वाण परिश्रम से प्राप्त करो (गौतम बुद्ध)।

वन्देमातरम आरम्भ से ही सशस्त्र क्रांति का समथक था और भारत के नरम दलीय राजनीतिज्ञो पर जो ब्रिटिश सरकार से दया भिक्षा के रूप में कुछ राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने मे विश्वास रखते थे करारी चोट करता था। प्रथम अक मे ही वन्देमातरम ने मदनलाल धींगरा के बलिदान के सम्बध म लिखा "अमर धींगरा वे वीर थे जिनके उपास्य शब्दो तथा कृत्यो का हम शताब्दियो तक सच्चे हृदय से ध्यान रखना चाहिए। धींगरा ने अपने अभियोग की अवस्था म प्राचीन वीरो के समान आचरण किया है उन्होने हमे उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो के इतिहास का स्मरण दिला दिया है जो मृत्यु से वधू के समान प्रेम करते थे। इङ्गलैंड समझता है कि उसने उन्हें मार डाला है वास्तव म वे सदा जीवित रहेगे। उन्होने भारत मे अंग्रेजो की प्रभुसत्ता को घातक चोट पहुचाई है।"

१९१० मे भारत सरकार ने इंडियन प्रेस एक्ट बनाकर राष्ट्रीय विचारधारा के समाचार पत्रो के विरुद्ध कठोर कायवाही करना आरम्भ कर दिया था। बहुत से राष्ट्रीय समाचार पत्र बद हो गए। परन्तु मैडम कामा और उनका वन्देमातरम उसकी पहुच के बाहर थी अतएव वे अपनी लौह लेखनी से ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर कठोर प्रहार करती रही। एक सम्पादकीय मे उन्होन लिखा—"हम यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रेस एक्ट के कारण भारत म स्वतंत्र लेखन और विचार प्रकाशन की गुजाइश नही रही है अतएव हम विदेशो से क्रांतिकारी साहित्य का भारत म आयात करने के काय को क्रांतिकारी दल का एक महत्वपूर्ण अग बनाना चाहिए और इन परिस्थितियो मे क्रांतिकारी और राजनीतिक कार्यों का केन्द्र कलकत्ता, पूना और लाहौर से हटकर जेनेवा, पेरिस, लदन और न्यूयाक बनना चाहिए।"

भारत सरकार और ब्रिटेन की सरकार मैडम कामा की इस योजना और कायप्रणाली से बहुत अधिक सशकित हो उठी। अब उनकी डाक पर कडी निगाह रक्खी जाने लगी। वे जो समाचार पत्र साहित्य या अन्य वस्तुए भारत के क्रांतिकारियो को भेजती थीं उनको जब्त किया जाने लगा। उनके साधारण पत्र भी खोल लिए जाते थे। परन्तु मैडम कामा परास्त होने वाली नही थी। उन्होंने पांडीचेरी के द्वारा भारत मे अपने पत्र तथा साहित्य को भेजने का प्रबध कर लिया। सब कुछ प्रयत्न करने पर भी भारत सरकार विदेशो स भारत म आने वाले क्रांतिकारी साहित्य को न रोक सकी।

मैडम कामा केवल 'वन्देमातरम' का प्रकाशन करके ही सतुष्ट नही हुई उन्होंने बर्लिन से 'मदन तलवार' नामक पत्र अमर शहीद धींगरा के नाम से निकाला जो अपने प्रत्येक अक मे क्रांति और विद्रोह की अग्नि प्रज्ज्वलित करता था। पहले वन्देमातरम जैनवा से निकलता था बाद को वह राटडम से निकलने लगा परन्तु उस पर जैनवा का ही नाम रहता था।

इस सम्बध मे भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक ने भारत सरकार के गृह विभाग के मत्री के नाम ३० मई १९१२ को जो पत्र लिखा उससे यह सिद्ध होता है कि पत्र राटडम मे छपता था। पत्र नीचे लिखे अनुसार था।

"वन्देमातरम प्रगट करता है कि वह जेनेवा का प्रकाशन है परन्तु वास्तव में वह राटडम मे छपता है। मैं स्काटलैंड यार्ड की रिपोर्ट भेजता हूं जो प्रकट करती है कि वे मुद्रको को भली भाति जानते हैं। मैं फरवरी और मार्च के अक भेज रहा हूं। मार्च १९१३ के अक मे छपे लेख "हम क्या करें" की ओर मैं विशेष ध्यान दिलाता हूं। यह लेख खुले रूप मे लोगो को विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करता है और उन्हें परामर्श देता है कि यह कार्य सेना की राजभक्ति के तलोच्छेदन से प्रारम्भ करना चाहिए। "वन्देमातरम" राटडम के टी एच हेकेंस ने मैंडम कामा के लिए छापा था। भारत मत्री के समक्ष यह सुझाव रखना चाहिए कि वे डच सरकार से इस विषय में विरोध प्रदर्शन करें।

जब भारत सरकार ने वीर विनायक दामोदर सावरकर को लदन मे गिरफ्तार कर लिया और ब्रिक्सटन जेल मे उनको रक्खा गया तो मैंडम कामा की प्रेरणा से उनके सहयोगी श्री वी वी एस अय्यर तथा कुछ आयरिश तथा अन्य क्रांतिकारी मित्रो ने सावरकर को ब्रिक्सटन जेल से उडा ले जाने का प्रयत्न किया परन्तु उसमे वे सफल नहीं हुए। इससे सरकार चौकन्नी हो गई और उसने निर्णय किया कि मौय नामक जहाज जिसमे सावरकर को भारत ले जाया जाय वह किसी बदरगाह मे न ठहरे सिवाय उन बदरगाहो के जहा तेल कोयला, पानी, सब्जिया आदि लेनी हो। अभिनव भारत समिति के सदस्यो ने मैंडम कामा तथा अय्यर के निर्देशन मे यह निर्णय किया कि जब वह जहाज ८ जुलाई को मसलीज (फ्रास) पहुचे तब सावरकर को अपने साथ भगा ले जाय।

यह योजना जेल के अन्दर सावरकर को भी पहुचा दी गई। जब मौय जहाज मासलीज के निकट पहुचा तब सावरकर ने शौच जाने का बहाना बनाया। स्नानघर में जाकर उन्होने अपने सभी कपडे उतार कर उनसे उस आइने को ढाक दिया जिसकी सहायता से पुलिस के पहरेदार यह देख पाते थे कि सावरकर अन्दर क्या कर रहे हैं। कुछ ही क्षणों मे सावरकर ने अपना शरीर स्नानगृह के गोल झरोखे से बाहर निकाला और वे समुद्र मे कूद गए। झरोखे से निकलने के कारण शरीर छिल गया था अस्तु समुद्र का खारा पानी उनके शरीर मे लगने लगा परन्तु उन्होने कष्ट की चिन्ता न कर तेजी से तैरना आरम्भ कर दिया। जब वे लगभग आधा मील जा चुके थे तब जहाज पर के पहरेदारो को पता चला कि पक्षी पिजडे से उड गया है। पहरेदारों ने उन पर गोलियो की वर्षा कर दी परन्तु सब व्यर्थ सावरकर जल मे डुबकी लगा कर तैर रहे थे।

तैरते हुए सावरकर फ्रास की भूमि पर पहुच गए। वे फ्रास की भूमि पर पहुच कर बहुत प्रसन्न हुए वे एक बाजार मे दौडने लगे। चालीस अग्रेज अफसर और स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर उनका पीछा कर रहे थे। मैंडम कामा और अय्यर मोटर लेकर वहा से केवल दो फर्लांग पर ही खडे थे। उन दोनो को इस नाटक का कुछ पता नही था। इधर सावरकर के पास एक पाई भी न थी वे किससे कहते कि तुम मुझे अपने वाहन पर बिठाकर ले चलो। उन्होने फ्रासीसी पुलिस से कहा कि मुझे मजिस्ट्रेट के पास ले चलो। इतने मे वे चालीस अग्रेज अफसर तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर

भी वहां पहुंच गए। उन्होंने सिपाही से कहा—यह आदमी चोर है इसे हमारे हवाले करो "मैं चोर नही हूं" सावरकर ने तुरन्त पुलिस वालों से कहा "परन्तु यदि मैं चोर हू तो भी मुझे कानून के अनुसार तुम इन विदेशियों (अग्रेजो) के सुपुर्द नही कर सकते, मुझे आप न्यायालय म ले चलिए।

अब मैडम कामा भी वहा पहुच गई उन्होंने ने भी अग्रेजो की माग का विरोध किया परन्तु सब व्यर्थ हुआ। चतुर अग्रेज अधिकारियो ने फ्रासीसी सिपाही का मुह स्वर्ण देकर बंद कर दिया। अतर्राष्ट्रीय प्रसभा (कन्वेन्शन) तथा कानून की नितान्त अवहेलना करते हुए वे सावरकर को घसीट कर जहाज पर ले गए।

सावरकर की समुद्र मे रोमाटिक छलाग ने अतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों म सनसनी उत्पन्न कर दी। क्या अग्रेज उस व्यक्ति को जो फ्रास की स्वतत्र भूमि पर पहुच गया हो बलात पकड कर अपने साथ ले जा सकता है?

मैडम कामा तथा लाला हरदयाल ने फ्रासीसी समाजवादी नेता जे जारविस की सहायता से सावरकर की मुक्ति के लिए फ्रास म आन्दोलन किया। उनके कहने पर मार्सलीज के महापौर ने सारे मामले की छानबीन की। इस कारण फ्रासीसी चैंबर ने इङ्गलैंड की सरकार से सावरकर को लौटने की माग की। मैडम कामा तथा लाला हरदयाल ने फ्रासीसी सरकार से इस मामले मे दिलचस्पी लेने के लिए प्रयत्न किया परन्तु फ्रासीसी सरकार कोई सीधी कार्यवाही नही करना चाहती थी। फ्रास के समाजवादी पत्र 'लहूमा मानती' ने अवश्य सावरकर के पक्ष म लिखा और उसने सावरकर की मुक्ति की जोरदार शब्दो म माग की। कोपिन हेगन म अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन हुआ मैडम कामा तथा लाला हरदयाल के प्रयत्नो से उसम भी सावरकर की मुक्ति की माग की गई बृटेन और फ्रास की सरकारो के दबाव डालने पर तथा मैडम कामा और लाला हरदयाल के प्रयत्नो से हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने इस प्रश्न को अपने हाथ मे ले लिया परन्तु उसका कोई परिणाम नही निकला।

मैडम कामा की क्रातिकारी गतिविधियो से तथा भारत मे क्रातिकारी साहित्य तथा अस्त्र शस्त्र वहा के क्रातिकारियो के पास पाडीचेरी के द्वारा गुप्त रूप से पहुचाने मे सफल हो जाने के कारण भारत सरकार बौखला उठी। उसने बृटिश सरकार को लिखा कि बृटिश सरकार फ्रासीसी सरकार पर दबाव डाले कि वह मैडम कामा को फ्रांस से निकल जाने का आदेश दे। परन्तु फ्रास की सरकार ने इसको स्वीकार नही किया। बात यह थी कि मैडम कामा के महान व्यक्तित्व और भारत की स्वतत्रता के लिए उनके द्वारा किए गए महान कार्य से फ्रास के राजनीतिज्ञ उनके प्रति श्रद्धा और आदर की भावना रखते थे और प्रशसक थे। अस्तु फ्रच सरकार ने ब्रिटिश सरकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

ब्रिटिश सरकार खीज स झुझला उठी। वह मैडम कामा को अत्यन्त भयकर भारतीय क्रातिकारी के रूप में देखती थी। वह जान गई थी कि भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र शस्त्र भेजने तथा विप्लव सम्बधी साहित्य पहुचाने तथा विदेशो मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रचार का कार्य मैडम कामा के है। मैडम कामा स्वय अग्रेजो की पहुच के बाहर हो गई थी अतएव ब्रिटिश सरकार ने उन्हें आर्थिक दृष्टि से पगु बना देने का निश्चय किया। भारत सरकार ने उन पर सम्राट के शासन को उखाड फेंकने के षडयत्र का आरोप लगाया और उनके अनुपस्थित होने पर उन्ह अपपलायक (भगोडा) घोषित कर दिया। उनकी लाखो रुपए की सम्पत्ति भारत सरकार ने

जब्त कर ली। भारत सरकार का यह भ्रम था कि इस आर्थिक प्रहार से मैडम कामा धराशायी हो जावेंगी, टूट जावेंगी और उनकी क्रांतिकारी गतिविधियां बंद हो जावेंगी। परन्तु भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाली उस महान स्वतन्त्रता की देवी को ब्रिटिश सरकार की महान शक्ति भी नहीं झुका सकी। भारत सरकार के इस कठोर प्रहार की तनिक भी चिंता न कर वे पूर्ववत अपना क्रांतिकारी कार्य करती रहीं।

उसी समय प्रथम महायुद्ध छिड़ गया तो मैडम कामा ने अपने क्रांतिकारी कार्य की गति को और अधिक तेज कर दिया। युद्ध के पूर्व ही प्रसिद्ध क्रांतिकारी वीरेन चट्टोपाध्याय के सहयोग से उन्होंने "वेंगार्ड" पत्र निकालना आरम्भ किया था मैडम कामा ने इन पत्रों में लेख लिखकर भारतीय सैनिकों से अनुरोध किया कि वे अंग्रेजों के लिए युद्ध न करें क्योंकि यह भारत का युद्ध नहीं है यह साम्राज्यवादी युद्ध है। उन्होंने केवल पत्रों द्वारा ही भारतीय सैनिकों को हथियार डाल देने और अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का अनुरोध नहीं किया वे स्वयं मार्सलीज तथा अन्य स्थानों पर स्थित भारतीय सैनिक शिविरों में जा जाकर भारतीय सैनिकों को विद्रोह कर देने के लिए प्रोत्साहित करने लगीं। अंग्रेज उनके इस ब्रिटिश विरोधी कार्य से अत्यन्त सजग और क्षुब्ध हो गए। उन्हें भय होने लगा कि यदि मैडम कामा के भारतीय सैनिकों में अंग्रेज विरोधी प्रचार को नहीं रोका गया तो उसका भारतीय सैनिकों के मानस पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा और उनकी राजभक्ति संदिग्ध हो जावेगी। दुर्भाग्यवश उसी समय जरमनी ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया तो फ्रांस घबरा गया अब वह इस स्थिति में नहीं था कि अपने मित्र तथा सहायक ब्रिटेन की इच्छा की अवहेलना कर सके। ब्रिटिश सरकार ने अनुकूल अवसर देखकर पुनः फ्रांस की सरकार पर यह दबाव डाला कि वह मैडम कामा को देश निकाला देकर उन्हें ब्रिटिश सरकार के सुपुर्द करदे। इस बार फ्रांस की सरकार झुक गई। यद्यपि फ्रांस सरकार ने मैडम कामा को देश निकाला तो नहीं दिया परन्तु उन्हें पेरिस से बहुत दूर ले जाकर नजरबंद कर दिया। फ्रांसीसी सरकार ने उनके क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यों पर रोक लगा दी, और सप्ताह में एक बार पुलिस में हाजरी देना अनिवार्य कर दिया गया। युद्ध के समाप्त होने पर उनको मुक्त कर दिया गया और वे पुनः पेरिस वापस आई। उस बीच लेनिन ने उन्हें रूस में आने के लिए आमन्त्रित किया परन्तु उन्होंने लेनिन के निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया। १९२६ में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू योरोप गए थे तो भारत की उस क्रांतिकारी देवी के दर्शन करने के लिए पेरिस गए थे।

मैडम कामा जीवन के अन्त तक मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अनवरत कार्य करती रहीं। उनकी गहन देशभक्ति और मातृभूमि के लिए अपना पारिवारिक जीवन अटूट धन सम्पत्ति संक्षेप में सर्वस्व निछावर करने की कहानी जितनी प्रेरणादायक है उतनी ही रोमांचकारी भी है। भारत माता की वह महान पुत्री अपने जीवन के अन्त समय में लौटकर अपनी मातृभूमि के दर्शन तो कर सकी परन्तु वास्तव में वह अपनी मातृभूमि की पावन गोद में मृत्यु का आलिंगन करने के लिए ही वापस आई। वह स्वतन्त्रता की देवी जो देश के लिए बलिदान होने की अभूतपूर्व परम्परा अपने पीछे छोड़ गई है वह भारत की भावी पीढ़ी को देश के लिए बलिदान होने की अनवरत प्रेरणा देती रहेगी।

३५ वर्षों के निर्वासन के बाद और उन पैंतीस वर्षों मे अनवरत सघर्ष का जीवन बिताने तथा अपने निर्बल शरीर की चिंता न कर अथक परिश्रम करने के कारण उनका स्वास्थ्य गिर गया। वे अशक्त हो गईं परन्तु फिर भी वे प्रत्येक क्षण मातृभूमि के लिए ही जीवित रहती थी। जब उन्हे लगा कि उनका जीवन दीप बुझने वाला है तो वे मातृभूमि की पावन धरा पर चिरनिद्रा मे सोने के लिए लालायित हो उठीं। ब्रिटिश सरकार उन्हे भारत जाने का पासपोर्ट देने के लिए तैयार नही थी बहुत कुछ प्रयत्न करने पर उन्हे भारत जाने के लिए पासपोर्ट तो मिल गया परन्तु जब वे बम्बई पहुची तब तक उनका स्वास्थ्य बहुत अधिक गिर चुका था। बम्बई पहुचते ही उन्हे पारसी हास्पिटल ले जाया गया जहा आठ महीने तक रोगी शय्या पर रहकर मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देने वाली वह देवी १६ अगस्त १६३६ को चिरनिद्रा म निमग्न हो गई।

अपनी मृत्यु के पूर्व उन्होने राष्ट्र को नीचे लिखे शब्दो म अपना प्रेरणादायक सदेश दिया था 'जो व्यक्ति अपनी स्वतत्रता खो देता है वह अपने सद्गुणा से भी हाथ धो बैठता है। अत्याचार का प्रतिरोध ही भगवान की आज्ञा पालन है।"

हम कृतघ्न भारतीयो ने उस स्वतत्रता की देवी की स्मृति की रक्षा करने के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं समझी। उनका प्रेरणादायक जीवन चरित्र नही लिखा गया कोई स्मारक नही बना। केवल डाक विभाग ने उनके नाम का डाक टिकट निकाल कर अपने कत्तव्य की इतिश्री समझली। जहा कृतघ्न भारतीयो न भारत माता की उस वरद पुत्री की अत्यन्त अशोभनीय उपेक्षा की। जिसको देखकर स्वय कृतघ्नता भी लज्जित हुई होगी वहा पेरिस म जहा उस देवी ने अपने जीवन के लम्बे वर्ष व्यतीत किए थे वहा 'पेरे ला चेज़' सिमटरी में उनके प्रशसको ने एक स्तूपशिला उनकी स्मृति में स्थापित की जिस पर नीचे लिखे वाक्य अकित है जो युगा युगा तक स्वतत्रता के प्रेमिया को अनुप्राणित करत रहेगे।

'He who loses his libevty loses his Virtue Resistence to tyranny is obedience to God "

"जो व्यक्ति अपनी स्वतत्रता खो देता है वह अपने सद्गुणो से भी हाथ धो बैठता है। अत्याचार का प्रतिरोध ही भगवान की आज्ञा पालन है।'

मैडम कामा केवल प्रभावशाली वक्ता और लौह लेखनी का धनी ही नही थी वे कुशल राजनीतिज्ञ भी थी उन्होने फ्रास, जरमनी, स्विटजरलैड तथा योरोप के अन्य देशो के समाजवादियो से घनिष्ट सम्पर्क स्थापित कर लिया था और उनकी तथा उनके सगठनो की भारत की स्वतत्रता के पक्ष में सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करली थी। जब भारत सरकार ने लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिह को देश से निर्वासित कर दिया तब उस भारत की स्वतत्रता की देवी ने जो अपील निकाली उसको अमेरिकन, फ्रच, जरमनी, और स्विटजरलैंड के पत्रो ने मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया और उनकी अपील का समर्थन करते हुए सहानुभूतिपूर्ण सम्पादकीय टिप्पणिया लिखी। उन्होंने केवल योरोप तथा अमरिका के प्रगतिशील राजनीतिज्ञों से ही निकट सम्बध स्थापित कर उनकी भारत के लिए सहानुभूति प्राप्त नही की वरन उन सभी देशा के राजनीतिक नेताओ से भी घनिष्ट सम्बध स्थापित कर लिया जोकि अपने देशों की स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे थे।

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक 'आगामी भारतीय साधना' में लिखा है कि जब मैं १९१३ में मैडम कामा से पेरिस में मिला तो हमें जो आयरलैंड, तथा पोलैंड के क्रांतिकारियों, तथा मिश्र (ईजिप्ट) टर्की और मराक्को की स्वतंत्रता के सेनानियों और क्रांतिकारियों के बहुसंख्यक पत्र दिखाए जो उन्होंने मैडम कामा को लिखे थे उन्हें पढ़कर हम बहुत उत्साहित हुए थे।

जब वे पेरिस में थी तब एक घटना ऐसी हुई जो उनके देश प्रेम पर प्रच्छन्न प्रकाश डालती है। नासिक के जिलाधीश जैक्सन को उनके विदाई समारोह के समय नासिक में कन्हेरे ने गोली मार कर हत्या कर दी यद्यपि जैक्सन ने ही गणेश सावरकर को गिरफ्तार कर उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया था जिसमें उन्हें काला पानी हुआ था। जिस पिस्तौल से कन्हेरे ने जैक्सन पर गोली चलाई थी वह उन बीस पिस्तौलों में से था जिन्हें इंडिया हाउस के रसोइया चतुर्भुज अमीन के बाक्स के गुप्त तल में छिपाकर विनायक सावरकर ने बम्बई भेजे थे। जब भारत में चतुर्भुज अमीन गिरफ्तार हो गया और पुलिस के घोर अत्याचार के कारण सरकारी गवाह बन गया तो उसने यह बयान दिया कि वह बाक्स जिसमें बीस ब्राउनिंग पिस्तौल थे पेरिस में वह सरदारसिंह जी राणा के मकान से लेकर लंदन आया और विनायक सावरकर ने उसको बम्बई उसके द्वारा भिजवाया। अतएव भारत तथा ब्रिटिश सरकार विनायक सावरकर तथा सरदारसिंह जी राणा को जैक्सन की हत्या के अभियोग में फंसाना चाहती थी। जब मैडम कामा ने देखा कि सरदारसिंह राणा और विनायक सावरकर दोनों ही फंस जावेंगे और क्रांतिकारी कार्य को गहरा धक्का लगेगा तो उन्होंने एक अत्यन्त अप्रत्याशित साहसिक और खतरनाक कार्य किया। वे स्वयं पेरिस में ब्रिटिश कौंसल जनरल के कार्यालय में गई और उनको एक लिखित बयान दिया कि "यद्यपि यह सही है कि पिस्तौलों वाला सन्दूक सरदारसिंह राणा के मकान में था परन्तु राणा और सावरकर को तनिक भी यह ज्ञात नहीं था कि उसमें पिस्तौल हैं अतएव दोनों ही निर्दोष हैं। इन पिस्तौलों को एकत्रित करने और उनको सन्दूक में रखकर चतुर्भुज अमीन के साथ भेजने की उत्तरदायी मैं हूं अतएव पिस्तौलों के सम्बंध में मैं ही अकेली जिम्मेदार हूं मैं ही अकेली दोषी हूं।"

अपने साथियों को बचाने के लिए स्वयं अपने को खतरे में डालना मैडम कामा जैसी वीर महिला ही कर सकती थी कितने देशभक्त हैं जो इस प्रकार अपने को खतरे में डाल सकते हैं।

मैडम कामा का रूस के क्रांतिकारी लेखक गोर्की से भी पत्र व्यवहार था और वे एक दूसरे के प्रशंसक थे। गोर्की ने एक पत्र में मैडम कामा से प्रार्थना की थी कि वे (मैडम कामा) उनके पत्र के लिए भारतीयों के अपनी स्वतन्त्रता के लिए किए जाने वाले संघर्ष की कहानी लिख भेजें। उन्होंने लिखा था कि 'रूस के जनतंत्रवादी लोग आपके अत्यन्त कृतज्ञ और आभारी होंगे यदि आप उन्हें महान भारत के जनतंत्रवादी पुरुष स्त्रियों के सम्बंध में जो गंगा के तट पर निवास करते हैं तथा जो किस प्रकार अपनी स्वतन्त्रता का संघर्ष चला रहे हैं, उसकी कहानी लिख भेजें।

गोर्की के उस पत्र का उत्तर देते हुए मैडम कामा ने ३१ अक्टोबर १९१२ के अपने पत्र में लिखा था, 'मेरा सम्पूर्ण जीवन मेरे देश और उसकी स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए अर्पित है मैं आपकी इच्छाओं को पूरा करने की भरसक चेष्टा करूंगी अर्थात् मैं मे

देश के आदर्शों तथा संघर्ष के सम्बंध में लेख लिखूंगी। मैडम कामा ने गोर्की को सावरकर लिखित १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास की पुस्तक भेजी थी जिसकी गोर्की ने बहुत प्रशंसा की थी।

पेरिस में मैडम कामा एक साधारण बोर्डिंग हाउस में 'ऐप्यूल' क्षेत्र में रहती थी। भारतीय युवक जो कि पेरिस में थे वे उनके पास आया करते थे। यद्यपि उनका स्वास्थ्य खराब हो चला था परन्तु उनमें अदम्य साहस और स्फूर्ति थी। वे भारतीय तरुणों से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन की चर्चा करती और भारतीय युवकों को देश भक्ति की दीक्षा देतीं। उनका व्यक्तित्व इतना तेजस्वी था कि जो भी उनके सम्पर्क में आता वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे पेरिस में अपने छोटे से कमरे में बैठी प्रत्येक क्षण भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करती रहीं। कृतघ्न भारतीय आज उनको भूल गए अधिकांश भारतीय यह भी नहीं जानते कि उस वीर महिला ने देश की आजादी के लिए अपने को तिल तिल कर मिटा दिया वह केवल अपनी मातृभूमि के लिए जीवित रहीं और अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग उसने केवल मातृभूमि की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने में किया।

एक लेखक ने मैडम कामा को "भारतीय क्रांति की जननी" कह कर सम्बोधित किया है। यह लेखक उस महिमामयी देवी को जिसने विदेश में रहकर भारतीय स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया भारत के उन महान स्वातन्त्र्य वीरों की गौरवशाली परम्परा की एक अत्यन्त प्रकाशवान तेजोमय नक्षत्र मानता है जिसके तेज और प्रकाश से प्रदीप्त होकर हजारों भारतीयों के हृदय में मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान कर देने की भावना उत्पन्न हुई थी और वे 'करो सब निछावर बनो तुम फकीर" मन्त्र के अनुयायी बने।

मैडम कामा की भारतीयों के नाम अपील

१० मई, १९०७ को भारत सरकार ने लाहौर में लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह को गिरफ्तार कर लिया और एक बड़े पुलिस दल के साथ उन्हें देश के बाहर किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। लाला लाजपत राय जैसे उच्च कोटि के नेता के इस देश निर्वासन से समस्त भारत स्तब्ध रह गया। पेरिस में भारतीय क्रांतिकारियों ने इसका विरोध करने के लिए सभा की। मैडम कामा ने भारतीयों के नाम नीचे लिखी अपील निकाली।

"प्रातःकाल जब मैंने सुना कि लाला लाजपत राय जैसे सच्चे देशभक्त को उनके गृह से गिरफ्तार कर लिया गया और वे कैदी बना दिए गए तो मुझे गहरा आघात लगा।"

"भारत के स्त्री पुरुषो इस अत्याचार का डट कर विरोध करो तुम अपने मन में यह विचार दृढ़ कर लो कि सम्पूर्ण भारत की जन संख्या इस प्रकार की दासता का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा समूल नष्ट हो जाना पसंद करती है।"

'भारत ईरान, अरब के गौरवशाली अतीत की चर्चा करने से क्या लाभ यदि तुम आज दासता का जीवन व्यतीत कर रहे हो। वीर राजपूतो, सिक्खो, पठानो, गोरखा, देशभक्त मराठो, बंगालियो क्रियाशील पारसियो और साहसी मुसलमानो और ए नम्र जैनियो धैर्यवान हिन्दुओ तुम महान शक्तिशाली जातियों की संतान हो तुम अपनी प्राचीन परम्पराओं के अनुसार क्यों नहीं रहते। क्या कारण है कि तुम दासता में रह

रहे हो। उठो स्वराज्य के अन्तर्गत स्वतन्त्रता और समानता की स्थापना करो। उठो अपने लिए, अपनी सन्तान के लिए उठो।

'भाइयो और बहिनो मानवीय अधिकारों का युद्ध लड़ो और संसार को बतला दो कि पूर्व पश्चिम को पाठ पढ़ा सकता है। इन अंग्रेजों को पाठ पढ़ाओ जिन्हें महान कवि के पोते विलियम वर्ड्सवर्थ ने 'सफेद कपड़ों में जंगली और बर्बर कहा है।"

'काश यदि मैं उस कारागार के लौह फाटकों को तोड़कर लाला लाजपत राय को बाहर निकाल ले आ सकती उस देशभक्त को कारागृह की दूषित वायु में सांस लेने के लिए नहीं छोड़ देना चाहिए।"

"हम मिलकर एक हो जाना चाहिए। यदि हम सब भारतवासी लाला लाजपत राय की भांति वीर वाणी में बोलें तो सरकार को कितने अधिक दुर्ग और कारागृह बनाने पड़ेंगे जिनमें वह हम सबों को बंदी बनाकर रख सकेगी। हम सब भारतवासी मिलकर तीस करोड़ हैं। इसमें केवल मात्र एकता की आवश्यकता है। आवश्यकता है कि भारतीयों में इस संकट के क्षण में एकता की कमी न हो।"

मित्रो अपने में स्वाभिमान जागृत करो और इस स्वेच्छाचारी शासन को उसके लिए किसी भी रूप में सहयोग देना तथा उसके लिए किसी भी स्थिति में काम करने से इनकार करके उसको ठप्प करदो।"

'हम भारतीय 'वन्दे मातरम" की प्रेरणा से एक होकर उठ खड़े हों यही मेरी कामना है।"

मैडम कामा की यह अपील सोश्यलाजिस्ट' के जून अंक में ही प्रकाशित नहीं हुई वरन सात जून को लंदन में इंडिया हाऊस में लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह के देश निर्वासन के विरोध में जो सभा हुई उसमें भी पढ़ी गई। उस सभा का सभापतित्व श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में तत्कालीन भारत मन्त्री पर कड़ा प्रहार किया था। मैडम कामा की यह अपील बहुत अधिक संख्या में छपवा कर योरोप में बांटी गई तथा गुप्त रूप से भारत भेजी गई जिसे क्रान्तिकारियों ने भारत में बांटा।

अध्याय २

श्यामजी कृष्ण वर्मा

श्यामजीकृष्ण वर्मा का ज म तत्कालीन कच्छ राज्य के माडवा स्थान पर ४ अक्टोबर, १८५७ को हुआ उनके माता पिता अत्य त निधन थे। उनकी जाति भसाली था। उनके पिता जीवकोपाजन के लिए बम्बई चले आए थे। जब गभवती माता के प्रसव का समय समीप आया तो श्यामजी के पिता न उनका उनकी माता के घर कच्छ मे भेज दिया। जब १८५७ म उनका ज म हुआ, तब भारत की स्वतत्रता की देवी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे मा भारती की दासता की श्रखलाओ का काट डालन के लिए जूझ रहे थे तब कच्छ के सुदूर माडवी नामक स्थान मे श्यामजी न ज म लिया।

श्यामजी बचपन मे उस स्वतत्रता के युद्ध की कहानिया सुनते और आत्म-विभोर हो उठते। बहुत कम आयु म ही उनको माडवी की प्राथमिक पाठशाला म भरती करा दिया गया। आरम्भ मे ही उस मेधावी बालक की असाधारण प्रखर बुद्धि ने सभी को चकित कर दिया। पढने म उन्होने इस तेजी से उ नति की और उनके मस्तिष्क की प्रखरता ने सभी को इतना अधिक प्रभावित किया कि उनके माता पिता यद्यपि अत्य त निधन थे उ होने उ हे कच्छ राज्य की राजधानी 'भुज' ले जाकर उ हे अंग्रेजी पढाने का निश्चय किया।

उस मेधावी बालक के जीवन म एक अत्य त दारुण दुघटना घटित हुई। जब वह केवल दस वर्ष का था उसकी माताश्री का स्वगवास हो गया। उनकी स्नेहमयी माता के स्वगवासिनी हो जाने से उनके कोमल मन को गहरा आघात लगा। निधनता परिवार का घोर अभिशाप था और श्यामजी को पग पग पर उसके कारण कठिनाई उठानी पडती थी पर तु स्नहमयी माता के स्नेह और सेवा के कारण वह उस निधनता से न घबडा कर विद्याध्ययन कर रहे थे। अब वे एक प्रकार से अनाथ हो गए। पर तु उनकी नानी ने माता का स्थान ले लिया और उनकी पढाई को रुकने नहीं दिया। उनके पिता उस समय भी बम्बई म थे पर तु वे अपने पुत्र को पढा नहीं सकते थे।

श्यामजी भुज के अंग्रेजी स्कूल म पढ रहे थे। अ यापक उनकी कुशाग्र बुद्धि और अद्भुत मेधा स चकित थे। उ हे यह समझने म दर नही लगी कि यह बालक महान प्रतिभा सम्पन्न है।

उनके पिता बम्बई म किसी प्रकार व्यापारिक कारबार कर अपनी जीविका उपाजन करते थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी पर तु कच्छ भुज के बहुत से व्यापारी वहा व्यापार करते थे वे श्यामजी की विलक्षण प्रतिभा के बारे मे जानते थे क्योंकि वे भुज जाते आते रहते थे। उनके द्वारा श्यामजी की विलक्षण प्रतिभा और कुशाग्र बुद्धि की कहानी श्री मथुरादास लावजी एक अत्य त धनी उदार भाटिया व्यापारी के कानो तक पहुची उन्होंन श्यामजी को बम्बई म लाकर पढाने का निश्चय किया।

वे व्यापार के सिलसिले मे शीघ्र ही कच्छ गए और श्यामजी तथा उनकी नानी को बम्बई ले आए। उनके रहने और खाने पीने की व्यवस्था कर दी। श्यामजी को विल्सन हाई स्कूल म प्रविष्ट करा दिया गया। यद्यपि एक ग्रामीण स्कूल से सबसे बडे नगर के स्कूल म जहा दक्षिण के विभिन्न प्रदेशो स अत्य न्त मेधावी छात्र पढने आते थे श्यामजी को एक साथ लाया गया पर तु उस बालक की प्रतिभा ने वहा भी सबो

को आश्चर्यचकित कर दिया। अध्यापक और छात्र सभी उस ग्रामीण बालक की प्रतिभा से आश्चर्य चकित थे श्यामजी अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहे।

यदि श्यामजी केवल अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके बम्बई विश्वविद्यालय के स्नातक हो जाते तो सम्भवतः उनको जो ख्याति प्राप्त हुई वह न होती। उनके भावी उत्कर्ष में संस्कृत का बहुत अधिक योगदान रहा।

भाटिया जाति के वंशपरम्परागत पुरोहित शास्त्री विश्वनाथ ने एक एक संस्कृत पाठशाला चला रखी थी। श्यामजी के उदार आश्रयदाता श्री मथुरादास लावजी ने उनका परिचय शास्त्री विश्वनाथ से करा दिया और उन्हें अपनी पाठशाला में प्रवेश देने के लिए कहा।

अब श्यामजी दिन में तो विल्सन स्कूल में पढ़ते और सायंकाल को पाठशाला जाते और रात्रि को अपना निज का अध्ययन करते। अपने धर्म और प्राचीन सभ्यता के महान ग्रन्थों को मैं पढ़ सकूँगा इस विचार ने श्यामजी को संस्कृत पढ़ने के लिए उत्साहित किया और वे उसके अध्ययन में जुट गए। इस दोहरी पढ़ाई का उन्होंने इस कुशलता से निर्वाह किया कि विल्सन स्कूल में वे अपनी कक्षा में तो प्रथम आते ही रहे साथ ही उन्होंने संस्कृत का इतना ऊंचा ज्ञान अठारह वर्ष की आयु में ही अर्जित कर लिया कि देश के प्रसिद्ध प्रकाण्ड पंडित संस्कृत विद्वान और सुधारक उनके संस्कृत ज्ञान से बहुत अधिक प्रभावित हो गए।

श्यामजी को विल्सन स्कूल में प्रथम आने के कारण स्वर्गीय गोकुलदास काहनादास पारिख प्रदत्त छात्रवृत्ति मिली और उन्हें ऐल्फिंस्टन स्कूल में भेजा गया। ऐल्फिंस्टन स्कूल में बम्बई के धनाढ्य और ऊंचे घरों के लड़के पढ़ते थे। वे अपने स्कूल के सबसे अधिक मेधावी छात्र थे इस कारण शीघ्र ही वे सर्वप्रिय हो गए। सेठ छबील दास लल्लूभाई का पुत्र रामदास उनका सहपाठी था। बम्बई के ये प्रसिद्ध और धनाढ्य व्यवसायी थे परन्तु उनकी अध्ययन में रुचि थी एवं इसी से उन्होंने अपने पुत्र से पूछा कि उसकी कक्षा में सबसे कुशाग्र बुद्धि छात्र कौन है। उसने श्यामजी का नाम लिया और उनकी प्रशंसा की। सेठजी ने अपने पुत्र से उस निर्धन किन्तु मेधावी छात्र को घर पर निमन्त्रित करने के लिए कहा। श्यामजी से मिलकर सेठ छबीलदास लल्लूभाई इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें बहुधा उनसे मिलने आने के लिए कहा। श्यामजी का उस धनी घर आना जाना होने लगा। सेठ छबीलदास श्यामजी से स्नेह करने लगे। वे श्यामजी से इतने अधिक प्रभावित हुए कि एक दो वर्ष के बाद उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह उनसे करने की बात सोची उन्होंने अपनी पुत्री से पूछा उनकी पुत्री भी श्यामजी के व्यक्तित्व से आकर्षित थी। उसने सहमति दे दी और १८७५ में श्यामजी का विवाह हो गया। अकिंचन युवक एक धन कुबेर का जामाता बन गया। परन्तु उन्होंने एक दिन भी अपने धनाढ्य ससुर से सहायता लेने अथवा उनके विस्तृत व्यापार में साझीदार बनने की कल्पना भी नहीं की।

जब श्यामजी का विवाह हुआ तब तक उनका संस्कृत का ज्ञान इतना अधिक बढ़ चुका था कि ऊंचे पंडित और विद्वान उनसे प्रभावित होते थे। उनके भाटिया आश्रयदाता श्री मथुरादास लावजी ने उनका परिचय तत्कालीन समाज सुधारक नेताओं से करा दिया। उसी समय उनका परिचय आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्रोफेसर से हुआ जब वे पहली बार भारत आए। वे उनसे इतने अधिक प्रभावित हुए

कि उन्होंने दो वर्ष के भीतर उन्हें आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अपने सहायक के रूप में नियुक्त करना स्वीकार कर लिया।

श्यामजी का १८७४ में जब स्वामी दयानंद बम्बई आए तो उनसे भी परिचय हुआ। स्वामी दयानंद उस युवक से बहुत प्रभावित हुए। परन्तु श्यामजी को एक गहरा आघात लगा। १८७६ में मैट्रियूलेशन की परीक्षा के समय उनकी आंखें खराब हो गईं इस कारण वे ठीक से परीक्षा न दे सके और अनुत्तीर्ण हो गए। परन्तु इससे श्यामजी निराश नहीं हुए ट्यूशन करके अपना काम चलाते थे अपने धनाढ्य ससुर से उन्होंने याचना नहीं की।

अब उनका ध्यान आक्सफोर्ड की ओर गया और उनकी इच्छा आक्सफोर्ड जाने की हुई। परन्तु वे प्रोफेसर विलियम्स के पास तभी जाना चाहते थे जब वे भारत में अपनी विद्वता की धाक जमा लेते। अतएव उन्होंने भारत के सभी संस्कृत केन्द्रों में घूम कर संस्कृत में भाषण देने का निश्चय किया। मार्च १८७७ में वे इस उद्देश्य से नासिक गए। उस समय वे केवल बीस वर्ष के थे परन्तु नासिक में उनके भाषण की संस्कृत के महान पंडितों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। धाराप्रवाह सुंदर संस्कृत में गम्भीर विषय पर भाषण सुनकर लोग मुग्ध हो गए।

डाक्टर मोनियर विलियम्स को जब देशमुख ने श्यामजी की संस्कृत की विद्वता की प्रशंसा करते हुए पत्र लिखा तो आक्सफोर्ड से प्रोफेसर विलियम्स का पत्र आया कि मैं श्यामजी को अपने सहायक के रूप में ले लूंगा।

नासिक से श्यामजी पूना गए वहां भी उनके भाषणों की बहुत प्रशंसा हुई। बम्बई के टाइम्स आफ इंडिया पत्र ने उनकी प्रशंसा में सम्पादकीय टिप्पणी लिखी। वे अहमदाबाद बड़ौदा आदि स्थानों पर भी गए। उनकी ख्याति अब चारों ओर फैल गई। उसी समय प्रोफेसर विलियम्स का श्री देशमुख के पास पत्र आया कि यदि श्यामजी १८७७ के अंत में अथवा आरम्भ में आक्सफोर्ड आ सकें तो वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर सकेंगे।

श्यामजी के सामने अब प्रश्न था कि इङ्गलैंड कैसे पहुंचा जावे। साथ ही उनका ध्येय वहां से डिगरी लेना और बार एट ला बनना था। अस्तु रुपए की आवश्यकता थी क्योंकि जो छात्रवृत्ति प्रो विलियम्स ने देने का आश्वासन दिया था वह पर्याप्त नहीं थी। उन्होंने कच्छ राज्य से छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए कच्छ का दौरा किया उस समय अपना पैतृक गृह मांडवी भी गए। उनके संस्कृत के भाषणों की वहां धूम मच गई। राज्य के दीवान और वरिष्ठ अधिकारी सभी उनकी विद्वता और संस्कृत के ज्ञान से उनके भक्त बन गए। परन्तु कच्छ राज्य से उन्हें आर्थिक सहायता नहीं मिली। वे उसी बीच बनारस गए और वहां भी उन्हें ख्याति प्राप्त हुई परन्तु इङ्गलैंड जाने के लिए उन्हें आर्थिक सहायता नहीं मिल सकी। अंत में सब ओर से निराश होकर उन्होंने डाक्टर और श्रीमती मुल्हा से कुछ रुपया उधार लिया जिन्हें संस्कृत पढ़ाई थी और थोड़ा रुपया अपनी पत्नी से उधार लिया और मार्च १८७९ में वे इङ्गलैंड चल दिए।

एप्रिल १८७९ के मध्य में वे लिवरपूल पहुंचे परन्तु उन्हें वहां प्रो विलियम्स का अत्यन्त निराशाजनक पत्र मिला। उन्होंने लिखा था कि तुम्हारे आने की अंतिम तिथि मार्च १८७८ थी जब उस समय तक तुम नहीं आए तो मैंने तुम्हारी आशा छोड़ दी।

अतएव तुम्हे भारत से चलने पूर्व मुझसे फिर पूछना था। फिर भी व आक्सफोर्ड पहुंचे। प्रो विलियम्स उनसे बहुत प्रभावित हुए उनकी सहायता से उन्हें छात्रवृत्ति तथा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश दोनों ही मिल गए। परन्तु छात्रवृत्ति की राशि थोड़ी थी श्री कृष्ण वर्मा उसके ऊपर निर्भर रहकर कानून अध्ययन नहीं कर सकते थे अतएव उन्होंने प्रोफेसर विलियम्स के द्वारा पुन कच्छ राज्य से छात्रवृत्ति पाने का प्रयत्न किया। प्रो० विलियम्स ने बम्बई के तत्कालीन गवर्नर को इस सम्बंध मे लिखा। उसका परिणाम यह हुआ कि श्यामजी को कच्छ राज्य से भी पौंड वार्षिक की छात्रवृत्ति मिल गई। अब श्यामजी आर्थिक दृष्टि से निश्चित होकर विद्या अध्ययन में जुट गए। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय म भी उनकी विद्वता की धाक जम गई। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा प्रोफेसरों ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की। पांच वर्ष आक्सफोर्ड में रह कर वे जनवरी १८८५ म भारत लौट आए। उनकी विद्वता की धाक इतनी अधिक थी कि भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड नार्थब्रुक ने उनके विषय म एक अत्यन्त प्रशंसात्मक प्रमाण पत्र उन्हें दिया और भारत सरकार से निवेदन किया कि उन्हें भारत सरकार में ऊंचा स्थान दिया जाय।

भारत मंत्री ने बर्लिन कांग्रेस आव ओरटेलिस्ट म उन्हें भारत का प्रतिनिधि बनाकर भेजा वहां उनके भाषण का सभी विद्वानों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

राजनीति मे प्रवेश

भारत मे लौटने पर श्यामजी १९ जनवरी १८८५ में बम्बई के उच्च न्यायालय मे एडवोकेट के रूप में बैरिस्टरी करने लगे। उन्होंने बम्बई हाईकोर्ट में प्रवेश ही किया था कि वे अपने पुराने संरक्षक श्री गोपालराव देशमुख से मिलने गए जो उस समय रतलाम राज्य के दीवान थे। श्री गोपालराव देशमुख न उन्हें रतलाम के महाराजा से मिलाया। महाराजा श्यामजी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व तथा विद्वता से बहुत अधिक प्रभावित हुए। दीवान देशमुख वृद्धावस्था के कारण दीवान पद से अवकाश लेने वाले थे। उन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा को अपने स्थान पर दीवान नियुक्त करने की सिफारिश की जिसे महाराजा ने स्वीकार कर लिया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा बम्बई लौट आए और अपने पैतृक गृह कच्छ गए। इसी बीच में १९ फरवरी को रतलाम के महाराजा न उन्हें रतलाम राज्य का दीवान नियुक्त कर दिया। वे उस समय अट्ठाइस वर्ष के थे। शायद ही कोई व्यक्ति इतनी कम आयु मे एक राज्य का दीवान नियुक्त हुआ हो। डेढ वर्ष के कार्यकाल मे महाराजा श्यामजी कृष्ण वर्मा की कार्यकुशलता और योग्यता से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने श्यामजी की वेतन वृद्धि करदी और एक अनुबंध किया कि यदि अनुबंध काल म सेवा से मुक्त किया गया तो उनको ३३३ रुपये मासिक पेंशन दी जावेगी। उस अनुबंध का काल पंद्रह वर्षों का था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने पंद्रह वर्ष के लिए एक देशी राज्य की नौकरी करने के लिए अपने को क्यों बांध लिया यह एक विचारणीय प्रश्न है। उस समय भारत म जो राष्ट्रीय और धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे वे अंग्रेजी सरकार की अपेक्षा देशी राज्यों को पसंद करते थे। आखिर शासक भारतीय नरेश थे, व पुराने राजवंशों के उत्तराधिकारी थे देशी राज्यों म भारतीय संस्कृत और परम्परा जीवित थी। भारतीय त्यौहार, पर्व वहां बहुत धूमधाम से मनाये जाते थे। पग पग पर अंग्रेजों का वर्चस्व और उनका दम्भ सहन नहीं करना पड़ता था। अस्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा न रतलाम

महाराजा से यह अनुबध कर लिया। इसके अतिरिक्त उस समय एक शिक्षित वर्ग देश में ऐसा भी था जो राजाओं की सहायता से भारत को स्वतंत्र बनाने की कल्पना करता था। परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न थी १८५७ के उपरान्त देशी नरेश इस मन स्थिति में नहीं थे। वास्तव मे दीवान का काम बहुत कठिन था। एक ओर तो उसे राजा को प्रसन्न रखना पड़ता था दूसरी ओर पोलीटिकल डिपार्टमेंट को प्रसन्न रखना पड़ता था। देशी नरेशों के दरबारों मे होने वाले षडयत्रों और कुचक्रों का सामना करना आसान नहीं था। देशी नरेशों की विलासिता तथा फिजूल खर्ची के लिए उसे नये नये करो तथा आय के साधनो का आविष्कार करना पड़ता था उधर महाराजा के कृपा पात्रो के दबाव का सामना करना पड़ता था। फिर उसे यह भी देखना पड़ता था कि शासन इतना अव्यवस्थित न हो जाये या राज्य की वित्तीय स्थिति इतनी खराब न हो जावे कि भारत सरकार के विदेशी विभाग को हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जावे। परन्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इस योग्यता से रतलाम राज्य का शासन सम्भाला कि रतलाम के महाराजा तथा विदेशी विभाग दोनों ही उनसे बहुत प्रसन्न रहे। महाराजा रतलाम ने दो वर्षों के भीतर ही उन्हें उनकी प्रशासनीय सेवाओं के लिए खिताब देकर सम्मानित किया। विदेशी विभाग के अधिकारी उनकी योग्यता तथा आक्सफोर्ड में उनकी विद्वता की धूम के कारण प्रभावित थे। सैन्ट्रल इंडिया एजेंसी की प्रशासनिक रिपोर्ट में श्यामजी की नियुक्ति पर बहुत प्रसन्नता प्रकट की गई।

परन्तु रतलाम में श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वास्थ्य एक साथ गिर गया और उन्हें अस्वस्थता के कारण १८८८ मे अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ा। क्योंकि उन्होंने १९०० के पूर्व त्याग पत्र दिया अतएव वे अनुबंध की शर्तों के अतर्गत पेंशन या ग्रेच्युटी के हकदार नहीं थे। परन्तु महाराजा उनसे इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उन्हें ३२,०५२ रुपये की एक मुश्त रकम भेंट की।

रतलाम से श्यामजी बम्बई आए परन्तु उन्होंने बम्बई उच्च न्यायालय मे प्रैक्टीस नहीं की वे पुन किसी देशी राज्य मे ही काम करना चाहते थे। परन्तु बम्बई में रहकर दीवान पद पाना कठिन था। अतएव उन्होंने अजमेर मे प्रेक्टीस करने का निश्चय किया। इस उद्देश्य से वे १८८८ के अंत में अजमेर आ गए। इनर टैम्पिल के बैरिस्टर आक्सफोर्ड के स्नातक और एक रियासत के भूतपूर्व दीवान के लिए धनी मानी व्यक्तियों को आकर्षित कर लेना कठिन नहीं था। परिणाम यह हुआ कि श्यामजी की बैरिस्टरी अजमेर में खूब चमकी और उन्होंने अजमेर के ही समीप तीन कपास के पेंच स्थापित कर दिए। यह तीनों कारखाने बहुत सफल हुए और जीवन पर्यन्त श्यामजी की आय के स्थायी साधन बने रहे। यही नहीं उन्होंने देशभक्त श्री दामोदरदास राठी के साथ मिल कर ब्यावर में एक सूती कपड़े की मिल भी स्थापित की। दामोदरदास जी राठी क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता देते थे।

प्रसिद्ध एडवोकेट, प्रखर बौद्धिक प्रतिभा के धनी और व्यापारिक सफलता प्राप्त करने वाले श्यामजी अजमेर म्यूनिस्पैलटी के सदस्य चुन गए।

यद्यपि श्यामजी अजमेर में जम गए और जहा तक आय का प्रश्न था उनकी आय बहुत अधिक थी परन्तु फिर भी वे किसी राज्य के दीवान पद को प्राप्त करने के लिए बहुत इच्छुक और प्रयत्नशील थे। इस उद्देश्य से वे राजपूताने के विभिन्न राज्यों से बातचीत कर रहे थे। महाराजा उदयपुर उनकी योग्यता से प्रभावित हुए और

उन्होने एक हजार रुपए मासिक पर उन्हें उदयपुर राज्य का दीवान नियुक्त कर
यह नियुक्ति पहली बार तीन वर्षों के लिए थी।

रतलाम की ही भांति श्री श्याम कृष्ण वर्मा ने महाराणा को अपनी वि
और कार्यकुशलता से इतना अधिक प्रसन्न और प्रभावित कर लिया कि व उनके प्र
प्रशंसक बन गए। परंतु श्यामजी की महत्वाकांक्षा उदयपुर के दीवान पद से नहीं
हुई। वे उससे भी अधिक विस्तृत कार्यक्षेत्र की खोज मे थे। १८९५ के प्रारम्भ मे
मनसुखाराम त्रिपाठी ने उन्हें जूनागढ के दीवान पद के लिए आमन्त्रित किया। श्या
ने अपनी शर्तों पर जूनागढ जाना स्वीकार कर लिया शर्तें यह थी कि उनकी नि
तीन वर्षों के लिए हो मासिक वेतन डेढ हजार रुपए हो। यदि रियासत उनको
वर्षों से पूर्व सेवा से मुक्त करना चाहे तो भी उन्हें पूरे तीन वर्षों का वेतन दिया जावे
यही नही उन्होने यह भी शर्त रक्खी कि नियुक्ति पत्र पर स्वयं नवाब के हस्ताक्षर
उनकी सभी शर्तें मानली गईं और वे जूनागढ के दीवान पद पर नियुक्त कर दिए ग

महाराणा उदयपुर श्यामजी कृष्ण वर्मा से बहुत प्रसन्न और प्रभावित
उन्होने अनिच्छा से श्यामजी को जूनागढ जाने दिया। महाराणा ने उन्हें एक वर्ष
सवेतन छुट्टी दे दी। और यदि वे उदयपुर पुन वापस आना चाहें तो उन्हें दीवान
पर नियुक्त करने का आश्वासन दे दिया।

यो तो प्रत्येक देशी राज्य मे षडयन्त्र तथा भ्रष्टाचार था परतु जूनागढ की
और भी खराब थी। नवाब नाम मात्र का नवाब था। सारी शक्ति और सत्ता जमा
बहाउद्दीन वजीर के हाथ मे थी। नायब दीवान पुरुषोत्तमराय नागर वास्तव मे दी
था। दोनो आपस मे मिलकर नाम मात्र के नवाब तथा दीवान की आड मे मन
ढग से राज्य का शोषण करते थे।

श्यामजी वर्मा के पूर्व जो भी दीवान थे उन्होने यह स्वीकार कर लिया था
उनके निर्णयों की स्वीकृत हुजूरी अदालत से वजीर के प्रतिनिधि के रूप मे नायब दी
करेंगे। श्यामजी भला इस प्रकार परोक्ष रूप से अधीनस्थ कर्मचारी नायब दीवा
हस्तक्षेप को कैसे सहन कर सकते थे। उन्होने इस प्रथा को समाप्त कर दिया।
वजीर तथा नायब दीवान श्यामजी के विरोधी हो गए। समस्त रियासत मे न
ब्राह्मणो का प्रभाव था। सभी महत्वपूर्ण पदो पर नागर ब्राह्मण नियुक्त थे और वे
मानी करते थे। रियासत का भयंकर शोषण हो रहा था भ्रष्टाचार चरम सीमा
कर गया था। श्यामजी ने जाते ही कठोरतापूर्वक इस लूट को समाप्त करना चा
समस्त नागर जाति और अधिकारी उनके विरुद्ध हो गए। वे उनके विरुद्ध षडयन्त्र
लगे। भाग्यवश उन्हें एक अंग्रेज सिविलियन मिल गया उसको मिलाकर उ
श्यामजी के विरुद्ध षडयन्त्र रचा कर लिया।

श्री ए० एफ० मकानाकी आक्सफोर्ड मे श्यामजी के सहपाठी थे वे ब्रि
सिविल सर्वेंट थे। बडौदा राज्य ने उनकी सेवाएं ले रक्खी थी। परन्तु व अत
अयोग्य तथा दम्भी थे। अतएव बडौदा राज्य से उनके निकाले जाने की स्थिति उ
हो गई थी। जब उन्होने देखा कि बडौदा मे उनके दिन समाप्त होने वाले हैं
उन्होने अपने सहपाठी श्याम कृष्ण वर्मा को सहायता के लिए लिखा। श्याम कृष्ण
ने दया कर उन्हें जूनागढ मे नियुक्त करवा दिया। उसी समय कर्नल हैनकाक का
वाड के राज्यो के ए० जी० जी० जो श्यामजी के अत्यन्त प्रशंसक थे छुट्टी पर चले

र कर्नल हंटर ने चार्ज लिया। श्यामजी के विरोधियों ने मैकानोची से मिलकर उनके रा कर्नल हंटर को श्यामजी का विरोधी बना दिया। विश्वासघाती मैकानोची ने चा कि श्यामजी को हटाकर वह स्वयं जूनागढ़ का दीवान बन जावे।

इस षड्यन्त्र का परिणाम यह हुआ कि एक सायंकाल उन्हें नवाब का पत्र ला कि उन्हें दीवान के पद से मुक्त किया जाता है। श्यामजी बीकानेर पालीटिकल टें से मिलने गए परन्तु उनके उस अंग्रेज सहपाठी ने उनके विरुद्ध वहां भी षड्यन्त्र कर स' था परन्तु अभी तक श्यामजी को यह ज्ञात नहीं था कि उनका सहपाठी उस यन्त्र में शामिल है। अतएव जब वे बीकानेर से लौटे तो १८ सितम्बर को उससे लने गए परंतु दरवाजे पर ही उनको मैकानोची का एक नोट उनके हाथ में दिया ा। उसमें लिखा था महाशय मैं आपसे मिलना अस्वीकार करता हूं मेरी आपके बारे बहुत बुरी राय है। मैं भविष्य में आपसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। यह उस ग्रेज सहपाठी का व्यवहार था जिसे श्यामजी ने नौकरी दिलवाई थी।

उसने केवल श्यामजी को अपमानित ही नहीं किया वरन श्यामजी के विरुद्ध नक झूठे आरोप लगाकर उसको विदेशी विभाग, पोलीटिकल एजेंटों, भारत सरकार, म्बई सरकार तथा विभिन्न राज्यों और समाचार पत्रों को एक विज्ञप्ति भेज दी।

महाराणा उदयपुर ने श्यामजी को पुनः उदयपुर के दीवान पद पर नियुक्त कर या। किन्तु उदयपुर के पालीटिकल एजेंट कर्नल बायली ने श्यामजी की नियुक्ति का रोध किया। बायली ने श्यामजी को लिखा कि वे बुरे आचरण के कारण जूनागढ़ निकाले गए हैं इस कारण वह उनका उदयपुर में नियुक्ति का समर्थन नहीं कर सकता ौर न उनसे दीवान के रूप में राजकीय व्यवहार ही कर सकता हूं। इधर अंग्रेज मर्थक पत्रों ने भी श्यामजी कृष्ण वर्मा के विरुद्ध विष उगलना आरम्भ कर दिया। रंतु महाराणा उदयपुर ने कर्नल बायली के विरोध की परवाह नहीं की और श्यामजी र्मा को दीवान मनोनीत कर दिया। कर्नल बायली को विवश होकर श्यामजी कृष्ण र्मा को दीवान स्वीकार करना पड़ा और उनसे राजनीतिक व्यवहार करना पड़ा।

अभी तक श्यामजी अंग्रेजों के बहुत बड़े प्रशंसक और भक्त थे। वे भी यह ानते थे कि अंग्रेज न्यायप्रिय हैं और भारत का हित ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत रहने में ही है। परंतु जूनागढ़ के कांड से उनकी आंखों के सामने जो आवरण था हट गया। न्होंने देखा कि जिस अंग्रेज सहपाठी को उन्होंने आपत्ति में शरण दी थी उसने केवल वश्वासघात ही नहीं किया वरन उसने जो पोलीटिकल एजंटों तथा भारत सरकार के विदेशी विभाग को उनके विरुद्ध पत्र लिख दिया तो बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी नको न्याय नहीं मिला। किसी ने उनके पत्रों की ओर ध्यान तक नहीं दिया क्योंकि ब्रिटिश न्यायप्रियता का भव्य और सुन्दर दृश्य उनकी आंखों के सामने से तिरोहित हो या और अंग्रेजों का वास्तविक स्वरूप प्रगट हो गया। यही नहीं जब उन्होंने जूनागढ़ ाज्य से अपने वेतन के चालीस हजार रुपए मांगे तो पोलीटिकल एजेंट ने उन्हें धोखा दिया और उनको उनके वेतन की रकम भी नहीं मिल सकी। इस कांड ने ब्रिटिश राज्य का सच्चा चित्र उनके सामने उपस्थित कर दिया। उन्होंने जान लिया भारत और ब्रिटेन के हित एक दूसरे के विरुद्ध है उनमें कोई साम्य नहीं है।

उस समय लोकमान्य बालगंगाधर तिलक भारत के राजनीतिक क्षितिज पर उभर आए थे। कांग्रेस में अंग्रेज भक्त नरम दलीय नेताओं से उनका संघर्ष आरम्भ हो

हो गया था। लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को लिखा और उनके सब कागज मगव उन्होंने 'मराठा' और 'केसरी' में श्यामजी के साथ जो अन्याय हुआ था उसको ब्रिटिश सरकार पर बहुत कड़े प्रहार किए। श्याम कृष्ण वर्मा तिलकजी की सहानु पाकर उनकी ओर आकर्षित हुए और क्रमश उनका तिलकजी से घनिष्ट स हो गया।

१९०७ में पूना के भयंकर अत्याचारों के फल स्वरूप तिलक ने जो सरकार का विरोध किया और नाटू बंधुओं ने जो क्रांतिकारी और पुरुषार्थित आ किया उसने श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनका भक्त और प्रशंसक बना दिया। उनक दृढ़ विश्वास बन गया कि अंग्रेजों को बलपूर्वक ही देश से निकाला जा सकता है क्रांतिकारी मार्ग ही देश को स्वतंत्र बनाने का सही मार्ग है। उसी समय नाटू ब को सरकार ने पकड़ कर अज्ञात स्थान में निर्वासित कर दिया। लोकमान्य तिल लम्बे समय के लिए कैद कर दिया। रैंड की हत्या के सम्बंध में चापेकर बंधुअ फांसी दे दी गई।

इन घटनाओं ने श्यामजी के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न उपस्थित कर दि वे कांग्रेस के नरम दलीय नेताओं की ब्रिटिश राज्य के प्रति भक्ति में विश्वास नह थे। वे तिलक के अनुयायी बन चुके थे। उनके सामने दो ही मार्ग थे। वे चाह एक सफल बैरिस्टर बन कर धन कमाते या व्यापार या व्यवसाय में प्रवेश क कारखाने स्थापित करते, अथवा राजनीति में प्रवेश कर तिलक की नीति को स्व कर उग्रदल का नेतृत्व करते। उन्होंने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए कार्य अपना जीवन उद्देश्य बना लिया किन्तु उन्होंने देखा कि भारत में लेखन और भाष स्वतंत्रता नहीं है और यदि वे भारत में रहे तो नाटू बंधुओं और तिलक की भांति भी निर्वासित कर दिया जायगा अस्तु उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि वह वि रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करेंगे। अस्तु उन्होंने भारत को छोड़ निश्चय कर लिया। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट में उनके भारत छोड़ कर जाने क दूसरा ही कारण बताया गया है। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार श्री श्य कृष्ण वर्मा का श्री रैंड की हत्या में हाथ था परंतु वे भारत से निकल गए इस व उन पर अभियोग नहीं चल सका (सेडीशन कमेटी रिपोर्ट पृ ४ ५)

इस सम्बंध में अपने पत्र 'इण्डियन सोस्योलाजिस्ट' में लिखते हुए उ लिखा था कि १८९७ में उन्होंने भारत और १९०७ की जुलाई में लंदन क्यों छोड़ा

'संस्कृत की एक कहावत है कि अपना पैर कीचड़ में रखकर फिर धोने अपेक्षा कीचड़ में पैर न रखना ही उत्तम है। एक दुष्ट सरकार द्वारा अपने क करने देना भूल है क्योंकि उससे कार्य रुक जाता है जबकि उस सम्भावना को जा उससे बचा जा सकता है।

आज से ठीक दस वर्ष पूर्व जब मेरे मित्र श्री बालगंगाधर तिलक और बंधु कैद कर लिए गए तो हमने भारत को छोड़ कर इंगलैंड में बसने का नि किया। अब जब कि हमारे मित्र लाला लाजपतराय को देश से निर्वासित कर गया तब हमारे भाग्य में लिखा था कि हम बहुत अधिक व्यय और असुविधा उ इंगलैंड को छोड़ कर पेरिस को अपना मुख्य निवास स्थान बनाए। यह हमार विश्वास है कि कोई भी भारतीय जो राजनीतिक स्वतंत्रता चाहता है और चाहता

उसका देश विदेशियों की दासता से जुए से मुक्त हो, ब्रिटिश साम्राज्य में कहीं भी सुरक्षित नहीं है। भारतीयों को छोड़ कर इगलैंड संसार के सभी देशों के राजनीतिक पीड़ितों के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल है।

जब श्यामजी लदन आए तो उन्होंने वहां भी कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार नहीं की वे कांग्रेस की नीतियों की कठोर आलोचना करते थे। लदन में रहकर उन्होंने उन सभी विदेशी नेताओं से सम्बध स्थापित किया कि जो अपने देश की स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे थे।

उसी समय ब्रिटिश सरकार का ट्रासवाल और आरेंज फ्री स्टेट से युद्ध छिड़ गया। बोयर युद्ध म महात्मा गाधी ने जो उस समय दक्षिण अफ्रीका म थे ब्रिटिश सरकार का साथ दिया। भारतीयो को ब्रिटिश की ओर से युद्ध करने के लिए भर्ती किया। श्यामजी लदन म भारतीयों के इस कृत्य की कठोर आलोचना करते थे। उन्होंने गाधी जी तथा उनके अनुयायियों की यह कह कर कि व साम्राज्यवादी आक्रमण का समर्थन करते हैं कड़ी भर्त्सना की। उन्होंने लिखा कि भारतीय स्वय अग्रेजो द्वारा स्वतत्र देशों को दास बनाए हुए हैं। उनका कहना था कि दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों का नाम इतिहास में श्रद्धा के साथ लिया जाता यदि वे अग्रेजो की सहायता करने के बजाय बोयर लोगों का अपनी स्वतत्रता की रक्षा के लिए जो वे युद्ध कर रहे थे उसमें उनकी सहायता करते।

बोयर युद्ध के परिणाम स्वरूप श्यामजी के मस्तिष्क म यह विचार दृढ हो गया कि भारतीयों मे बुद्धिवाद और स्वतत्रता की भावना को जागृति करना आवश्यक है। अतएव उन्होंने प्रसिद्ध दार्शनिक स्पैंसर के विचारो को भारत म फैलाने के लिए भारत मे प्रोफेसरों को नियुक्त करने की योजना तैयार की और स्पैंसर को लिखा। परतु स्पैंसर उस समय रोग शय्या पर था अतएव उस योजना के बारे मे कोई प्रभाव न दे सका और १६०५ मे उसका स्वर्गवास हो गया।

१४ दिसम्बर को स्पैंसर के अतिम संस्कार मे श्यामजी सम्मिलित हुए और जब गोल्डस ग्रीन म उस प्रसिद्ध दार्शनिक के प्रशसक और भक्त अपनी अतिम श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए इकट्ठे हुए तो श्यामजी न घोषणा की कि वे उस महान दार्शनिक के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय को एक हजार पौंड देंगे जिससे स्पैंसर लैक्चररशिप स्थापित की जावे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने न केवल आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय म ही स्पैंसर लैक्चर-रशिप की स्थापना करके ही सतोष नही कर लिया। अपितु उन्होंने हर्बर्ट स्पैंसर और स्वामी दयानद की स्मृति म भी दो हजार रुपए वार्षिक की ६ छात्रवृत्तियां भारतीय छात्रों के लिए स्थापित की। जो छात्र इसके लिए चुने जावेंगे उन्हें इङ्गलैंड मे अध्ययन करना होगा परतु केवल एक शर्त थी कि जो भी छात्र इस छात्रवृत्ति की सहायता से इङ्गलैंड मे अध्ययन करेगा वह भारत लौटने पर ब्रिटिश सरकार की नौकरी नही करेगा।

उन्होंने सर विलियम्स वैडरबर्न के द्वारा तत्कालीन कांग्रेस के अधिवेशन में अपनी छात्रवृत्तियां की घोषणा करवाना चाही परन्तु कांग्रेस ने उसकी घोषणा करने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस समय कांग्रेस अग्रेज भक्तों का एक समूह मात्र थी।

अभी तक श्यामजी सक्रिय राजनीति म नहीं उतरे थे परतु भारत म जो क्रांतिकारी आन्दोलन फूट पड़ा और बग भग के परिणाम स्वरूप भारत मे जो राज-

नीतिक क्षोभ उत्पन्न हुआ उसने श्यामजी को झकझोर दिया। उन्होने लदन से जनवरी १६०५ मे अपना प्रसिद्ध पत्र 'इडियन सोशियोलाजिस्ट' प्रकाशित करना प्रारम्भ किया जिसमे भारत की स्वतन्त्रता तथा सामाजिक सुधार के लिए क्रातिकारी विचारों को अपनाने का वे प्रभावशाली शब्दो म समर्थन करते थे।

'इडियन सोशियोलाजिस्ट' का उद्देश्य तथा आदर्श मत्र उन्होंने सम्पादक के शब्दों मे इस प्रकार व्यक्त किया—

'अभ्याक्रमण का प्रतिरोध केवल उचित ही नही वरन अनिवार्य है—प्रतिरोध न करने से परार्थ और स्वार्थ दोनो की हानि होती है।'

अब श्यामजी अपने पत्र के द्वारा भारत की दयनीय स्थिति का चित्रण उपस्थित करने लगे और यह बतलाने का प्रयत्न करते कि भारत की दासता ही वहा का सबसे बडा अभिशाप है। भारत की उन्नति तभी होगी जब भारत पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा।

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा केवल पत्र निकालकर ही सतुष्ट नही हुए उन्होंने ब्रिटेन म जो भी भारतीय थे उनका एक क्रातिकारी सगठन स्थापित किया। १८ फरवरी १६०५ को श्यामजी कृष्ण वर्मा के मकान पर बीस भारतीयो ने मिलकर 'इडियन होम रूल सोसायटी" की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत को स्वतन्त्र करना था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने हाईगट लदन मे भूमि और भवन खरीद कर वहां 'इडिया हाऊस' की स्थापना की। जो भारतीय छात्र श्यामजी की छात्रवृत्तिया पाकर लदन मे अध्ययन करने जाते वे तथा अन्य भारतीय छात्र जो यहा के उद्देश्यो को स्वीकार करें, रह सकते थे। वास्तव म इडिया हाऊस श्यामजी के नेतृत्व मे तरुण भारतीयो का क्रातिकारी केन्द्र बन गया।

श्यामजी ने इडिया हाऊस का उद्घाटन करने के लिए श्री हाइडमन को आमन्त्रित किया। उस समय उस सभा म इगलैंड के सभी राजनीतिक दलो के प्रतिनिधि तथा प्रमुख पत्रो के सम्वाददाता उपस्थित थे। श्रीमती डेस्पड (आयरलैंड) भी उस समारोह मे उपस्थित थी। श्री दादाभाई नौरोजी, लाला लाजपतराय, मैडम कामा श्री हसराज, श्री दोस्त मुहम्मद तथा अनेक भारतीय छात्र उपस्थित थे।

श्री हाइडमैन ने उस अवसर पर जो भाषण दिया वह ऐतिहासिक था उन्होने कहा 'आज जो स्थिति है उसम बृटेन के प्रति भक्ति और निष्ठा भारत के प्रति विश्वासघात है' मैं बहुत से भारतीयो से मिला हू उनमे से अधिकाश जो बृटिश शासन के प्रति भक्ति और निष्ठा की स्वीकारोक्ति करते हैं वह अत्यन्त अरुचिकर और घृणास्पद है। या तो वे सच्चे नही है या फिर वे अनभिज्ञ है। किन्तु मुझे यह देखकर प्रसन्नता और सतोष है कि भारत मे एक नई भावना उत्पन्न हो रही है। यहा इस सभा मे भारत के सभी भागो से तथा विभिन्न विचार वाले भारतीय उपस्थित हैं परन्तु भारत की स्वतन्त्रता सभी का एक समान लक्ष्य है।

स्वय इङ्गलैड से कोई आशा रखना व्यर्थ है, भारत की मुक्ति के प्रश्न को क्रातिकारी दृढ़ निश्चय वाले मातृभूमि के लिए अपने को बलिदान करने वाले लोग हल करेंगे।

इंडिया हाऊस की यह संस्था भारत की मुक्ति मार्ग में एक कदम है और आज जो लोग यहां जमा हैं उनमे से कुछ लोग उसकी सफलता के प्रथम पुष्पो को देखने के लिए जीवित रहेंगे।"

श्यामजी उन तथा कथित अग्रेजो के जो अपने को भारत का मित्र और हितैषी घोषित करते नही थकते थे, के कटु आलोचक थे। सर विलियम वैडरबन तथा उनके सहयोगियो के सम्बन्ध म लिखते हुए उन्होने कहा था।

"यद्यपि सर विलियम वैडरबन तथा उनके सहयोगी भारत के मित्र हैं परन्तु वे देशभक्ति के सकुचित प्रभाव से मुक्त नही हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य केवल मात्र भारत पर ब्रिटेन का अधिपत्य बनाए रखना है। अच्छे दासो का सचालन करने वाले मालिको की भाति अथवा भेड का मास खान वाले गडरियों की भाति व भारतीयो को सम्पन्न और सतुष्ट देखना चाहते हैं जिससे कि भारत मे ब्रिटिश शासन स्थायी बन सके।

श्यामजी के इन सब कार्यों का परिणाम यह हुआ कि भारत म ऐंग्लो इण्डियन प्रेस बौखला उठा उसने श्यामजी के विरुद्ध धुआधार विष वमन करना आरम्भ कर दिया। परतु राष्ट्रीय और क्रातिकारी विचारो के भारतीयो ने श्यामजी के प्रयत्नो की भूरि भूरि प्रशसा की वे उनकी श्रद्धा के पात्र बन गए। लोकमान्य तिलक ने लिखा कि आप जैसे यदि थोडे से कार्यकर्ता इङ्गलैंड मे और होते तो बहुत अधिक कार्य हो सकता था। आपने जिस त्याग की भावना से प्रेरित होकर इन सस्थाओ को जन्म दिया है उसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए।

एक ऐंग्लोइण्डियन सवाददाता ने लिखा था कि "भारत के लिए स्वायत्तशासन (होमरूल) व्यवहारिक राजनीति के क्षेत्र के नितात बाहर है। उसका उत्तर देते हुए श्यामजी ने इण्डियन शेश्योलाजिस्ट के अक्टाबर नवम्बर के अङ्का मे लिखा था।

"जो साम्राज्य एक दिन म बृटेन ने प्राप्त किया था एक रात्रि मे खो जावेगा।"

भारत मे न तो गोरे नौकर है, न गोरे सईस है न गोरे पुलिसमैन और पोस्टमैन हैं। कोई भी कर्मचारी तथा दुकानदार आदि गोरे नही हैं। यदि भारतीय एक सप्ताह के लिए गोरा का काम करना बद कर दें तो यह साम्राज्य ताश के पत्तो की तरह ढह जावेगा और प्रत्येक शासन करने वाला अग्रेज अपने मकान मे भूख से पीडित कैदी की भाति रहने पर विवश होगा। वह न कही जा सकेगा, न अपना भोजन प्राप्त कर सकेगा और न उसे पीने को पानी ही मिलेगा।

स्पष्ट है कि यदि कोई किसी की कोई चीज खरीदता बेचता नही अथवा किसी प्रचार का उससे वास्ता नही रखता तो कानून की दृष्टि से कोई अपराध नही करता है। अस्तु स्पष्ट है कि यदि भारतीय केवल अपने विदेशी शासको को सहायता करना बद कर दें तो बिना हिंसक क्राति किए ही वे अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सकते है।

तत्कालीन कांग्रेस म गोखले तथा नरम दलीय नेताओ का बोलबाला था। बग भग आदोलन चल रहा था बनारस कांग्रेस अधिवेशन के लिए गोखले सभापति चुने गए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र द्वारा श्री गोखले का खुलकर विरोध किया और लोकमान्य तिलक का समर्थन किया उन्होने श्री गोखले की नरम नीति और बृटेन की भक्ति की कठोर आलोचना की, उसका परिणाम यह हुआ कि ऐंग्लो इडियन प्रेस उनको अत्यत खतरनाक और विद्रोह फैलाने वाला कहकर बदनाम करने लगा।

परन्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा के कार्यों का प्रभाव पड़ने लगा था। कतिपय देशभक्त भारतीय भारत और भारत के बाहर उनके विचारों के समर्थक बनते जा रहे थे। उनमे श्री एस आर राना प्रमुख थे। यद्यपि वे पेरिस मे बस गए थे परन्तु वे श्यामजी कृष्ण वर्मा के निकट सम्पर्क मे थे और इंडियन होम रूल लीग के उपाध्यक्ष थे। उन्होने श्यामजी से प्रेरणा प्राप्त कर तीन छात्रवृत्तियां दो दो हजार रुपए की स्थापित की जो कि विदेश मे जाने वाले भारतीयों को दी जाती थी। उन्होने उनमे से दो छात्रवृत्तियां राणाप्रताप सिंह तथा शिवाजी के नाम पर रखी और तीसरी छात्रवृत्ति किसी मुस्लिम शासक, विचारक, अथवा भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने वाले मुस्लिम नेता के नाम पर रखने का प्रस्ताव रखा। श्री राना के इस प्रशंसनीय कार्य से सहमत होते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी ओर से ६ नई छात्रवृत्तियों की ओर घोषणा की। श्यामजी चाहते थे कि देशभक्त मेधावी भारतीय युवक उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत की दासता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए देश मे जाकर कार्य करें अतएव वे अपने पास जो भी धन था इस सद्कार्य मे लगाते थे। वे केवल राजनीतिक आन्दोलन कर्त्ता ही नही थे। वरन वे देश की स्वतन्त्रता के भवन की नीव को गहरी और मजबूत रखना चाहते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा जहा नरम दलीय नेताओं का विरोध करते थे और क्रान्तिकारियो और लोकमान्य तिलक का समर्थन करते थे वहा वे भारत के हितैषी बनने का दावा करने वाले ह्यूम, वैडरबन काटन आदि अग्रेज भारत हितैषियों का जिनका काग्रेस पर बहुत अधिक प्रभाव था कडी भर्त्सना करते थे। उनका कहना था कि इन कथित भारत हितैषी अग्रेजो से काग्रेस का अपना सम्बन्ध तोड देना चाहिए।

हैनरीकाटन के सम्बध मे लिखते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लिखा "प्रत्येक विचारवान भारतीय भारत के राजनीतिक पुनर्जीवन के प्रति निराश हो जाता है जब वह देखता है कि जिस ऐंग्लो इडियन ने पैंतीस वर्ष तक भारत का खून चूसा और जो आज भी एक हजार पौंड के रूप मे भारत के रुधिर को पी रहा है काग्रेस का मार्ग दर्शक है।"

श्यामजी की लेखनी इस भ्रम को छिन्न भिन्न करने मे बहुत सफल हुई कि अग्रजी शासन भारत के लिए एक वरदान है। इण्डियन शोस्योलाजिस्ट मे उनके धारा प्रवाह लेख तथ्यो के आधार पर कि वृटिश शासन मे भारत का सर्वांगिण पतन हुआ है प्रकाशित न होते तो यह भ्रम बना रहता। ऐंग्लो इडियन उनके इन लेखो का कोई समाधान कारक उत्तर तो दे नही पाते थे उनको हिंसक विप्लवी कह कर बदनाम करने का प्रयत्न करते थे। परन्तु विदेशो मे अध्ययन करने वाले भारतीयो तथा भारत मे विचारकों पर उनका गहरा प्रभाव पडता था।

उसी समय एक ऐसी घटना हुई जिसने भारत मे तथा विदेशो मे हलचल उत्पन्न कर दी। श्री पी० यम० बापट (जो बाद का सेनापति बापट के नाम से प्रसिद्ध हुए) बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर ऐडिनबरा विश्वविद्यालय मे सर मगलदास छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन कर रहे थे उन्होंने लदन मे भारत मे वृटिश शासन विषयक एक आलोचनात्मक भाषण दिया और उसको प्रकाशित भी करवा दिया उसका परिणाम यह हुआ कि उनकी छात्रवृत्ति बन्द कर दी गई।

लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को पत्र लिखकर श्री बापट की आर्थिक सहायता

देने के लिए कहा, साथ ही उन्होंने श्री विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर) को भी छात्रवृत्ति देने के लिए कहा। श्यामजी ने उन दोनों को ही छात्रवृत्तियां दीं। दोनों ही ने भविष्य में मां भारती के चरणों में अपना जीवन को समर्पित कर दिया। श्याम कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाऊस द्वारा इसी प्रकार उनके देशभक्तों को मातृभूमि के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी।

श्यामजी अत्यन्त स्पष्टवादी थे सिद्धान्त का जहां प्रश्न आता था तो वे बड़े से बड़े नेता पर कठोर प्रहार करने से नहीं चूकते थे। जब दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के अधिकारों के लिए गांधीजी लंदन आए तो उन्होंने उनकी यह कह कर आलोचना की कि उनके नेतृत्व में भारतीयों ने बोअर युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की, इस सम्बंध में इंडियन सोश्योलाजिस्ट में लिखते हुए उन्होंने आयरिश नेता श्री माइकेल के उन शब्दों का उल्लेख किया जो उन्होंने ब्रिटिश पार्लियामेंट में कहे थे "यदि मुझे केवल होम रूल ही नहीं वरन ब्रिटिश सरकार ट्रांसवाल के जनतंत्र की स्वतंत्रता को नष्ट करने के लिए लड़े जाने वाले इस युद्ध के पक्ष में एक शब्द बोलने या अपना एक वोट देने के बदले स्वतंत्र आयरिश जनतंत्र भी देती तो भी मैं इस युद्ध के पक्ष में एक शब्द या एक वोट नहीं देता। श्रीमन मैं आयरलैंड की स्वतंत्रता को दक्षिण अफ्रीका की स्वतंत्रता के विरुद्ध मत देने की नीचतापूर्ण कीमत पर नहीं खरीदूंगा।

दादा भाई नौरोजी और तिलक

इसी समय गोखले इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति की हैसियत से इङ्गलैंड आए। श्यामजी ने उनके आने पर नरम दलीय नीति की कड़ी आलोचना की। गोखले ने ४ अगस्त के "डेली न्यूज" के सम्वाददाता को इन्टरव्यू में यह कह दिया।

"कि पिछले कुछ महीनों में पूर्वीय बंगाल सरकार ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का जिस प्रकार दमन किया है प्रसन्नता की बात है कि ऐसी भूल भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास में और कभी नहीं हुई।"

श्यामजी ने कांग्रेस अध्यक्ष के इस वक्तव्य पर अपने पत्र में लिखा 'यह अत्यंत खेद और आश्चर्य की बात है कि जो व्यक्ति कुछ समय तक भारत के एक कालेज में इतिहास का प्रोफेसर रहा हो वह इङ्गलैंड में यह कहने का अहंकार पूर्ण दावा करे कि सर बैम्पफील्ड फुलर के शासन में पूर्वीय बंगाल में होने वाले अत्याचारों और दमन की समता करने वाला दमन ब्रिटिश शासन के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। उसके उपरान्त श्यामजी ने १८५७ के समय अंग्रेजों की क्रूरता और पाशविक अत्याचारों का विशद वर्णन किया। उन्होंने लिखा कि अंग्रेजों की क्रूरता, पाशविकता, विश्वासघात और नीचता के उदाहरण अन्यत्र कहीं ढूंढने से नहीं मिल सकते थे। उन्होंने लिखा कि श्री गोखले ब्रिटिश सरकार के कृपा पात्र हैं इस कारण वे सही स्थिति को कहना नहीं चाहते। मुझे खेद है कि दादा भाई नौरोजी भी उनका समर्थन करते हैं।

उस समय लोकमान्य तिलक स्वाराज्य स्वदेशी और विदेशी वस्तु बहिष्कार के आंदोलन के द्वारा नवचेतना भर रहे थे। विपिन चन्द्रपाल ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के सभापतित्व के लिए लोकमान्य तिलक के नाम का प्रस्ताव किया। नरम दल में हड़कम्प आ गया। नरम दलीय नेता नहीं चाहते थे कि तिलक कांग्रेस के सभापति हों परन्तु प्रश्न यह था कि तिलक का विरोध कौन करे। लोकमान्य के विरोध में किसी भी नेता के चुने जाने की सम्भावना नहीं थी। फिरोजशाह मेहता को एक युक्ति

परन्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा के कार्यों का प्रभाव पड़ने लगा था। जो देशभक्त भारतीय भारत और भारत से बाहर उनके विचारों के समर्थक बनते जा रहे थे। उनमें श्री राणा और राव प्रमुख थे। यद्यपि ये परिस में बस गए थे पर श्यामजी कृष्ण वर्मा के निकट सम्पर्क में थे और इंडिया होम रूल लीग के उपासक थे। उन्होंने श्यामजी से प्रेरणा प्राप्त कर तीन छात्रवृत्तियां दो हजार रुपए की स्थापित की जो कि विदेश में जाने वाले भारतीयों को दी जाती थीं। उन्होंने उनमें दो छात्रवृत्तियां राणाप्रताप सिंह तथा शिवाजी के नाम पर रखी और तीसरी छात्र वृत्ति किसी मुस्लिम शासक, विचारक, अथवा भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने वाले मुस्लिम नेता के नाम पर रखने का प्रस्ताव रखा। श्री राना के इस प्रशंसनीय कार्य से सहमत होते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी ओर से ६ नई छात्रवृत्तियों की ओर घोषणा की। श्यामजी चाहते थे कि देशभक्त सदाचारी भारतीय युवक उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत की दासता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए देश में जाकर कार्य करें अतएव वे अपने पास जो भी धन था इस सद्कार्य में लगाते थे। वे केवल राजनीतिक आंदोलन कर्त्ता ही नहीं थे। वरन वे देश की स्वतन्त्रता के भवन की नींव को गहरी और मजबूत रखना चाहते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा जहां नरम दलीय नेताओं का विरोध करते थे और क्रांतिकारियों और लोकमान्य तिलक का समर्थन करते थे वहां वे भारत के हितैषी बनने का दावा करने वाले ह्यूम, वैडरबर्न काटन आदि अंग्रेज भारत हितैषियों का जिनका कांग्रेस पर बहुत अधिक प्रभाव था कड़ी भर्त्सना करते थे। उनका कहना था कि इन कथित भारत हितैषी अंग्रेजों से कांग्रेस को अपना सम्बन्ध तोड़ देना चाहिए।

हैनरीकाटन के सम्बन्ध में लिखते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लिखा "प्रत्येक विचारवान भारतीय भारत के राजनीतिक पुनर्जीवन के प्रति निराश हो जाता है जब वह देखता है कि जिस ऐंग्लो इंडियन ने पचीस वर्ष तक भारत का खून चूसा और जो आज भी एक हजार पौंड के रूप में भारत के रुधिर को पी रहा है कांग्रेस का मार्ग दर्शक है।"

श्यामजी की लेखनी इस भ्रम को छिन्न भिन्न करने में बहुत सफल हुई कि अंग्रेजी शासन भारत के लिए एक वरदान है। इण्डियन सोश्यालाजिस्ट में उनके धारा प्रवाह लेख तथ्यों के आधार पर कि बृटिश शासन में भारत का सर्वांगीण पतन हुआ है प्रकाशित न होते तो यह भ्रम बना रहता। ऐंग्लो इंडियन उनके इन लेखों का कोई समाधान कारक उत्तर तो दे नहीं पाते वे उनको हिंसक विप्लवी कह कर बदनाम करने का प्रयत्न करते थे। परन्तु विदेशों में अध्ययन करने वाले भारतीयों तथा भारत में विचारकों पर उनका गहरा प्रभाव पड़ता था।

उसी समय एक ऐसी घटना हुई जिसने भारत में तथा विदेशों में हलचल उत्पन्न कर दी। श्री पी० एम० बापट (जो बाद को सेनापति बापट के नाम से प्रसिद्ध हुए) बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर एडिनबरा विश्वविद्यालय में सर मंगलदास छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन कर रहे थे, उन्होंने लंदन में भारत में बृटिश शासन विषयक एक आलोचनात्मक भाषण दिया और उसको प्रकाशित भी करवा दिया उसका परिणाम यह हुआ कि उनकी छात्रवृत्ति बंद कर दी गई।

लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को पत्र लिखकर श्री बापट को आर्थिक सहायता

देने के लिए कहा, साथ ही उन्होंने श्री विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर) को भी छात्रवृत्ति देने के लिए कहा। श्यामजी ने उन दोनों को ही छात्रवृत्तियां दीं। दोनों ही ने भविष्य में मां भारती के चरणों में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। श्याम कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस द्वारा इसी प्रकार उनके देशभक्तों को मातृभूमि के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी।

श्यामजी अत्यन्त स्पष्टवादी थे सिद्धान्त का जहां प्रश्न आता था तो वे बड़े से बड़े नेता पर कठोर प्रहार करने से नहीं चूकते थे। जब दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के अधिकारों के लिए गांधीजी लंदन आए तो उन्होंने उनकी यह कह कर आलोचना की कि उनके नेतृत्व में भारतीयों ने बोअर युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की, इस सम्बंध में इंडियन सोश्योलाजिस्ट में लिखते हुए उन्होंने आयरिश नेता श्री माइकेल के उन शब्दों का उल्लेख किया जो उन्होंने ब्रटिश पार्लियामेंट में कहे थे 'यदि मुझे केवल होम रूल ही नहीं वरन ब्रटिश सरकार ट्रांसवाल के जनतंत्रों की स्वतंत्रता का नष्ट करने के लिए लड़े जाने वाले इस युद्ध के पक्ष में एक शब्द बोलने या अपना एक वोट देने के बदले स्वतंत्र आयरिश जनतंत्र भी देती तो भी मैं इस युद्ध के पक्ष में एक शब्द या एक वोट नहीं देता। श्रीमन मैं आयरलैंड की स्वतन्त्रता को दक्षिण अफ्रीका की स्वतन्त्रता के विरुद्ध मत देने की नीचतापूर्ण कीमत पर नहीं खरीदूंगा।

दादा भाई नौरोजी और तिलक

इसी समय गोखले इंडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति की हैसियत से इङ्गलैंड आए। श्यामजी ने उनके आने पर नरम दलीय नीति की कड़ी आलोचना की। गोखले ने ४ अगस्त के "डेली न्यूज" के सम्वाददाता को इंटरव्यू में यह कह दिया।

"कि पिछले कुछ महीनों में पूर्वीय बंगाल सरकार ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का जिस प्रकार दमन किया है प्रसन्नता की बात है कि ऐसी भूल भारत में बृटिश शासन के इतिहास में और कभी नहीं हुई।'

श्यामजी ने कांग्रेस अध्यक्ष के इस वक्तव्य पर अपने पत्र में लिखा 'यह अत्यन्त खेद और आश्चर्य की बात है कि जो व्यक्ति कुछ समय तक भारत के एक कालेज में इतिहास का प्रोफेसर रहा हो वह इङ्गलैंड में यह कहने का अहंकार पूर्ण दावा करे कि सर बैम्पफील्ड फुलर के शासन में पूर्वीय बंगाल में होने वाले अत्याचारों और दमन की समता करने वाला दमन बृटिश शासन के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। उसके उपरान्त श्यामजी ने १८५७ के समय अंग्रेजों की क्रूरता और पाश्विक अत्याचारों का विशद वर्णन किया। उन्होंने लिखा कि अंग्रेजों की क्रूरता, पाश्विकता, विश्वासघात और नीचता के उदाहरण अन्यत्र कहीं ढूंढने से नहीं मिल सकते थे। उन्होंने लिखा कि श्री गोखले बृटिश सरकार के कृपा पात्र हैं इस कारण वे सही स्थिति को कहना नहीं चाहते। मुझे खेद है कि दादा भाई नौराजी भी उनका समर्थन करते हैं।

उस समय लोकमान्य तिलक स्वाराज्य स्वदेशी और विदेशी वस्तु बहिष्कार के आंदोलन के द्वारा नवचेतना भर रहे थे। विपिन चन्द्रपाल ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के सभापतित्व के लिए लोकमान्य तिलक के नाम का प्रस्ताव किया। नरम दल में हड़कम्प आ गया। नरम दलीय नेता नहीं चाहते थे कि तिलक कांग्रेस के सभापति हों परन्तु प्रश्न यह था कि तिलक का विरोध कौन करे। लोकमान्य के विरोध में किसी भी नेता के चुने जाने की सम्भावना नहीं थी। फिरोजशाह मेहता का एक युक्ति

सूभी उन्होंने दादा भाई नौरोजी का नाम प्रस्तावित कर दिया। दादा भाई उस समय वृटिश पार्लियामेंट के सदस्य थे दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे परन्तु फिर भी उन्होंने चुनाव में खड़ा होना स्वीकार कर लिया। उनका नरम और गरम दोनों ही आदर की दृष्टि से देखते थे। जब श्यामजी को नरम दल के नेताओं की इस चाल का पता चला तो वे बहुत अधिक क्षुब्ध हुए परन्तु उन्होंने दादा भाई के विरुद्ध एक महीने तक कुछ नहीं लिखा। वे दादा भाई को व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस के सभापति पद के लिए खड़े न होने के लिए तैयार करना चाहते थे। इस उद्देश्य से श्याम कृष्ण वर्मा ने गांधी जी के द्वारा दादा भाई के पास अपना संदेश भेजा। गांधीजी बहुधा उन दिनों श्यामजी से मिलते थे साथ ही श्याम कृष्ण वर्मा ने उस लेख की एक प्रतिलिपि भी भेजी जो यदि दादा भाई ने उनकी बात न मानी तो वे प्रकाशित करने वाले थे। किन्तु दादा भाई नरम दलीय नेताओं के इतने अधिक प्रभाव में थे कि उन्होंने श्यामजी की बात पर ध्यान नहीं दिया। गांधीजी ने लिखा कि वे श्यामजी के कहे अनुसार बैठने के लिए तैयार नहीं हैं साथ ही गांधीजी ने श्यामजी को यह भी लिखा कि ऐसी दशा में वयोवृद्ध और सम्माननीय देशभक्त नेता की निन्दा करना महान अपराध और पाप होगा।

किन्तु श्यामजी सिद्धांत से समझौता करने वालों में से नहीं थे। अस्तु नवम्बर के शोस्यालाजिस्ट में दादा भाई नौरोजी के राजनीतिक कार्यों की कड़ी निन्दा करते हुए श्यामजी का लेख प्रकाशित हुआ। श्यामजी ने दादा भाई नौरोजी के लगभग पचास वर्षों के इङ्गलैंड में रहकर किए गए राजनीतिक कार्य के कारण जो उनके व्यक्तित्व के प्रति परम्परागत आदर की भावना उत्पन्न हो गई थी उस पर कठोर प्रहार किया उन्होंने लिखा।

'हमने दादा भाई नौरोजी के इङ्गलैंड में लम्बे समय तक रहकर किए गए राजनीतिक कार्य का मूल्यांकन करने के लिए यथेष्ट परिश्रम किया है और हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि उनका राजनीतिक कार्य खेदजनक रूप से असफल रहा। उस लम्बे लेख में उन्होंने दादा भाई नौरोजी के राजनीतिक कार्यों की कड़ी आलोचना की परन्तु उनके आर्थिक विचारों की प्रशंसा की।

श्यामजी ने केवल लेखों द्वारा ही लोकमान्य तिलक की विचार धारा का समर्थन नहीं किया वरन उन्होंने २३ फरवरी १६०७ को इण्डियन होम रूल सोसायटी की वार्षिक बैठक में लंदन में घोषणा की कि वे भारत में राजनीतिक कार्यकर्ताओं का एक संगठन खड़ा करने के लिए दस हजार रुपये का दान देंगे और इस सम्बन्ध में लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और खापर्डे से परामर्श करेंगे। इसके लिए एक नई समिति का संगठन किया गया। सर्वप्रथम इस योजना में गरम दल के विचारों का प्रचार करने के लिए श्री विपिनचन्द्र पाल व्याख्याता मनोनीत किए गए। इस प्रकार श्याम कृष्ण वर्मा विदेश में बैठकर भी कांग्रेस में क्रांतिकारी विचारों वाले राजनीतिकों की सफलता के लिए कार्य करते रहे।

उनकी नजर देशी राज्यों पर भी थी। वे जानते थे कि बहुत से देशी नरेश वृटिश शासन के विरोधी हैं उन्हें उनकी आधीनता अखरती है यदि प्रयत्न किया जावे तो देशी नरेशों को भी क्रांतिकारी दल में सम्मिलित किया जा सकता है और उनका सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही वे यह भी जानते थे कि देशी राज्यों में क्रूरता और निरंकुशता है अतएव उन्होंने कई लेख लिखे कि देशी नरेशों को अपने

राज्यो मे क्या करना चाहिए।

पहले लेख मे उन्होने देशी नरेशों का राष्ट्र की सेवा के लिए आह्वान करते हुए नीचे लिखे सुधारो पर बल दिया।

(१) प्रत्येक राज्य मे मालगुजारी क्रमश पांच वर्षों के अन्दर आधी करदी जाये।

(२) किसी भी परिस्थिति मे देशी राज्यो मे आयकर न लगाया जावे।

(३) अंग्रेज अधिकारियो और विशेषकर ऐंग्लो इडियनो को किसी देशी नरेश को अपने यहां नौकर नही रखना चाहिए।

(४) प्रत्येक देशी राज्य मे नरेश अपनी प्रजा का राज्य परिषद मे अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजने का अधिकार दे। परिषद को कानून बनाने, वर्तमान कानूनो मे संशोधन संलग्न करने तथा कर लगाने का अधिकार हो। परिषद की सहमति के बिना कोई नया कर न लगे।

(५) देशी नरेशो को अपने जागीरदारो सरदारो से झगडा नही करना चाहिए जिससे विदेशी सत्ता उनके आंतरिक मामलो मे हस्तक्षेप न कर सके।

(६) जिस प्रकार की सरकार ब्रटेन मे प्रचलित है ठीक उसी प्रकार की सरकार देशी नरेश अपने राज्य मे स्थापित करें यह उनके तथा प्रजा के हित मे है।

(७) यदि कोई देशी नरेश ऊपर लिखे सिद्धातो को कार्यान्वित करेगा तो लोग उसे देश का शुभेच्छु मानेंगे और स्वतंत्र भारतीय जनतंत्र का वह प्रथम राष्ट्रपति बन सकता है।

श्यामजी कृष्ण वर्मा एशियाई देशो की स्वतंत्रता के प्रयत्नो की अपने पत्र मे विशद चर्चा करते थे। और भारतीयो को उत्साहित करते थे। आयरलैंड के स्वतंत्रता के आदोलन से प्रेरणा लेने के लिए वे आयरलैंड के देशभक्तो के भाषणो का अपने पत्र मे दिया करते थे यही कारण था कि जब दो आयरिश देशभक्तो पर डब्लिन मे राजद्रोहात्मक पर्चो को चिपकाने के अपराध मे अभियोग चलाया गया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उस पर्चे के लेख का पूरा का पूरा अपने पत्र म छाप दिया। और अपने भारतीय पाठको का उस उदाहरण से पाठ पढने के लिए कहा। वह लेख इस प्रकार था।

"आयरिशमैन" क्या तुम अपने देश को इगलिश आर्मी, नेवी म तथा पुलिस मे भरती हाकर, दासता म जकड और इगलैंड की एडी के नीचे दबाए रखना चाहते थे?

तुम्हारी प्यारी मातृभूमि की कलाइयो म दासता की हथकडी मजबूत और जकडी हुई है क्या तुम उस जजीर और हथकडी का सेना मे भर्ती होकर कि जो उसको दास बनाए हुए है और अधिक जकडन म सहायता करोगे?

तुम आइरिश राष्ट्र को ऊचा उठाने म अग्रेजी सेनाओ म भर्ती न हाकर मदद कर सकते हो। यदि तुम आयरिश हो, तुमको आयरलैंड के प्रति सच्चा होना चाहिए और घृणित सैक्सन धन शिलिंग को लेने से इनकार कर तुम अपनी मातृभूमि 'इरिन' को पुन एक राष्ट्र की स्थिति म पहुचाने म अपना हाथ बटा सकते हो।

श्यामजी भी लगातार यह प्रचार करते थे और भारतीयो को सरकारी नौकरी न करने तथा सरकार से सहयोग न करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनका मानना था कि यह विदेशी शासन को समाप्त करने का सबसे शांतिपूर्ण और अहिंसक

तरीका है।

उस समय तक १८५६ के भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम संघर्ष का पचास वाँ वप आ गया था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उसकी जुबली मनाने, और भारतीयों को उन वीरा की याद करने के लिए धुंआधार प्रचार किया।

१० मई को वीर दामादर विनायक सावरकर जो उस समय लदन मे इडिया हाऊस म अध्ययन करते थे उनके प्रयत्ना से १८५७ के विद्रोह की जयन्ती मनाई गई।

उसी दिन भारत म लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को सरकार ने बद कर लिया और उन्ह अज्ञात स्थान को ले जाया गया समस्त भारत मे क्षोभ की लहर फैल गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने वटिश शासन पर कठोर प्रहार किया अपने लेख में उन्होंन लिखा कि "लाला लाजपतराय का देश निकाला एक ऐसी घटना है जो हमारी सम्मति म भारत म वृटिश शासन के पतन का पूर्वाभास है। एक सस्कृत श्लोक है जिसमे कहा गया है कि जब दुर्भाग्य आता है ता मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हा जाती है। जिस प्रकार राम जस प्रसिद्ध शासक एक लोभी व्यक्ति की भांति स्वण हिरन के पीछे भागे यद्यपि सोने का हिरन का अस्तित्व ही एक असम्भव बात थी। अत म उन्होंने लिखा कि लाला लाजपतराय का यह बलिदान भारतीया को प्रेरणा देगा और इस सत्य को उद्‌भासित करेगा कि ससार की उन्नति के चरण एक सूली से दूसरी सूली की ओर बढते हैं।

भारतीय क्रांति की जननी मैडम कामा ने सोशयोलाजिस्ट मे लाला लाजपतराय की गिरफ्तारी पर भावनापूर्ण शब्दो म लिखा और अपने देशवासियो से आवेशपूर्ण शब्दो म अपील की।

"एक प्रात काल मुझे यह जानकर गहरा धक्का लगा कि लाल लाजपतराय हममे से एक सच्चे देशभक्त को उनके घर से ले जाया गया और वे बन्दी बना दिए गए।

"भारत के स्त्री पुरुषो, इस क्रूर अत्याचार का साहस के साथ विरोध करो। दृढ निश्चय करलो कि चाहे समस्त भारतीय जनसख्या नष्ट क्यो न हो जाय परन्तु हम इस दासता का जीवन व्यतीत नही करेंगे।

"भारत, परशिया, अरेबिया के प्राचीन वैभव के गीत गाने से क्या लाभ जबकि आज तुम दासता का जीवन व्यतीत कर रहे हो। वीर राजपूतो, सिक्खो, पठानो गुरखाओ देश भक्त मराठा और बगालियो, चेतनाशील पारसियो और साहसी मुसल माना और तुम शात प्रकृत जैनियो और धैर्यवान हिंदू महान जातियो के पुत्रो तुम अपनी गौरवशाली परम्पराओ के अनुसार क्या नही रहते। क्या बात है जो कि तुम्हें दासता का जीवन व्यतीत करन के लिए विवश करती है। उठो स्वराज्य के अतगत समानता और स्वतत्रता स्थापित करो। अपनी भावी सताना के भविष्य का निर्माण करन के लिए उठ खड हो। भाइयो और बहिना मानव के अधिकारो के युद्ध के लिए लडो और पश्चिम का यह बतलादो कि पूव पश्चिम को कुछ सिखा सकता है। अग्रेज जिसे प्रसिद्ध कवि वडसवथ के पौत्र श्री विलियम वडसवथ ने 'श्वेत वस्त्र म राक्षसों की सज्ञा दी शिक्षा दो।

मैं सोचती हू कि यदि मैं जेल के फाटका को तोडकर लाला लाजपतराय को बाहर निकाल ला सकती—लाजपत जस देशभक्त का जेल की दूषित वायु म श्वास

लेने के लिए नही छोडा जा सकता ।

हमें एक हो जाना चाहिए । यदि हम लाला लाजपतराय की भांति निडर होकर बहादुरी से बोलें तो सरकार को हम सबो का देश से निष्कासित करने के पूर्व बंद रखने के लिए अगणित कैद खाने बनाने होंगे । हम संख्या में तीस करोड हैं। हमको केवल एकता की आवश्यकता है और इस संकट के समय हममें उसकी कमी है ।

मित्रो स्वाभिमान जागृत करो और उसका प्रदर्शन करो । इस निरंकुश शासन को उसके लिए किसी रूप में भी सेवा करने से इनकार करके ठप्प करदो ।

भारत एकता के सूत्र में बंध कर उठ, आज वंदेमातरम मंत्र से जागृत होकर उठ खड़ा हो । श्रीमती कामा की यह अपील सोश्योलॉजिस्ट के जून के अंक में केवल प्रकाशित ही नही हुई परंतु ७ जून, १९०७ को इण्डिया हाउस में भारतीयों की सभा में पढ़ कर सुनाई भी गई।

अंग्रेज राजनीतिज्ञ श्यामजी कृष्ण वर्मा से बहुत क्षुब्ध हो उठे । उन्होने देखा कि इंग्लैंड की राजधानी में ही बैठ कर श्यामजी कृष्ण वर्मा ब्रिटिश शासन पर कठोर प्रहार कर रहे हैं । सब प्रथम टाइम्स ने उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही करने के सम्बंध में टिप्पणी लिखी । उसके बाद सभी पत्रों ने उनके विरुद्ध लिखना आरम्भ किया। पार्लियामेंट में उनके विरुद्ध जिहाद बोल दिया गया ।

एक फ्रांसिस यफ स्त्राठन ने लिखा कि इस स्काऊड्रल (दुष्ट) के कारण बहुत से भारतीय तरुण जिन्हें उनके सम्बंधियों ने मेरी देख रेख में रख दिया था बिगड गए।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उसका उत्तर देते हुए लिखा "स्काऊड्रल" शब्द बहुत मजेदार है । वह केवल यह बतलाता है कि अपने राजनीतिक विरोधी को बदनाम करने के लिए एक ऐंग्लो इंडियन नीचता की कितनी गहराई तक उतर सकता है ।

स्काटलैंड याड के गुप्तचर अब श्यामजी कृष्ण वर्मा के चारो ओर चक्कर काटने लगे । सोश्योलाजिस्ट की पिछली प्रतियों को गुप्तचर ले गए । आए दिन स्काटलैंड याड के अधिकारी पूछ ताछ के लिए आने लगे ।

उसी समय श्यामजी कृष्ण वर्मा ने फ्रांसीसी क्रांति के प्रसिद्ध गीत "ला मार्सलाज" जो क्रांति के उपरांत फ्रांस का राष्ट्रीय गीत बन गया, अपने पत्र में प्रकाशित किया और साथ ही उसका हिंदी उर्दू संस्कृत, बंगला गुजराती, मराठी अनुवाद भी छाप दिया जिससे कि वह क्रांति गीत समस्त भारत के लोग गा सकें—

गीत

चलो तुम स्वदेश के सब जन
फतह का आ गया अब दिन
झण्डा जुल्म का खूनी
चढा है रंग अपनी
मैदान में सुनते हो यार
जालिम सैनिकों की ललकार
देखो तुम आते हैं वे पास
करने पुत्र प्रिया का नाश
स्वदेशी चलो लो हथियार

करो तुम पल्टनें तैयार
खून से होवे खेत भरपूर

श्यामजी कृष्ण वर्मा समझ गए कि अब उन पर वार होने वाला है। श्यामजी के सामने अब केवल तीन ही विकल्प थे। या तो क्षमा माग कर भविष्य में अपने काय को बद कर दिया जाय। अथवा बृटिश जेल म सडा जावे। तीसरा विकल्प यह था कि इगलैंड को छोडकर किसी अन्य देश को चला जाय। बृटिश सरकार से क्षमा मागने की वे कल्पना भी नही कर सकते थे और जेल म बद हाकर निष्क्रिय पसद नही करते थे अस्तु उन्होने पेरिस चले जाने का निणय किया और उन्हाने इग छोड दिया।

इस सम्बध मे अपने पत्र के सितम्बर के अक मे उन्होंने लिखा।

"सस्कृत मे एक कहावत है कि अपना पैर गदगी म रख कर धाने की बजाय पैर को गदगी मे न रखना ही श्रेष्ठ है। दूसरे शब्दो म यह मूर्खता होती है कि का एक क्रूर और असहानुभूतिपूण सरकार द्वारा अपने को कैद हो जाने दे और इस प्रकार अपने काय करने की स्वतत्रता नष्ट करदे। इस सिद्धात के अनुसार मैंने अपने राष्ट्र के उद्देश्य को जानकर इगलड को सदा के लिए छोड दिया।

आज से ठीक दस वष हुए जब हमारे परम मित्र बालगगाधर तिलक तथा नाटूबधु गिरफ्तार हुए थे हमने भारत छोडकर इङ्गलड म बसने का निश्चय किया था और अब जबकि हमारे दूसरे मित्र लाला लाजपतराय को देश से निष्कासित कर दि गया है तब हमारे भाग्य म यह लिखा था कि हम इङ्गलड छोडकर पेरिस को अप निवास स्थान बनाए। हम पूण विश्वास हो गया है कि काई भी भारतीय जो रा नीतिक स्वतत्रता का प्रेमी है-और अपनी मातृभूमि की वतमान अत्याचारी विदे दासता से मुक्ति चाहता है बृटिश साम्राज्य म कही भी सुरक्षित नही है।

उस समय भारत मे क्रान्तिकारियो पर घोर दमन चक्र चल रहा था। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र के द्वारा अग्रेजो के इस दमन की कथा समस्त योरोप सभी देशो को सुनाई तथा अमेरिका म उन्होने भारत के लिए सहानुभूति उत्पन्न क दी। उधर व भारतीय क्रान्तिकारियो को प्रोत्साहन देते और सहायता पहुचाते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत की स्वतत्रता प्राप्ति के लिए जो कायक्रम बना या उसका रूप बहुत कुछ महात्मा गाधी के असहयोग आदोलन से मिलता जुलता था उन्होने अपने पत्र म अग्रेजो से युद्ध करने के लिए नीचे लिखी योजना प्रकाशित की थी

१—किसी भी भारतीय को अपना धन बृटिश अथवा भारत सरकार सिक्यूरिटियो म नही लगाना चाहिए और जो भी सरकारी प्रामिसरी नो या बाड हो उन्हे तुरत भुना लेना चाहिए।

२—भारतीयो को समस्त भारतीय सरकार के ऋण का अस्वीकार कर देना चा स्वतत्र भारत उस कज का भुगतान करने के लिए जिम्मेदार न होगा।

३—प्रत्येक भारतीय को बृटिश सरकार के अधीन सैनिक अथवा नागरि सेवाओ को अस्वीकार कर देना चाहिए।

४—समस्त भारत मे हडताल का आयोजन करना चाहिए। आम हडताल द्वारा सरकारी तत्र को ठप्प कर देना चाहिए।

५—भारतीयो को सरकारी स्कूलो और कालेजो का बहिष्कार करना चाहि

और राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाएं स्थापित करनी चाहिए।

६–भारतीय वकीलों को सरकारी अदालतों का बहिष्कार करना चाहिए और राष्ट्रीय न्यायालय स्थापित करने चाहिए।

७–भारतीयों को उन सभी ऐंग्लो इण्डियन पेपर्स का बहिष्कार करना चाहिए जो भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन का विरोध करते हैं।

८–अन्त में श्यामजी ने भारत के सभी हितैषियों और मित्रों का इस बात के लिए आह्वान किया कि वे भारतीयों को बतलाएं कि यह अत्यन्त लज्जाजनक बात है कि वे बृटिश सरकार द्वारा भारत पर अपना अधिपत्य बनाए रखने में सहायता करें साथ ही भारतीयों में राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की भावना को पोषित करें। जिससे कि बृटेन का अधिपत्य भारत पर टिक सकना असम्भव हो जाय।

श्यामजी का एक विचार यह भी था कि भारत तथा उन सभी देशों के स्वतन्त्रता आन्दोलनों में एकता का सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए जो कि बृटिश दासता से मुक्ति पाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

यद्यपि श्यामजी की योजना शांतिपूर्ण ढंग से स्वतन्त्रता प्राप्त करने की थी परन्तु श्यामजी का यह भी कहना था कि यदि बृटिश सरकार उसी प्रकार कठोर दमन करती रही और भारतीयों को शांतिपूर्वक ढंग से आन्दोलन नहीं करने दिया तो हिंसा को बचाया नहीं जा सकता। किसी भी पराधीन देश के लिए यदि हिंसा द्वारा मुक्ति मिल सकती हो तो उसको उसे स्वीकार करना चाहिए।

उस समय भारत सरकार ने श्यामजी के पत्र 'इण्डियन शोस्योलाजिस्ट' के प्रवेश को भारत में वर्जित कर दिया था किन्तु गुप्त रूप से पत्र भारत में आता था और लोग गुप्त रूप से उसे खूब पढ़ते थे। भारत में उसकी बहुत मांग थी और उसका यहां की राजनीति पर गहरा प्रभाव था।

उसी समय सूरत में कांग्रेस में फूट पड़ गई। गरम दल और नरम दल एक दूसरे से पृथक हो गए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने तिलक जी का जोरदार शब्दों में समर्थन किया और उन्हें साहसिक निर्णय पर बधाई दी।

श्यामजी और राणा के पेरिस चले जाने के उपरान्त इंडिया हाऊस की देखभाल तथा इङ्गलैंड में भारतीय राष्ट्रवादियों का नेतृत्व वीर सावरकर के हाथ में आ गया था। उन्होंने जब १० मई १९०८ को १८५७ के भारतीय विद्रोह की जयन्ती इंडिया हाऊस में मनाई तो इङ्गलैंड के पत्रों ने उसमें घोर अराजकता की गंध पाई और उसका कड़ा विरोध किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उसका खुले रूप में समर्थन किया। उस समय में भारत में क्रांतिकारी युवकों को फांसी दी जा रही थी। गोलियों से क्रांतिकारियों का शिकार किया जा रहा था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने प्रफुल्ल चाकसी, खुदीराम बोस, कनाई लाल, दत्त सत्येन्द्र नाथ बोस जो मातृभूमि की बलीवेदी पर शहीद हो गए उनके स्मारक स्वरूप उनके नाम की छात्रवृत्तियां घोषित की। जब मदन लाल धींगरा ने लंदन में कर्नल वायली की हत्या कर दी तो समस्त इङ्गलैंड में भय और सनसनी फैल गई।

धींगरा ने भारतीय क्रांतिकारी इतिहास में एक नया और गौरवशाली अध्याय जोड़ दिया था। उसने भारतीय विद्रोह का बृटिश साम्राज्य के हृदय में उसकी राजधानी में शङ्खनाद किया था। बृटेन की जनता इस साहसिक कार्य से अत्यन्त आतंकित और

क्षुब्ध हो उठी थी। वृटेन के पत्रों ने इस काण्ड में श्यामजी कृष्ण वर्मा का हाथ बताया और उन्होंने सरकार से माग की कि श्यामजी कृष्ण वर्मा को वायली की हत्या के लिए उत्तरदायी ठहराया जावे और उन पर अभियोग चलाया जावे। फ्रेंच सरकार से कहा जावे कि वे उन्हें वृटिश सरकार के सुपुर्द कर दें।

लंदन के प्रमुख पत्र ने लिखा "कर्जन वायली की हत्या के अपराध में श्यामजी कृष्ण वर्मा पर अभियोग चलाना साधारण न्याय का कार्य होगा और न्यायाधीशों का निर्णय ही इङ्गलैंड की जनता का भी निर्णय होगा।

जब वृटेन के समस्त पत्रों ने मिलकर एक स्वर से श्यामजी कृष्ण वर्मा को कर्जन वायली की हत्या के सम्बन्ध में अपराधी घोषित किया तब प्रथम बार अपने राजनीतिक जीवन में श्यामजी कृष्ण वर्मा थोड़े विचलित हो गए। २ जुलाई के प्रातःकाल पेरिस के 'डेली मेल' समाचार पत्र के प्रतिनिधि ने जब उनको कर्जन वायली की हत्या का समाचार सुनाया और वृटिश पत्रों द्वारा उनका उस हत्या से सम्बन्ध बतलाया तो वे भ्रमित हो गए। उस पत्र प्रतिनिधि ने उनकी मानसिक स्थिति का पूरा लाभ उठाया और उनके विचारों को घटा बढ़ा कर और तोड़ मरोड़ कर प्रकाशित कर दिया।

डेली मेल के प्रतिनिधि ने जब उनसे पूछा कि धींगरा का इंडिया हाउस से सम्बन्ध था या नहीं तो उन्होंने कहा कि "जहां तक उन्हें ज्ञात है कि इस नाम का कोई भारतीय युवक इंडिया हाउस में नहीं रहा। जब पत्रकार ने उसको कृत्य के औचित्य पर उनके विचार जानने चाहे तो पहले तो उन्होंने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया, पत्र प्रतिनिधि का कहना था कि मेरे विशेष बल देने पर उन्होंने उस कृत्य की निन्दा की और कहा कि मेरे विचार में यद्यपि इस प्रकार की राजनीतिक हत्याएं भारत में सर्वथा उचित हैं परंतु इङ्गलैंड अथवा विदेशों में निंदनीय हैं।'

उक्त पत्र प्रतिनिधि से श्यामजी कृष्ण वर्मा ने क्या कहा यह किसी को ज्ञात नहीं है परन्तु उस साक्षात्कार की रिपोर्ट के कारण पेरिस तथा लंदन के राष्ट्रीय विचारों के भारतीय अत्यंत मर्माहत और क्षुब्ध हुए। उनके विरुद्ध क्रुद्ध भारतीयों ने प्रदर्शन किया और उनकी कठोर आलोचना की। वृटिश पत्र तीव्रता से श्यामजी कृष्ण वर्मा पर प्रहार कर रहे थे और उन्हें दोषी घोषित कर रहे थे। उधर राष्ट्रीय विचारों के भारतीय उनकी निंदा कर रहे थे। वीर सावरकर तथा इंडिया हाउस में रहने वाले अन्य युवक भारतीयों ने पत्र लिखकर उनके विरुद्ध अपना रोष प्रगट किया।

जब वृटिश प्रेस और राष्ट्रीय विचारों के भारतीय उन पर आक्रमण करने लगे तो उन्होंने 'टाइम्स' पत्र में एक लम्बा पत्र प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने मदनलाल धींगरा की मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना बलिदान कर देने की प्रशंसा की और उसे एक महान शहीद कहा। साथ ही उस साहसिक कृत्य से अपना कोई सम्बन्ध न होने की भी घोषणा की।

अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा था 'यद्यपि कर्नल वायली की हत्या से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। और जैसा कि गत शनिवार को श्री धींगरा ने पुलिस अदालत में अपने साहसिक वक्तव्य में कहा है कि उन्होंने कर्नल वायली की हत्या राजनीतिक कारणों से की है मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि मैं उनके इस साहसिक कृत्य का समर्थन करता हूं और धींगरा को मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपने को बलिदान कर देने वाला मैं एक बलिदानी मानता हूं।" आगे उन्होंने कहा —

'मदनलाल धीगरा का नाम भारत की भावी पीढियां अत्यंत श्रद्धा के साथ ऐसे वीर पुरुष के रूप मे लिया करेंगी जिसने अपने आदर्शो को बलिवेदी पर अपने जीवन का बलिदान कर दिया। मजिस्ट्रेट के समक्ष अपने वक्तव्य मे तथा लन्दन मे न बैले की अदालत में सुनवाई के समय जो उन्होने घोषणा की व दोनो ही वक्तव्य साहस, सत्य और देश भक्ति का भावना से परिपूरित होने के कारण असाधारण है और वे मदन लाल धीगरा को ससार मे स्वतन्त्रता के लिए अपना बलिदान कर देने वाले रो म सर्वोच्च स्थान पर पहुचा देते है।'

अपने प्राणो की आहुति देकर उन्होने जो गौरवशाली परम्परा स्थापित की है उसके प्रति हम अपनी विनम्र श्रद्धा और भक्ति प्रदर्शित करने के लिए उनके नाम से र छात्रवृत्तिया दन की घोषणा करते हैं।

श्याम जी कृष्ण वर्मा के धीगरा के सम्बन्ध मे ऐसे प्रशसात्मक वक्तव्य के पश्चात ब्रिटिश सरकार न लदन म भारतीय राष्ट्रवादियो के समस्त प्रचार कार्यं को समाप्त कर देने का निश्चय कर लिया। क्योकि श्यामजी कृष्ण वर्मा परिस मे थ इस कारण उन पर तो कोई मुकदमा नही चल सका परन्तु 'सोश्योलजिस्ट' के मुद्रक श्री गाईर वर्मले और श्री गुई ऐलडर्ड को क्रमश चार महीने और एक वर्ष की जेल की सजा दे दी गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा न मुद्रको के दडित होने पर लिखा यह 'सोश्योलाजिस्ट' के लिए कम गौरव की बात नही है लन्दन की पुरान बैले के न्यायालय ने उसकी निन्दा की और मुद्रको को सजा दे दी उससे सभ्य ससार को यह ज्ञान हो जायेगा कि इग्लैंड जो पत्रो की स्वतन्त्रता का झूठा दम्भ करता था वह मिथ्या है वहा पत्रो की स्वतन्त्रता नही है।

धीगरा के अभियोग का एक परिणाम यह हुआ कि इडिया हाऊस भी समाप्त हो गया। इडिया हाउस जो रहस्यमय था और जिसे राष्ट्रवादी भारतीय 'स्वतन्त्रता के मंदिर' के नाम से सम्बोधित करते थे और जिसका श्यामजी कृष्ण वर्मा, राणाजी तथा अत मे सावरकर के नतृत्व में विकास हुआ था वह भारतीय स्वतन्त्रता का लदन म प्रतीक माना जाता था' समाप्त हो गया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा न उस भवन को जिसमें इडिया हाऊस स्थित था बेच दिया और इडिया हाऊस के लिए अन्य कोई इमारत नही ली।

इन सब कारणो से पेरिस में जो भी राष्ट्रीय विचारो के भारतीय थे वे श्यामजी कृष्ण वर्मा से असतुष्ट हो गए। उनके घनिष्ट मित्र मैडम कामा, और सरदार सिंह जी राणा भी उनसे दूर पड गए। मैडम कामा योरोप म अब भारतीय क्रातिकारियो की सर्वोच्च नेता थी और उन्होने लाला हरदयाल के सम्पादकत्व म 'वदेमातरम' पत्र निकालना प्रारम्भ किया और बाद को धीगरा की स्मृति म बर्लिन (जरमनी) से 'मदन तलवार' पत्र निकाला।

जब भारत म क्रातिकारियो द्वारा बम और पिस्तौल का खुल कर प्रयोग होने लगा और क्रूर अग्रेज अधिकारियो की हत्या की जाने लगी तो यह आवश्यक हो गया कि श्यामजी कृष्ण वर्मा हिंसा के द्वारा भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के इस प्रयोग के सबध मे अपने विचार प्रकट करें क्योकि उससे पूर्व उन्होने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए अहिंसक कार्यक्रम का समर्थन किया था। सितम्बर १६०८ के सोश्योलाजिस्ट अक म 'डाइनेमाइट का नीतिशास्त्र' और भारत म बृटिश निरकुशता शीर्षक से लम्बा

लेख लिख कर उन्होंने नीचे लिखे शब्दों मे हिंसा का समर्थन किया —

'यदि ब्रिटिश शासक और उनकी सेना ने भारतीयों की स्वतन्त्रता ही नहीं उनकी राष्ट्रीय सम्पत्ति को भी चुरा लिया है और पिछले डेढ सौ वर्षों में भारतीयों को मृत्यु का ग्रास बना दिया है तो उनके अत्याचार के शिकार भारत के निवासी और स्वामी क्या इस बात का न्याय के आधार पर अधिकारपूर्वक नही कर सकते कि आत्मरक्षा करना केवल न्यायोचित ही नही सदैव के लिए पावन कर्त्तव्य है। और उन्हें उन सभी उपायों को अपनाने का अधिकार है जिनसे विदेशी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध करने में सफल हो। जैसा कि ब्रिटिश दण्ड (पेनल कोड) में डकैती के मामले में अपने धन सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए किसी भी व्यक्ति को डाकू की हत्या तक कर देने का अधिकार स्वीकार किया गया है उसी प्रकार भारतीयों का यह नितान्त न्यायोचित अधिकार है कि वे बृटिश शासकों के प्रतिनिधियों के विरुद्ध युद्ध करें कि जो भारतीय जनता के सबसे बड़े और सुसंगठित लुटेरों और हत्या करने वालों का गिरोह है।'

उन्होंने आगे लिखा कि हिंसा हमारे कार्यक्रम का भाग नही था परन्तु बृटिश सरकार जब तक स्वतन्त्रता पूर्वक स्वतन्त्रता के लिए आंदोलन करने देती तभी तक वह अहिंसक कार्यक्रम लागू किया जा सकता था। परन्तु बृटिश सरकार ने जब क्रूर दमन के द्वारा समाचार पत्रों तथा लेखनी और भाषण की स्वतन्त्रता का अपहरण कर लिया है तो भारतीय देशभक्तों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि भारत की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए सभी सम्भावित उपायों को काम मे लावें।

जब वीर विनायक सावरकर के बड़े भाई श्री गणेश सावरकर पर नासिक के जिलाधिश जैक्सन ने सम्राट के विरुद्ध युद्ध करने का अभियोग चलाया और जज ने उन्हें आजन्म देश निकाले और काले पानी का दण्ड दे दिया तो क्रांतिकारियों ने जैक्सन की हत्या करने का निश्चय किया। जब कि जैक्सन को विदाई दी जा रही थी तो २१ दिसम्बर १९०९ को अनन्त लक्षण कन्हारे ने उनको गोली मार दी। कन्हारे ने जेक्सन को उन्हीं बीस स्वचलित पिस्तोलो में से एक ब्राउनिंग पिस्तौल से मारा था जिन पिस्तोलों को लन्दन से विनायक सावरकर ने इंडिया हाउस के रसोइये चतुर्भुज अमीन के साथ उसके बाक्स के गुप्त तले में रख कर भेजा थे।

इस घटना पर जनवरी १९१० के 'सोशयालाजिस्ट' में टिप्पणी करते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने गणेश सावरकर के एक निकट संबंधी को लिखा था—

'उन्हें अत्यन्त खेद है कि गणेश सावरकर को मलेच्छ (विदेशी) राजा के विरुद्ध युद्ध करने के अभियोग में जो आजन्म देश निकाले का दण्ड दिया गया और उस दण्ड की बम्बई उच्च न्यायालय ने पुष्टि कर दी जिसके दो जजों मे से एक भारत देशद्रोही (सरयन चन्द्रावारकर) था और जिसकी यह आज्ञा कि गणेश सावरकर की समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली जावे अत्यन्त बर्बर और नृशंस थी। उस वीर तरुण देशभक्त के प्रति अपनी श्रद्धा और सहानुभूति के प्रतीक हम उनके परिवार के लिए चेक भेज रहे हैं जो वे कृपा कर स्वीकार करें। यही नहीं उन्होंने गणेश सावरकर के हेमचन्द्रदास की स्मृति में दो छात्रवृत्तियां भी घोषित कीं।

जैक्सन की मृत्यु के उपरांत पुलिस ने बहुत छानबीन की और इण्डिया हाउस के रसोइए चतुर्भुज अमीन को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अत्याचार की वह

नही सका और वह पुलिस का मुखबिर बन गया। उसने पुलिस को बतला दिया कि वे पिस्तौल भारत में कहा कहा भेजे गए थे। उसने यह भी बताया कि धीगरा ने भी कर्जन वायली को मारने मे उसी हथियार का उपयोग किया था। पुलिस की छानबीन से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि भारत म जो भी पिस्तौल काम मे लाए गए वे एक फ्रेंच फर्म के थे। यद्यपि सरकारी मखबिर चतुभु ज अमीन न उस सम्पूर्ण षडयन्त्र के नियोजक सावरकर बधुओ को बतलाया परतु ब्रिटिश पुलिस ने सरदार सिह राणा और श्यामजी कृष्ण वर्मा को भी इस षडयन्त्र में घसीटना चाहा। मैडम कामा ने इस पर पेरिस में ब्रिटिश काऊंसिल के कार्यालय मे जाकर एक बयान अपने हस्ताक्षरो सहित लिख कर दिया, कि इस सम्पूर्ण षडयन्त्र के लिए केवल व ही उत्तरदायी है। यह उनकी निर्भीकता साहस और अपने साथियो के प्रति भावना का एक उज्ज्वल उदाहरण था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा हिंसा के कार्यो का समर्थन करते, उन वीर क्रान्तिकारियो की राष्ट्रीय वीर की भाति प्रशसा करते, और उनके नाम म छात्र वृतिया दन की घोषणा करते थ। उन्होंने सभी प्रमुख क्रांतिकारियो के नाम स छात्रवृति की घोषणा की थी परतु वे स्वय किसी हिंसक काय मे सम्मानित नही हुए। उनके स्वय का हिंसक कार्यों स बचने की प्रवृति की उनके विरोधी तो आलोचना करते ही थे स्वय उनके साथी भी उनके इस आचरण की आलोचना करत थे। ऐंग्लोइण्डियन पत्र 'पायनियर' ने श्यामजी कृष्ण वर्मा पर नीचे लिखे शब्दो में कठोर प्रहार किया था।

वे (श्यामजी कृष्ण वर्मा) ससार के सबसे सुदर नगर पेरिस के सर्वोतम मकान म रहते है और उनका मकान उस नगर के सबसे अधिक फैशनेबिल क्षेत्र म स्थित है। जैसे ही कि आप ट्रामकार से उतरें तो आपको सुदर पेडो की लम्बी कतार मिलेगी उसको पार कर उन सत के मकान १० ऐवन्यू इनग्रेस पहुचग। वह एक अत्यत शानदार भव्य इमारत है और प्रसिद्ध 'वायस डी बालाग' के ऊपर दिखलाई देती है उसम सभी आधुनिक सुविधाए प्राप्त है। उस मकान मे विद्युति सचालित लिफ्ट लगा है, बिजली का प्रकाश है, स्नानघर म गरम और ठण्ड पानी की व्यवस्था है और शीतकाल मे मकान को स्टीम से गरम रखा जाता है। उस मकान के कमरे बहुत बडे और शानदार है तथा खिडकियो से सुदर दृश्य दिखलाई पडते हैं। उस मकान मे जहा भगवान ने मनुष्य को जो कुछ वैभव और समृद्धि दे रखी है उसके मध्य बैठ कर वह पीडित सत रविवार का मध्याह्न उपरात अपने सहकारियो और अनुयायियो से मिलता है। उनम से बहुत से उनके घर प्रचुर मात्रा म परोसी जाने वाले स्वादिष्ट बढिया चाय, केक और फलो की प्रचुरता के कारण आकर्षित होते है। इन पार्टियो म पण्डित श्यामकृष्ण वर्मा करोडो दुर्भिक्ष से पीडित भारतीयो के लिए मगर के आंसू बहाते हैं। इन सभाओ म श्यामजी कृष्ण वर्मा सभी सम्मिलित होने वालो को प्रोत्साहित करते है कि व ससार के सभी सुखो को तिलाजलि देकर सादा जीवन व्यतीत करें। उनकी सभाओ म राष्ट्रीय गीत गाए जाते है और घृणित फिरंगियो (अंग्रेजो) की सभी के द्वारा कठोर निंदा की जाती है।

इस प्रकार की आलोचना का उत्तर देते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा न लिखा था। बहुधा गिरते हुए स्वास्थ्य, बढ़ती हुई आयु, स्वभाव तथा विशेष परिस्थिति वश

यदि कोई व्यक्ति कार्य विशेष या स्वयं नहीं कर सकता तो भी वह उन व्यक्तियों के कार्यों को जिनमें उस कार्य की क्षमता है उसकी परिस्थितियां अनुकूल हैं की और प्रशंसा तो कर ही सकता है। कौन ऐसा व्यक्ति है जो आज भी रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीर रमणियां के उत्साहित और शौर्य की सराहना नहीं यदि हम दैनिक जीवन में घटने वाले उदाहरण को लें तो क्या हम ऐसे किसी वीर साहसी युवक की सराहना या प्रशंसा नहीं करेंगे कि जो भयंकर तूफानी समुद्र में पथरीले तट पर टूटे हुए समुद्री जहाज को बचाने के लिए जीवन ... तट से उस टूटे जहाज तक ले जाता है और भयंकर विपत्ति में पड़े जहाज करने वाले यात्रियों की जीवन रक्षा करता है। उस समय तट पर खड़े होने में से कितने ऐसे व्यक्ति होंगे जो इच्छा रहते भी वह साहसिक कार्य सकें।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा उनके द्वारा स्थापित इंडिया हाऊस पर समाचार पत्रों में आक्रमण होने लगे तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने एक पत्र ६ मई को डेली में अपने विश्वास की 'स्वीकारोक्ति' शीर्षक से प्रकाशित किया।

भारत में आज जो कुछ हो रहा है निरपराध भारतीय देशभक्तों की अंधाधुंध गिरफ्तारियां, बल प्रयोग के द्वारा उनसे उनके अपराधों को स्वीकार कराना, उन्हें उत्पीडित करना और उन पर निर्दयता पूर्वक शारीरिक अत्याचार करना उसको ध्यान में रखते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि जिस सिद्धांत को मैं प्रतिपादित करता और जिस सिद्धांत पर मैं अडिग हूं वह नीचे लिखा है—

भारतवर्ष का सम्पूर्ण स्वामित्व अर्थात भारत का नैतिक और भौतिक आकाश से लेकर पृथ्वी तक केवल भारत के निवासियों में निहित है। केवल भारतवासी ही (अन्य कोई नहीं) अपने देश की भूमि के स्वामी और कानून निर्माता हैं। वे सब कानून जो उन्होंने नहीं बनाए हैं गैर कानूनी और अमान्य हैं और वे सभी भूमि स्वामित्व के स्वत्व आलेख जो कि भारतीयों ने नहीं दिए हैं अमान्य है। देश पूर्ण स्वामित्व के इस दैवी अधिकार को प्राप्त करने के लिए भारतीयों को उन सभी उपायों को काम में लाने का अधिकार है जिन्हें दैवी शक्ति ने मनुष्यों को प्रदान किए है।'

'भारत को यह विश्वास उसको प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वतंत्रता प्राप्त करने में प्रेरणा देगा।'

कहने का तात्पर्य यह कि यद्यपि श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वयं कोई हिंसा का काम नहीं किया परंतु देश की स्वतंत्रता के लिए वे हिंसक उपायों का समर्थन करते थे क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता देते थे क्रांतिकारी विचारों का प्रचार और प्रसार करने के लिए सोश्यालाजिस्ट पत्र प्रकाशित करते थे और भारत के क्रांतिकारियों को साहित्य अस्त्रशस्त्र तथा आर्थिक सहायता भेजते थे। विदेशों में जो भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य हुआ उसमें उनका बहुत अधिक हाथ था। उस समय इंग्लैंड में जो भी भारतीय क्रांतिकारी थे उनका इंडिया हाऊस से सम्बन्ध था जिसे श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्थापित किया और वे उसके अध्यक्ष तथा सरदार सिंह जी राणा उसके व्यवस्थापक थे। जब वे लंदन से पेरिस चले गए तो इंडिया हाऊस की व्यवस्था श्री विनायक

सावरकर के हाथ मे छोड गए थे परतु उनका अभिभावकत्व तथा स्वामित्व पूर्ववत था।

यह हम पहले ही कह आए हैं कि धीगरा काण्ड के उपरात श्यामजी कृष्ण वर्मा के मित्र तथा क्रातिकारी सहयोगी मैडम कामा तथा सरदार सिंहजी राणा उनसे मतभेद हो जाने के कारण दूर हट गए। मैडम कामा भारतीय क्रातिकारियो की सवमान्य नेता और माग दशक थी। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इडिया हाऊस के भवन को बेच दिया और वह प्रसिद्ध भारतीय क्रातिकारियो का केन्द्र समाप्त हो गया। फिर भी श्यामजी कृष्ण वर्मा परिस से 'सोश्यालाजिस्ट' निकालते थे और भारत की स्वाधीनता के पक्ष मे प्रचार करते थे।

जब हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने सावरकर को फ्रास की भूमि पर अग्रेजो द्वारा पकड कर ले जाने पर यह फैसला दिया कि यद्यपि सवैधानिक दृष्टि से फ्रास का यह दावा सही था कि उसे सावरकर को शरण देने का अधिकार था परन्तु सावरकर को फ्रास की सरकार के सुपुर्द करने से अब कोई लाभ नही होगा जबकि उनकी जन्म-भूमि के सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हें गम्भीर अपराधो का दोषी पाया है। उस समय श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अतर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा ब्रिटेन पर कठोर प्रहार करते हुए लिखा था।

हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय के सावरकर के सम्बन्ध मे इस निर्णय ने कि वह राजनीतिक शरण लेने के सवमान्य अधिकार को सुरक्षित रखेगा इस विश्वास को चूर चूर कर दिया है और यह अत्यत दुख की बात है कि वे राष्ट्र जो कि व्यक्तिगत वैचारिक स्वतन्त्रता मे आस्था और निष्ठा रखने का बढ चढ कर दावा करते है वे इस अधिकार को राजनीतिक कारणो से समय आने पर स्वीकार नही करते। यल ह्यूमेनाइट पत्र की यह आलोचना न्यायपूर्ण और उचित थी कि सावरकर के मामले को अतर्राष्ट्रीय न्यायालय को देना ही फ्रास की राजनैतिक भूल थी और एक मित्र जो कि बृटिश पार्लियामेट के सदस्य थे उन्होने हम विश्वास के साथ बतलाया कि फ्रास ने जिस प्रकार से मामले को न्यायालय के समक्ष उपस्थित किया उसमे असफल होना निश्चित था। जो भी फ्रास के दावे के अकाट्य और सबल आधार थे उनका उल्लेख तक नही किया गया। अब केवल हम अपने प्रिय मित्र तथा सहयोगी सावरकर के लिए दुख और सहानुभूति प्रकट करने के अतिरिक्त और कुछ नही कर सकते।'

उसी समय एक ऐसी घटना हुई कि जिससे इङ्गलैड के समाचार पत्रो ने श्यामजी कृष्ण वर्मा के विरुद्ध भयकर विष उगलना प्रारम्भ कर दिया। बात यह थी कि श्यामजी कृष्ण वर्मा के परम मित्र श्री जेम्स पेरिस से निकलने वाले 'लिबरेटर' पत्र का सम्पादन करते थे उसमे पत्र के लदन के सवाददाता 'मिलियस' का एक लेख छपा कि बादशाह पाचवे जर्ज ने माल्टा मे १८६० मे एडमिरल सर माइकेल सेमूर की पुत्री से द्विपत्नीत्व विवाह किया था। इङ्गलैड के सभी पत्रो तथा फ्रास के अधिकाश पत्रो ने इसमे श्यामजी कृष्ण वर्मा का हाथ बतलाया और उनके विरुद्ध घृणा का प्रचार किया।

टाइम्स ने लिखा 'वही बदनाम कृष्ण वर्मा जो भारत मे अग्रेजो की हत्या करने के लिए भारतीयो को उकसाता है वही सम्राट के विरुद्ध इस लाछन का

आविष्कर्त्ता है।' डेली मल न लिखा कि श्यामजी कृष्ण वर्मा का षडयन्त्र म है वह चाहता है कि भारतीयों की दृष्टि म सम्राट गिर जाय। यहां तक कि उन्ह ने भी श्यामजी कृष्ण वर्मा के ऊपर कठोर प्रहार किया। श्यामजी कृष्ण क इसका उत्तर देते हुए लिखा कि यदि यह बात सच हो कि पांचवें जाज ने दूसरी की तो भी मैं इसकी किस मुह से आलोचना कर सकता हूँ कि जिसके देश में मुसलमानों और यहूदियों म बहुपतित्व की प्रथा प्रचलित है।'

अप्रेल १६११ म श्यामजी कृष्ण वर्मा ने सयुक्त राज्य अमेरिका के प्र श्री 'चफ' को एक खुला पत्र लिख कर उन्हें अन्य राष्ट्रों की सम्पत्ति के लुटेरे तथा दास बनाने वाले इगलड से सधि का घोर विरोध किया और लिखा कि आप क इ के प्रति वतमान रूख को जारी कर आपके यशस्वी अग्रेज सयुक्त राज्य अमरिक प्रथम राष्ट्रपति (प्रेसीडेंट) की उसी रक्त म रगे हुए उनके कफन (ताबूत) म शव की हड्डिया चरमरा न रही होगी। प्रस्तावी इगलैंड के साथ प्रस्तावित सधि केवल यही अथ होगा कि आप दासता को तरजीह देते हैं। सयुक्त राज्य अमे जिसने स्वय इङ्गलैंड की दासता के जुए को उतार फेंका था अब इस सधि क इङ्गलैंड उन अन्य देशों को दास बनाए रखने के घृणित काय मे सहायता देने के सयुक्त राज्य अमरिका को आमंत्रित करेगा कि जिनके निवासी इगलैंड के अत्य और दमन से मुक्ति पाने के लिए और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के इच्छुक हैं जितने सयुक्त राज्य अमेरिका के लोग इच्छुक थे।'

श्यामजी कृष्ण वर्मा के इस पत्र का अमेरिका के आइरिश निवासि अभूतपूर्व स्वागत किया जो बृटिश दासता के जुए के नीचे कराह रहे थे। अ अमेरीका की सीनेट ने उस सधि परियोजना को रद्द कर दिया।

माच १६११ म श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जरमनी की सवश्रेष्ठ और प्रभाव' पत्रिका मे लेख लिखा। उस समय बृटेन के समस्त समाचार पत्र जरमनी के f शत्रुता की भावना को भडका रहे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा के उस लेख ने स बृटेन तथा योरोप मे सनसनी उत्पन्न करदी। वास्तव म प्रथम महायुद्ध के समय भारतीय क्रान्तिकारियों का जरमन सरकार से गठ बधन हुआ उसका सूत्रपात श्या कृष्ण वर्मा के उस लेख से हुआ था।

रूस के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक और विचारक मैक्सिम गोर्की ने २८ अ १६१२ के पत्र मे श्यामजी कृष्ण वर्मा को भारत का मैजनी कह कर सम्बोधित f था। उन्होने अपने पत्र म लिखा था —

मैं हृदय के गहन तल से आपको 'इडियन सोस्यालाजिस्ट' भेजने के धन्यवाद देता हू और आपसे हाथ मिलाता हू। मैं उस महान देश भारत की स्वत के लिए सघष करने वाले अथक योद्धा से हाथ मिलाता हू जिस देश ने मानव ज को मानव की आत्मा के रहस्यो का बतलाया है।

आप कृष्ण वर्मा भारत के मैजनी— आप अपने महान देशवासियो भावनाओं और इच्छाओं को समझते है और यह जान सकते है कि वतमान भार सम्बन्ध मे रूस के लोगो को क्या जानना चाहिए। आप भारत के सम्ब लेख भेजिये।

—मैक्सिम गो

कै प्री विला सेराफिना
२०-१० १९१२

मैक्सिम गार्की जैसे महान क्रांतिकारी साहित्यकार लेखक और विचारक की दृष्टि मे श्यामजी कृष्ण वर्मा का व्यक्तित्व कितना महान था वह उनके इस पत्र से प्रकट हो जाता है।

जब २३ दिसम्बर १९१२ को देहली मे भारत के क्रांतिकारियो ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका तो समस्त विश्व म तहलका मच गया। बम फेंकन वाले का पता नहीं चला। उसी दिन अमेरिका के पत्र 'सन' के सवाददाता न श्यामजी कृष्ण वर्मा से उस घटना के सम्बन्ध मे उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही तो वर्मा ने कहा— मुझे इस समचार से आश्चर्य नही है। जब तक तर्क के पीछे शक्ति न हो कोई तर्क को नही सुनता। आप एक लुटेरे का तर्क करके समझा नही सकते उसको धराशायी करना होगा। अपनी स्वतन्त्रा के लिए युद्ध करते समय सभी साहसिक कार्य उचित हैं। भारतीय पूर्ण स्वतन्त्रता से कम कुछ भी स्वीकार नही करेंगे और वे जानते है कि वे अनुनय विनय करके उसे प्राप्त नही कर सकते।'

श्यामजी कृष्ण वर्मा केवल भारतीय क्रांतिकारियो का ही समथन नही करते थे उनका मिश्र, माल्टा, जावा तथा अन्य सभी पराधीन देशो के क्रांतिकारियो से सबंध था और वे उनको सहायता देते थे तथा उनके पक्ष म प्रचार करते थे।

१९१४ मे योरोप का राजनैतिक वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध था प्रत्यक्ष राजनीतिक जानता था कि महायुद्ध अवश्यम्भावी है और बृटन तथा जरमनी मे युद्ध अनिवार्य है। अप्रेल १९१४ मे जार्ज पाचवें स्वयं फ्रास से सधि करने पेरिस आए। दूरदर्शी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने देख लिया कि अब फ्रास म रहना खतरनाक होगा अस्तु उन्होने पेरिस तुरन्त छोड दिया और वे जेनवा (स्विटजरलड) चले गए और मृत्यु पर्यन्त वहीं रहे।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा न स्वीटजरलेंड मे रहने का निश्चय कर लिया तो स्विटजरलैंड की सरकार न उनसे यह आश्वासन ले लिया कि वे सक्रिय राजनीति म भाग नहीं लेंगे। यद्यपि युद्धकाल मे जरमनी की बरलिन कमटी लाला हरदयाल द्वारा सयुक्त राज्य अमेरिका मे गठित गदर पार्टी और रविबिहारी के नेतृत्व मे भारतीय क्रांतिकारी दल द्वारा भारत मे विप्लव कराने के क्रांतिकारी कार्यों से श्यामजी कृष्ण वर्मा अवगत थे लाला हरदयाल तथा बर्लिन कमेटी के सगठन कर्ताओ चम्पक रमन पिलाई, चट्टोपाध्याय, तारकनाथ दास, बरकतउल्ला आदि से उनका पत्र व्यवहार था और भारत म क्रांतिकारी दल तथा गदर पार्टी के कार्यों से वे अवगत थे परन्तु स्विटजरलैंड जाने के उपरान्त उन्होने राजनीति मे कोई सक्रिय भाग नही लिया।

दूरदर्शी और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के पारखी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा यदि आने वाले महायुद्ध की विभीषका का अनुमान लगा कर फ्रास को छोड कर जेनवा न चले जाते तो मैंडम कामा और सरदार सिंह जी राणा की भांति ही वे भी फ्रास के किसी सुदूर स्थान मे बन्दी जीवन व्यतीत करते होते। पेरिस से जेनवा जाने पर इंडियन 'शोस्योलाजिस्ट' का प्रकाशन बन्द हो गया। ६ वर्षों के उपरात उन्होने इंडियन 'शोस्योलाजिस्ट' का प्रकाशन पुन जेनवा से आरम्भ किया। उसके द्वारा वे भारत की स्वाधीनता के सबध मे प्रचार करते रहे।

-श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के दर्शन करने गए उस समय वे मृत्यु शय्या पर थे। बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त उस वयोवृद्ध देशभक्त के आकर्षक और भव्य व्यक्तित्व से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा के चरणों में पुष्प चढ़ाए और हिंदु पद्धति के अनुसार उस मृत्यु शय्या पर पड़े देशभक्त की विधिवत पूजा अर्चना की। बाबू शिवप्रसाद गुप्त के पोस्ट कार्ड से ही पेरिस में सरदार सिंह जी राणा तथा संसार को महान भारतीय देशभक्त की मृत्यु का समाचार मिला।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा ने राजनीति से सन्यास ले लिया तो उन्होंने अपने धन के विनियोजन की ओर अधिक ध्यान दिया व जेनवा की स्टाक ऐक्सचेंज में प्रतिदिन जाते थे और योरोप के देशों तथा दक्षिण अमेरिका के देशों की सरकारों के ऋणों तथा बड़ी व्यवसायिक कम्पनियों के अंशों को खरीदते बेचते थे। इसमें उन्हें बहुत सफलता मिली और उन्होंने यथेष्ट धन संचय कर लिया।

१९३० में उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया उनकी आंतों की बिमारी उग्र रूप से उभरी। आपरेशन हुआ और ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे बच जायेंगे परन्तु उनका जीवन दीप ३१ मार्च १९३० को सदैव के लिए बुझ गया और वे चिरनिद्रा में सो गए।

यद्यपि सरदार सिंह जी राणा का श्यामजी कृष्ण वर्मा से मतभेद हो गया था और वर्षों से वे एक दूसरे से दूर थे परन्तु जब उन्हें बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त का कार्ड मिला तो वे दौड़ आए और श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा की विपुल सम्पत्ति की उनकी इच्छानुसार सारी व्यवस्था की।

श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा सच्चे अर्थों में सहधर्मणी थी उन्होंने कठिन परिस्थितियों में धैर्य से अपने पति का साथ दिया था उन्होंने जेनवा विश्वविद्यालय को दस हजार फ्रैंक अपने पति के नाम पर समाजशास्त्र विषय पर शोध ग्रंथ छपाने के लिए दिए परंतु उन्होंने सबसे बड़ा दान अपने पति के नाम पर पेरिस के सोरबोन विश्वविद्यालय को दिया उन्होंने उस विश्वविद्यालय को बीस लाख फ्रैंक भारतीय छात्रों की सहायता तथा भारत सम्बन्धी अध्ययन की व्यवस्था करने के लिए दिए। वर्माजी के पुस्तकालय को जिसमें संस्कृत और प्राच्य विद्या की हजारों मूल्यवान पुस्तकें थीं सोरबोन (पेरिस) 'इंस्टिट्यूट डी सिवलीजेशन इंडियने' को भेंट कर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने जेनवा के एक हास्पिटल को भी दस हजार स्विस फ्रैंक इसलिए दिए कि निर्धन रोगियों की सहायता की जावे।

श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा अपने पति की मृत्यु के उपरांत केवल तीन वर्ष जीवित रही और मृत्यु के उपरांत उनकी भी भस्मि और अस्थियां जेनवा के सेंट जार्ज के कब्रिस्तान में श्री कृष्ण वर्मा की समाधि के पास ही समाधिस्थ कर दी गई। उन दोनों की स्मृति जेनवा के उस कब्रिस्तान में संगमरमर के पाषाण लेख के द्वारा सुरक्षित है जिस पर खुदा हुआ है —

भानुमती कृष्ण वर्मा	श्यामजी कृष्ण वर्मा
१८६२ १९३३	१८५७ १९३०

श्यामजी कृष्ण वर्मा की मृत्यु पर भारत में केवल थोड़े से पत्रों ने ही उनके सम्बन्ध में लिखा। उनकी मृत्यु के समय भारत में उनके सम्बन्ध में कोई विशेष

चर्चा नहीं हुई उस प्रकार से उनकी हुई । हम कृतघ्न भारतीयों ने महान देशभक्त के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन चढ़ाने की आवश्यकता भी समझी । जिस व्यक्ति ने जीवन पर्यन्त देश के लिए संघर्ष किया उसकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का भारत ने कोई प्रयत्न नहीं किया । उनका कहीं स्मारक नहीं बना, यहां तक कि भारत के डाक विभाग ने उस महान भारतीय देशभक्त पर डाक टिकट निकालने की भी आवश्यकता नहीं समझी । हम भारतीयों की कृतघ्नता को देखकर स्वयं कृतघ्नता लज्जित होती होगी ।

क्या ही अच्छा हो कि उनके जन्म स्थान मांडवी में उनका एक स्मारक बनाया जावे और संस्कृत तथा प्राच्य विद्या की शोध का कार्य हो । पर सत्ता की राजनीति में हमारी सरकार को भूले हुए क्रांतिकारी देशभक्तों की स्मृति चिरस्थायी बनाने का अवकाश कहां है ?

अध्याय ६
मदनलाल-धींगरा

यह उस समय की बात है जबकि भारत मे क्रांतिकारी विचारधारा बलवती हो उठी थी। अंग्रेजी की दासता भारत की देशभक्त तरुणाई को अखरने लगी थी। बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में शक्तिशाली क्रांतिकारी संगठन स्थापित हो गए थे, और भारत विरोधी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के अंग्रेज प्रशासकों को क्रांतिकारी अपनी गोलियों का शिकार बनाने लग थे। देश में जैसे जैसे क्रांतिकारी सक्रिय होते गए उनकी गतिविधियां तेज हुई वैसे ही वैसे बृटिश सरकार का दमन चक्र भी अत्यंत तीव्र गति से चलने लगा। प्रमाण न मिलने पर अपराध सिद्ध न होने पर भी केवल संदेह मात्र पर फांसी, कालापानी, आजन्म कैद का दण्ड दे दिया जाता था। इस कारण क्रांतिकारियों में प्रतिशोध लेने की तीव्र भावना जागृति हो उठी थी। क्रांति की यह लहर केवल भारत में ही नहीं बह रही थी। इंगलैंड, अमेरिका, फ्रांस और जरमनी में रहने वाले और शिक्षा प्राप्ति के लिए गए हुए तरुणों में भी क्रांतिकारी धारा प्रबल वेग से प्रवाहित हो रही थी। मानिकतल्ला विद्रोह में सम्मिलित क्रांतिकारियों के साथ सरकार ने क्रूर और निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया वीर सावरकर के बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर को कुछ देशभक्तिपूर्ण कविताएं लिखने के कारण २८ फरवरी १९०९ को गिरफ्तार कर लिया गया और ४ जून को नासिक मे आजीवन कारावास का दण्ड देकर कालापानी भेज दिया गया तथा अन्य देशभक्त वीर क्रांतिकारी जिस प्रकार बृटिश सरकार की नृशंसता के शिकार बने उसके कारण तरुण क्रांतिकारियों में प्रतिशोध लेने की भावना अत्यन्त बलवती हो उठी थी।

उस समय लन्दन में श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, मैडम कामा, वीर सावरकर आदि प्रसिद्ध भारतीय क्रांतिकारी नेता, क्रांति की अग्नि प्रज्ज्वलित कर रहे थे। ऐसे समय एक अमृतसर का पंजाबी युवक जो लन्दन विश्वविद्यालय मे इंजिनियरिंग की शिक्षा लेने आया था जिसमें देशभक्ति कूट कूट कर भरी थी इस क्रांतिकारी भावना से प्रभावित हो गया। वह इंडिया हाउस में रहता था और वह उन सभी सभाओं मे सम्मिलित होता था जिनमें भारत को स्वतंत्र बनाने के सम्बंध मे चर्चा होती थी। श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने धन से एक भवन खरीद कर इंडिया हाउस की स्थापना की थी और वे देशभक्त भारतीय युवकों को छात्रवृत्ति देकर वहां रखते थे। छात्रवृत्ति की एक ही शर्त थी कि छात्रवृति पाने वाला विद्यार्थी भारत लौट कर सरकारी नौकरी नहीं करेगा। यह युवक लाला हरदयाल तथा श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा प्रकाशित "इंडियन शासियोलाजिस्ट" पत्र का नियमित पाठक था। वह युवक मदनलाल धींगरा था धींगरा की सावरकर से बहुत घनिष्टता थी। वह वीर सावरकर को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था और सावरकर उसे अपने छोटे सहोदर भाई की तरह ही स्नेह करते थे।

इंडिया हाऊस लन्दन मे देशभक्त क्रांतिकारियों का मुख्य केन्द्र था। उस संस्था के अंदर जो गहरी देशभक्ति की भावना प्रवाहित हो रही थी उसका एक छोटा सा उदाहरण देना पर्याप्त होगा। १० मई १९०९ को १८५७ के प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य

युद्ध की याद मे इ डिया हाऊस म भारतीयो की सभा बुलाई गई और वहा १८५७ की क्राति के नेताओ झासी की रानी, लक्ष्मी बाई, तात्याटोपे, नानासाहब आदि को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। यह सभा १० मई १६०६ का सायकाल के समय बुलाई गई थी उसी दिन—दिन मे मदनलाल धीगरा यूनीवर्सिटी कालेज की कक्षा म १८५७के वीरों की स्मृति के रूप मे बिल्ला लगा कर उपस्थित हुआ। जब उससे कहा गया कि वह उस बिल्ले का उतार दे तो उसन दृढ़ता पूवक बिल्ले को उतारन से इकार कर दिया। इस पर अग्रेज छात्रो ने उसका तग करना शुरू कर दिया। धीगरा न उनके नेता की गरदन पकड कर कहा कि तुम शालीनता का व्यवहार नही करोगे तो यह गरदन धड से पृथक कर दी जावेगी। फिर किसी का साहस धीगरा से बोलन का नही हुआ।

यह समाचार धीगरा के पिता के पास भारत पहुचा जो कि एक धनी और प्रसिद्ध डाक्टर थे। उनका बडा भाई एक सफल बैरिस्टर था। भाई न कर्जन वायली को लिखा कि वह उसके भाई की देखभाल रखे और उसे बुरे प्रभाव से बचाने का प्रयत्न करे। धीगरा ने अपन बडे भाई को लिख भेजा कि वह उस अपगार कर्जन वायली के अभिभावकत्व को किसी प्रकार भी सहन नही कर सकता।

कर्जन वायली भारतीय सेवा का अवकाश प्राप्त अधिकारी था जो सेना से अवकाश प्राप्त करने पर भारत सचिव का राजनीतिक ए डी सी नियुक्त किया गया था। कर्जन वायली भारतीयो से घृणा करता था और देशभक्त भारतीयो का घोर शत्रु था। वह इङ्गलैंड मे शिक्षा प्राप्त करने वाले देशभक्त भारतीय युवको पर दृष्टि रखता था। अनेक देशभक्त भारतीयो को उसके कारण कठोर दण्ड भुगतना पडा था। देशभक्त भारतीयो को दडित कराने मे उसे सुख की अनुभूति होती थी। यही कारण था कि प्रत्येक भारतीय उससे घृणा करता था।

धीगरा के पिता साहिब दित्ता विलियम कर्जन वायली के मित्र थे। वे अमृतसर के निवासी और धनाढ्य थे अपने पुत्र को उन्होने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इङ्गलैड भेजा था। मई १६०६ मे धीगरा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से इगलैड पहुचे। १६ अक्टूबर से वे यूनिवर्सिटी कालेज (गावर स्ट्रीट) मे इजीनियरिंग पढन लगे व जून १६०६ के अतिम दिन तक कालेज जाते रहे। इगलैंड आने के बाद वे इडिया हाऊस गए। इडिया हाऊस छोडने पर लेडबरी वेजवाटर मे रहन लगे और अत तक वही रहे। उनके कमरे मे दो चित्र पोस्टकार्ड पाए गए। एक पर तारकनाथ दास के 'फ्री हिंदुस्तान" (न्यूयार्क) म कुछ ही दिनो पहले छपे चित्र की नकल थी। इसमे भारतीय विद्रोहियो को तोपो के मुह से उडाया जा रहा था। दूसरा लार्ड कर्जन का चित्र था जिस पर पेंसिल से लिखा था, 'बेईमान कुत्ता"।

उस समय भारत सरकार भारतीय क्रातिकारियो का क्रूरता के साथ दमन कर रही थी। मुजफ्फरपुर बमकाड मे खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी फासी के तख्ते पर चढ चुके थे। लोकमान्य तिलक का उनके लेख पर लम्बी अवधि के लिए अदमन का निर्वासन हो चुका था। भारत सरकार उस समय क्रोध के कारण बौखला गई थी। वीर विनायक सावरकर के बड भाई गणेश सावरकर को भारत सरकार ने केवल इस अपराध मे आजन्म कालेपानी का दड दिया था क्योकि उन्होने एक कविता की पुस्तक प्रकाशित की थी। भारत सरकार न उस कविता की पुस्तक मे लिखी कविताओ का यह अर्थ लगाया कि उनम हिन्दू देवताओ तथा छत्रपति शिवाजी तथा राणाप्रताप

वीरों के नाम म वर्तमान वृटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भडकाया है। न्यायाधीश ने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध के लिए जनता को भडकाने के अपराध मे उन्हें आजन्म कालेपानी की सजा दे दी। इंडिया हाऊस लन्दन को एक द्वारा सूचना भेजी गई कि गणेश सावरकर को आजन्म कालेपानी का दड दिया है। भारत सरकार उस समय कितनी अधिक बौखला गई थी और कितने क्रूर पर उतर आई थी यह इस घटना से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय भावना से प्रोत कविता लिखने पर आजन्म कालेपानी का दड दे दिया गया।

वीर विनायक सावरकर को जब यह केबिल मिला तो वे इतने अधिक उत्तेजित उठे कि उस सम्बध म अपने मित्रो तथा सहयोगियो से चर्चा और विचार विमर्श हुए उन्होने अपनी इस शपथ को दोहराया कि वे उसका प्रतिशोध अंग्रेजो से लेंगे। गणेश सावरकर को ६ जून १६०६ को आजन्म कालेपानी का दण्ड गया था। उसके कुछ ही दिनो के पश्चात मदनलाल धींगरा जिसका वीर विनायक सावरकर से घनिष्ट आत्मीयता का सम्बध था, उसने कर्जन वायली को मार दी। धींगरा ने अपने उस ऐतिहासिक बयान मे जो भारतीय युवकों को निर्वासन (कालेपानी) और फासी दिए जाने की बात कही थी सम्भवत गणेश सावरकर को आजन्म कालेपानी और खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को फासी ध्यान मे रखकर कही गई थी। यही कारण था कि कुछ लोग ऐसा मानते कि वीर विनायक सावरकर ने धींगरा को कर्जन वायली को मारने के लिए साहित किया था परतु यह विचार भ्रातिपूर्ण है। मदनलाल धींगरा ने अंग्रेजो द्वारा तकारियो के क्रूर दमन के प्रतिशोध स्वरूप ही कर्जन वायली को मारने का निर्णय लिया था। उसने इस सम्बध म किसी से भी यहा तक कि वीर विनायक सावरकर से भी परामर्श नही किया था। सावरकर के सम्पर्क मे आने पर उन्होंने दीक्षा देकर अभिनव भारत का सदस्य उन्ह अवश्य बनाया था।

जब मदनलाल धींगरा ने प्रतिशोध लेने का निर्णय कर लिया तो उसने इंडिया हाउस छोड दिया और अन्यत्र रहने लगा ऐसा जोखिम भरा निर्णय कर लेने के बाद भी उसके वाह्य आचरण म कोई अतर नही पडा। वह अत्यत शात और रहता था। उन दिनो जबकि वह प्रतिशोध लेने की तैयारी कर रहा था तब भी उसमे उद्विग्नता, उत्तेजना और अधीरता नही देखी। वह अत्यत शात। वह एक मनोरजन क्लब का सदस्य बन गया जहा पिस्तौल चलाने और निशाना लगाने का अभ्यास कराया जाता था। पिस्तौल खरीद कर उसने अभ्यास करना आरम्भ कर दिया।

धींगरा, ज्ञानचद वर्मा और कोरेगावकर मराठा युवक ने निश्चय किया कि गणेश दामोदर सावरकर के अतिरिक्त— कन्हैयालाल दत्त, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, भूपेन्द्र और हेमचद्र दास की सजाओ का बदला वृटिश साम्राज्य की राजधानी ठीक मध्य लदन म कर्नल वायली का वध करके लिया जाय। वायली राष्ट्रभक्त विद्यार्थियो के विरुद्ध भारत मत्री से शिकायतें किया करता था।

इन लोगो न रिवाल्वर से चादमारी शुरू की। धींगरा कुछ महीनो तक इसका अभ्यास करते रहे और इसम वे बहुत अधिक सिद्धहस्त हो गए। दो तीन मास के अभ्यास स ही निशाना लगाने मे उन्होने पर्याप्त प्रगति कर ली। वे बहुत जल्दी-जल्दी

फायर करने का अभ्यास करते थे। पहली जुलाई से मायकाल उन्होंने चान्मारी पर ग्यारह शाट मारे थे। अंतिम दिन उन्होंने जो टर्गेट काम में लिया उस पर ग्यारह निशान थे। सात आठ निशाना का हाथ की हथेली छाप लेती थी।

उस क्लब में लाड मारले, लार्ड कर्जन तथा सरकर्जन वायली जैसे दम्भी और भारत से घृणा करने वाले भारतद्वेषी अंग्रेज अधिकारी जाते थे। धींगरा ने उस क्लब की सदस्यता इन व्यक्तियों की गतिविधियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वीकार की थी। धींगरा का प्रथम लक्ष्य लार्ड कर्जन थे। कर्जन वायली को मारने के कुछ दिन पूर्व धींगरा ने लार्ड कर्जन का पीछा किया था। वह अपने शिकार पर अनुकूल स्थान पर वार करना चाहता था। परन्तु जैसे ही लार्ड कर्जन हॉल में घुसे हाल के द्वार बंद कर दिए गए। धींगरा अन्दर प्रवेश न कर सका। निराश होकर वह वापस लौट आया। परन्तु अंग्रेजों द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों पर जो क्रूर दमन किया जा रहा था उसका प्रतिशोध लेने का धींगरा ने निश्चय कर लिया था। अतएव उसने कर्जन वायली को मारने का निश्चय किया जो भारतीय क्रांतिकारियों को दण्ड दिलाने में बहुत उत्साह प्रदर्शित करता था और भारतीयों से घृणा करता था। वह भारतद्रोही था।

एक जुलाई १९०९ को इंडियन नेशनल ऐसोसियेशन की वार्षिक बैठक थी इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहांगीर हाल में मीटिंग का आयोजन किया गया था। धींगरा को ज्ञात था कि कर्जन वायली उस मीटिंग में अवश्य सम्मिलित होगा। अतएव धींगरा अपने स्थान से दो घंटे पूर्व चल दिया और 'वस्टवोन' गया जहां उसके कुछ अंतरंग मित्र रहते थे। वास्तव में वह अपने उन मित्रों से अंतिम बार मिलने गया था। वह जानता था कि वह उसका अंतिम मिलन होगा। परन्तु उसने अपने उन मित्रों को कुछ भी नहीं बतलाया और न ऐसा कोई संकेत ही दिया कि जिससे उन्हें कोई सन्देह होता। उनसे मिल कर और विदा लेकर जो उसकी अंतिम विदा थी, वह समय पर मीटिंग में पहुँच गया। सभा के अंत में संगीत का कार्यक्रम होते ही कर्जन वायली हाल से निकला और सीढ़ियां उतरने लगा। धींगरा ने बढ़ कर मुस्कराते हुए उनसे बातचीत करनी आरंभ की और तुरन्त ही अपना रिवाल्वर निकाल कर एक के बाद दूसरी पांच गोलियां उसके चेहरे पर दाग दीं। वायली वहीं मर कर गिर पड़ा। एक पारसी कावास लालकाका वायली को बचाने के लिए आगे बढ़े तो धींगरा ने उन पर भी गोली चलाई जिससे वे घातक रूप से घायल हो गए और उनका चेहरा क्षत विक्षत हो गया।

आसपास के लोगों ने धींगरा को पकड़ लिया लेकिन उसने अपने हाथों को छुड़ा लिया और रिवाल्वर से अपने सिर पर गोली चलाई किन्तु रिवाल्वर खाली हो चुका था उसमें कोई गोली नहीं थी। धींगरा के पास एक भरा हुआ रिवाल्वर तथा एक छुरा और था और यदि वह चाहता तो वह अपने पकड़ने वालों को भी मार सकता था। परन्तु उसने गम्भीरतापूर्वक कहा कि वह अन्य किसी को भी मारना नहीं चाहता वे सुरक्षित हैं और उन्हें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। यह कह कर उसने रिवाल्वर फेंक दिया। भीड़ उसके निकट आ गई। लोगों ने उनके हाथ बांधने का प्रयत्न किया। इस पर धींगरा ने हंसते हुए व्यंग और उपहास के रूप में कहा—अरे मुझे चश्मा तो ठीक तरह से रख लेने दीजिए तत्पश्चात हाथ बांधते रहिएगा।

हाँ एक डाक्टर भी मौजूद थे। उसने देखा जब प्राय हर व्यक्ति घबराया हुआ था तब केवल धीगरा ही शांत एवं अक्षुब्ध थे। उनका व्यवहार ऐसा था मानो कुछ हुआ ही नहीं।

जिस समय मदनलाल धीगरा पकडा गया उसके चेहरे पर तनिक भी भय या घबराहट का चिन्ह नही था। उसने शांत किन्तु गंभीर होकर कहा — मैं एक देशभक्त हू जो अपनी मातृभूमि को विदेशियो की दासता से मुक्त करने का प्रयत्न कर रहा हू। मेरे लिए 'खुनी' शब्द के प्रयोग के प्रति मुझे घोर आपत्ति है क्योकि मैंने जो कुछ किया है वह न्यायोचित है। यदि जरमन लोग इगलैंड पर अधिकार कर लेते तो इगलैंड के लोग भी यही करते।"

मदनलाल धीगरा पर २३ जुलाई १९०९ को 'पुराने बेली' की सेशन अदालत मे अभियोग चलाया गया। बीस सैकिंड मे अदालत ने उसको मृत्यु दण्ड की सजा दे दी और शेरिफ ने उसकी फासी का दिन १७ फरवरी १९०९ निर्धारित कर दिया।

जब न्यायाधीश ने पूछा कि अभियुक्त को कुछ कहना है तो धीगरा ने उत्तर दिया— "तुम मेरे साथ जो भी व्यवहार चाहो कर सकते हो मुझे उसकी तनिक भी चिंता नही है। तुम श्वेत लोग सर्वशक्ति हो और जो चाहो कर सकते हो। लेकिन याद रखो कि भविष्य मे हमारा भी एक दिन समय आवेगा तब हम तुमसे बदला लेंगे।"

धीगरा का एक लिखित वक्तव्य था जो उसकी जेब मे था। वह चाहता था कि उसका वह लिखित वक्तव्य अदालत मे पढा जावे। परन्तु पुलिस ने उस लिखित वक्तव्य को उसकी जेब मे से ले लिया और यह घोषणा कर दी कि उसकी जेब मे कोई लिखित वक्तव्य उन्हे नही मिला। पुलिस ने उसके उस ऐतिहासिक वक्तव्य को छिपा लिया। वह नही चाहती थी कि वह वक्तव्य कभी भी प्रकाश मे आवे। धीगरा ने न्यायालय से प्रार्थना की कि पुलिस ने जो वक्तव्य को दबा लिया है वह अदालत मे पढा जाय परतु अदालत ने उसकी कोई सुनवाई नही की।

क्रान्तिकारियो के इतिहास मे मदनलाल धीगरा का वक्तव्य अभूतपूर्व और अनोखा था जिसकी प्रशसा बृटन के साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञो ने भी की थी। उसके वक्तव्य का हिन्दी अनुवाद नीचे लिखे अनुसार था।

"मैं यह स्वीकार करता हू कि उस दिन मैंने देशभक्त भारतीय युवको की फासी आजन्म कारावास तथा काले पानी के अमानवीय दड का किंचित प्रतिशोध लेने के लिए एक अग्रेज का रुधिर बहाया था।"

"मेरा यह विश्वास है कि जिस राष्ट्र को विदेशी किरचो के बल पर पराभूत किया जाता है और दास बनाए रक्खा जाता है, वह राष्ट्र आक्रमक राष्ट्र से शाश्वत युद्ध की स्थिति मे रहता है। क्योकि उस जाति के लिए जिसे निशस्त्र कर दिया गया हो खुला युद्ध कर सकना असम्भव है, मैंने सहसा आक्रमण किया और क्योकि मुझे बदूक नही दी गई मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और गोली मार दी।"

"एक हिन्दू के नाते मेरा विश्वास है कि मेरे देश के प्रति दुर्भावनापूर्ण दुष्कृत्य भगवान का घोर अपमान है मातृ-भूमि का पथ श्रीराम का पथ है उसकी सेवा श्रीराम की सेवा है। मेरा जैसा माता का पुत्र जो धनहीन है और जिसके पास बुद्धि और चातुर्य भी कम है मा को अपने रुधिर के अतिरिक्त और क्या भेंट कर सकता है। वही

फायर करने का अभ्यास करते थे। पहली जुलाई के सायकाल उन्होंने ग्यारह शाट मारे थे। अतिम दिन उन्होंने जो टार्गेट काम में लिया उ... निशान थे। सात आठ निशानों का हाथ की हथेली ढाप सकी थी।

उस क्लब में लाट मारने, साइ कर्जन तथा राबर्जन दम्भी और भारत से घृणा करने वाले भारतद्वेषी अंग्रेज अधिकारी जाते ने उस क्लब की सदस्यता इन व्यक्तियों की गतिविधियों के सम्बन्ध में करने के लिए स्वीकार की थी। धींगरा का प्रथम लक्ष्य लार्ड कर्जन वायली को मारने के कुछ दिन पूर्व धींगरा ने लाट कर्जन का पीछा कि अपने शिकार पर अनुकूल स्थान पर वार करना चाहता था। परन्तु जैसे हाल में घुसे हाल के द्वार बंद कर दिए गए। धींगरा अन्दर प्रवेश निराश होकर वह वापस लौट आया। परन्तु अंग्रेजों द्वारा भारतीय क्रांति जो क्रूर दमन किया जा रहा था उसका प्रतिशोध लेने का धींगरा ने निश्च था। अतएव उसने कर्जन वायली को मारने का निश्चय किया क्रांतिकारियों को दण्ड दिलाने में बहुत उत्साह प्रदर्शित करता था और घृणा करता था। वह भारतद्रोही था।

एक जुलाई १९०९ को इंडियन नेशनल ऐसोसियेशन की वार्षि इम्पीरियल इंस्टीटयूट के जहांगीर हाल में मीटिंग का आयोजन किया गया को ज्ञात था कि कर्जन वायली उस मीटिंग में अवश्य सम्मिलित हों धींगरा अपने स्थान से दो घंटे पूर्व चल दिया और 'वस्टबोन' गया कुछ अंतरंग मित्र रहते थे। वास्तव में वह अपने उन मित्रों से अंतिम गया था। वह जानता था कि वह उनका अंतिम मिलन होगा। परन्तु उन मित्रों को कुछ भी नहीं बतलाया और न ऐसा कोई संकेत ही दिया उन्हें कोई सन्देह होता। उनसे मिल कर और विदा लेकर जो उसकी अंतिम वह समय पर मीटिंग में पहुँच गया। सभा के अंत में संगीत का कार्य कर्जन वायली हाल से निकला और सीढ़ियां उतरने लगा। धींगरा ने बढ़ कर हुए उनसे बातचीत करनी आरंभ की और तुरंत ही अपना रिवाल्वर निकाल बाद दूसरी पांच गोलियां उसके चेहरे पर दाग दीं। वायली वहीं मर कर एक पारसी कोवास लालकाका वायली को बचाने के लिए आगे बढ़े तो धीं पर भी गोली चलाई जिससे वे घातक रूप से घायल हो गए और उसका विक्षत हो गया।

आसपास के लोगों ने धींगरा को पकड़ लिया लेकिन उसने अप छुड़ा लिया और रिवाल्वर से अपने सिर पर गोली चलाई किन्तु रिवाल्व चुका था उसमें कोई गोली नहीं थी। धींगरा के पास एक भरा हुआ रिवाल छुरा और था और यदि वह चाहता तो वह अपने पकड़ने वालों का भी था। परन्तु उसने गम्भीरतापूर्वक कहा कि वह अन्य किसी का भी चाहता व सुरक्षित है और उन्हें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। उसने रिवाल्वर फेंक दिया। भीड़ उसके निकट आ गई। लोगों ने उन का प्रयत्न किया। इस पर धींगरा ने हंसते हुए व्यंग और उपहास के 'अरे मुझे चश्मा तो ठीक तरह से रख लेने दीजिए' तत्पश्चात हाथ बा

नलाल धीगरा के उस क्रांतिकारी ऐतिहासिक वक्तव्य को उसके चित्र के सहित छपवा
र प्रकाशित किया और भारत के प्रत्येक नगर मे उसका वितरित किया गया।

जब मदनलाल धीगरा ने १७ अगस्त १६०६ का वक्तव्य समाचार पत्र मे
ा तो वह आनन्दित हो आत्मविभोर हो उठा। १७ अगस्त १६०६ को प्रमन्न मन
गरा ने मा भारती के लिए फासी के तख्ते पर चढ कर मृत्यु को स्वय वरण किया।
यु के समय भी वह नितात शात था, और भारत माता के प्रति श्रद्धानवत था। मदन
ल धीगरा ने जिस उत्कृष्ट देशभक्ति, साहस और शौर्य का परिचय दिया वह भारत के
ांतिकारी इतिहास मे अभूतपूर्व था। धीगरा जैसे वीर देशभक्त मर कर भी अमर हो
ाते हैं।

समस्त योरोपीय देशो के समाचार पत्रो म मदनलाल धीगरा के इस साहस
े काय की सराहना की गई। पत्रो न पूरे पृष्ठ पर धीगरा का चित्र और उसका
क्तव्य प्रकाशित किया और प्रशसात्मक सम्पादकीय टिप्पणिया लिखी। आयरलैड के
माचार पत्रो ने पूरे पृष्ठ पर मदनलाल धीगरा का चित्र देकर छापा "आयरलैंड
दनलाल धीगरा को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है जिसने अपने देश के लिए अपना
लिदान कर दिया" मदनलाल धीगरा के उस साहसिक काय न तात्कालिक लेखको
वचारको और राजनीतिज्ञो को भी उसका प्रशसक बना दिया था। प्रसिद्ध लेखक ब्लट
 अपनी डायरियो मे धीगरा के सम्बध मे लिखा था कि किसी भी ईसाई बलिदानी ने
पने जजों का एसी निर्भीकता तथा मान के साथ सामना नही किया। आगे चल कर
लट ने लिखा कि भारत मे धीगरा की फासी का दिन सैकडा पीडियो तक शहादत के
दन की भाति मनाया जावेगा।

लायड जाज ने चर्चिल से धीगरा की देशभक्ति और उद्दात मनोभावो की
भूरि भूरि प्रशसा की। चर्चिल की भी धीगरा के सम्बन्ध मे बहुत ऊची धारणा थी।
उन्होंने धीगरा का वक्तव्य कठस्थ कर लिया था। उसके अतिम शब्दो को उद्धृत
करते हुए उन्होने लायड जाज से कहा— "राष्ट्र भक्ति के नाम पर जो भी ससार मे
कहे गए हैं उनमे सवश्रेष्ठ और सर्वोत्तम यही शब्द है।" लायड जाज और चर्चिल
दोना ही बृटिश राजनीतिज्ञ धीगरा की प्लूटार्क के अमर वीरो से तुलना
करते थे।

*प्रसिद्ध क्रांतिकारी लाला हरदयाल ने मैडम कामा द्वारा प्रकाशित 'वन्देमातरम्'
पत्र म धीगरा के सम्बन्ध म लिखा था "भविष्य मे जब भारत मे बृटिश साम्राज्य
धूल और राख मे मिल जावगी धीगरा के स्मारक भारत के प्रत्येक नगर के मैदानो मे
सुशोभित होंगे जो हमारे भावी बच्चो को उस गौरवशाली अभिजात व्यक्ति के जीवन
और मृत्यु को श्रद्धा के साथ याद करेंगे जिसने मातृभूमि के लिए सुदूर विदेश मे अपना
प्राण बलिदान किया था।"*

आगे चल कर लाला हरदयाल ने "धीगरा की अमर स्मृति" शीर्षक उस
लेख म धीगरा के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए लिखा— 'अमर
धींगरा वे वीर थे जिनके उपास्य शब्दो तथा कृत्यो का हम शताब्दियो तक सच्चे हृदयो
से ध्यान करना चाहिए। धीगरा ने अपने अभियोग की प्रत्येक अवस्था मे प्राचीन काल
के वीरो के समान आचरण किया है। उन्होने हम उन मध्यकालीन राजपूतो
और सिक्खो का स्मरण दिला दिया जो मृत्यु से नववधू के समान प्रेम करते थे।

किया है। देश के शत्रु वायली के भूतपूर्व शरीर पर धींगरा शांति पूर्वक
चलाते रहे।'

सावरकर धींगरा से २ जुलाई १९०९ को ब्रिक्सटन जेल में मिले और
'धींगरा मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूं तुम धन्य हो' धींगरा गदगद हो
सावरकर ने पूछा मदन मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं ? धींगरा न उत्तर
'यहां मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। एक आयना मिल जावे तो
हो। आइने में जरा यह देख सकूं गा कि मैंने कपड़े ठीक ढंग से पहन रखे
बस 'आइना ला दीजिए फिर मैं मौज म हूं।' उसने सावरकर से अपनी यह इच्छा
प्रकट की कि उसका वह वक्तव्य जिसे पुलिस ने उसकी जेब से निकाल लिया था
दबा दिया था किसी प्रकार प्रकाशित हो जावे।

जिन लोगों ने धींगरा को कभी आवस्था में देखा उनका कहना था कि "
प्रकाश सा है। ऐसा अक्षुब्ध मन तो स्थितप्रज्ञ या योगी ही प्राप्त कर सकता है"
की आवश्यकता है। बातों की नहीं, धींगरा कहा करते थे। 'यदि हमारे महान
विजय प्राप्त करनी है तो भारत में कई हुतात्मा होने चाहिए।

विलियम कर्जन वायली को गोली मारते समय भी धींगरा तनिक भी
या अधीर नहीं हुआ। उसने उस समय भी अद्भुत प्रशांत मन का परिचय
था। वायली तथा राजभक्त लालाकाका पर गोली चलाने के उपरांत जब धीं
रिवाल्वर फेंक दिया तो भीड़ उनके निकट आ गई। लोगों ने उनके हाथ बांध
प्रयत्न किया इस पर धींगरा ने हंसते हुए उपहास के रूप में कहा 'अरे मुझे चश्मा
ठीक तरह से रख लेने दीजिए तत्पश्चात हाथ बांधते रहियेगा। उस कमरे में
डाक्टर भी उपस्थित था। उसने देखा जब प्राय प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति का दम
रहा था तब केवल धींगरा ही शांत और अक्षुब्ध थे। उनका व्यवहार और
ऐसा था कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

सावरकर की यह उत्कट इच्छा थी कि धींगरा का वह ऐतिहासिक वक्तव्य
धींगरा को फांसी लगने से पहले ही प्रकाशित हो जावे जिससे कि वह मृत्यु का आलि
करने के पूर्व यह संताप लेकर जावे कि उसका वह वक्तव्य प्रकाशित हो गया। पर
उस वक्तव्य का प्रकाशन कोई सरल कार्य नहीं था। सावरकर के सहयोगी ज्ञानचंद
ने धींगरा के वक्तव्य की प्रतियां अमरिका और आयरलैंड के पत्रों में प्रकाशित होने
लिए भेज दीं। परंतु इङ्गलैंड में किसी समाचार पत्र को उस वक्तव्य को प्रकाशित
करने के लिए राजी करना कठिन था। धींगरा को फांसी लगने में केवल दो दिन
रह गए थे। सावरकर की उत्कट इच्छा थी कि फांसी लगने के पूर्व उसका वक्तव्य
प्रकाशित हो जाना चाहिए। अस्तु उन्होंने यह कार्य अपने मित्र डेविड गारनट
सौंपा। गारनट उस वक्तव्य को डेली न्यूज के राबर्ट लाईड के पास ले गया
राबर्ट ने उस वक्तव्य को अपने पत्र के रात्रि संस्करण में छाप दिया। १६ अगस्त
१९०९ को प्रातः काल लंदन में जब धींगरा का वह क्रांतिकारी वक्तव्य प्रकाशित हुआ
तो मानो भूकम्प आ गया। बृटेन की पुलिस और गुप्तचर यही समझ बैठे थे कि
वक्तव्य केवल उन के पास है परंतु उन्होंने चकित होकर देखा कि 'चुनौती' शीर्षक
वह वक्तव्य संसार भर में प्रसारित हो गया। प्रत्येक देश के प्रमुख समाचार पत्रों
उस वक्तव्य को प्रकाशित किया था। कुछ समय के उपरांत भारतीय क्रांतिकारियों

नलाल धीगरा के उस क्रांतिकारी एतिहासिक वक्तव्य को उसके चित्र के सहित छपवा प्रकाशित किया और भारत के प्रत्येक नगर मे उसको वितरित किया गया।

जब मदनलाल धीगरा ने १७ अगस्त १९०९ को वक्तव्य समाचार पत्र मे ा तो वह आनंदित हो आत्मविभोर हो उठा। १७ अगस्त १९०९ को प्रसन्न मन गरा ने मा भारती के लिए फासी के तख्ते पर चढ कर मृत्यु को स्वय वरण किया। मृत्यु के समय भी वह नितात शात था, और भारत माता के प्रति श्रद्धानवत था। मदन लाल धीगरा ने जिस उत्कट देशभक्त, साहस, और शौर्य का परिचय दिया वह भारत के क्रांतिकारी इतिहास म अभूतपूर्व था। धीगरा जैसे वीर दशभक्त मर कर भी अमर हो जाते हैं।

समस्त योरोपीय देशो के समाचार पत्रो म मदनलाल धीगरा के इस साहस पूर्ण कार्य की सराहना की गई। पत्रो ने पूरे पृष्ठ पर धीगरा का चित्र और उसका वक्तव्य प्रकाशित किया और प्रशसात्मक सम्पादकीय टिप्पणिया लिखी। आयरलैंड के समाचार पत्रो ने पूरे पृष्ठ पर मदनलाल धीगरा का चित्र देकर छापा "आयरलैंड मदनलाल धीगरा को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है जिसने अपने देश के लिए अपना बलिदान कर दिया" मदनलाल धीगरा के उस साहसिक कार्य ने तात्कालिक लेखकों, प्रचारको और राजनीतिज्ञो को भी उसका प्रशसक बना दिया था। प्रसिद्ध लेखक ब्लट ने अपनी डायरियो मे धीगरा के सम्बध म लिखा था कि किसी भी ईसाई बलिदानी ने अपने जजो का एसी निर्भीकता तथा शान के साथ सामना नही किया। आगे चल कर ब्लंट ने लिखा कि भारत मे धीगरा की फासी का दिन सैंकडो पीढियो तक शहादत के दिन की भाति मनाया जावेगा।

लायड जाज ने चर्चिल से धीगरा की देशभक्ति और उद्दात मनोभावो की भूरि भूरि प्रशसा की। चर्चिल की भी धीगरा के सम्बन्ध मे बहुत ऊची धारणा थी। उन्होंने धीगरा का वक्तव्य कठस्थ कर लिया था। उसके अंतिम शब्दो को उद्धृत करते हुए उन्होने लायड जाज से कहा— "राष्ट्र भक्ति के नाम पर जो भी ससार मे कहे गए हैं उनमे सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम यही शब्द हैं।" लायड जाज और चर्चिल दोनो ही बृटिश राजनीतिज्ञ धीगरा की प्लूटार्क के अमर वीरो से तुलना करते थे।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी लाला हरदयाल ने मैडम कामा द्वारा प्रकाशित 'वन्देमातरम्' पत्र म धीगरा के सम्बध म लिखा था "भविष्य म जब भारत म बृटिश साम्राज्य धूल और राख मे मिल जावेगी धीगरा के स्मारक भारत के प्रत्येक नगर के मैदानो म सुशोभित होंगे जो हमारे भावी बच्चो को उस गौरवशाली अभिजात व्यक्ति के जीवन और मृत्यु को श्रद्धा के साथ याद करेंगे जिसने मातृभूमि के लिए सुदूर विदेश मे अपना आत्म बलिदान किया था।"

आगे चल कर लाला हरदयाल ने "धीगरा की अमर स्मृति" शीर्षक उस लेख म धीगरा के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए लिखा— 'अमर धीगरा व वीर थे जिनके उपास्य शब्दो तथा कृत्यो का हम शताब्दियो तक सच्चे हृदयो से ध्यान करना चाहिए। धीगरा न अपने अभियोग की प्रत्येक अवस्था मे प्राचीन काल के वीरो के समान आचरण किया है। उन्होने हम उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो का स्मरण दिला दिया जो मृत्यु से नववधू के समान प्रेम करते थे।

रहते थे। एक अन्य अवसर पर उनसे कहा गया कि कवि टेनिसन के 'इन मेमोरियम' में से कुछ सुनाना चाहते हैं। गायकवाल उन्होंने उस पुस्तक को देख लिया और अगले दिन सहपाठियों ने जिस भाग के लिए कहा उसको नीचे से ऊपर सुना दिया।

उनके शिक्षक तथा मित्र कहा करते थे कि प्रकृति ने हरदयाल को अनेक उपहार दिए उनमें से स्मरण शक्ति वह अलभ्य उपहार है जिसे हरदयाल को देने के पश्चात प्रकृति ने उसका साँचा ही नष्ट कर दिया।

हरदयाल जब उन्नीस वर्ष के थे तभी समस्त भारत में उनकी प्रसिद्धि और नाम फैल गया था। उन्होंने गवर्नमेंट कालेज से पहले वर्ष अंग्रेजी का और दूसरे वर्ष इतिहास का एम० ए० किया। उन्होंने दोनों ही परीक्षाओं में पंजाब विश्वविद्यालय के कीर्तिमान को तोड़ कर नए कीर्तिमान स्थापित किये जिस तक दशाब्दों तक कोई नहीं पहुँच पाया। अन्त में पंजाब विश्वविद्यालय ने उस अप्राप्य और असम्भव कह कर हटा दिया। उस कीर्तिमान (रेकार्ड) को हटाने का एक कारण हरदयालजी का नाम भी था क्योंकि उस समय तक वे क्रांतिकारी नेता बन चुके थे और अंग्रेजों को यह सह्य नहीं था कि उनका नाम पंजाब विश्वविद्यालय के कीर्तिमानों में सर्वोपरि हो।

जब वे विद्यार्थी थे तो उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय का अत्यन्त प्रकाशवान नक्षत्र कहा जाता था। सेंटस्टीफेंस कालेज दिल्ली, गवर्नमेंट कालेज, दिल्ली और गवर्नमेंट कालेज, लाहौर के प्राध्यापक उनसे अत्यन्त स्नेह करते थे। उनको भारत सरकार का स्टेट स्कॉलरशिप इङ्गलैंड में अध्ययन करने के लिए मिला। वे तीन वर्षों तक इङ्गलैंड के विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते रहे थे।

इङ्गलैंड जाने से पूर्व ही हरदयालजी का विवाह हो चुका था। जब वे ऑक्सफोर्ड पहुँचे तो वहाँ का सत्र आरम्भ हो चुका था परन्तु उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर सेंट जान्स कालेज ने उन्हें प्रवेश दे दिया। वे आधुनिक इतिहास के ऑनर्स के लिए अध्ययन करने लगे।

ऑक्सफोर्ड में शीघ्र ही हरदयाल जी की बहुमुखी प्रतिभा तथा विद्वता की धाक बैठ गई। ऑक्सफोर्ड के विद्यार्थी तथा आचार्य उनको विलक्षण प्रतिभा के धनी तथा असाधारण बुद्धि वैभव का स्वामी समझते थे। इतिहास के अतिरिक्त राजनीति अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र उनके विशेष विषय थे। जब भी वे किसी विषय पर निबंध लिखते तभी उस विषय का प्रोफेसर यह कहता— इस विषय में मैं और कुछ अधिक नहीं बतला सकता' वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सर्वोत्कृष्ट छात्र के रूप में प्रसिद्ध हो गए। दीनबन्धु सी० एफ० एंड्रूज जो उनसे ऑक्सफोर्ड में मिले थे। उन्होंने उनके सम्बन्ध में लिखा है— उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम कर लिया था, वे सादे से छोटे आवास में रहते थे। स्वभाव से ही तपस्वी ऋषि के समान थे। अध्ययन में भी उनका यही हाल था। हरदयालजी के बुद्धि वैभव तथा विलक्षण स्मरण शक्ति की ख्याति शीघ्र ही ऑक्सफोर्ड से बाहर ब्रिटेन के बुद्धिजीवी वर्ग में फैल गई, भारतीय विद्यार्थी उन्हें अत्यन्त प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते थे।

उस समय ब्रिटेन में जो भी भारतीय छात्र अध्ययन करने के लिए आते थे उनका लक्ष्य और आदर्श आई० सी० एस० इण्डियन सिविल सेवा की प्रतियोगिता में बैठना होता था। जब वे उनमें असफल हो जाते तो या तो बैरिस्टर बन जाते अथवा किसी विश्वविद्यालय से कोई उपाधि लेकर भारत के कालेजों और विश्वविद्यालयों में

प्रोफेसर बताते थे। अरविन्द घोष ने भी आई० सी० एस० परीक्षा के लिए ही तयारी कर रहे थे। घुड़सवारी की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के कारण जब वे भाई सा ए म असफल हो गए तो वे उपाधि लेकर बड़ौदा में प्रोफेसर बने। सभी जानते थे यदि हरदयालजी आई० सी० एस० प्रतियोगिता में बैठते तो न केवल वे प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ही प्राप्त नहीं करते वरन् नया कीर्तिमान स्थापित करते। यही कारण था कि उनके प्रोफेसर सहपाठी मित्र तथा शुभचिन्तक सभी उनसे आई० सी० एस० की प्रतियोगिता में बैठने का आग्रह करते पर वे हंस कर कहते कि मैं सरकार की नौकरी करने के लिए उत्पन्न नहीं हुआ हूँ। उनका कहना कि यह मेरे सिद्धान्तों के विरुद्ध है। एक युवक में उस समय ऐसी भावना होना आश्चर्यजनक असाधारण और अपूर्व था। यह इस बात का प्रमाण है कि विद्यार्थी काल में ही उनमें गहन देशभक्ति की भावना जागृत हो गई थी और वे मातृभूमि को स्वतन्त्र करने में अपने जीवन को लगाने के संकल्प कर चुके थे।

छुट्टियों में हरदयाल भारत इस अभिप्राय से आए कि अपनी पत्नी सुन्दररानी को आक्सफोर्ड ले जावें। परन्तु उन्होंने इस बात की सूचना किसी को नहीं दी। उनके ससुर दीवान गोपालचन्द अपनी पुत्री को मेरठ ले जाना चाहते थे, परन्तु हरदयाल ने अपने मित्र खुदादाद से सब बातों की व्यवस्था पहले ही कर रखी थी। वे सुन्दररानी को पुष्प वश में बिठा ले गए। वहाँ से उन्होंने मेरठ की ओर प्रस्थान किया। जब वे लोग गाजियाबाद पहुँचे तो हरदयाल ने सुन्दररानी को बम्बई की गाड़ी में बिठा दिया और स्वयं भी डिब्बे में चढ़ गए। सुन्दररानी के मायके के रिश्तेदार महावीर चन्द समझ गए व हरदयाल डिब्बे से नीचे घसीट लाने के लिए चढ़ना चाहते थे कि खुदादाद ने उनको कस कर पकड़ लिया। महावीरचन्द चिल्लाए यह क्या हरदयाल ने हंस कर उत्तर दिया प्रेम और युद्ध में सब कुछ क्षम्य है गाड़ी चल दी। जब सुन्दररानी के पिता को इस षडयन्त्र का पता चला तो उन्होंने हरदयाल तथा सुन्दररानी की खोज में कई दल भेजे पुलिस को भी कहा कि वे उनको पकड़ ले पर सब व्यर्थ हुआ। हरदयाल बम्बई पहुच कर समुद्री जहाज से इङ्गलैंड चल दिए। लाहौर के दैनिक पत्रने पंजाबी को शीर्षक दिया पति द्वारा पत्नी का अपहरण अंग्रेजी पत्रों ने हरदयाल जी के नैतिक साहस की बहुत प्रशंसा की। एक ने लिखा कि हरदयाल केवल विद्वान और महान प्रतिभा के धनी ही नहीं हैं वे साहसी भी हैं।

यह वह समय था कि जब भारत में क्रांति की अग्नि सुलग रही थी और जो भारतीय विदेशों में रह रहे थे वे भी क्रांति के द्वारा भारत को स्वतन्त्र करने का स्वप्न देख रहे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में इंडिया हाऊस की स्थापना की थी जो इङ्गलैंड में क्रान्तिकारियों का मुख्य केन्द्र बन गया। विनायक दामोदर सावरकर इंडिया हाऊस में रहते थे और वहाँ जो भी भारतीय छात्र रहते थे उनमें क्रांति और गहन राष्ट्रीयता की भावना भरते थे। हरदयाल जी बहुधा आक्सफोर्ड से लन्दन जाते और सावरकर से मिलते थे। दोनों में गहरी मित्रता हो गई और हरदयाल जी अभिनव भारत के सदस्य बन कर क्रांति में दीक्षित हो गए। वे भी उग्र राष्ट्रवादी बन गए। उस समय श्री गोखले लन्दन में थे वे बहुत चाहते थे कि लाला हरदयाल उनके द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स आफ इंडिया सोसायटी के सदस्य बन जावें। वे स्वयं

हरदयाल जी से मिले और उनको उसका सदस्य बनाना चाहा लाला हरदयाल ने उन्हें उत्तर दिया कि उनकी अन्तरात्मा का मानना है कि ब्रिटिश सरकार की सहायता करने वाले लोग भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन को कभी सबल नहीं बना सकते।

ऑक्सफार्ड में लाला हरदयाल ने अपनी पत्नी सुन्दररानी को राजनीति और अर्थशास्त्र की शिक्षा देना आरम्भ किया क्योंकि वे उन्हें भारत में महिलाओं में प्रचार का कार्य करने के लिए तैयार कर रहे थे। वे उन्हें सेवा करने की कला भी सिखाने लगे। वे उन्हें संस्थाओं में ले जाते और उनके कार्यकर्ताओं से मिलाते।

उसी समय भारत सरकार ने भारत में लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिंह को गिरफ्तार कर लिया और उनको देश से निर्वासित कर दिया। लाला हरदयाल का मन रोष और क्षोभ से भर गया। उनके मन में यह विचार उठा कि उसी सरकार की दी हुई छात्रवृत्ति से मैं पढ़ रहा हूं जो देशभक्ति के साथ घोर अत्याचार करती है, उन्होंने छात्रवृत्ति से त्याग पत्र देने का निश्चय किया वे भारत मन्त्री के कार्यालय में गए और सचिव से कहा कि वे उस छात्रवृत्ति से त्याग पत्र दे रहे हैं। इस पर सचिव ने कारण पूछा तो हरदयाल जी चुप रहे। अंग्रेज अधिकारी ने कहा कि— "कुछ गड़बड़ मालूम होती है" इस पर हरदयाल जी को क्रोध आ गया 'ऐसा ही सही' कह कर चले गए। उन्होंने अपने बड़े भाई को दिल्ली में लिखा कि लाला लाजपतराय और अजीतसिंह की मिट्टी की मूर्तियां बना कर दीपावली पर बेचने का प्रबंध करना चाहिए।

जब हरदयाल जी ने भारत सरकार की छात्रवृत्ति को त्याग दिया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हें तीन वर्षों के लिए एक हजार रुपये की छात्रवृत्ति दी। परन्तु हरदयालजी के मन में एक द्वन्द्व और खड़ा हो गया व सोचने लगे कि क्या मैं अपना समय और शक्ति भारत में प्रचारक तैयार करने के कार्य को अर्पित करूं या विश्वविद्यालय की पढ़ाई में लगाऊं। उन्होंने अपने मित्र को लिखा "मैं सोच रहा हूं कि अगला वर्ष क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास भारतीय आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं और हमारे आंदोलन के लिए जिन विषयों की आवश्यकता है उनका और यूरोप में स्वतन्त्रता के आंदोलनों के कार्य को अवलोकन में लगाऊं या आक्सफोर्ड की तैयारी में लगाऊं। डिगरी मुझे शैक्षणिक आभूषण प्रतीक होती है। आक्सफोर्ड की डिग्री उस राजनीतिक ज्ञान की गारन्टी नहीं हो सकती जो एक महान आंदोलन के प्रचारक से होना चाहिए। यदि मैं अगला वर्ष आक्सफोर्ड की डिग्री लेने में लगा दूं तो यह इतने समय का नाश सिद्ध होगा क्योंकि मुझे कहीं नौकरी तो करनी नहीं है। क्रांतिकारी के जीवन का एक वर्ष बहुमूल्य समय है क्यों कि उसका जीवन अल्प और अनिश्चित होता है।" अतएव उन्होंने निश्चय किया कि वे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डिग्री भी नहीं लेंगे।

उनके प्रिंसिपल ने उनसे कहा कि आप भारत सरकार से रुपया नहीं लेना चाहते, न लें। आपका खर्च मैं अपनी जेब से दूंगा डिग्री लेने तक तो ठहर जाना चाहिए। परन्तु हरदयाल जी ने आक्सफोर्ड छोड़ दिया। भारत के इतिहास में यह पहला और अन्तिम उदाहरण था। हरदयाल जी भारत लौट कर विद्यार्थियों में काम करने के इच्छुक थे। उसी समय उनकी पत्नी के भाई का विवाह था उनके

ससुर ने साथ व्यय न किया और वे भारत लौट आए।

भारत पहुँचकर वे सबसे पहले पूना में बालगंगाधर तिलक से मिले और उन्हीं के पास ठहरे। लोकमान्य ने उन्हें सलाह दी कि आप अपना एक आश्रम बनाकर उसमें नवयुवकों को प्रशिक्षण दें जिससे कि आप उत्तर भारत में क्रान्तिकारी केन्द्रों का जाल फैला सकें। पूना से हरदयाल जी लौटे पर दिल्ली गए और वहाँ से अपनी ससुराल पटियाला गए। पटियाला में उन्होंने अपनी पत्नी से राष्ट्रीय संन्यासी बनने की आज्ञा प्राप्त कर ली। सुन्दर रानी अपने पति के हृदय में राष्ट्र सेवा की महान भावना को जान गई थी अतएव उन्होंने अपने पति को देश सेवा के कार्य में अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर देने की आज्ञा दे दी।

श्रीमती सुन्दर रानी की प्रथम सन्तान (जो अंतिम सन्तान सिद्ध हुई) होने वाली थी। परन्तु भारतीय राष्ट्रवाद के उस मस्त सम्पन्न संन्यासी को अपनी पत्नी का मोह और आने वाली सन्तान का स्नेह और ममता नहीं रोक सकी। वह भारत में क्रांति का बिगुल बजाने और मातृभूमि की दासता के बन्धनों को काटने के लिए अपनी पत्नी से अंतिम विदा लेकर चल पड़े। उनके पश्चात् उन्होंने अपनी पत्नी को जीवन में कभी नहीं देखा और उनकी पुत्री शान्ति के दर्शन का सौभाग्य उन्हें अपने जीवन में कभी नहीं मिला क्योंकि जब वह उत्पन्न हुई तब वे भारत से विदेश जा चुके थे। मानव जाति के इतिहास में वैराग्य उत्पन्न होने पर तथा आत्म बोध की खोज के लिए अपने गृह और परिवार का त्याग करने की घटनाएं मिलती हैं पर मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए अपनी पत्नी और भावी सन्तान तथा सभी परियोजनों को त्याग कर राष्ट्रीय संन्यासी बनने के अधिक उदाहरण नहीं मिलते। तो सुन्दर रानी ने अश्रु भरे नेत्रों से उन्हें विदा दे दी। उसके उपरान्त हरदयालजी अपनी जीवन संगिनी को जीवन में फिर कभी न देख सके और अपनी पुत्री के मुख को तो जीवन में उन्होंने एक बार भी नहीं देखा।

मातृभूमि के लिए त्याग की यह पराकाष्ठा थी। हरदयाल जी जैसे विलक्षण प्रतिभा और प्रज्ञा के धनी व्यक्ति के लिए धन वैभव, यश, पद, सत्ता, अधिकार सभी प्राप्त कर सकना अत्यंत सरल था परन्तु उन्होंने सब कुछ ठुकरा दिया। यही नहीं उन्होंने मातृभूमि के लिए अपनी पत्नी भावी सन्तान और परिजनों का भी त्याग कर दिया। वास्तव में भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने वालों की लम्बी सूची में हरदयाल जी का यह त्याग अपूर्व और अतुलनीय था। आज की पीढ़ी जो कि हमारे राजनीतिज्ञों की सत्ता और स्वार्थ की अशोभनीय होड़ को देखने की अभ्यस्त हो गई है यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि भारत की स्वतन्त्रता के लिए लाखों देशभक्तों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था।

यदि हरदयाल जी चाहते तो दिल्ली में आश्रम की स्थापना कर सकते थे क्योंकि वहाँ के युवक उनकी पूजा करते थे वृद्ध उनके समक्ष नत मस्तक होते थे और जनसाधारण उनको आदर की दृष्टि से देखता था। समाज का प्रत्येक वर्ग उनकी आराधना करता था क्योंकि उनकी धारणा थी कि उन जैसा व्यक्ति ही देश को स्वतन्त्र बना सकता है पर वे दिल्ली नहीं ठहर सकते थे क्योंकि उनकी स्नेहमयी मातेश्वरी भोलीरानी चाहती थी कि उनका पुत्र सामान्य जीवन व्यतीत करे ... वे अपनी माता को नहीं कह सकते थे अतएव वे दिल्ली से दूर रहना

चाहते थे ।

कई स्थानों पर घूमने के उपरांत लाला लाजपतराय के निमन्त्रण पर वे लाहौर आए। लालाजी की इच्छा थी कि श्री हरदयाल लाहौर में युवकों को देश सेवा के लिए प्रशिक्षित करें और 'पंजाबी' दैनिक पत्र का सम्पादन करें। लाहौर में उन्होंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। उन दिनों हरदयाल जी केवल धोती पहिनते थे और कंधों पर गेरुआ रंग का दुपट्टा डालते थे। वे एक संयासी की भांति रहते थे। जब उन्होंने अपना प्रशिक्षण और प्रचार का कार्य आरम्भ किया तो शीघ्र ही उनके आसपास बहुत से युवक इकट्ठे हो गए। उनके अनुयायी और शिष्य तो उनकी पूजा करते ही थे पर जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता वह उनके आश्चर्यजनक व्यक्तित्व, प्रकांड पांडित्य, अतुलनीय विद्वता और अभूतपूर्व मेधा से प्रभावित हो उनकी ओर आकर्षित हो जाता। उनमें चुम्बकीय शक्ति थी। शिक्षित और युवक तो उनकी पूजा करते ही थे पर साधारण व्यक्ति भी उनको अत्यंत आदर की दृष्टि से देखते थे। जब वे निकलते तो दूकानदार अपनी दूकानों में खड़े होकर सर नवाते और उनकी ओर टकटकी लगाकर देखते। उन्होंने एक पुस्तकालय की स्थापना की और अपने अनुयायियों को राजनीति, अर्थशास्त्र इतिहास समाजशास्त्र की प्रमाणिक पुस्तकें पढ़ने को कहते। वे स्वयं पंजाबी दैनिक पत्र का सम्पादन करते और माडर्न रिव्यू तथा इंडियन रिव्यू में नियमित रूप से लिखते। वे जब अपने शिष्यों को लिखवाने लगते तो लिखवाते ही चले जाते। पुस्तकों के उद्धरण तथा पृष्ठ संख्या जबानी लिखाते। उद्धरणों का मूल पुस्तक से मिलान करना और यह देखना कि उनमें कोई भूल तो नहीं है लिखने वाले शिष्य का काम था। उनके शिष्य चटर्जी का कहना था कि कभी कोई भूल नहीं निकली।

उनकी योजना यह थी कि अपने शिष्यों को प्रशिक्षित कर उनकी मंडलियां बनाकर सम्पूर्ण भारत में भेज दी जावें और समस्त देश में क्रांति के पथ का प्रसार करें। जब उनके शिष्य अपने अपने स्थानों पर क्रांतिकारी दल स्थापित कर लें तो उन यूनिटों को मातृ संस्था के साथ सम्बद्ध कर लिया जाय। उस समय बंगाल में अरविंद महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक और पंजाब में लाला हरदयाल क्रांति के लिए बलिदानी क्रांतिकारियों को तैयार कर रहे थे। हरदयाल जी का विचार था कि जब समस्त भारत में सशक्त क्रांतिकारी संगठन खड़ा कर लिया जाय तो सघात किया जावे। हरदयाल जी के लेखों में क्रांति की चिनगारियां रहती। पाठकों की दुनिया पर हरदयाल जी का ऐसा प्रभाव था कि जो उनके लेख को पढ़ लेता वह उनके द्वारा अंग्रेजों पर लगाए गये आरोपों का सैकड़ों वरन हजारों लोगों तक पहुंचाता। उत्तर भारत विशेषकर पंजाब और संयुक्त प्रांत (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) की सरकारें लालाजी के इस प्रचार से भयभीत हो गईं। हरदयाल जी की क्रांतिकारी योजना, उनके बढ़ते हुए प्रभाव जनसाधारण में बढ़ती हुई उनकी लोकप्रियता, से सरकार सन्त्रस्त हो गई। वह उन्हें खतरनाक क्रांतिकारी नेता के रूप में देखने लगी। भारत सरकार उनको गिरफ्तार कर लम्बे समय के लिए अंडमन (कालापानी) में निर्वासित करने के सम्बंध में विचार करने लगी। वायसराय की कार्यकारी कौंसिल के एक भारतीय सदस्य को भारत सरकार की दुरभि संधि का पता चल गया। उन्होंने गुप्त रूप से लाला लाजपतराय को यह संदेश भेजा ' हरदयाल भारत सरकार के सबसे ऊंचे

अधिकारियो के दिमाग मे घूम रहे है। उनका बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए आप उन्हे शीघ्र देश के बाहर भेज दे।" हरदयाल जी विदेश नही जाना चाहते थे, भारत में रह कर ही स्थिति का मुकाबला करना चाहते थे। परन्तु लाला लाजपतराय तथा अन्य मित्रो ने उन्हे भारत से निकाल कर किसी अज्ञात स्थान पर रहने के लिए विवश कर दिया।

जब लाला लाजपतराय ने उन्हे शीघ्र ही देश के बाहर चले जाने के लिए विवश कर दिया तब हरदयाल जी ने अपने दल का कार्य दिल्ली के मास्टर अमीरचन्द के सुपुर्द कर दिया। इसी बीच हरदयाल जी की गिरफ्तारी के वारंट निकल गए। हरदयालजी उस समय बाहर गए हुए थे लाला लाजपतराय ने उन्हे बाध्य किया कि वे तत्काल भारत से चले जावें।

जब हरदयाल जी का देश से बाहर जाना निश्चित हो गया तो उन्होने अपने शिष्यो और अनुयायियो से कहा– "समाचार पत्रो तथा व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा जनमत संगठित करना, लोगो मे क्रांति की भावना तथा उत्साह भरना और भारतीय रियासतो मे मिल जाना। सरकार की सैन्य शक्ति प्राय ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त होती है, पुलिस के सिपाही शहरो की गन्दी बस्ती से और प्रशासन की चालक शक्ति विश्वविद्यालयो से प्राप्त होती है। भारतीय रियासतें सरकार की आरक्षित शक्ति का काम करती हैं। सभी दिशाओ मे सरकार की शक्ति का तलोच्छेदन करना आवश्यक है। एक बार पैर जम गए तो क्रांतिकारी शक्तियां स्वयमेव शक्ति और संवेग पकड लेंगी। प्रत्यक्ष कार्यवाही के द्वारा शासक वर्ग के जो भी देशी तथा विदेशी सदस्य क्रांतिकारी गतिविधि के लिए खतरनाक सिद्ध हो उनका निरसन कर दिया जाए। इससे जनता की भावना उद्दीप्त होगी और क्रांतिकारी दल को नए युवक मिलेंगे।'

जब हरदयाल जी लाहौर से विदा हुए तो उनके शिष्यो की आंखो मे आंसू आ गए। मास्टर अमीरचन्द ने हरदयाल जी के क्रांतिकारी दल को उनके शिष्यो को महाविप्लवी नायक रास बिहारी बोस को सौंप दिया।

हरदयाल जी भारत से लंदन चले आए पर वे अधिक दिनो वहा नही रहे। कारण यह था कि मदनलाल धींगरा ने जब सर कर्जन वायली का वध कर दिया तो श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस की इमारत बेच दी और इंडिया हाऊस समाप्त हो गया। उस समय जो भी भारतीय क्रांतिकारी योरोप मे थे उनसे श्यामजी कृष्ण वर्मा का मतभेद हो गया। अब भारतीय क्रांतिकारियो का पेरिस केन्द्र बन गया था और मैडम कामा क्रांतिकारियो की सर्वमान्य नेता थी उन्होने सरदार सिंह राणा की सहायता से निष्ठावान और परिक्षित क्रांतिकारियो की एक टोली बनाली थी। उन्होंने सर्वोत्तम भारतीय राष्ट्रवादी तत्वो का सच्चे क्रांतिकारी पत्र के अधीन एकत्रित और संगठित करने का निश्चय किया। उसके सम्पादन के लिए एक दृढ धारणा और ऊंची साहित्यिक प्रतिभा वाला सम्पादक अपेक्षित था। दृष्टि हरदयाल जी पर गई और उन्होंने हरदयाल जी को आमंत्रित किया। हरदयाल जी ने सहर्ष उस उत्तरदायित्व को स्वीकार किया और वे लंदन से पेरिस चले आए। सितम्बर १९०९ मे उन्होंने 'वन्देमातरम' प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया। उसका सम्पादन और मुद्रण जेनवा (स्विट्जरलैण्ड) मे किया जाता था। आर्थिक दायित्व मैडम कामा का था।

'वन्देमातरम' के मुख पृष्ठ पर दो चित्र रहते थे। एक भारत के राष्ट्रीय ध्वज का, दूसरा भारत माता का जो म्यान से तलवार निकाल रही होती। उसके चरणों मे भगवान गीता का श्लोक देवनागरी म लिखा रहता—

नथ चेत्वमिम धर्म्य सग्रामय न करिष्यमि।
तत स्वधर्म कीर्ति च हित्वा पापमवाप्य मसि।

झण्डे पर तीन पट्टिया तीन रगो का प्रतिनिधित्व करती। पहली पट्टी पर आठ कमल रहते, दूसरी मे देवनागरी मे 'वन्देमातरम' लिखा रहता। तीसरी पट्टी पर सूर्य और चन्द्रमा बने रहते। झण्डे के नीचे लिखा रहता भारतीय सम्कृत का मासिक मुख पत्र उसके नीचे यह उद्धरण रहता— अत ह आनन्द अपने आप के लिए तुम ही दीप बनो। बाहर के किसी आश्रय की खोज मत करो। अपना निर्वाण परिश्रम से प्राप्त करो। (गौतम बुद्ध)

हरदयाल जी ने पहले ही अक मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए तीन अवस्थाओं की विशद व्याख्या की। प्रथम नैतिक तथा बौद्धिक तैयारी द्वितीय युद्ध युद्ध के पश्चात पुनर्निर्माण तथा सगठन। उन्होने इटली का उदाहरण देते हुए लिखा मैजनी के बाद गैरिबाल्डी, गैरिबाल्डी के बाद कावुर। यह सयोग की बात है कि रूस के क्रातिकारी लेखक मैक्सिम गोर्की ने अपने २० अक्टूबर १९१२ के पत्र मे श्यामजी कृष्ण वर्मा को भारत का मेजनी लिख कर सम्बोधित किया है वहा भारत म सी० आई० डी० के अग्रेज डायरेक्टर सी० आर० क्लीवलाड ने अपने नोटिस (१७ मार्च १९१४) मे हरदयालजी को भारत का गेरीबाल्डी बतलाया है। उसने लिखा यह सामान्य विचार पाया जाता है कि हरदयाल गेरिबाल्डी का काम करना चाहते ह।"

वन्देमातरम् के पहले अक मे हरदयालजी ने धीगरा की पावन स्मृति को इन शब्दो म दीप्तमान किया—

'अमर धीगरा वे वीर थे जिनके शब्दो और कृत्यो का हमे शताब्दियो तक सच्चे हृदय से ध्यान करना चाहिए। धीगरा न अपने अभियोग की प्रत्येक अवस्था मे प्राचीनकाल के वीरो के समान आचरण किया है। उन्होंने हमे उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो के इतिहास का स्मरण दिला दिया है जो मृत्यु से वधू के समान प्रेम करते थे। इङ्गलैंड समझता है कि उसने उन्हे मार डाला है। वास्तव म वे सदा जीवित रहेंगे। उन्होंने भारत म अग्रेजो की प्रभुसत्ता को घातक चोट पहुचाई है।'

'वन्देमातरम' के द्वारा हरदयाल जी क्राति की चिनगारिया बिखेरने लगे। उनके सम्पादकीय लेख इतने ओजस्वी और सार गर्भित होते कि शीघ्र ही वदेमातरम सर्वत्र बड चाव से पढा जाने लगा और उसका सर्वसम्मान होने लगा। हरदयाल जी की रचनाओ को पढने के लिए ही लोग वन्देमातरम पढते उनके लेखो को पढने से ज्ञात होता था कि प्रकृति ने उनको बुद्धि वैभव प्रचुर मात्रा मे दिया है और उनकी लेखनी क्राति के स्फुलिंग छोडती थी। स्वाभाविक था कि सरकार उससे घबरा गई। भारत सरकार के सी० आई० डी० के निदेशक न गृह विभाग के मत्री को लिखा कि वन्देमातरम प्रकट रूप म लोगो को विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करता है और उन्हे परामर्श देता है कि यह कार्य सेना की राजभक्ति के तलोच्छेदन स आरम्भ करना चाहिए। अतएव उसका यह सुझाव था कि भारत मत्री उच्च सरकार से

उसके लिए विरोध प्रकट करें।

अपने एक लेख में हरदयाल जी ने लिखा "हमारे क्रातिकारी आंदोलन का अंतिम बार ध्येय हमारे अत्याचारियो के विरुद्ध खुला युद्ध होगा। यह युद्ध तभी सफल हो सकता है जब हमारे साथ जन साधारण और सेना हो। किसी भी आदोलन के लिए विश्वास और उत्साह का बहुत महत्व है इसलिए समस्या यह है कि सेना का हम अपनी ओर कर लें?" अत म लेख म था— नवयुवकों को सेना म भर्ती होने से रोकना आत्म हत्या है। अब सघर्ष इस प्रकार चलना चाहिए— सभी नवयुवक विशेष कर शिक्षित प्रति वर्ष सेना म भर्ती होगे और प्रति वर्ष प्रशिक्षित आत्मा ब्रिटिश सेना को छोड देगे जिससे कि उनका स्थान नए रगरूट ले सकें।

परन्तु पेरिस मे हरदयाल जी को जितना सहयोग और आर्थिक सहायता की आवश्यकता और अपेक्षा थी वह नही मिला अतएव व बडे निराश हो गए उधर वीर सावरकर के गिरफ्तार हो जाने से भी उनको गहरी निराशा हुई हरदयाल जी ने मडम कामा के साथ मिल कर फ्रासीसी समाजवादी नेता जे० जारिस की सहायता से सावरकर की मुक्ति के लिए आदोलन किया। हरदयाल जी तब एम० पी० टी० आचार्य फ्रासीसी पत्र 'ता' (पेरिस) के सम्पादक से मिले और उससे कहा कि आप सावरकर के मामले म रुचि लें परन्तु उसने ध्यान नही दिया परन्तु समाजवादी पत्र लालयु' मानती न सावरकर के पक्ष म लिखा। कोपिनहेग अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन ने सावरकर की मुक्ति की माग की। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रासीसी सरकार अतर्राष्ट्रीय न्यायालय म इस प्रश्न को ले गई परन्तु परिणाम कुछ नही निकला। फ्रास मे अपेक्षित सहयोग और सहायता न मिलने के कारण तथा वीर सावरकर की गिरफ्तारी से हरदयाल जी थोड निराश हो गए उधर उनके मन म वैराग्य की भावना प्रबल हो गई। वे तपस्या करने के लिए सयुक्त राज्य अमरिका के दक्षिण म स्थित वेस्टइडीज के टापू फ्रास ला० मार्तीनीक टापू चले गए।

कुछ समय के उपरात भाई परमानन्द उनसे वहा मिलने गए और उन्होंने हरदयाल जी को सयुक्त राज्य अमरिका म रह कर हिंदू सस्कृत तथा भारतीय स्वतन्त्रता के लिए काम करने को कहा। अतएव हरदयाल जी सयुक्त राज्य चले आए हरदयाल जी सानफ्रासिस्को रह कर प्रचार काय करने लग इसम उनको आशातीत सफलता मिली। व जहा भारतीय बडी सख्या म थे वहा घूम घूम कर भाषण देते उनके भाषणो की समाचार पत्रो म विशेष चर्चा होती। उनके व्याख्यानो की अमरिका म धूम मच गई व अमरिका म ब्रिटिश शासन के द्वारा भारत के शोषण का अत्यन्त प्रभावशाली चित्र उपस्थित करने लग।

जब दिल्ली म २३ दिसम्बर १९१२ को लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया। हरदयाल जी का हृदय उल्लास से भर गया। उन्होंने १९१३ के प्रथम सप्ताह म बम की सार्थकता के सम्बन्ध म युगातर सर्कुलर नामक पुस्तक लिखी जिसे उन्होंने श्याम कृष्ण वर्मा को पेरिस भेजा कि व उसे प्रकाशित कर भारत तथा ससार के अन्य देशों को भेजें। [illegible] पुलिस [illegible] ब्रिटिश सरकार घबरा गई। स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर [illegible] के [illegible] [illegible] म पता लगाने लग कि यह कहा छपा है इस पत्र [illegible] क्रातिकारी [illegible] [illegible] प्रसिद्ध युगातर 'गदर' का [illegible]

दिते हैं जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को पुरी तरह हिला दिया था।

'युगान्तर सरक्युलर'

दिल्ली का बम

'२३ दिसम्बर १६१२ के बम तेरा स्वागत है। आशा तथा साहस के अग्रदूत, सोई हुई आत्माओं को पुन तंद्रा से जगाने वाले प्रबोधक तुम ठीक समय पर आए।'

'इस स्मरणीय दिन पर अत्याचारी के भूशायी शरीर और ध्वस्त हौदे का विचार कर हम प्रसन्न हो आनन्द क्यो मना रहे हैं हमारी आखो मे खुशी क्यो आ गए हैं? क्योकि स्वतन्त्रता की बिजली की इस कडक से हमारे युवा स्त्री पुरुष शिक्षा ग्रहण करेंगे।'

'देश के शासको ने देश के पूर्व शासको की नकल करते हुए अपनी प्रतिष्ठा और धाक को बढाना चाहा। अग्रेज मुगल बादशाहो का स्थान लेना चाहते थे। उन्होने सोचा कि अग्रेजो को भी अपने लिए शानदार महल बनाने चाहिए और अपने आप को मुगल सम्राटो की भाति ही तलवारो और अस्त्रशस्त्रो से घिरे रहना चाहिए जिससे सर्वसाधारण भारतीय के मन पर धाक पडे और प्रभाव रहे। यदि भारत पर राज्य करना है तो भारतीयो के दिलो पर अपना सिक्का जमाना आवश्यक है। लार्ड कर्जन के मस्तिष्क की यह उपज थी कि भारत म ब्रिटिश साम्राज्य को तख्ते ताऊस, कारचोबी की झूलो और सोने चादी के हौदो से सजे हाथियो और सुनहले छत्रो की सहायता से सुदृढ बनाना चाहिए। वे जनसाधारण को बहुचर्चित इतिहास प्रसिद्ध मुगल बादशाहो की शान शौकत और वैभव से चकित और भ्रमित कर देना चाहते थे जिससे कि क्रातिकारियो की बढती हुई शक्ति को रोका जा सके परतु अत्याचारी यह भूल गए कि जिन लोगो ने युगान्तर को अपने रक्त से लिखा था उनकी जाति मर नही गई थी।

परतु यह ब्रिटिश साम्राज्य दिल्ली के सिवाय अपनी खूनी शान के साथ और कहा खडा किया जा सकता था। यही कारण था कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थिरता और स्थायित्व को राजाओ और भारतीयो को दिखलाने के लिए अनेक साम्राज्यो की प्राचीन देश की राजधानी को अपनाने का निश्चय किया गया। यही कारण था कि सरकार ने कलकत्ते से अपना बोरिया बधना उठा कर दिल्ली जाने का निश्चय किया।

अत मे इङ्गलैंड के थके मादे बादशाह को दरशनी हुडी के रूप म १६११ की सर्दियो मे दिल्ली लाया गया जिससे कि भारतीयो के मन पर साम्राज्य की शान का प्रभाव पडे। इस महान दरबार मे जनता का रुपया भ्रष्ट राजाओ और रानियो पर नष्ट किया गया। उसका उद्देश्य यह प्रकट करना था कि साम्राज्य निर्माण का काम पूरा हो गया। इसके द्वारा समस्त ससार को सरकार यह बतलाना चाहती थी कि क्रातिकारी भावना पर विजय पाने के उपरात उसको शात कर दिया गया है। वार्धक्य और दौर्बल्य के कारण निर्बल बादशाह जार्ज फिफ्थ के महल के छज्जे से चिल्लाया—देखो खुदीराम बोस के काय का निराकरण कर दिया गया है' पर क्राति की भावना ने कुछ और ही ठान रखा था।

एक वर्ष बीत गया। निरकुश शासको का घमण्ड सतुष्ट न हुआ। वे हर बात मे मुगलो की नकल करना चाहते थे। भारत के बाबरराम जैसे अस्थायी

रपोर्ट का मत है कि जो क्रांतिकारी आंदोलन प्रथम महायुद्ध के पूर्व आरम्भ किया गया ह हरदयाल जी का काम था।

हरदयाल जी अब सयुक्त राज्य अमेरिका मे घूम कर वहा बसे हुए लाखो भारतीयों म भारत की स्वतन्त्रता के लिए क्रांति की आवश्यकता पर भाषण देने लगे और सशस्त्र क्रांति का प्रचार करन लगे। अमरिका मे बसे भारतीयों म उन्होंने भारतीय क्रांति के लिए तीव्र उत्साह और आवेग उत्पन्न कर दिया। उन्ह क्रांतिकारी कार्यों के लिए भारतीयो न दिल खोल कर धन दिया। अब उन्होंने पत्र प्रकाशित करने का विचार किया।

कलकत्ता म बगाली क्रांतिकारियो न एक समय भूमिगत 'युगान्तर' पत्र प्रकाशित किया था। हरदयाल जी न प्रकाशन के मुख्य स्थान का नाम युगान्तर आश्रम रखा और पत्र का नाम 'गदर' रखा। युगान्तर आश्रम म हरदयाल जी, ब्रह्मचारी वग और कार्यकर्ताओ का इकट्ठा रहना पडता था। उन्ह बारी बारी से भोजन बनाना, कमरा का झाडू बुहारना पडता था। सारा कार्य वे लोग स्वय करते । भारतीय जो खेती करते थे, आश्रमवासियो के लिए आटा दाल सब्जी तथा फलो की बोरिया भेज देत। प्रेस को भी हरदयालजी और उनके साथी कार्यकर्ता ही चलाते थ।

'गदर' एक नवम्बर १९१३ को निकला। हरदयाल जी के म पार्टीय लेख क्रांतिकारी विचारो से ओत प्रोत होते उनकी लेखनी स क्रांति की चिनगारिया निकलती। 'गदर' कोई साधारण पत्र न था। वह बम से भी अधिक भयानक विस्फोट था। भारत सरकार बहुत सावधान थी उसका भारत प्रवेश वर्जित था परन्तु फिर भी उसकी हजारो प्रतिया देश्न विभिन्न नगरों और कस्बो मे ही नही पहुचती थी वरन् सैनिक छावनियो म भी पहुचती थी। सीडीशन कमेटी [१९१८] रिपोर्ट न 'गदर' के विषय म लिखा— 'हिंसा मे विश्वास रखने वाला यह पत्र ब्रिटिश विरोधी था। उसका प्रत्येक वाक्य हत्या और विद्रोह का प्रचार करता और लोगा की भावनाओ को भड़काता था। भारतीयो को वह प्रेरित करता कि वह भारत इस उद्देश्य जायें कि वहा विद्रोह करना है। ब्रिटिश सरकार को जड़ से उखाड़ निकालना है और अंग्रेजो की हत्या करनी है।'

गदर केवल भारत मे ही नही कनाडा, ईरान, सूडान अदन, मरक्को दक्षिण अफ्रीका, मैडागास्कर, पूर्व अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, ट्रिनीडाड, पाडिचेरी स्याम, हागकाग, सिगापुर, फिलिपाइन्स जहा भी विदेशो म भारतीय रहते वहा पहुचता और क्रांति की भावना जाग्रत करता। लाला हरदयाल के प्रयत्नो से गदर पार्टी की स्थापना हुई और वह एक शक्तिशाली सगठन बन गया। उसकी शाखाए समस्त सयुक्तराज्य अमेरिका तथा अन्य देशो मे स्थापित हो गई। उसी समय प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया। भारत म सशस्त्र विद्रोह के लिए यह अत्यन्त अनुकूल अवसर था अतएव गदर पार्टी के नेता सयुक्त राज्य अमेरिका म जर्मन राजनायिको से मिले।

३१ दिसम्बर १९१३ को सेक्रामटो मे एक विशाल सभा युगान्तर आश्रम के आधीन हुई वह अत्यन्त महत्व की थी। उसम सयुक्त राज्य अमेरिका म प्रत्येक राज्य के भारतीयो के प्रतिनिधि और ब्राजील तथा मनीला जैसे दूर स्थानो से भी भारतीय प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। उस सभा म जरमन कौसिल भी आए। उस सभा मे हरदयालजी का अत्यन्त ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यान हुआ। सभी मन्त्र मुग्ध होकर

क्रांति के उस देवता के हृदय के गहरे तल से निकले उद्गार सुन रहे थे। उनके भाषण ने जैसे उपस्थित भारतीयों में नया उत्साह उत्पन्न कर दिया, उनमें की लहर दौड़ गई व सब अपने नेता के आदेश का पालन करने को तैयार थे। तालियों और जयकारों से आकाश गूँजने लगा। स्वतन्त्रता की दृढ़ निश्चय सभी के चेहरे दमक रहे थे। समस्त वातावरण अद्भुत जान में समायोजित हो गया। तभी हरदयाल जी के प्रिय युवक करतारसिंह गाने लगे—

"चलो देश नू युद्ध करन
एहो आखरी वचन फरमान हो गए।"

अंग्रेजों को गुप्तचरों के द्वारा जो गदर पार्टी अमेरिका में क्रांति के लिए प्रयत्न कर रही थी और जरमन सरकार से जो अस्त्र शस्त्रों की सहायता मिल रही थी तथा भारत में क्रांतिकारी काम जो सशस्त्र क्रांति का आयोजन कर रहे थे इसकी सूचना मिल चुकी थी इसलिए वे बहुत चिंतित हो उठे थे। अंग्रेजों ने गदर पार्टी के संगठन में अपने गुप्तचरों का प्रवेश कराने का प्रयत्न किया। जब हरदयाल जी को इसका पता चला तो उन्होंने अपना समस्त कार्य भार दे दिया। प्रचार का उन्होंने अपने पास रखा और क्रियाविधि रामचन्द्र जी के सुपुर्द कर दी। रामचन्द्र जी ने क्रियाविधि का प्रबन्ध अत्याधिक गोपनीय ढंग से किया क्योंकि भय था कि अंग्रेजों के गुप्तचर घुसने का प्रयत्न करेंगे। सभी कार्यकर्ताओं को यह भी मालूम नहीं था कि क्रियाविधि भाग में क्या हो रहा है

अंग्रेज हरदयाल जी को किसी प्रकार कब्जे में लेना चाहते थे। भारत में न वायसराय को सूचित किया कि हरदयाल को शायद निर्वासित नहीं किया सकता। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने अमेरिका की सरकार पर दबाव डाला है वह हरदयाल को उनके हवाले कर दे।

२५ मार्च १९१४ की रात्रि को जैसे ही हरदयाल जी ने एक सभा में अपना भाषण समाप्त किया अप्रवास इन्स्पेक्टर ने आगे बढ़ कर उन्हें गिरफ्तारी का वारंट दिया और गिरफ्तार कर लिया। परन्तु भारतीयों ने शीघ्र ही पाच सौ डालर की जमानत देकर उन्हें छुड़ा लिया और वे युगान्तर आश्रम आ गये। भारतीयों को भय हो गया कि कहीं अंग्रेजों के दबाव से संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार हरदयाल जी को अंग्रेजों के हवाले न कर दे। इस कारण सबों ने आग्रह किया कि वे संयुक्त राज्य अमेरिका छोड़ दें।

इसी बीच भारत में रासबिहारी बोस ने पेशावर से लेकर कलकत्ता तक सैनिक छावनियों से सम्पर्क स्थापित कर जो सशस्त्र क्रांति की योजना बनाई सरकार को उसकी अपने भेदिये से पूर्व सूचना मिल जाने के कारण असफल हो गई। उधर कामागाटामारू जहाज में हजारों क्रांतिकारी भारतीय भारत में आए उन पर बजबज में गोलियां चलाई गईं और बहुत से हताहत हुए। अतएव सशस्त्र क्रांति योजना असफल हो गई।

हरदयाल अमेरिका से जेनेवा आ गए थे और वहां से बर्लिन आ गए तथा विदेश मन्त्रालय से उन्होंने अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। इसके पश्चात १९१५ में भारत के सम्बन्ध में जर्मनी की सहायता से जो भी योजना बनी अथवा सैनिक कार्यवाही की गई उसमें मुख्यतया हरदयाल जी का हाथ

था। गदर के १८ अगस्त १९१४ के अंक में स्वतन्त्र सैनिकों के लिए हरदयाल जी न निम्नलिखित निर्देश छाप थे।

'क्रांति के साहित्य का प्रचार करें, भारतीय सैनिकों को इस बात के लिए उत्साहित करें कि व प्रत्यक स्थान पर चाट करें।'

युद्ध ही दिना उपरान्त गदर' म मोट अक्षरो म नीचे लिखा विज्ञापन निकाला गया 'आवश्यकता है भारत म गदर मचाने क लिए वीर सनिको की। वतन मृत्यु इनाम शहादत, पेंशन स्वतन्त्रता युद्ध क्षेत्र भारत।

'गदर' भारत की कई भाषाओं म छापा जाता था और गुप्त रूप से भिभिन्न प्रान्ता म सेना तथा साधारण जन म बाटा जाता था।

गदर' की योजना यह थी कि जबकि अंग्रेज युद्ध म फसे ह भारत म अंग्रेजी फौजें नाम मात्र की ह तब क्रांतिकारियों को चोट करना चाहिए। आक्रमण के पूर्व अंग्रेज अफसरो को मार दो, पुल तार काट कर रलवे लाइनों को नष्ट करने के उपरांत शस्त्रों और गोला बारूद स्थानीय क्रांतिकारी कन्द्रों के हवाले किया जाना था तब पजाब म सभी क्रांतिकारी नेताओं को इकट्ठा होना था, और वहां से चल कर विभिन्न स्थानो पर एक वष तक युद्ध करते रहना थ।

परन्तु देश का दुर्भाग्य था कि सर सिकन्दर हयात खा के भाई डिप्टी सुपरिटेंडेंट पुलिस न क्रांतिकारियों मे अपने एक गुप्तचर कृपालसिंह को घुसड दिया। रासविहारी न जब कृपालसिंह को देखा तो व समझ गए कि वह पुलिस का गुप्तचर है उन्होन उसको मार दने की आज्ञा दी। किन्तु उनके अनुयायियो न उसको अन्त करने के स्थान पर उसे नजरबन्द कर दिया। रास बिहारी न २१ फरवरी को विद्रोह आरम्भ करन की तारीख निश्चित कर दी थी जबकि सैनिको को छावनियो म विद्रोह करना था परन्तु नम नजरब द राष्ट्रद्रोही कृपालसिंह न यह सूचना पुलिस तक पहुंचा दी। पुलिस न यकायक अनेक स्थानो पर छापा मारा और धर पकड आरम्भ हो गई। सरकार ने तुरन्त सेनाओं को एक छावनी से दूसरी छावनी म स्थानातर कर दिया। शस्त्रागारो पर स भारतीय पहरेदार हटा दिए गय केवल अंग्रेज पहरेदार रखे गय। जिन देशी नरेशो की साम्राज्य भक्ति म सन्देह था उनकी सेनाओं को भारत से युद्ध क्षेत्र मे भेज दिया गया। सशस्त्र क्रांति की योजना असफल हो गई।

गदर पार्टी की योजना का विदेश और भारत दोनो ही स्थानो मे ब्रिटिश सरकार को पता चल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार सतर्क हो गई और उसन क्रांतिकारियों पर प्रहार किया। विदेशो म गदर की योजना की सूचना जकोस्लावाकिया क क्रांतिकारियों न ब्रिटिश सरकार को दी। बात यह थी कि संयुक्त राज्य अमरिका मे सभी देशो क क्रांतिकारियो का एक गुप्त सम्मेलन हुआ था। भारतीय क्रांतिकारियो न सरल स्वभाव स भारतीय सैनिको द्वारा युद्ध काल मे सशस्त्र विद्रोह कराने की योजना को बतला दिया। जैकोस्लावाकिया के क्रांतिकारियो को ब्रिटेन और फ्रांस की सरकार सहायता करती थी अस्तु उन्होन इस भारतीय गदर की योजना को ब्रिटिश सरकार तक पहुंचा दिया। ब्रिटिश सरकार सतर्क हो गई और परिणाम स्वरूप क्रांति का यह प्रयत्न असफल हो गया।

अब वे जरमनी आ गए थे। परन्तु जब जरमनी को युद्ध म असफलता मिलने लगी, युद्ध की स्थिति जरमनो के विरुद्ध जाने लगी तो जरमन सरकार भी

बर्लिन कमेटी के प्रति उदासीन हो गई। अन्तु जो सहायता जर्मन सरकार से थी बन्द हो गई। श्री हरदयाल के सामने आजीविका का प्रश्न उपस्थित हो गया। जरमनी में व अन्य योरोपीय देशों में भाषण देकर कुछ आय प्राप्त करते और अपना कार्य चलाते। जरमनी में उनका जरमन सरकार से मतभेद हो गया। अतएव उन्होंने स्विटजरलैंड जाना चाहा पर बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी उन्हें पासपोर्ट नहीं मिला। जरमन सरकार उन्हें जरमन विरोधी समझने लगी थी। १६१६ की गर्मियों से जरमन पुलिस ने उनके पत्रों को रोकना आरम्भ कर दिया। अतएव १६१६ से फरवरी १६१८ तक आत्म रक्षा के लिए उन्हें कपट से काम लेना पड़ा क्योंकि जरमन सरकार के नौकरशाही उनके साथ शत्रुता का व्यवहार कर सकती थी। उन्होंने जरमन अधिकारियों को समझाया कि उनका उत्पीड़न भ्रम के कारण हुआ है। बहुत प्रयत्न करने पर उन्हें स्वीडन जाने की आज्ञा मिली। स्वीडन तटस्थ राज्य था। हरदयाल जी स्वीडन पहुंच और वहां भी वे भाषण देकर अपनी आजीविका चलाते थे। योरोप के प्रत्येक भाषा में धारा प्रवाह भाषण दे सकते थे अस्तु भारतीय संस्कृति पर भाषण देकर वे अपना निर्वाह करते थे।

१९२७ तक श्री हरदयाल जी इसी प्रकार भटकते रहे। १६२६ में ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक शरणार्थियों के लिए राजक्षमा घोषित कर दी उसके पश्चात श्री हरदयाल इङ्गलैंड लौट सके। २७ अक्टूबर १६२७ को वे लन्दन पहुँचे। लन्दन में भी वे भाषण देकर अपना निर्वाह करते थे। फ्रांस डेनमार्क यूनान के विश्वविद्यालय भी उनको भाषण देने के लिए बुलाते थे। इस प्रकार वे लन्दन में अपना निर्वाह करते थे।

उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय को बोधिसत्व डाक्ट्रिन (बोधिसत्व सिद्धान्त) पर शोधग्रन्थ (थीसिस) लिख कर दिया जिस पर उन्हें १६३६ में विश्वविद्यालय ने पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की। उनके उस शोध ग्रन्थ की विद्वानों ने बहुत प्रशंसा की।

उसके उपरान्त उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंट्स फार सेल्फ कल्चर' लिखी। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर समस्त इङ्गलैंड में उनकी विद्वत्ता की धूम मच गई। पत्र पत्रिकाएं उनकी प्रशंसा में कॉलम के कॉलम लिखने लगी व। इङ्गलैंड में विख्यात हो गये। मजदूर दल के नेता कर्नल वेजवुड तथा दीनबंधु ऐंड्रूज ने इङ्गलैंड में और सर तेजबहादुर सप्रू ने भारत में यह प्रयत्न किया कि भारत सरकार श्री हरदयाल जी को भारत आने की आज्ञा प्रदान करे। बात यह थी कि सर तेजबहादुर सप्रू लन्दन में हरदयाल जी से मिले थे और उनके प्रकांड पांडित्य और विद्वता की उनके मन पर गहरी छाप थी। उन्होंने कौंसिल आफ स्टेट में प्रश्न उठाया तो सरकार ने उत्तर दिया कि जब सर तेजबहादुर उनकी सिफारिश कर रहे हैं तो सरकार इस प्रश्न पर विचार करेगी। उनकी तीसरी पुस्तक ट्वेल्व (बारह पथ) अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रशंसित हुई। चर्चिल जैसे भारत विरोधी राजनीतिज्ञ भी हरदयाल जी के प्रकांड पांडित्य और प्रतिभा की प्रशंसा किए बिना न रह सका।

ऊपर लिखी तीन पुस्तकों के कारण हरदयाल जी की समस्त इंगलैंड में प्रसिद्धि हुई वहां के सभी पत्र पत्रिकाओं ने उनका यशगान किया तथा कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों की सिफारिश से प्रभावित होकर भारत सरकार ने हरदयालजी को भारत

आने की आज्ञा दे दी। परन्तु आज्ञा निकलने में लगभग एक वर्ष लग गया। इस बीच हरदयाल जी लन्दन से संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए क्योंकि उन्हें वहां कुछ व्याख्यान देने थे। भारत में आने की आज्ञा का सरकारी पत्र उन्हें १९३८ के सितम्बर मास में फिलेडेल्फिया में मिला। सहसा उन्हें विश्वास नहीं हुआ। बात यह थी कि अंग्रेज शासकों के हाथों उन्होंने इतना अत्याचार सहा था कि कुछ देर तक उन्हें उस सरकारी कागज पर विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने अपने एक प्रशंसक को भारत में लिखा था– "मुझे इस बात पर विश्वास नहीं था कि मुझे भारत लौटने की अनुमति दी जावेगी।" जब उन्हें भारत जाने की अनुज्ञा का सरकारी पत्र मिला तो सहसा उनके मुख से निकला 'भारत को जाने का द्वार खुल गया है।'

फिलेडेल्फिया से हरदयाल जी का एक पत्र दिसम्बर १९३८ में प्राप्त हुआ कि भारत सरकार की अनुज्ञा उनको संयुक्त राज्य अमेरिका में मिली है परन्तु इससे पूर्व ही कई नगरों में उनके व्याख्यानों का प्रबंध किया जा चुका था। इस कारण तीन मास के बाद वे संयुक्त राज्य से भारत का प्रस्थान करेंगे।

उनके भक्त और प्रशंसक भारत में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने हरदयालजी के भारत आने के लिए किराए का प्रबंध कर बैंक ड्राफ्ट लेकर फिलेडेल्फिया भेज दिया था। यकायक दिल्ली के एक दैनिक समाचार पत्र में छपा हरदयाल जी एक मास पूर्व ४ मार्च १९३९ को स्वर्ग सिधार गए। कहा जाता है कि उनका स्वर्गवास विचित्र ढंग से हुआ। ३ मार्च १९३९ की रात्रि को सोने से पूर्व वे बिल्कुल स्वस्थ थे। अगले दिन प्रातःकाल उन्हें बिस्तर पर निष्प्राण पाया गया। उनके मित्र ब्रूक्स ने उनके सम्बन्ध में लिखा कि उनकी हृदयगति बन्द हो जाने से फिलेडेल्फिया में उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु उनके बाल साथी तथा सहयोगी प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री हनवंत सहाय उनका मृत्यु का कारण कुछ और ही बतलाते हैं। 'योरोप के दूसरे महायुद्ध से पूर्व वे फिर किसी प्रकार अमरिका पहुंच गए। उनका निश्चय भारत आकर देश के अन्दर इस देश को स्वतन्त्र करने का कार्य करना था। उन्होंने अपना संदेश वाहक भेजा जिससे कि वे दिल्ली के पुराने साथियों की सम्मति प्राप्त कर सकें। परन्तु यह विश्वास किया जाता है कि यह सम्मति और किराया (जो उन्हें तुरंत भेज दिया गया) पहुंचने के पूर्व ही फिलेडेल्फिया में जहां वे ठहरे हुए थे उनकी हत्या कर दी गई। डाक्टर मजूमदार की भी यही धारणा है कि वे हृदयगति के बंद होने से नहीं मरे वरन उनकी हत्या की गई। श्री हरदयाल जी के क्रांतिकारी साथियों, भारतीय मित्रों की यह दृढ़ धारणा और विश्वास है कि वे प्रकृतिक रूप से किसी बिमारी से नहीं मरे वरन उनकी हत्या कर दी गई।"

जो व्यक्ति जीवन भर भारत की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करता रहा, जिसने मां भारती की दासता की श्रृंखलाओं को काट कर उसे बन्धन मुक्त करने के लिए अपनी पत्नी अपनी पुत्री सम्पन्न परिवार और मातृभूमि का त्याग दिया, योरोप और अमरिका की खाक छानता रहा वह भारतीय स्वातन्त्र युद्ध का अमर सेनानी था युद्धों का वीर योद्धा रोग से शैया पर नहीं शहादत के ही योग्य था। जब अद्भुत मेधा और प्रतिभा का धनी वह वीर भारत आ कर भारत के अन्दर से देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने की योजना बना रहा था तब किसी राष्ट्रद्रोही विदेशी शत्रु सरकार के एजेंट ने उनकी हत्या कर दी। श्री हरदयाल जी की मृत्यु अत्यंत रहस्यमय ढंग से हुई

इसका प्रमाण तो यही है कि उनकी मृत्यु का समाचार भारत में उनकी मृत्यु के छ
महीने उपरान्त पहुंचा। ३ मार्च १९३९ को वे पूर्ण स्वस्थ थे उन्हें कोई शारीरिक
शिकायत नहीं थी। यही कारण है कि अधिकांश व्यक्तियों का मत है कि उनकी हत्या
की गई। इस प्रकार इस महान देशभक्त, विद्वान, विचारक, लेखक ओजस्वी भाषण
और क्रांतिकारी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी की विदेश में मृत्यु हो गई
भारतमाता की गोद में वह नहीं मर सका।

पर हम भारतीयों ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के उस अमर सेनानी को
सर्वथा भुला दिया। जिसने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जीवन भर तिल तिल
अपना खून जलाया जो देश के लिए जिया और मरा, जिसने अपनी मातृभूमि की
दासता की शृंखलाओं को काटने के लिए अपने प्रियजनों का त्याग किया उसको भारत
भी सर्वथा भूल गए। भारत ने उनकी स्मृति रक्षा की कोई आवश्यकता नहीं समझी।
आज की पीढ़ी यह भी नहीं जानती कि कोई ऐसा देशभक्त भी था जो कि केवल देश
के लिए ही जिया और मरा। हम भारतवासियों की कृतघ्नता को देख कर सम्भवतः
कृतघ्नता को भी लज्जा आती होगी और वह लज्जा से अपना मुंह छिपा
लेती होगी।

अध्याय ५

महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस

'I was a fighter, one fight more The last and the best
—Ras Behari Bose 25 4 1942

"मैं एक योद्धा रहा हू, एक युद्ध और अंतिम और सर्वश्रेष्ठ"
—रास बिहारी बोस २५-४ १६४२

२५ मई १८८६ को भारत के महान क्रांतिकारी और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध का अपने जीवन की अंतिम श्वास तक सचालन और नेतृत्व करने वाले श्री रास बिहारी बोस का हुगली जिले के पलारा विघाता नामक स्थान पर अपने मामा के गृह म जन्म हुआ। उनका पैतृक गृह वदवान जिले म सुबालदाह नामक ग्राम था परन्तु राम बिहारी बोस के जन्म के समय उनकी माता अपने मातृ गृह आई हुई थी। रास बिहारी बास के पिता श्री विनोद बिहारी बसु कुछ समय के उपरात सुबालदाह से चद्रनगर चले आए। जब श्री विनोद बिहारी अपने पैतृक ग्राम से हट कर चन्दरनगर आए उस समय बालक रासबिहारी चार या पाच पाच वर्ष का था। जब कि बालक रासबिहारी शिशु अवस्था म ही था उसी समय उनकी माता का स्वगवास हो गया। बालक रासबिहारी बोस मातृ प्रेम से वचित हो गया। माता का प्रेम और वात्सल्य की शीतल और सुखद छाया म बालक का लालन पालन नहीं हुआ। भवितव्यता ने उस बालक के लिए आजन्म सघर्ष विद्रोह त्याग तपस्या, बलिदान, अथक परिश्रम और कष्ट का जीवन निर्धारित किया था। अतएव नियति ने उसे शिशु अवस्था मे ही मातृ सुख से वचित कर दिया। भगवान उस बालक से अपनी मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिये आजीवन युद्ध करते रहने का काय लेना चाहते थे अतएव उसकी माता के सुख से वचित कर शिशु अवस्था से ही कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यस्त बना दिया। वास्तव म वह बालक भारत की स्वतत्रता के लिए किए जाने वाली भावी सशस्त्र क्रांति का सूत्रधार था।

रासबिहारी के बालपन के सम्बध म अधिक कुछ ज्ञात नहीं है। परन्तु आरम्भ से ही बालक मे साहस और शौर्य के चिन्ह प्रगट होने लगे थे। जब वे पढते थे तो अपने एक साथी को लेकर अर्द्ध रात्रि को चन्दरनगर म भागीरथी के पश्चिमी तट पर स्थित श्मशान घाट जाते और वहा से हड्डिया एकत्रित कर उनसे खेलते। नियति उस वीर बालक को मृत्यु के भय स मुक्त कर देना चाहती थी क्योंकि जो काय वह भावी जीवन म करने जा रहा था उसमे पग पग पर मृत्यु का सामना करना था। उस बालक को मानो उस महान काय के लिए स्वय प्रकृति ही प्रशिक्षित कर रही थी। यद्यपि बालक रासबिहारी अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि था परन्तु उसकी रुचि पाठय पुस्तकों में उतनी नहीं थी जितनी कि स्कूल के पाठयक्रम के बाहर उन पुस्तकों का पढने म थी जो कि युवकों मे देश भक्ति की भावना उत्पन्न करती थी। वे पाठय पुस्तकों के स्थान पर आनन्दमठ, 'पलाशीर युद्ध' (पलासी का युद्ध) तथा इसी प्रकार की राष्ट्रीय भावनाओं का जाग्रत करने वाली पुस्तकों को पढते थे।

यह वह समय था कि जब श्री अरविन्दु देश म क्रातिकारी सैनिक राष्ट्र का भावना का प्रचार कर रहे थे। निरालम्ब स्वामी उपनाम जतीन्द्रनाथ ब ५ श्री अरविन्दु की इस क्रातिकारी सैनिक राष्ट्रवाद की भावना के बगाल मे

और मुख्य प्रचारक थे। जब वे चन्द्रनगर में आये उस समय किशोर रासबिहारी उनके सम्पर्क में आए और उनके अन्तर में भारत की सशस्त्र क्रांति के द्वारा स्वतन्त्र करने की जो छिपी और गुप्त अग्नि थी उनके सम्पर्क से प्रज्ज्वलित हो गई।

रासबिहारी उस समय केवल पन्द्रह वर्ष के थे परन्तु उनमें देश को सशस्त्र क्रांति के द्वारा स्वतन्त्र करने की तीव्र भावना जाग्रत हो गई। चन्द्रनाथ चन्द्रराय द्वारा स्थापित 'सुहृद्य सम्मेलन' नामक संस्था में सम्मिलित हो गये। वहाँ उन्होंने राष्ट्रीय क्रांतिकारी कार्यों को करने के लिए यह संगठन बना लिया था। जबकि रासबिहारी केवल पन्द्रह वर्ष के थे तभी उनके मस्तिष्क में यह बात घूम रही थी कि भारतीय सेना को सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार किए बिना अंग्रेजों को भारत से निकालना कठिन होगा। इस उद्देश्य से उन्होंने पांडिचेरी स्थित भारतीय फ्रेंच सेना में भर्ती होने का प्रयत्न किया परन्तु उनका प्रयत्न असफल हुआ। फ्रेंच सैनिक अधिकारियों ने उन्हें सेना में नहीं लिया। पर इससे वे निराश अथवा हतोत्साहित नहीं हुए। उनकी दृष्टि देशी राज्यों की ओर गई। उन्होंने सोचा कि किसी देशी राज्य की सेना में प्रवेश करके भारतीय देशी राज्यों की सेनाओं में राष्ट्रीय और क्रांतिकारी भावना जागृत करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस उद्देश्य से एक देशी राज्य की सेना में प्रवेश पाने के उद्देश्य से वे घर से निकल गए। चन्द्रनगर से जब वे अपने गन्तव्य स्थान को जा रहे थे तो उनके पिता के मित्र की पकड़ में आ गए। वे उन्हें वापस चन्द्रनगर ले आए। परन्तु अब रासबिहारी बोस क्रांति के पथिक बन चुके थे। उनके अभिभावकों के उन्हें उस पथ से विचलित करने के सभी प्रयत्न असफल हुए। वे फोर्ट विलियम कलकत्ता में क्लर्क हो गए और कुछ समय के उपरांत वे कसौली में सेना विभाग में नौकर हो गए। कलकत्ते में उनका क्रांतिकारी दल से घनिष्ट सम्बन्ध हो गया और अन्त में उन्होंने देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपना जीवन अर्पण करने की दीक्षा ले ली।

कलकत्ते में रासबिहारी युगान्तर क्रांतिकारी दल के सक्रिय सदस्य बन गए। वास्तव में जतीन बनर्जी ने कलकत्ता में युगान्तर क्रांतिकारी दल को संगठित किया। रासबिहारी चन्द्रनगर से ही उनके प्रभाव में आ चुके थे अस्तु वे युगान्तर क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गए। जब दल के केन्द्र मानिकतल्ला गार्डन का पुलिस को पता चल गया। उसने वहाँ छापा मार कर दल के कुछ सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया तो दल के सदस्यों ने रासबिहारी को उत्तर भारत में दल का कार्य करने के लिए भेज दिया। दल के नेताओं को भय था कि रासबिहारी यदि कलकत्ते में रहे तो वे गिरफ्तार हो जावेंगे। कारण यह था कि उस तलाशी में रासबिहारी बोस के दो पत्र मिले थे। साथ ही वे उत्तर भारत में भी क्रांतिकारी दल को अधिक सक्रिय करना चाहते थे। जतीन बनर्जी ने पंजाब में क्रांतिकारी युवकों को आकर्षित किया था जिन्हें बाद में लाला हरदयाल ने संगठित किया था और उन्हें आज़ाद में देश सेवा की दीक्षा दी थी। अस्तु इस बात की आवश्यकता थी कि लाला हरदयाल के भारत से बाहर चले जाने के उपरांत कोई उनका संगठन करें। इसी उद्देश्य से युगान्तर दल के नेताओं ने रासबिहारी बोस को उत्तर भारत भेज दिया। शशि भूषण राय चौधरी देहरादून में श्री पी० एन० टैगोर के बालकों के ट्यूटर (शिक्षक) थे। जब युगान्तर दल के नेताओं ने निश्चय किया कि रासबिहारी बंगाल छोड़ कर उत्तर भारत जावें तो शशि भूषण चौधरी ने अपनी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और अपने स्थान पर रासबिहारी

रखवा दिया। कुछ समय के उपरात रासबिहारी ने फारेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट के कार्यालय म नौकरी कर ली और उत्तर भारत मे क्रातिकारी दल का सगठन करने लग।

यह हम पहले ही कह आए हैं कि पजाब म लाला हरदयाल ने युवको का एक क्रातिकारी सगठन खडा किया था और व जन समुदाय म अपने लेखो तथा भाषणो से क्रातिकारी विचार धारा का प्रचार कर रहे थे। भारत सरकार लाला हरदयाल के पजाब के शिक्षित युवको पर बढते हुए प्रभाव से भयभीत हो उठी और उसने कैद कर कालापानी भेजने का निश्चय कर लिया। वायसराय की कार्यकारणी कौंसिल के एक भारतीय सदस्य का भारत सरकार की इस दुरभि सधि का पता चल गया। उसने लाला लाजपतराय को गुप्त रूप से यह सन्देश भेजा– "लाला हरदयाल सबसे ऊचे अधिकारियों के मस्तिष्क म घूम रहे है। उनका बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए आप उन्हें देश से बाहर भेज दें।" यद्यपि लाला हरदयाल उस स्थिति का सामना करना चाहते थे पर लाला लाजपत राय न उन्हे विवश कर दिया कि वे बाहर चले जावें। विवश होकर लाला हरदयाल को विदेश जाना पडा और उन्होंने अपने दल का काय मास्टर अमीरचन्द के सुपुर्द कर दिया। लाला हरदयाल के शिष्या म चटर्जी मुख्य थे व मास्टर अमीरचन्द तथा उनके अभिन्न मित्र लाला हनुवन्त सहाय के परामर्श से दल का काय करने लगे। चटर्जी तीन वष पूव अपने भनाज के विवाह के सम्बन्ध म देहरादून गए थे। तब व रासबिहारी बोस स मिले। चटर्जी को रासबिहारी बोस से पता चला था कि बगाल म एक क्रातिकारी सस्था है जिसकी समस्त बगाल म शाखायें है और जो युवको को सशस्त्र क्राति के लिए भर्ती कर उनको दीक्षा देती है। पर उस समय रासबिहारी बोस न चटर्जी को अपने सम्बन्ध म कुछ नहीं बतलाया।

चटर्जी मास्टर अमीरचन्द के परामर्श से पजाब म क्रातिकारी दल का सगठन कर रहे थे। उनका सरदार अजीतसिंह और सूफी अम्बा प्रसाद स भी सम्पक स्थापित हो गया था। चटर्जी ने सशस्त्र क्राति की एक योजना तैयार की थी और उसे एक कापी पर लिख लिया था। सरदार अजीतसिंह और सूफी अम्बा प्रसाद उनको ले गए। उन्होंने उसे पढ कर 'झग सियाल' के सम्पादक बाके दयाल का पढने का दे दी पुलिस ने उनके कार्यालय पर छापा मारा तो वह कापी सरकार के हाथ पहुच गई। उसका परिणाम यह हुआ कि सभी के विरुद्ध गिरफ्तारी के वारट जारी हो गए। सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रसाद देश छोड कर ईरान चले गए। चटर्जी ने पजाब के दल का काय रासबिहारी को सौंप दिया। उन्होने दल के सभी मित्रों तथा समथकों की सूची बना कर रासबिहारी के हाथ मे दे दी और वे लन्दन चले गए और वहा क्रातिकारी काय करने लगे। इस प्रकार रासबिहारी पजाब के क्रातिकारी दल के सचालक बन गए।

यद्यपि रासबिहारी अब उत्तर भारत म काय कर रहे थे परन्तु उनका बगाल के क्रातिकारी दल युगान्तर से सम्बन्ध बना हुआ था। बगाल के क्रातिकारी दल युगातर से उनका संबध चदरनगर के दल के द्वारा था। चदरनगर के श्री श्रीश घोष और श्री मनीन्द्र नायक के द्वारा विशेष रूप से उनका युगातर दल से सम्पक स्थापित था। कहने का तात्पर्य यह है कि युगातर दल से उनका निकट का सम्बध था। मनीन्द्र नायक दल के बम निर्माण करने के विशेषज्ञ थे। नायक श्री रासबिहारी की सभी गुप्त सूचनाए

श्रमजीवी समवाय के अमरेन्द्र नाथ चटर्जी तथा अतुल घोष का पहुंचा देने का युगांतर दल के प्रमुख व्यक्ति थे। वे सभा वगैरा बंगाल जाते और वहां श्री अमरेन्द्र नाथ चटर्जी जतीन्द्र नाथ मुखर्जी श्याम सुन्दर घोष अमृतलाल हजारा, अतुल गांगुली तथा अन्य प्रमुख क्रांतिकारियों से भारत वर्ष में सशस्त्र विद्रोह की योजना पर विचार करते। उनका श्री अरविन्द से भी सम्पर्क स्थापित हो चुका था। श्री अरविन्द के द्वारा उनका महाराष्ट्र में क्रांतिकारी गतिविधियों का परिचय था। उदयपुर के ठाकुर साहब ने वहां स्थित सेनाओं को विद्रोह के लिए तैयार कर लिया था इसका उन्हें पता था। उत्तर भारत में उन्होंने क्रांतिकारियों का एक सशक्त संगठन खड़ा कर लिया। मास्टर अमीर चन्द भाई बाल मुकुन्द अवध बिहारी युगल किशोर, रामशरण दास गनपत साधाराम पिंगले करतार सिंह सराबा जैसे उद्भट क्रांतिकारी उनके विश्वास पात्र और सहायक थे। राजस्थान में भी उन्होंने अपना एक दल स्थापित कर लिया था। खरवा के राव गोपाल सिंह श्री केसरी सिंह बारहट, श्री जोरावर सिंह राठी तथा ठाकुर केसरी दास राठी से उनका सम्पर्क स्थापित हो गया था और उनके द्वारा क्रांतिकारी युवकों का एक संगठन खड़ा हो गया था उसमें प्रताप सिंह बारहट जोरावर सिंह बारहट, श्री छोटेलाल जैन लाहरी आदि मुख्य थे। १९११ या १९१२ में जब श्री रासबिहारी बोस बंगाल गए थे तो वे श्री अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से उनकी दूकान 'श्रमजीवी समवाय" पर मिले। वहां उनका बसन्त कुमार विश्वास से परिचय हुआ, उससे वे बहुत प्रभावित हुए और उसको उत्तर भारत में क्रांतिकारी कार्य करने के लिए अपने साथ ले आए।

आरम्भ से ही रासबिहारी बोस की मान्यता थी कि भारतीय सेनाओं में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करके देश में सशस्त्र विद्रोह खड़ा करना चाहिए परन्तु उसके लिये उपयुक्त अवसर तथा तैयारी की आवश्यकता थी। यही कारण है कि उस समय पेशावर से लेकर बरमा तक उत्तर भारत की सभी सैनिक छावनियों में क्रांतिकारियों ने सम्पर्क स्थापित कर रखा था। उन्होंने कई छावनियों में सशस्त्र विद्रोह के लिए भारतीय सेनाओं को तैयार कर लिया था। रासबिहारी केवल आंतरिक विद्रोह को ही पर्याप्त नहीं समझते थे वे बाहर से भी सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। वे जानते थे कि जब तक ब्रिटिश सत्ता पर देश के अन्दर से और बाहर से एक साथ आक्रमण नहीं किया जाता तब तक शक्तिशाली ब्रिटिश शक्ति को धराशायी नहीं किया जा सकता। अतएव वे पेशावर से बरमा तक भारतीय सैनिक छावनियों में ही सक्रिय नहीं थे। सभी छावनियों में उन्होंने अपने विश्वसनीय कार्यकर्ताओं को बिठा दिया था। राजस्थान में राव गोपाल सिंह खरवा केशरी सिंह बारहठ व भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) प्रताप सिंह बारहट के द्वारा सशस्त्र विद्रोह की तैयारियां की थी। उनके अत्यंत विश्वास प्राप्त साथी भाई बाल मुकुन्द जोधपुर के राजकुमार के शिक्षक बन कर जोधपुर में जम गए थे।

इसके अतिरिक्त उन्होंने विदेशों में रहने वाले भारतीय क्रांतिकारियों से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया। जापान दक्षिणी पूर्व एशिया अफगानिस्तान ईरान टर्की, फ्रांस, जरमनी संयुक्त राज्य अमेरिका के भारतीय क्रांतिकारियों से भी उनका सम्पर्क था। उन क्रांतिकारियों के द्वारा उन देशों की सरकारों से भी क्रांतिकारियों का सम्बन्ध स्थापित हो गया था जो ब्रिटेन के शत्रु थे और भारत से सहानुभूति रखते थे। इस प्रकार रासबिहारी बोस देश के अन्दर और बाहर विप्लव की तैयारी में जुटे हुए थे।

बाह्य रूप में कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि फोरेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट का हेड क्लर्क भारत व्यापी सशस्त्र विद्रोह का सूत्रधार है। यही नहीं सरकार को उन पर सन्देह न हो इस दृष्टि से उन्होंने देहरादून में वहा के पुलिस सुपरिटेंडेंट से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया था और पुलिस को सूचना देने वाले के रूप में कार्य करते थे। अतएव पुलिस को स्वप्न में भी ध्यान नहीं हुआ कि वे भारतव्यापी विप्लव के आयोजक हैं।

यह वह समय था कि जब बगभग आदोलन के कारण समस्त भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध क्षोभ और रोष फैला हुआ था। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्वदेशी आन्दोलन बहुत जोरों पर था और समस्त देश में विशेषकर बगाल में क्रांति की भावना बलवती हो उठी थी। सयुक्त राज्य अमरीका में गदर पार्टी का सगठन हो चुका था और हजारों पजाबी क्रांतिकारी युवक अमेरिका से भारत सशस्त्र क्रांति में भाग लेने वापस आ चुके थे। यद्यपि उनमें से कुछ कामागाटा मारू हत्याकाड में बज-बज में मारे गए और गिरफ्तार हो गए थे। इस कारण पजाब में क्रांति की अग्नि धधक रही थी। बृटिश सरकार इस भारत व्यापी क्षोभ, रोष और अशांति से भयभीत हो उठी।

अतएव भारतीय जन मानस को शान्त करने के लिए तथा बृटिश शासन के प्रति भक्ति की भावना को सुदृढ करने के उद्देश्य से बृटिश कूटनीतिज्ञ बृटिश सम्राट को भारत लाए। इतिहास प्रसिद्ध मुगल दरबार की शान शौकत को भी मात करने वाला बहुत भव्य दरबार किया। भारत के सभी देशी नरेश अपनी शान शौकत के साथ उसमें सम्मिलित हुए। उस ऐतिहासिक दरबार में सम्राट ने बग भग को रद्द करने तथा प्राचीन इन्द्रप्रस्थ को पुन भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। उस भव्य आयोजन का भारत के जन मानस पर अनुकूल प्रभाव पडा था अतएव बृटिश कूटनीतिज्ञों ने राजधानी के कलकत्ते से दिल्ली स्थानान्तरित होने पर उससे भी अधिक शानदार जुलूस और दरबार करने की योजना बनाई। वे चाहते थे कि समारोह ऐसा भव्य हो कि भारतीय आश्चर्य चकित हो जावें उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडे कि बृटिश सत्ता और शक्ति अजेय है उसे कोई पराभूत नहीं कर सकता।

इधर क्रांतिकारी दल इस अंग्रेजों की भक्ति भावना को नष्ट कर इसे मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समाप्त करने का उपाय सोच रहे थे। मास्टर अमीरचन्द का कहना था कि यदि हम बृटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय को भारत के प्रत्येक भाग से आए लाखों भारतीयों के सामने सेना से घिरे हुए मार सकें तो बृटिश सत्ता और प्रभाव को भारत में ही नहीं ससार में घातक धक्का लगेगा और भारतीयों में साहस उत्पन्न होगा। अतएव महाविप्लवी नायक रासबिहारी ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई।

२३ दिसम्बर १९१२ को जब लार्ड हार्डिंग का वह शानदार जुलूस निकल रहा था। वायसराय वायसरीन के साथ एक विशालकाय हाथी पर सोने चादी के हौदे में बैठे थे बलरामपुर का जमादार महावीरसिंह सोने का छत्र लगाए हुए बैठा था। भारत के सभी राजे महाराजे वायसराय के पीछे चल रहे थे। सेनाएं कूच कर रही थी और बैंड मधुर ध्वनि बजा रहे थे तो चादनी चौक में एक भयकर धडाका हुआ। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया। हौदे का पिछला भाग ध्वस्त हो गया। जमादार महावीर

सिंह भर कर लटक गया। लार्ड हार्डिंग भयानक भय से जख्मी हो गए बेहोश होकर हौदे में लुढ़क गए।

रासबिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बना कर भारत में ही नहीं संसार में राजनीतिक भूकम्प उत्पन्न कर दिया। प्रथम बार संसार को यह ज्ञात हुआ कि भारतीय बृटिश राज्य और शासन को दैवी वरदान नहीं मानते जैसा कि अंग्रेजों ने पृथ्वी भर में प्रचार कर रखा था। भारतीयों ने भी चकित होकर देखा कि अंग्रेजी सत्ता और शक्ति को चुनौती दी जा सकती है। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने से बृटिश शक्ति का सूर्य तेज हीन हो गया। बृटिश शक्ति अजेय है उसको चुनौती नहीं दी जा सकती यह मनोवैज्ञानिक हीन भावना नष्ट हो गई। जो राजनीतिक चलन सैंकड़ो राजनीतिक प्रस्तावो राजनीतिक सम्मेलनों राजनीतिक नेताओं के अगणित भाषणों और लेखों द्वारा पचास वर्षों में उत्पन्न नहीं किया जा सका वह लार्ड हार्डिंग पर एक बम फेंकने से उत्पन्न हुआ। आज भी यह निश्चय पूर्वक कहना कठिन है कि बम स्वयं रासबिहारी बोस ने फेंका या बसंत विश्वास अथवा जोरावर सिंह बारहट ने फेंका परन्तु उसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि सम्पूर्ण योजना रासबिहारी के मस्तिष्क की उपज थी। बम चन्दर नगर में मनीन्द्र नायक ने बनाये और अमर चन्द ने वे दस बम बसन्त विश्वास के द्वारा रासबिहारी बोस के पास भेजे।

बृटिश सरकार को बम काण्ड से ऐसा गहरा आघात लगा कि वह बौखला उठी। आकाश पाताल एक कर दिया परन्तु बम फेंकने वाले की यह परछाईं भी नहीं पकड़ सकी। परन्तु सन्देह में दिल्ली और उत्तर भारत के बहुत से क्रांतिकारी पकड़ लिए गये। आपत्तिजनक क्रांतिकारी साहित्य विस्फोटक पदार्थ जिनके पास मिला उन्हें पकड़ लिया गया। भारत सरकार ने एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया। देशी नरेशों ने अपनी सम्राट भक्ति प्रदर्शित करने के लिए बम फेंकने वाले को पकड़ने वाले को लाखों रुपयों के पारितोषिक की घोषणा की परन्तु सब व्यर्थ हुआ बम फेंकने वाला ऐसा लोप हुआ कि भारत सरकार के गुप्तचर विभाग तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचरों के समस्त प्रयत्न निष्फल हो गए।

रासबिहारी विलक्षण बुद्धि और चतुरता के धनी थे। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के उपरान्त वे देहली से निकल गए। भाई परमानन्द ने लाहौर के 'हिन्दू' में अपने लेख में लिखा था कि साहसी रासबिहारी लार्ड हार्डिंग पर बम फेंक कर दिल्ली से निकल गए और उसी दिन सायंकाल को देहरादून में लार्ड हार्डिंग के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिये एक सभा की उसके सभापति के पद से बोलते हुए उन्होंने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने की कठोर आलोचना और निन्दा की।'

दो वर्षों के उपरान्त सरकार को यह पता चला कि लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का षडयन्त्र रासबिहारी के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। एक राजनीतिक डकैती के सम्बन्ध में पुलिस ने कलकत्ता के राजा बाजार मोहल्ले में स्थित शशांक मोहन हाजरा (*जिनका दूसरा नाम अमृत हजारा भी था*) के मकान की तलाशी ली। उस तलाशी में लार्ड हार्डिंग पर जो बम फेंका गया था उसके जैसे बम के खोल मिले और कुछ कागज पत्र मिले। उनमें दीनानाथ का नाम था। दीनानाथ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। दीनानाथ मुखबिर बन गया। वह यह तो न बतला सका कि बम किसने फेंका था पर उसने यह बतला दिया कि इस षडयन्त्र के जनक रासबिहारी

थे और उसमे कौन कौन सम्मिलत थे। मास्टर अमीरचन्द का पौत्र पुत्र सुलतानचन्द भी सरकारी गवाह बन गया। दहली षडयन्त्र अभियोग चला। अभियोग नीचे लिखे १४ व्यक्तियो पर चला था।

श्री रासबिहारी बोस (वे फरार थे) दीनानाथ सुलतान चन्द मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी भाई बाल मुकन्द बसन्त कुमार विश्वास, बलराज छोटेलाल जन, लाला हनुवन्त सहाय, चरणदास, मन्नूलाल रघुवर शर्मा, रामलाल और खुशीराम। रासबिहारी फरार थे दीनानाथ और सुलतान चन्द सरकारी गवाह बन गए इस कारण छोड दिए गए। मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी, भाई बाल मुकन्द और बसन्त विश्वास को प्राण दण्ड दिया गया तथा लाला हनुवन्त सहाय और बलराज को आजीवन कारावास का दण्ड मिला शेष छोड दिए गए।

जब सरकार को यह पता चला कि वास्तव मे लार्ड हार्डिग पर फेंकने का षडयन्त्र रासबिहारी बोस का था तो देहरादून की पुलिस आश्चर्य चकित रह गई। वहा के पुलिस अधिकारी उन्हे अपना सूचना देने वाला अनुचर समझते थे। उन्होंने देहरादून के उच्च पुलिस अधिकारियो से अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया था। डिप्टी सुपरिटेंडेंट सुशील घोष के तो वे सूचना वाले गुप्तचर अनुचर की भाति काम करते थे इस कारण उन पर किसी का सन्देह नही हो सकता था। केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के शीर्ष अधिकारी 'डेनहेम', वलविगैंड तथा पैंटी भी यह जानते थे कि वे सुशील घोष के सूचना देने वाले गुप्तचर अनुचर है। यही कारण था कि जब शशांक मोहन हजारा के राजा बाजार के मकान की तलाशी मे जो कागज पत्र मिले और उसमे रासबिहारी बोस का नाम आया तो पुलिस यकायक विश्वास नही कर सकी उसने यही समझा कि यह अन्य कोई व्यक्ति है पर दीनानाथ के वक्तव्य से जब यह निश्चित हो गया कि देहरादून के रासबिहारी बोस ही सारे षडयन्त्र के आविष्कर्ता है तो सुशील घोष कठिनाई मे फस गए उनमे रासबिहारी बोस से उनके परस्पर सम्बन्ध मे पूछ ताछ और जाच पडताल की गई। रासबिहारी ने पुलिस का ऐसा विश्वास प्राप्त कर लिया था कि तत्कालीन पुलिस के सर्वोच्च अधिकार डेनहम ने उन्हे चन्दरनगर के क्रातिकारी दल के भेद लेने के लिए नियुक्त किया था। अवश्य ही रासबिहारी मे क्रातिकारी कार्य करने की अपूर्व प्रतिभा और विलक्षण बुद्धि थी।

रासबिहारी इतने चतुर और भेष बदलने मे इतने दक्ष थे कि पुलिस उनके पीछे थी उनके सिर पर भारी ईनाम था परन्तु वे बम काड के बाद भी दो वर्ष तक उत्तर भारत मे रह सशस्त्र विद्रोह का सगठन करते रहे परन्तु पुलिस उनको पकड न सकी।

न्यायाधीश हैरिसन ने श्री रासबिहारी बोस के सम्बन्ध मे नीचे लिखे शब्द कहे थे 'रासबिहारी को साधारणतया जितना चतुर समझा जाता था उससे वे कहीं चतुर थे— स्पष्ट है कि वे अत्यन्त मेधावी और विलक्षण बुद्धि के व्यक्ति है।' न्यायाधीश हैरिसन ने रासबिहारी बोस के सम्बन्ध मे अपना मत निम्नलिखित आधार पर बताया था।

सरकारी अधिकारी सेन ने अपनी जिरह मे यह बताने का प्रयत्न किया कि रासबिहारी पुलिस गुप्तचर थे। उसका कारण यह था कि पूरनसिंह (जिसे

पाच सौ मासिक वेतन मिलता था) का कहना था कि रासबिहारी उनसे एक पुलिस मैन की तरह अभद्र प्रश्न पूछता रहा। दूसरे जब वायसराय देहरादून विश्राम करने (बम काड के बाद) आए तो राम बिहारी के पास वायसराय के शिविर म जाने के लिए पुलिस पास था (सम्भवत वायसराय को देहली म न मार सकने पर उन्हें देहरादून म मारना चाहता था) देहरादून के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट सुशील चन्द्र घोष का कहना था कि वायसराय के शिविर म जाने के लिए उन्हें भी पास नहीं दिया गया था। इसके अतिरिक्त सुशील चन्द्र घोष का कहना था कि देहरादून म वायसराय के प्रवास के समय जो भी बगाली देहरादून मे आए उन सब की सूचना रासबिहारी पुलिस को देते थे तथा सभी सम्भ्रात बगाली उनके सम्पर्क मे थे। रासबिहारी ने जे० एम० चटर्जी का लाला हरदयाल के सवश्रेष्ठ क्रातिकारी शिष्यो को उन्हें सुपुर्द करने पर बाधित कर दिया। रास बिहारी ने चटर्जी स कहा कि यदि व लाला हरदयाल के सभी क्रातिकारी शिष्यो का उनके सुपुद नहीं कर देते तो वह बार बार उन्हें तग करेगा। रास बिहारी बास को देहरादून मे वे सभी अधिकार और सुविधायें प्राप्त थी जो एक पुलिस अधिकारी का प्राप्त होती हैं। रासबिहारी ने चरनदास स जिस प्रकार जिरह का वह ठीक उसी प्रकार की थी कि जैसी एक सादे वस्त्रो म एक पुलिस अधिकारी किसी से करता। यही सब कारण थे कि हैरिसन ने रासबिहारी बोस को विलक्षण चातुय का धनी बतलाया था।

भेष बदल कर पुलिस को धोखा देने मे रासबिहारी सिद्धहस्त थे। कई बार ऐसे अवसर आए कि जब वे पुलिस को धोखा देकर निकल गए। जबकि रासबिहारी के पकडने के लिए भारी पारितोषिक की घोषणा की गई और उनके चित्र बडे बड़े पोस्टरो मे सभी स्टेशनो, बाजारो सावजनिक स्थानो पर प्रत्येक नगर मे चिपका दिये गये तो उस समय रासबिहारी मेरठ मे चटर्जी के पास थे। जब उन्हे ज्ञात हुआ कि उनको पकडने के लिए विज्ञापन निकाला गया है और उसम उनका चित्र दिया गया है तो वे एक पजाबी का भेष धारण कर स्टेशन गए और उस पोस्टर मे जिसम साईकिल के साथ उनका चित्र था, स्वय जा कर देखा। शीघ्र ही वे मेरठ से चले गए। उनके चले जाने के कई दिन बाद पुलिस चटर्जी के मकान पर आई और पूछा कि क्या रासबिहारी बोस यहा थे? चटर्जी मन ही मन खूब हसे।

इसी प्रकार जब व बनारस मे शचीन्द्र सायाल के साथ डाक्टर काली प्रसन्न सायाल के मकान पर बमो की जाच कर रहे थे तो एक बम यकायक फट गया और उनकी टाग मे गहरा घाव हो गया। शचीन्द्र सायाल के साधारण चोट आई। डाक्टर सायाल न उनको एक पृथक मकान मे रख दिया और उनका उपचार करने लगे। उनकी छोटी लडकी रूपागिनी रासबिहारी की सेवा शुश्रूषा करती थी। उन दिनो डाक्टर सयाल ने दशाश्वमेघ घाट पर रासबिहारी बास के पकडवाने के लिए विज्ञप्ति देखी और उसम उनका चित्र भी था तो तुरत ही रासबिहारी बोस को उस स्थान से (बगाली टोला) हटा कर हरिश्चन्द्र घाट ले जाया गया। प्रश्न यह था कि उनको ले कैसे जाया जावे। रास बिहारी न सुझाव दिया कि उन्हे मृत शव की भाति टिकटी बना कर ले जाया जावे। अस्तु उन्हे मृत शव की भाति लिटा कर ले जाया गया किसी को तनिक भी सदेह नहीं हुआ।

एक बार कलकत्ते में बादुर बागान जहाँ रासबिहारी के सहयोगी श्री ललनी किशोर गुहा तथा अन्य मित्र रहते थे हावड़ा से मंगाए गए रिवाल्वरों की जाँच कर रहे थे। एकाएक एक रिवाल्वर का घोड़ा दब गया उसमें कारतूस भरे थे और उनका हाथ जख्मी हो गया। रिवाल्वर की गोली चलने से जो धमाका हुआ उसमें पुलिस के वहाँ पहुँचने का भय था। रासबिहारी ने अपने हाथ की चोट तथा पीड़ा की परवाह किए बिना अपना भेष बदला और प्रतुल गांगुली के साथ निकल कर अपर सरक्यूलर रोड चले गए और वहाँ से चन्दरनगर को प्रस्थान किया।

उनकी विलक्षण मेधा और भयंकर विपत्ति के समय भी विलक्षण सावधानी और धैर्य के गुण ने उन्हें पुलिस के हाथ में पड़ने से बचाया और वे पुलिस को मूर्ख बनाकर निकल गए। एक बार चन्दरनगर में पुलिस को यह पता लग गया कि वे एक मकान में हैं पुलिस ने उस मकान को चारों ओर से घेर लिया। निकलने का कोई मार्ग नहीं था परन्तु रासबिहारी घबराए नहीं और न उन्होंने धैर्य खोया। उस समय उनके मकान के शौचालय की सफाई करने के लिए मेहतर आया हुआ था। उन्होंने भेष बदला मेहतर के गन्दे वस्त्र पहिन लिए और मैले का टोकरा सिर पर रख कर तथा झाड़ू पंजा हाथ में लेकर पुलिस के सामने से निकल गए। किसी को सन्देह तक न हुआ कि रासबिहारी निकल कर जा रहे हैं।

रासबिहारी, उनको गिरफ्तार करने के लिए जो सरकार ने विज्ञप्ति निकाली थी उसकी तनिक भी चिन्ता किए बिना उत्तर भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम घूम कर सशस्त्र विद्रोह की तैयारियाँ कर रहे थे। उन्होंने अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं के द्वारा सभी छावनियों में भारतीय सैनिकों से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। उधर गदर पार्टी के हजारों की संख्या में क्रांतिकारी कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका से सिक्ख और पंजाबी सशस्त्र विद्रोह में भाग लेने तथा देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए देश में आ चुके थे। यद्यपि कोमागाटू मारू जहाज के कांड में थोड़े से व्यक्ति गिरफ्तार हो गए थे और कुछ मारे भी गए थे परन्तु हजारों की संख्या में गदर दल के क्रांतिकारी पंजाब में पहुँच गए थे। बंगाल में प्रसिद्ध क्रांतिकारी जतीन्द्र नाथ मुकर्जी के नेतृत्व में बंगाल के क्रांतिकारियों ने सशस्त्र क्रांति की पूरी तैयारी कर ली थी जदु गोपाल उनके मुख्य सहायक थे। शचीन्द्र सान्याल ने उत्तर प्रदेश की सैनिक छावनियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। करतार सिंह सराबा और पिंगले पंजाब का संगठन कर रहे। खरवा के राव गोपालसिंह, भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) तथा प्रतापसिंह बारहठ राजस्थान में सशस्त्र विद्रोह का संगठन कर रहे थे। भाई बाल मुकुन्द जोधपुर के राजकुमारों के शिक्षक के पद पर थे परन्तु वे भी सशस्त्र विद्रोह की तैयारियाँ कर रहे थे। अवध बिहारी उत्तर प्रदेश और बिहार में सक्रिय थे। रासबिहारी ने समस्त उत्तर प्रदेश में सशस्त्र क्रांति का संगठन कर लिया था। विदेश में जो भी भारतीय क्रांतिकारी थे वे भी सक्रिय थे। मैडम कामा, राणा, लाला हरदयाल, तारकनाथ दास, बरकतउल्ला, राजा महेन्द्र प्रताप आदि भारत में सशस्त्र क्रांति के कार्य कर रहे थे।

रासबिहारी वाम का विदेशों में जो भी भारतीय क्रांतिकारी थे उनसे सम्पर्क था और उनके द्वारा उनका जरमन सरकार से भी सम्बन्ध स्थापित हो गया था। प्रथम महायुद्ध के पूर्व ब्रिटेन और जरमनी के सम्बन्ध शत्रुता के हो गए थे। भारतीय क्रांतिकारी

यह जान गए थे कि शीघ्र ही ब्रिटेन और जरमनी मे युद्ध होने वाला है अतएव वे उस अवसर का लाभ उठा कर भारत म सशस्त्र विद्रोह खडा करना चाहते थे। उन्होंने जरमन सरकार की सक्रिय सहानुभूति प्राप्त कर ली थी। रासबिहारी का जरमन सरकार से भी सम्पर्क स्थापित हो गया था। प्रथम महायुद्ध के आरम्भ होने के कुछ महीने पूर्व जबलपुर से थोडी दूर "मदन महल" (एक प्राचीन महल) मे रासबिहारी बोस जरमन प्रतिनिधि से मिले थे और सशस्त्र विद्रोह की सम्पूर्ण व्यूह रचना तय करली गई थी। जरमनी अस्त्र शस्त्र गोली बारूद तथा विशेषज्ञ और सैनिक अधिकारी पहुचायेगा यह तय हो गया था। उधर विदेशो मे जो भारतीय क्रातिकारी थे उन्होंने बर्लिन कमेटी बनाली थी और जरमन सरकार से भारत म सशस्त्र विद्रोह कराने के लिए सहायता देने के लिए सधि करली थी परतु भारतीय क्रातिकारियो से एक भयकर भूल हुई। जब उन्होने बर्लिन कमेटी बना कर जरमनी के विदेशी विभाग से भारत मे सशस्त्र विद्रोह मे सहायता देने की सधि करली तभी सयुक्त राज्य अमेरिका मे जो उस समय तटस्थ राष्ट्र था सभी उन देशो के क्रातिकारियो का एक सम्मेलन हुआ जो अपने देश को स्वतत्र करना चाहते थे।

उस क्रातिकारियो के सम्मेलन म जैकोस्लावाकिया के भी क्रातिकारी सम्मिलित हुए थे। जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारी बृटेन के विदेशी विभाग से सहायता पाते थे भारतीय क्रातिकारियो ने वहा जरमनी से हुई सधि का ब्यौरा बतला दिया। वे आदर्शवादी थे उन्होने यह नही सोचा कि अन्य देशो के क्रातिकारी विश्वासघात करेंगे परन्तु जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो ने भारत जरमन षडयन्त्र की बृटेन के विदेशी विभाग को सूचना दे दी। उसी का परिणाम यह हुआ कि जब जरमनी ने अस्त्र शस्त्रो से भरे जहाज तथा सैनिक विशेषज्ञ भारत के तटो पर उतरने के लिए भेजे तो बृटिश नौ सेना ने उन्हे समुद्र मे ही पकड लिया। जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वासघात के कारण जरमनी की सहायता भारतीय क्रातिकारियो को नही मिल सकी।

प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। रासबिहारी और अधिक सक्रिय हो गए उन्होने देख लिया कि मातृ भूमि को स्वतन्त्र करने का यह स्वर्ण अवसर है। भारत सरकार ने भारतीय सेनाओ को योरोप तथा मध्यपूर्व म युद्ध करने भेज दिया। भारत मे केवल उस समय ३०००० हजार सेना थी वह भी अधिकाश भारतीय सैनिक जिसम से बहुत बडी सख्या म क्रातिकारियो के सम्पर्क मे आ चुके थे। रासबिहारी रावलपिंडी से ढाका तक सभी उत्तर भारत की सैनिक छावनियो म अपने कार्यकर्ता सन्देशवाहक भेज रखे थे। दक्षिण म जबलपुर तक जो भी छावनिया थी उनसे उनका सम्पर्क था उनके क्रातिकारी कार्यकर्त्ता वहा सक्रिय थे। बरमा और सिंगापुर की सुदूर छावनियो म भी रासबिहारी के क्रातिकारी सन्देशवाहक पहुच चुके थे।

सशस्त्र विद्रोह की योजना यह थी कि जरमनी से अस्त्र शस्त्र पूर्व मे पहुचने पर बगाल से विद्रोह आरम्भ होगा तथा अन्य क्रातिकारी बलोचिस्तान के कबीलो के साथ सभी प्रात म विद्रोह खडा कर देंगे। काबुल की ओर से महेन्द्र प्रताप बरकतउल्ला इत्यादि भारतीय क्रातिकारी आक्रमण करेंगे। रासबिहारी लाहौर से स्वय भारत के सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करेंगे। शचीन्द्र सान्याल बनारस म रहेगे, पिंगले मेरठ को सम्हालेंगे करतार सिंह सराबा पजाब मे विद्रोह का सचालन करेंगे। खरवा के राव गोपाल सिंह राजस्थान मे नसीराबाद छावनी पर अधिकार कर लेंगे और नलनी मुकर्जी

जबलपुर पर अधिकार कर लेंगे। अस्तु रासबिहारी ने सशस्त्र विद्रोह की पूरी व्यवस्था की और दिसम्बर १९१४ मे शचीन्द्र सान्याल, करतार सिंह सराबा, पिंगले था पण्डित परमानन्द भासी के साथ लाहौर आए और अपने विश्वास पात्र क्रांतिकारी हयागी रामसरन दास के यहा ठहरे। यह निश्चय हुआ कि रासबिहारी एक पृथक मकान किराए पर लेकर वहा से विद्रोह का संचालन करेंगे। किन्तु मकान किराये पर लेने का प्रश्न उठा तो एक बड़ी कठिन समस्या खडी हो गई। भारत सरकार ने गदर पार्टी के हजारो क्रांतिकारियो के पंजाब मे आने के उपरांत क्रांतिकारियो के सर्वाधिक सक्रिय हो जाने के कारण इस आशय का आदेश पंजाब सरकार से निकलवा दिया था कि कोई भी बाहर का व्यक्ति जिसके साथ उसका परिवार न हो यदि मकान किराए पर लेना चाहे तो पहले उसे स्थानीय पुलिस का अपने सम्बध मे पूरी जानकारी देनी होगी अपनी पहचान करवानी होगी और पुलिस जब उसको प्रमाण पत्र दे तभी वह मकान किराये पर ले सकता था। रासबिहारी तथा सभी क्रांतिकारी किंकर्तव्यविमूढ हो गए और उनमे गहरी निराशा छा गई। पर रामसरन दास की साहसी और देशभक्त पत्नी ने उस निराशाजनक परिस्थिति को सम्हाल लिया। उन्होने कहा कि मैं रासबिहारी बाबू के साथ पत्नी के रूप मे जितने समय तक आवश्यकता होगी, रहूगी उस दशा मे पुलिस मे जाने की आवश्यकता नही होगी। अस्तु रास बिहारी बोस के लिए एक मकान किराये पर ले लिया गया और रामसरन दास की पत्नी उनकी पत्नी बन कर उनके साथ रही। लेखक सोचता है कि उन क्रांतिकारियो मे चरित्र की कैसी दृष्टि रही होगी परस्पर एक दूसरे पर कितना अटूट विश्वास होगा और मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए कैसी गहरी चाह होगी कि वे उसके लिए सब कुछ करने को तैयार रहते थे। उनके इस उज्ज्वल चरित्र दुर्लभ गहन देश भक्ति को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। अस्तु रासबिहारी के लिए एक मकान ले लिया गया। रामसरनदास की पत्नी रासबिहारी के साथ उनकी पत्नि की तरह रहने लगी और वह मकान विप्लव गुप्त मंत्रणा स्थान बन गया। रास बिहारी उस मकान मे फरवरी के अंत तक रहे। सशस्त्र विद्रोह की सम्पूर्ण तैयारिया करली गई। फरवरी के आरम्भ मे उन्होने सभी केन्द्रो के प्रमुख और उत्तरदायी क्रांतिकारियो से परामर्श करके २१ फरवरी १९१५ को सम्पूर्ण भारत मे एक साथ विद्रोह खडा करने की तारीख निश्चित कर दी। यह सूचना सभी उत्तर भारत की सैनिक छावनियो मे भेजदी गई। काशी मे शचीन्द्र सान्याल को भी सूचित कर दिया गया। पंजाब मे भारत के राष्ट्रीय ध्वज बहुत बड़ी संख्या मे तैयार कर लिए गए। उसमे हिन्दु मुसलमान, सिक्ख तथा भारत की अन्य जातियो के चिह्न स्वरूप चार रंग रक्खे गये। युद्ध का घोषणा पत्र तैयार कर लिया गया। स्वतंत्र भारत सरकार की मुहर तैयार करली गई। विभिन्न केन्द्रो मे क्रांतिकारियो के लिए वरदिया सिलवा ली गई। सभी केन्द्रो मे अस्त्र शस्त्र इकट्ठे किए गए। सभी स्थानो मे जहा विद्रोह होने वाला था मोटरो, मोटर लारियो और अन्य सवारियो की सूची बना ली गई। विभिन्न केन्द्रो मे रसद इकट्ठी की गई। रेलवे लाइन तथा तार काटने के औजार इकट्ठे कर लिए गये। सब तैयारी कर लेने के उपरान्त भारत के सभी क्रांतिकारी उत्साह और आशा के साथ २१ फरवरी की प्रतीक्षा करने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि लाहौर से संकेत मिलते ही समस्त भारत मे विद्रोह का ज्वालामुखी फूट पडेगा और उस सशस्त्र क्रांति मे ब्रिटिश साम्राज्य भस्म

हो जावेगा। भारत माता स्वतंत्र हो जावेगी। योजना यह थी कि अंग्रेज अधिकारियों को कैद कर लिया जावे शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया जाये और विभिन्न क्षेत्रों को पूर्व निश्चित व्यक्तियों के नियन्त्रण में रख दिया जावे व क्रांतिकारियों और भारतीय सैनिकों की सहायता से जो विद्रोह में क्रांतिकारियों का साथ दें उनकी रक्षा करें।

परन्तु भारत को अभी अधिक वर्षों तक परतंत्र रहना था सरकार को सशस्त्र विद्रोह का पता लग गया। पुलिस को यह तो पता था कि क्रांतिकारी बहुत सक्रिय है। उनकी क्या योजना है यह पता लगाने के लिए उन्होंने कृपालसिंह को भेजा। कृपालसिंह का एक सम्बन्धी सेना में नौकर था और क्रांतिकारी दल में प्रवेश पा गया। बात यह थी कि करतारसिंह सराबा आदि पंजाब के क्रांतिकारी अत्यन्त वीर और साहसी थे परन्तु गुप्त रूप से षडयन्त्र करने का उन्हें अनुभव नहीं था। कृपालसिंह ने फरवरी के आरम्भ में ही प्रवेश किया था जबकि क्रांति की तैयारियां जोरों पर थी क्रांतिकारियों को उस पर शीघ्र ही संदेह हो गया। उस पर दृष्टि रखी गई तो ज्ञात हुआ कि वह पुलिस अधिकारियों के पास एक निश्चित समय पर जाया करता था। रास बिहारी को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे मार देने का आदेश दिया करतार सिंह आदि ने सोचा कि २१ फरवरी के चार पांच दिन शेष है उसको मार देने से पुलिस को संदेह हो जावेगा अतएव उन्होंने उसको मारा नहीं केवल नजरबन्द कर दिया। रास बिहारी ने विप्लव की तारीख को २१ फरवरी से बदल कर १९ फरवरी कर दिया। सभी केन्द्रों में तारीख के बदलने की सूचना भेजी गई। कुछ स्थानों पर सूचना नहीं पहुंची। जो व्यक्ति लाहौर की छावनी में सूचना देने गया था उसको कृपाल सिंह पुलिस का आदमी है यह ज्ञात नहीं था उसने कृपालसिंह के सामने ही रास बिहारी से आकर कहा कि वह छावनी में १९ फरवरी की सूचना दे आया। जब अन्य सभी लोग भोजन करने चले गये तो कृपालसिंह अपने चौकीदार को धोखा देकर बाहर निकला। उसने देखा कि पुलिस का अधि... साइकिल पर सवार होकर उसी की खोज में आ रहा है। उसने उसके द्वारा १९ तारीख की सूचना भी पुलिस को भिजवादी। यह घटना १८ फरवरी की थी।

१९ फरवरी के प्रातःकाल ही पुलिस ने उन मकानों पर छापा मारा जहां क्रांतिकारी थे। अधिकांश प्रमुख क्रांतिकारी पकड़ लिए गए पर रास बिहारी और करतार सिंह सराबा और पिंगले हाथ नहीं आये। करतार सिंह सराबा और पिं... बाद को गिरफ्तार हुए। १९ फरवरी की सूचना भारत के सभी केन्द्रों में और छावनियों में नहीं पहुंच सकी थी अतएव पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार में जो ग्रामीण क्रांतिकारी थे निश्चित स्थानों पर एकत्रित नहीं हो सके। उधर सरकार ने शस्त्रागारों पर भारतीय पहरेदारों को बदल कर उनके स्थान पर अंग्रेज सैनिक नियुक्त कर दिये। सेनाओं का स्थानान्तर कर दिया गया। जिन पर संदेह था उन सैनिक अधिकारियों और सैनिकों को बन्द कर दिया गया या नजरबन्द कर दिया गया। इन सब कारणों से सैनिक भयभीत हो गए और विद्रोह की योजना असफल हो गई। १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध के पश्चात यह प्रथम अवसर था कि इतने विशाल और व्यापक सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया गया। पर देश का यह दुर्भाग्य था कि वह असफल हो गया।

पुलिस अत्यंत सावधानी से जिन स्थानों पर क्रांतिकारियों के रहने का उन्हें संदेह था तलाशी लेने लगी। लाहौर के प्रत्येक मुहल्ले में घर पकड़ होने लगी। रास बिहारी अत्यंत निराश और दुखी हो उठे। उनका सारा परिश्रम और प्रयत्न व्यर्थ हो गया था। पुलिस उनको पकड़ने के लिए एडी से चोटी का प्रयत्न कर रही थी समस्त लाहौर की नाकेबंदी कर ली गई थी क्योंकि पुलिस का यह ख्याल था कि रासबिहारी लाहौर में ही है। पहले तो रास बिहारी ने मुसलमान वेष में काबुल जाने का निश्चय किया कलमा पढ़ना सीख लिया पर बाद को विचार बदल दिया और विनायक राव कापले के साथ काशी जाने वाली गाड़ी में सवार हो गए। वे वेष बदलने में इतने कुशल और दक्ष थे कि जिस डिब्बे में ये बैठे थे उसी में ही एक सी आई डी अधिकारी भी बैठा था परन्तु वह उनको पहचान नहीं सका। आगे की स्टेशन पर वे उस डिब्बे से उतर गए।

काशी आने पर भी रास बिहारी शांति से नहीं बैठे। शचीन्द्र ने वहां क्रांतिकारियों का एक अच्छा दल बना लिया था। रासबिहारी अब पंजाब, संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) बिहार और बंगाल तथा राजस्थान में क्रांतिकारियों का संगठन कर पुनः सशस्त्र विद्रोह के आयोजन में लग गये। उन्होंने शचीन्द्र सान्याल को तथा प्रताप सिंह बारहट को पंजाब और देहली की स्थिति का अध्ययन करने तथा बच बचे हुए क्रांतिकारियों का पुनः संगठन करने के लिए भेजा। सान्याल ने बिहार में भी एक संगठन खड़ा कर लिया था। सान्याल और प्रताप सिंह देहली और पंजाब के क्रांतिकारी दल को पुनः संगठित कर पाये थे कि सान्याल बीमार पड़ गए। सान्याल पर संयुक्त प्रांत में वारंट था इस कारण वे प्रताप सिंह बारहट को लेकर कलकत्ते के समीप एक गांव में विप्लव समिति के केन्द्र में आये। प्रतापसिंह बारहट शचीन्द्र सान्याल को वहां पहुंचा कर राजस्थान चले गए।

पुलिस को यह खबर मिल गई थी कि रासबिहारी बोस काशी में हैं। पुलिस ने चंदर नगर देहरादून आदि स्थानों से उन सभी गुप्तचरों को काशी बुला लिया था जो रासबिहारी को पहचानते थे। पर वे रासबिहारी को न पकड़ सके। रासबिहारी बराबर स्थान बदलते रहते तथा अन्य क्रांतिकारियों को भी उत्साहित रहते। उस समय क्रांतिकारी दल के पास धन की बहुत कमी हो गई थी। यद्यपि सशस्त्र विद्रोह की योजना सफल हो चुकी थी पंजाब के क्रांतिकारियों में से अधिकांश गिरफ्तार हो चुके थे तथा कुछ देश छोड़ कर विदेशों में चले गए थे परन्तु फिर भी क्रांतिकारियों का उत्साह कम नहीं पड़ता था वे नए क्रांतिकारी भर्ती कर रहे थे परन्तु धन की कमी के कारण संगठन करने में बड़ी अड़चन आ रही थी। रासबिहारी इससे दुखी थे। उनमें देश की स्वतन्त्रता के लिए जो अग्नि धधक रही थी वह बड़ी तीव्र थी। उन्होंने शचीन्द्र सान्याल तथा अन्य क्रांतिकारियों के सामने बड़ी गम्भीरता और दृढ़ आग्रह के साथ यह प्रस्ताव रक्खा था कि सरकार मुझे ही समस्त क्रांतिकारी कार्य का सूत्रधार समझती है पुलिस सारा प्रयत्न मुझे पकड़ने के लिए कर रही है। अस्तु अन्ततोगत्वा मैं गिरफ्तार हो जाऊंगा। तो ऐसा क्यों न किया जावे कि तुम लोग मुझे पकड़वा दो और पारितोषिक स्वरूप जो बड़ी धन राशि मिले उससे क्रांतिकारी दल का काम चलाओ। पर किसी ने भी उनकी इस बात को स्वीकार नहीं किया।

पुलिस बड़ी सतर्कता से अपना जाल को फैला रही थी। जब शचीन्द्र सान्याल

हो जावेगा। भारत माता स्वतंत्र हो जावेगी। योजना यह थी कि अंग्रेज अधिकारियों को कैद कर लिया जावे, शस्त्रागारों पर अधिकार कर लिया जावे और विभिन्न क्षेत्रों को पूर्व निश्चित व्यक्तियों के नियंत्रण में रख दिया जावे वे क्रांतिकारियों और उन भारतीय सैनिकों की सहायता से जो विद्रोह में क्रांतिकारियों का साथ दें उनकी रक्षा करें।

परन्तु भारत को अभी अधिक वर्षों तक परतंत्र रहना था सरकार को इस सशस्त्र विद्रोह का पता लग गया। पुलिस को यह तो पता था कि क्रांतिकारी दल बहुत सक्रिय है। उनकी क्या योजना है यह पता लगाने के लिए उन्होंने कृपालसिंह को भेजा। कृपालसिंह का एक सम्बन्धी सेना में नौकर था और क्रांतिकारी दल में प्रवेश पा गया। बात यह थी कि करतारसिंह सराबा आदि पंजाब के क्रांतिकारी अत्यन्त वीर और साहसी थे परन्तु गुप्त रूप से षडयंत्र करने का उन्हें अनुभव नहीं था। कृपालसिंह ने फरवरी के आरम्भ में ही प्रवेश किया था जबकि क्रांति की तैयारियाँ जोरों पर थी क्रांतिकारियों को उस पर शीघ्र ही संदेह हो गया। उस पर दृष्टि रखी गई तो ज्ञात हुआ कि वह पुलिस अधिकारियों के पास एक निश्चित समय पर जाया करता था। रास बिहारी को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे मार देने का आदेश दिया करतार सिंह आदि ने सोचा कि २१ फरवरी के चार पांच दिन ही शेष है उसको मार देने से पुलिस को संदेह हो जावेगा अतएव उन्होंने उसको मारा नहीं केवल नजरबन्द कर लिया। रास बिहारी ने विप्लव की तारीख को २१ फरवरी से बदल कर १९ फरवरी कर दिया। सभी केन्द्रों में तारीख के बदलने की सूचना भेजी गई। कुछ स्थानों पर सूचना नहीं पहुंची। जो व्यक्ति लाहौर की छावनी में सूचना देने गया था उसको कृपाल सिंह पुलिस का आदमी है यह ज्ञात नहीं था। उसने कृपालसिंह के सामने ही रास बिहारी से आकर कहा कि वह छावनी में १९ फरवरी की सूचना दे आया। जब अन्य सभी लोग भोजन करने चले गये तो कृपालसिंह अपने चौकीदार को धोखा देकर बाहर निकला। उसने देखा कि पुलिस का भेदिया साइकिल पर सवार होकर उसी की खोज में आ रहा है। उसने उसके द्वारा १९ तारीख की सूचना भी पुलिस को भिजवादी। यह घटना १८ फरवरी की थी।

१९ फरवरी के प्रातःकाल ही पुलिस ने उन मकानों पर छापा मारा जहां क्रांतिकारी थे। अधिकांश प्रमुख क्रांतिकारी पकड़ लिए गए पर रास बिहारी बोस, करतार सिंह सराबा और पिंगले हाथ नहीं आये। करतार सिंह सराबा और पिंगले बाद को गिरफ्तार हुए। १९ फरवरी की सूचना भारत के सभी केन्द्रों में और छावनियों में नहीं पहुंच सकी थी अतएव पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार में जो ग्रामीण क्रांतिकारी थे निश्चित स्थानों पर एकत्रित नहीं हो सके। उधर सरकार ने सभी शस्त्रागारों पर भारतीय पहरेदारों को बदल कर उनके स्थान पर अंग्रेज सैनिक नियुक्त कर दिये। सेनाओं का स्थानांतर कर दिया गया। जिन पर संदेह था उन सैनिक अधिकारियों और सैनिकों को कैद कर लिया गया या नजरबन्द कर दिया गया। इन सब कारणों से सैनिक भयभीत हो गए और विद्रोह की योजना असफल हो गई। १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध के पश्चात यह प्रथम अवसर था कि इतने विशाल और व्यापक सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया गया। पर देश का यह दुर्भाग्य था कि वह असफल हो गया।

पुलिस अत्यन्त सावधानी से जिन स्थानों पर क्रांतिकारियों के रहने का उन्हें संदेह था तलाशी लेने लगी। लाहौर के प्रत्येक मुहल्ले में धर पकड़ होने लगी। रास बिहारी अत्यन्त निराश और दुखी हो उठे। उनका सारा परिश्रम और प्रयत्न व्यर्थ हो गया था। पुलिस उनको पकड़ने के लिए एड़ी से चोटी का प्रयत्न कर रही थी समस्त लाहौर की नाकेबन्दी कर ली गई थी क्योंकि पुलिस को यह ज्ञात था कि रासबिहारी लाहौर में ही हैं। पहले तो रास बिहारी ने मुसलमान वेष में काबुल जाने का निश्चय किया कलमा पढ़ना सीख लिया पर बाद को विचार बदल दिया और विनायक राव कापले के साथ काशी जाने वाली गाड़ी में सवार हो गए। वे वेष बदलने में इतने कुशल और दक्ष थे कि जिस डिब्बे में वे बैठे थे उसी में ही एक सी आई डी अधिकारी भी बैठा था परन्तु वह उनको पहचान नहीं सका। आगे की स्टेशन पर वे उस डिब्बे से उतर गए।

काशी आने पर भी रास बिहारी शांति से नहीं बैठे। शचीन्द्र ने वहां क्रांतिकारियों का एक अच्छा दल बना लिया था। रासबिहारी अब पंजाब, संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) बिहार और बंगाल तथा राजस्थान में क्रान्तिकारियों का संगठन कर पुनः सशस्त्र विद्रोह के आयोजन में लग गये। उन्होंने शचीन्द्र सान्याल को तथा प्रताप सिंह बारहट को पंजाब और देहली की स्थिति का अध्ययन करने तथा वध के बचे हुए क्रांतिकारियों का पुनः संगठन करने के लिए भेजा। सान्याल ने बिहार में भी एक संगठन खड़ा कर लिया था। सान्याल और प्रताप सिंह देहली और पंजाब के क्रांतिकारी दल को पुनः संगठित कर पाये थे कि सान्याल बीमार पड़ गए। सान्याल पर संयुक्त प्रान्त में वारंट था इस कारण वे प्रताप सिंह बारहट को लेकर कलकत्ते के समीप एक गांव में विप्लव समिति के केन्द्र में आये। प्रतापसिंह बारहट शचीन्द्र सान्याल को वहां पहुंचा कर राजस्थान चले गए।

पुलिस को यह खबर मिल गई थी कि रासबिहारी बोस काशी में हैं। पुलिस ने चन्दर नगर देहरादून आदि स्थानों से उन सभी गुप्तचरों को काशी बुला लिया था जो रासबिहारी को पहचानते थे। पर वे रासबिहारी को न पकड़ सके। रासबिहारी बराबर स्थान बदलते रहते तथा अन्य क्रांतिकारियों को भी बचाते रहते। उस समय क्रांतिकारी दल के पास धन की बहुत कमी हो गई थी। यद्यपि सशस्त्र विद्रोह की योजना सफल हो चुकी थी पंजाब के क्रांतिकारियों में से अधिकांश गिरफ्तार हो चुके थे तथा कुछ देश छोड़ कर विदेशों में चले गए थे परन्तु फिर भी क्रांतिकारियों का उत्साह कम नहीं पड़ता था व नए क्रांतिकारी भर्ती कर रहे थे परन्तु धन की कमी के कारण संगठन करने में बड़ी अड़चन आ रही थी। रासबिहारी इससे दुखी थे। उनमें देश की स्वतन्त्रता के लिए जो अग्नि धधक रही थी वह बड़ी तीव्र थी। उन्होंने शचीन्द्र सान्याल तथा अन्य क्रान्तिकारियों के सामने बड़ी गम्भीरता और दृढ़ आग्रह के साथ यह प्रस्ताव रक्खा था कि सरकार मुझे ही समस्त क्रांतिकारी कार्य का सूत्रधार समझती है पुलिस सारा प्रयत्न मुझे पकड़ने के लिए कर रही है। अस्तु अन्ततोगत्वा मैं गिरफ्तार हो जाऊंगा। तो ऐसा क्यों न किया जावे कि तुम लोग मुझे पकड़वा दो और पारितोषिक स्वरूप जो बड़ी धन राशि मिले उससे क्रांतिकारी दल का काम चलाओ। पर किसी ने भी उनकी इस बात को स्वीकार नहीं किया।

पुलिस बड़ी सतर्कता से अपने जाल को फैला रही थी। जब शचीन्द्र सान्याल

कलकत्ते के पास के गाव के विप्लव समिति के केन्द्र म ज्वर ग्रस्त थे तब बगाल के क्रातिकारी दल के नेता नगेन्द्रनाथ दत्त उपनाम गिरजा बाबू और सान्याल ने यह तय किया कि रास विहारी का अब भारत से निकल जाना चाहिए क्योंकि उनका अधिक दिनो तक बच सकना कठिन है। रासबिहारी देश छोडना नही चाहते थे परन्तु उनके स्नेहियो ने उन्हें भारत छोडने पर विवश कर दिया यह भी निश्चित हुआ कि विदेश जाकर वे जरमनी से सम्पर्क स्थापित कर क्रातिकारियो के लिए बडी मात्रा म अस्त्र शस्त्र भेजें।

जब रास विहारी ने यह निश्चय कर लिया कि उन्हें भारत छोडना है तो उन्होने जापान जाने का निश्चय किया क्योंकि उनकी मान्यता थी कि वे वहा से एशियाई देशो की स्वतन्त्रता का आन्दोलन खडा करेंगे। इस कार्य के लिए जापान ही उपयुक्त था। अतएव उन्होंने जापान जाने का निश्चय किया।

परन्तु जापान जाया कैसे जाय पासपोर्ट की समस्या थी। पासपोर्ट पर फोटो लगाना पडता था। साथ ही पुलिस बडी सतर्कता से उनको खोज रही थी। जब भी पुलिस उनके समीप पहुचती वे पुलिस की आखो मे धूल झोंक कर निकल जाते। जब उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि उन्हें जापान जाना है तो वे काशी से निकल और बगाल की ओर चले। जब वे बगाल जा रहे थे तो वे किसी कार्यवश दिन म अजीमगंज स्टेशन पर उतर वहा के सूचना पट पर सरकारी घोषणा पढी। सरकार ने उनको पकडवाने वाले को विपुल धनराशि तथा जागीर देने की घोषणा निकाली थी। वे उस स्टेशन पर उतर गए। उन्होंने गगा को पार किया और प्रातःकाल पलासी पहुचे वहा बगाल के लैफ्टीनेट गवरनर का शिविर लगा हुआ था वे दिन भर उस शिविर मे रहे कोई उन्हें पहचान न सका। दूसरे दिन वे नवद्वीप पहुच गए। वे बगाल तो पहुच गए परन्तु प्रश्न यह था कि पासपोर्ट किस प्रकार लिया जाय। उसी समय गुरुदेव श्री रवि न्द्रनाथ टैगोर के जापान जाने का समाचार प्रकाशित हुआ। रास बिहारी ने अनुकूल अवसर देखा। रवि न्द्रनाथ के अग्रिम सदेश वाहक के रूप म राजा पी एन टैगोर के नाम से भेष बदल कर फोटो खिचवा कर पासपोर्ट ले लिया। नवद्वीप में शचीन्द्र सान्याल, गिरजा बाबू, प्रतापसिंह बारहट को उनके पीछे क्रातिकारी दल को किस प्रकार सगठित किया जाय इसके सम्बध म उन्होंने अवश्यक बातें बतलाई और जापान जाने की तैयारी की।

अन्त म वह एतिहासिक दिवस आ गया जिस दिन उस महान देश भक्त भारत माता की स्वतन्त्रता का वीर योद्धा अपनी स्वर्णिम मातृ भूमि को सदा के लिए छोड कर जापान चला गया। १२ मई १९१५ को सानुकी मारु' जापानी समुद्री जहाज से खिदरपुर डाक की १२ नम्बर की जट्टी से सो युद्धा के उस वीर योद्धा ने अपनी मातृ भूमि को अन्तिम प्रणाम किया और सदैव के लिए चला गया। फिर अपने जीवन म उन्हें अपनी प्रिय मातृभूमि के दर्शन नहीं हुए। उनके प्रिय साथी शचीन्द्र सान्याल और गिरजा बाबू ने उनको अश्रु पूरित नेत्रो से विदाई दी। वे रासबिहारी के साथ एक बग्घी म नीमतल्ला घाट स्ट्रीट से बदरगाह तक आए थे। शचीन्द्र सान्याल उनके देश त्याग से अत्यन्त कातर और उदास थे। रासबिहारी ने उन्हें यह कह कर सात्वना दी कि मैं विदेश इस लिए जा रहा हू कि वहा से बडी मात्रा म अस्त्र शस्त्र लाऊगा और उनसे अपने क्रातिकारी युवको और युवतियो को सदस्य करूगा

फिर देखेंगे कि अंग्रेज यहां कैसे रहते हैं।

यद्यपि उस समय तो रासबिहारी बोस अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह और भारत की स्वतंत्रता का युद्ध आरम्भ करने में सफल नहीं हुए परन्तु सत्ताईस वर्षों के उपरान्त उनके वे शब्द सत्य सिद्ध हुए। जबकि इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने १८ दिसम्बर १९४२ में जापान से बृटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।

रासबिहारी बोस (जापान) जून १९१५ में पहुंचे। वहां से वे टोकियो होते हुए शंघाई गए। शंघाई से उन्होंने दो जहाजों में भर कर बहुत बड़ी राशि में अस्त्र शस्त्र भारत के क्रांतिकारियों के लिए भेजे किन्तु किसी देश द्रोही ने इसकी सूचना बृटिश सरकार को दे दी और उन दोनों जहाजों को बृटिश सरकार ने समुद्र में ही अपने अधिकार में ले लिया इस विश्वासघात के रहस्य का यदि श्री धीरेन्द्रनाथ सेन और हेरम्बालाल गुप्त आज जीवित होते तो केवल वे ही उसका रहस्योद्घाटन कर सकते थे। परन्तु वे आज जीवित नहीं हैं इस घटना के लम्बे समय के उपरान्त उन दोनों की मैक्सिको में मृत्यु हो गई।

शंघाई से अस्त्र शस्त्रों से भरे जहाज भेज कर रासबिहारी टोकियो वापस आ गए और टोकियो पहुंचने के उपरान्त वे तीसरे दिन श्री यस के मजूमदार से मिले। उन्होंने जापानी सैनिक विद्रोह के नेता डाक्टर ओखावा से भी सम्पर्क स्थापित किया। उस समय एक अन्य भारतीय क्रांतिकारी हेरम्बालाल गुप्ता जापान में अमेरिका से भारतीय क्रांतिकारियों का संगठन करने आए थे। लाला लाजपतराय भी उन दिनों जापान आए हुए थे। यह तीनों मिले और उन्होंने निश्चय किया कि बृटिश साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के पक्ष में जापान में, प्रचार किया जावे। इस निश्चय के अनुसार उन्होंने 'क्योटो' नगर में २७ नवम्बर १९१५ को सार्वजनिक सभा की और भारत में बृटिश साम्राज्यवाद के दमन और शोषण की घोर निन्दा की। उस महती सभा में प्रथम बार जापानियों ने बृटिश साम्राज्यवाद के द्वारा भारत में किये जाने वाले घोर दमन और शोषण की कहानी सुनी। टोकियो के बृटिश दूतावास में हड़कम्प हो गया। जापान के सभी प्रमुख पत्रों ने बड़े-बड़े शीर्षकों में उस बृटिश विरोधी सभा की कार्यवाही को तथा उन तीनों के भाषणों को प्रकाशित कीया। उससे बृटिश दूतावास अत्यन्त कुपित हुआ और वह यह राजा पी यन टगोर कौन व्यक्ति है गुप्तचरों के द्वारा बृटिश दूतावास को यह पता चल गया कि पी यन टगोर अन्य कोई नहीं प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस है जिनको पकड़ने के लिए भारत सरकार व्यग्र थी।

यह ज्ञात होते ही कि महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस राजा पी यन टगोर के छद्म नाम से जापान आ गए। बृटिश दूतावास ने तुरन्त ही जापान सरकार पर दबाव डाला कि वह रास बिहारी बोस, लाला लाजपत राय, और हेरम्बालाल गुप्त के विरुद्ध प्रत्यर्पण की आज्ञा निकाल दी। लाला लाजपत राय नवम्बर १९१५ के अन्त में अमेरिका चले गए उसके कुछ ही दिनों के उपरान्त रासबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्त को पुलिस ने बुलाया और पांच दिनों के अन्दर जापान से चले जाने की आज्ञा दे दी। स्थिति अत्यन्त भयावह हो गई। बृटिश दूतावास ने जासूस लगा रक्खे थे। जापान से निकलने का अर्थ यह था, कि वे बृटिश पुलिस के हाथों में पड़ जाते। बृटिश

श्रीमती सोभा से अपनी पुत्री तोशिको का विवाह श्री बोस से कर देने के लिए कहा। तोयामा ने गुप्त रीति से स्वयं रासबिहारी का तोषिको से विवाह कर दिया। रासबिहारी का तोशिका के साथ जुलाई १६१८ मे विवाह हुआ। फिर भी रासबिहारी बोस को बडी सावधानी से सतकता पूवक अपने को छिपाये हुए अपनी प्रिय पत्नी के साथ रहना पडता था क्योंकि बृटिश दूतावास के गुप्तचरो से उनको खतरा था। आठ वर्षो में उन्हें सत्रह बार अपने रहने के स्थान को बृटिश दूतावास के गुप्तचरो के खतरे के कारण बदलना पडा। आठ वर्षो के उपरात जब उनको जापान की नागरिकता २ जुलाई १६२३ को मिल गई तब जाकर कहीं यह सकट मिटा। तब जाकर रास बिहारी बोस अपनी प्रिय पत्नी के साथ खुले रूप म एक अलग मकान लेकर रह सके। पर आठ-लम्बे वर्षो तक अपने प्रिय पति की रक्षा करने उनको अग्रेजो के दुष्ट गुप्तचरा से जो कि उनका अपहरण करना या उनको मार देना चाहते थे उनके पहुच के बाहर रखने मे श्रीमती तोशिका बोस का स्वास्थ्य जर्जर हो गया। उनके मन पर जो अपने पति के निरतर खतरे की गहन चिता थी और आठ वर्षो म एक स्थान को छोड कर दूसरे स्थान पर गोपनीय ढग से भागने का सत्रह बार से अधिक जो खतर नाक और कष्ट दायक अभियान था उसने श्रीमती तोशिको बोस को थका दिया। एक पुत्र और एक पुत्री को छोड कर ४ ३ माच १६२५ का स्वगवासिनी हो गई। उस वीर और साहसी रमणी ने अपने पति की सुरक्षा के लिए अपना बलिदान कर दिया। धन्य हो देवी एक भारतीय महान क्रातिकारी के जीवन की रक्षा के लिए जो तुमने अपूव बलिदान किया उसको याद कर प्रत्येक देश भक्त भारतीय तुम्हारे प्रति श्रद्धा से मस्तक भुकायगा।

श्रीमती सोभा ने रासबिहारी से कहा कि उन छोटे बालको का वे पालन पोषण कर लेंगी वे दूसरा विवाह करलें श्री रासबिहारी ने उत्तर दिया "मा तोशिको सदैव मेरे साथ है मै उसके स्थान पर अन्य किसी को लाने की स्वप्न मे भी कल्पना नही कर सकता।"

तोशिका केवल उनकी धर्मपत्नी ही नही थी वरन वह उनके क्रातिकारी कार्यों भारत की स्वतनता के आदोलन म उनकी सहायक और मित्र थी। अपनी प्रिय पत्नी की मृत्यु से रासबिहारी को गहरा आघात लगा। परन्तु श्री रासबिहारी बोस ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन ही मातृभूमि की बलि दे दी। और वे अधिक वेग से भारत की स्वतत्रता के आदोलन को तेजवान बनाने मे जुट गए। विदेशो म भारतीय स्वतत्रता आदोलन के लिए सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होने दो पत्रि काए निकाली एक अग्रेजी मे और दूसरी जापानी मे प्रकाशित होती थी। वे जापान तथा अन्य देशो के प्रमुख समाचार पत्रो के द्वारा निरतर बृटेन विरोधी और भारत के पक्ष मे धुआधार प्रचार करते थे और जो भी एशियाई राष्ट्रो के क्रातिकारी नेता थे उनसे सम्पर्क स्थापित कर बृटिश सरकार के विरुद्ध एशियाई सगठन खडा करने का प्रयत्न करते थे। चीन के राष्ट्रीय नेता श्री सनयात सेन से उनकी गहरी मित्रता थी उनके सहयोग से वे एशियायी देशो को सगठित कर बृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध खडा कर देने का प्रयत्न करने लगे। श्री रासबिहारी ने ही डाक्टर सनयात सेन को चीन वापस जाकर चीन म राष्ट्रीय जागरण का काय करने की प्रेरणा दी और मार्ग व्यय के लिए २०,००० फ्रैंक दिए। उनकी लेखनी बृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सतत अग्नि

वर्षा करती । उन्होंने भारत के सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखीं और भारत में वृटिश शासन के शोषण और दमन का चित्र एशियाई देशों के सामने रक्खा। भारतीय स्वतन्त्रता को वे एशियाई राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का आधार स्तम्भ मानते थे। भारत की स्वतन्त्रता में वे मानव जाति का कल्याण देखते थे। उनका यह प्रसिद्ध वाक्य 'The Indian Freedom is necessary absolutely for the peace of the world and happiness of mankind Ras Behari Bose 'संसार की शान्ति और मानव जाति के सुख के लिए भारत की स्वतन्त्रता नितान्त आवश्यक है—" रास विहारी। वे भाषण देते रहिया से वृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध पददलित राष्ट्रों को सगठित हो उठ खड़ा होने के लिए आवाहन करते। वे जापान में तथा एशियाई देशों मे जहां भी भारतीय बसे थे जलियां वाला बाग दिवस और भारत की स्वतन्त्रता दिवस मनाते थे। उन्होंने १९२८ में जापान में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की।

अगस्त १९२६ में नागा साकी में एशियाई देशों के राष्ट्र कर्मियों का सम्मेलन कराने में उन्होंने प्रमुख भाग लिया। उस पैन एशियन एसोसियेशन के एशियाई सम्मेलन में चीन, भारत, अफगानिस्तान, फिली पाइन्स, वियतनाम और जापान आदि देशों के १८२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उस सम्मेलन में पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई देशों को सगठित करने का प्रयत्न किया गया। उस सम्मेलन की प्रेरक शक्ति रासविहारी बोस थे। उन्होंने ही सम्मेलन को साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रबल सगठन खड़ा करने की प्रेरणा दी। पैन एशियन एसोसियेशन के वे ही स्थापना करने वाले थे। १९३७ में श्री रासविहारी बोस जापान में स्थापित इंडियन इंडिपेंडेंस लीग (भारतीय स्वातन्त्र सघ) के द्वारा पुनः भी भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने लगे। बरमा, थाईलैंड, मलाया, चीन, पूर्वी द्वीप समूह जापान जहां भी भारतीय बसे हुए थे उनको सगठित करने का प्रयत्न किया और इन सभी देशों में बसे हुए भारतीयों से सम्पर्क स्थापित करते और उन्हें भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने की प्रेरणा और मार्ग दर्शन देते थे।

जब रासविहारी भूमिगत थे वृटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने का श्रेय मुख्यतः उनकी पत्नी को था। वृटिश सरकार उनके पीछे थी वह उनका अपहरण करवाना या मरवा देना चाहती थी। भारत सरकार ने भी अपने गुप्तचरों को जापान भेजा हुआ था। 'भारत सरकार ने एक अत्यन्त कुशल उच्च पुलिस अधिकारी को रासविहारी का पता लगाने जापान भेजा था। उस पुलिस अधिकारी ने श्री रासबिहारी के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट भारत सरकार के पास भेजी उसका सारांश यह था कि श्री रासबिहारी भूमिगत है। जुलाई के अन्तिम दिनों में श्री रासबिहारी टोकियो से बिल कुल लापता हो गए क्योंकि वृटिश अधिकारियों और गुप्तचरों को उनके छिपने का स्थान ज्ञात हो गया था। वृटिश गुप्तचरों ने जापान की पुलिस की सहायता से अत्यन्त कुशलता पूर्वक छान बीन करके पता लगा लिया कि जापान के पूर्वीय समुद्र तट पर स्थित कस्तूरा नगर के समीप 'ओकित्सू' गांव में श्री रासबिहारी टोकियो से भाग कर जा छिपे हैं। बोस को जैसे ही यह ज्ञात हुआ कि गुप्तचरों को उनका पता चल गया है वे ओकित्सू से तुरन्त भाग कर टोकियो आ गए और सम्राट के महलों और सम्राट गृह के महाअधीक्षक के विशाल आहाते में कहीं छिप गए। जो थोड़े उनके पत्र हाथ लगे हैं उनसे अमरिका में भारतीय षडयन्त्रकारियों के प्रमुख 'नरेन भट्टाचार्य से,

पूर्वीय देशों में भारतीय क्रांतिकारियों से, और भारत में भारतीय क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित किए हुए हैं और वे भारतीय क्रांतिकारियों का नेतृत्व करते हैं। उनके महत्व और लोकप्रियता में तनिक भी कमी नहीं हुई है। वे आज भी भारतीय क्रांतिकारियों के नेता माने जाते हैं। तारकनाथदास जब जापान में थे तो बोस से उनका सम्पर्क था और वे श्री रासबिहारी बोस को अपना नेता मानते थे। उन दोनों ने ब्रिटिश जहाजों को डुबाने की एक योजना बनाई थी। बोस ने जापान में जबकि वे भूमिगत थे तो अपना नाम 'ट्यारी दारा' रख लिया था और तारक नाथ दास उस नाम से अवगत थे।"

रास बिहारी में भेष बदलने की ऐसी विलक्षण क्षमता थी कि ब्रिटिश गुप्तचर उन्हें कभी पकड़ न सके। इसके अतिरिक्त भाषा ज्ञान की उनकी प्रतिभा इतनी अद्भुत थी कि जब वे 'आदजो नाभा' तथा उनकी पत्नी के मकान के तहखाने में चार महीने छिप रहे तो उन चार महीनों में उन्होंने बिना किसी की सहायता के जापानी जैसी क्लिष्ट भाषा सीख ली थी और उसमें धारा प्रवाह बोल और लिख सकते थे।

उनकी राजनीतिक गति विधियां अब तेज हो गई थीं। 'यू एशिया' 'एशियन रिव्यू' तो वे निकालते ही थे वे सभी महत्त्वपूर्ण जापानी पत्रों तथा पत्रिकाओं में लेख लिखते। कई महत्त्वपूर्ण पत्रों के तो सम्पादकीय लेख भी वे लिखा करते थे। अब श्री रासबिहारी का नाम जापान में एशियाई राष्ट्रवाद के जन्म दाता के रूप में श्रद्धा और आदर से लिया जाने लगा उनके द्वारा पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रों को संगठित करने से बड़ा राष्ट्रीय चैतन्य उत्पन्न हुआ। जापान तथा एशिया के राष्ट्र कर्मी उन्हें अत्यंत श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखने लगे। एशियाई राष्ट्रीय नेता के रूप में उनको गौरव दिया जाने लगा। जापान के युवक उनके प्रति इतने अधिक श्रद्धालु हो गए कि उन्होंने उनको 'सैंसी' कहना आरम्भ कर दिया। जापान में 'सैंसी' का अर्थ 'महान गुरु' है। जापान के युवक श्री रासबिहारी बोस को इसी नाम से पुकारते थे। रासबिहारी को जापान के सैनिक भी अत्यंत आदर और श्रद्धा से देखते थे। उन पर उनका गहरा प्रभाव था।

उनकी मान्यता थी कि जब तक कि जापान की जनता और सरकार को भारत तथा एशिया के राष्ट्रों की समस्याओं से अवगत नहीं कराया जावेगा और भारत तथा एशिया के अन्य परतंत्र राष्ट्रों के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति सहानुभूति प्राप्त नहीं करली जावेगी तब तक अनुकूल अवसर आने पर जापान की सहायता उपलब्ध नहीं हो सकेगी। प्रथम महायुद्ध के अनुभव ने उन्हें यह बतला दिया था। उस समय जापान एशिया के देशों की स्वतंत्रता के आन्दोलन से सर्वथा उदासीन रहा था।

१६३३ में मंचूरिया की घटना के कारण लीग ऑफ नेशंस में जापान के विरुद्ध निन्दात्मक प्रस्ताव पारित हुआ। जापान ने लीग ऑफ नेशंस की सदस्यता त्याग दी और जापान में ब्रिटिश विरोधी भावना अत्यन्त तीव्र हो उठी क्योंकि ब्रिटेन ही उस प्रस्ताव को पारित कराने में अगुआ था। श्री रासबिहारी बोस ने उस ब्रिटेन विरोधी भावना का पूरा लाभ उठाया उन्होंने समस्त जापान का दौरा किया और जापानियों से कहा कि परतंत्र भारत ब्रिटेन की शक्ति का आधार है अतएव एशिया में ब्रिटेन की शक्ति और प्रभाव को कम करने के लिए भारत की स्वतंत्रता आवश्यक है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रों के संगठन अधिक तेजवान बनाने

के लिए श्री रासबिहारी बोस ने २८ अक्टूबर १९३७ को एशियाई युवक सम्मेलन बुलाया और पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रभावशाली और सबल मोर्चा स्थापित कर दिया।

दूरदर्शी रासबिहारी बोस ने यह देख लिया कि अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर घटनायें तेजी से घट रही हैं भावी युद्ध में जापान और बृटेन का संघर्ष होगा। भारत को सशस्त्र विद्रोह के द्वारा स्वतंत्र करने का वह अलभ्य अनुकूल अवसर होगा। अतएव वे दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में रहने वाले भारतीयों का संगठन कर लेना चाहते थे इसी उद्देश्य से उन्होंने इंडियन इंडिपैंडेंस लीग की सभी दक्षिण पूर्वी एशिया में शाखायें स्थापित की। वे स्वयं वहां गए तथा श्री डी० एस० पांडे तथा श्री देवनाथदास को उन देशों में भारतीयों से सम्पर्क स्थापित करने तथा इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की शाखायें स्थापित करने के लिए भेजा।

३ सितम्बर १९३९ को द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया इंडियन इंडिपैंडेंस लीग की एक कौंसिल बनाई गई। रासबिहारी उसके अध्यक्ष थे और देवनाथदास तथा आनन्द मोहन सहाय उसके सदस्य थे। रासबिहारी ने श्री देवनाथ दास को थाइलैंड तथा इंडोचीन के विभिन्न भागों (हनोइ हैफांग हुई कम्बोडिया, सुवर्ण भूमि (लाओस) में भारतीयों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए भेजा। श्री रासबिहारी बोस ने प्राणलाल कपाडिया को पत्र देकर भारत भेजा। वे रासबिहारी की ओर से महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद राजेंद्र बाबू तथा शरतचन्द्र बोस से मिले। नेताजी से मिलना नहीं हुआ क्योंकि वे उस समय जेल में थे। रासबिहारी बोस ने भारत में महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं को लिखा तथा कपाडिया के द्वारा कहलाया कि शीघ्र ही दक्षिण पूर्व में युद्ध छिड़ेगा। जापान का बृटेन से युद्ध होगा। भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने का यह दैवी वरदान सिद्ध होगा। जापान की हम सहायता मिल जावेगी। देश के अन्दर कांग्रेस तथा दक्षिण पूर्व एशिया में इंडियन इंडिपैंडेंस लीग के नेतृत्व में भारतीय संघर्ष करें तो भारत स्वतंत्र हो जावेगा। परन्तु कांग्रेस के नेता तब तक कुछ निश्चय नहीं कर सके थे। वे जापान के साथ मिलकर बृटेन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर करना चाहते थे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू का मत था कि इस समय कोई आंदोलन करके बृटेन की कठिनाइयों को बढ़ाना नहीं चाहिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इसी प्रश्न पर कांग्रेस से मतभेद हुआ था त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि ६ महीने में विश्व युद्ध होगा हम बृटेन को चुनौती देकर संघर्ष के लिए तैयारी करना चाहिए परन्तु कांग्रेस ने उनके सुझाव को स्वीकार नहीं किया था और उन्हें कांग्रेस से हटना पड़ा था। भारतीय नेताओं ने रासबिहारी बोस के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

उधर से निराश होने पर रासबिहारी बोस की दृष्टि सुभाषचन्द्र बोस की ओर गई। जब वे आमरण अनशन करके जेल से छूट गए और एकान्तवास में भारत से निकल जाने की तैयारी कर रहे थे तब रासबिहारी बोस ने उन्हें जापान लाने की योजना बनाई। उन्होंने जापान की स्थल, नभ और समुद्री सेना के सर्वोच्च अधिकारियों से मिल कर सुभाषचन्द्र बोस को जापान लाने की सारी व्यवस्था करली। इस बीच में उन्होंने सुभाषचन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर एक जापानी समुद्री जहाज से मलाया भेजा। मलाया में जब देवनाथ दास पहुँचे तब भारत में जापानी कौंसल जनरल से सम्पर्क

स्थापित कर यह निश्चय किया गया कि वह सुभाषचन्द्र बोस को एक जापानी स्टीमर म अक्याब तक पहुचा दे। योजना यह थी कि अक्याब पर जापानी एयरक्राफ्ट सुभाष जी को टोकियो पहुचा न्गी। उस समय तक यद्यपि बृटन और जापान म खिचाव था परन्तु जापान बृटन से युद्ध रत नही था इस कारण जापान और बृटन के मैत्रय सम्बध पूववत थे। अक्याब पर हवाई जहाज से सुभाषच द्र का टोकियो लाने की पूरा व्यवस्था था परन्तु कलकत्ते मे जापान का कौसल जनरल अतिम क्षण पर हिचकिचा गया। उस महान क्रांतिकारी की यह वह योजना सफल हो जाती और ताजी सुभाषचन्द्र जापान से युद्ध छिडने के पूव ही जापान पहुच जात तो भारत का इतिहास ही दूसरा होता परतु यह होना नही था।

८ दिसम्बर १९४१ दक्षिण एशिया म युद्ध छिड गया। तुर त ही रासविहारी ने अपने नाम स एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की और लाखो की सख्या मे उसको जापानी सेनाओ मे बटवाया उसम जापानी सैनिको का बतलाया गया था कि वे भार-तीयो और विशेष कर भारतीय स्त्रियो के साथ कैसा व्यवहार करें। रासविहारी बोस का जापान के सैनिको पर ऐसा प्रभाव था कि उन्होने उनके कहन क अनुसार भारतीयो के साथ दुर्व्यवहार नही किया और किसी भी भारतीय महिला के साथ अभद्र यवहार नहा किया।

रासविहारी बोस ने तुरत ही एक भारतीय सेवा दल का निर्माण किया जिसके कमाण्डर देवनाथ दास और अध्यक्ष स्वामी सत्यानन्द पुरी थे। वह सेवा दल मलाया, सिंगापुर, बरमा जहा-जहा जापानी सेनाए कूच करती थी उनके साथ कूच करता था। इन प्रदेशो मे लाखो भारतीय रहते थे। यह सेवादल भारतीयो के जीवन और धन सम्पत्ति की सुरक्षा करता था। इस सेवादल ने भारतीयो की अद्भुत सेवा की उसके फल स्वरूप समस्त दक्षिण पूर्वीय एशिया मे रासविहारी के नेतृत्व मे इडिया इडिपडस लीग म गहरा विश्वास उत्पन्न हो गया।

जब ८ दिसम्बर १९४१ को जापान न मित्र राष्ट्रो के विरुद्ध युद्ध घोषणा करदी तो रासविहारी सचेत हो गए थे वे जान गए थे कि भारत का स्वतत्र करने का समय आ गया है। उन्होने तुरत घोषणा की कि इडियन इडिपडेंस लीग का लक्ष्य भारत से बृटिश शासन को उखाड फेंकना और जिन प्रदेशो पर जापान का अधिकार हो जावे वहा बसे हुए भारतीयो की सेवा और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना है।

बहुत शीघ्र ही ११ दिसम्बर १९४१ को 'कोटा बार' म भारतीय क्रातिकारी राजनीतिक नेताओ तथा बृटिश भारतीय सेना के कतिपय सैनिक अधिकारियो का एतिहासिक मिलन हुआ और आजादहिंद सेना (आइ एन ए) का सब प्रथम गठन हुआ। सिंगापूर का १५ फरवरी १९४२ का पतन हो गया।

श्री रासविहारी बोस ने यद्यपि जापानी सैनिको से भारतीयो के साथ सद-व्यवहार करने की अपील निकाली थी परन्तु वे जानते थे कि केवल अपील निकालना यथेष्ट नही है। वे जापानी सेना के सर्वोच्च सेनापति फील्ड मार्शल सुगीयामा से मिले और उनसे प्राथना की कि वे आज्ञा प्रचारित करदें कि विजित प्रदेशो म भारतीयो को शत्रु न माना जावे। फील्ड मार्शल सुगीयामा ने रासविहारी बोस की इस प्राथना को अस्वीकार कर दिया। उन्होने कहा कि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अग है जिससे

जापान युद्ध कर रहा हैं अतएव भारतीयो को शत्रु माना जायगा। तब रासविहारी युद्ध मन्त्री से मिले और उन्हें यह आज्ञा निकालने के लिए तैयार कर लिया।

जब जापान की सेनाओं ने थाईलैंड (स्याम) पर अधिकार कर लिया तो स्वामी सत्यानन्द पुरी ने बैंगकाक में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग स्थापित की। तदुपरान्त लीग के प्रतिनिधि जापानी सेना के साथ जाते और भारतीयों के हितों की रक्षा करने के अतिरिक्त इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थानीय भारतीयों के नेतृत्व में शाखायें स्थापित करते। क्रमशः मलाया के सभी राज्यों फिलीपाइन द्वीप समूह, थाईलैंड, डच ईस्ट इन्डीज, फ्रेंच इन्डोचीन, शंघाइ, बरमा, कोरिया और मंचूरिया में भी इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की शाखायें स्थापित हो गई जो रासविहारी बोस के नेतृत्व में काम करने लगी।

श्री रासविहारी बोस जापान के प्रधानमंत्री श्री तोजा से मिले और जापान सरकार को यह घोषणा करने के लिए तैयार कर लिया कि जापान सरकार भारत को स्वतंत्र करने के लिए गए भारतीय स्वातंत्र युद्ध की सहायता करेगी १६ फरवरी १९४२ को प्रधान मंत्री श्री ताजो ने जापान की राष्ट्रीय सभा में इस आशय की घोषणा करदी।

इसके उपरांत रासविहारी बोस ने भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध को अधिक बलशाली तथा तेजवान बनाने के लिए तथा भारतीयो का सुदृढ़ संगठन करने के लिए पूर्वीय एशिया में बसे हुए प्रमुख भारतीय देश भक्त और क्रांतिकारियों का २८ मार्च से ३० मार्च १९४२ तक तोकियो में एक सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में नीचे लिखा निश्चय किया गया।

'भारत पर आक्रमण भारत की राष्ट्रीय सेना भारतीय सेनापति की आधीनता में करेगी। वह जापान से केवल उतनी ही सैनिक सहायता लेगी जो कि इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारी परिषद् आवश्यक समझेगी और उसके लिए वह जापान सरकार से प्रार्थना करेगी। स्वतंत्र भारत का भावी विधान केवल मात्र भारत के प्रतिनिधियों द्वारा बनाया जावेगा। उक्त सम्मेलन में यह भी निश्चय किया कि १९४२ के जून मास में बैंगकाक में एक बड़ा और अधिक प्रतिनिधि भारतीयों का सम्मेलन बुलाया जावे।

रासविहारी बोस ने अत्यन्त उपयुक्त समय पर तोकियो में भारतीयों का वह ऐतिहासिक सम्मेलन बुलाया जिसमें इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का नवीन गठन किया गया, भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा की गई और भारत को स्वतंत्र करने का कार्यक्रम भी तैयार किया गया।

जहां इस ऐतिहासिक सम्मेलन में पूर्वीय एशिया में रहने वाले सभी भारतीयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे वहां भारत की स्वतन्त्रता के लिए अथक परिश्रम करने वाले क्रांतिकारी स्वामी सत्यानन्दपुरी तथा उनके क्रांतिकारी वीर साथी ज्ञानी प्रीतमसिंह कैप्टेन अकरम खां और नीलकंठ अय्यर उस सम्मेलन में नहीं थे। वे बैंगकाक से तोकियो सम्मेलन में भाग लेने के लिए आ रहे थे कि उनका विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया और वे चारों भारत माता के वीर सपूत मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो गए। महाविप्लवी नायक रासविहारी बोस ने उन वीर क्रांतिकारी देश भक्तों के त्याग और बलिदान की प्रशंसा करते हुए कहा हम इस महान शोक की छाया में उन

दिवगत देश भक्तो की स्मृति मे प्रण करना चाहिए कि हम मृत्यु पर्यन्त मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए जूझते रहेंगे।

इस सम्मेलन के निर्णय के अनुसार २१ जून १९४२ को बैंगकाक म एक वृहद भारतीय सम्मेलन हुआ। उसमे उन सभी प्रदेशो मे भारतीय प्रतिनिधि बडी सख्या मे आए थे जिन्हें जापानी सेनाओ ने बृटन की दासता से मुक्त कर दिया था। आजाद हिंद सेना का भी एक प्रतिनिधि मडल उस सम्मेलन म सेना का प्रतिनिधित्व कराने के लिए सम्मिलित हुआ था।

बैंगकाक सम्मेलन मे इण्डियन इडिपैंडेंस लीग का विधान स्वीकार किया गया। आजाद हिंद सेना उसकी सेना थी। इस सम्मेलन ने लीग की एक कार्यकारी परिषद बना दी जो कि लीग के कार्य का सचालन करे और स्वतन्त्रता के युद्ध का निर्देशन करे। महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस उसके अध्यक्ष बने गए। उसम दो सदस्य आजाद हिंद सेना के रखे गए। (जनरल मोहनसिंह और कनल एन. एस. गिल) और दो गैर सैनिक सदस्य रखे गए। श्री राघवन व श्री

बैंगकाक सम्मलन के अवसर पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस न जरमनी से रेडियो सदेश भेजा था कि व शीघ्र ही भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध म भाग लेने लिए सुदूर पूर्व की ओर आवेंगे।

बैंगकाक सम्मेलन से जब प्रतिनिधि अपने अपने स्थानो पर गए और उन्होने सम्मेलन के निश्चय को भारतीयो को बतलाया तो पूर्वीय एशिया म बसे हुए भारतीयो में आश्चर्यजनक उत्साह उत्पन्न हो गया और भारतीय युवक बहुत बडी सख्या मे आजाद हिंद सेना म प्रवेश पाने के लिए उत्सुक हो उठे। महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस ने समस्त पूर्वीय एशिया का दौरा कर भारतीयो को देश की स्वतन्त्रता के इस निर्णायक युद्ध म अपना सर्वस्व निछावर कर देने की प्रेरणा दी।

श्री रासबिहारी बोस केवल इण्डियन इडिपेंडस लीग तथा आजाद हिंद सेना को सगठित करके ही सतुष्ट नही हो गए। उन्होने भारतीयों को आकाशवाणी के द्वारा देश म विद्रोह खडा कर देने के लिए आवाहन किया। व भारतीयो के नाम सदेश प्रसारित करते उन्होने महात्मा जी तथा भारत के अन्य सभी नेताओ (नेहरू, पटेल, राजेन्द्र बाबू सीमान्त गांधी राजगोपालाचार्य आदि) स अपील की कि वे सब मिलकर फिर चाहे वे किसी भी आदेश को स्वीकार करते हो देश के शत्रु बृटिश शासन के विरुद्ध उठ खडे हो। भारत म जब स्वतन्त्रता का युद्ध छिडगा तो इडियन इन्डिपडेंस लीग बाहर से युद्ध करेगी और उनकी सहायता करेगी।

जबकि महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस देश को स्वतन्त्र करने के लिए व्यूह रचना कर रहे थे अपने थके हुए जजर शरीर को देश की स्वतन्त्रता के युद्ध का सचालन करके रात दिन बिना विश्राम किय और अधिक थका रहे थे। तभी दुर्भाग्यवश जनरल मोहनसिंह और रासबिहारी बोस मे तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया। वास्तव मे जनरल मोहनसिंह इडियन इन्डिपैंडस लीग के अधीन रहना नही चाहते थे वे इस प्रकार आचरण करते थे कि मानो आजाद हिंद सेना स्वतन्त्र सगठन हो और वे उसके सर्वोच्च सेनापति हो। बगकाक सम्मेलन मे जो प्रस्ताव पारित किये गए थे उसमे जापान सरकार से कुछ स्पष्टीकरण मागा गया था। जापान सरकार का जो उत्तर आया वह बहुत स्पष्ट और सतोष जनक नही था। रासबिहारी जानते थे कि जापान सरकार से

किस तरह अपनी बात स्वीकार कराना परन्तु मोहनसिंह अड गए। जब मतभेद अधिक तीव्र हो गया तो रासबिहारी ने मोहन सिंह को अपदस्थ कर दिया। मोहनसिंह ने आजाद हिंद सेना का विघटन कर दिया। उस समय स्थिति अत्यन्त बिगड गई थी। इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारी परिषद के सदस्यों ने त्याग पत्र दे दिया। परस्पर सदेह और अविश्वास का वातावरण गहन होता गया।

जनरल मोहनसिंह और उनके कतिपय साथियो ने उस महान क्रांतिकारी जिसने देश के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया उसकी देश भक्ति पर भी सन्देह किया। परन्तु मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए प्रतिक्षण जीवित रहने वाले उस महान देश भक्त ने इसकी तनिक भी चिन्ता नही की। उसने कठोरता पूर्वक अपने अधिकार का उपयोग किया। कार्यकारी परिषद के सभी सदस्यो ने त्याग पत्र दे दिया अस्तु उसने सर्वाधिकार अपने मे निहित कर लिया। जनरल मोहनसिंह का केवल अपदस्थ ही नही किया वरन उनको नजर बन्द कर दिया उनके साथ कर्नल एन एस गिल को भी गिरफ्तार कर लिया। वह आजाद हिंद सेना को विघटन से बचाना चाहते थे।

इसके उपरात उन्होने मेजर जनरल जे के भोसले ए सी चटर्जी, लोकनायक जमन कियानी और शाहनवाज की सहायता से आजाद हिंद सेना का पुनर्गठन किया। इस प्रकार आजाद हिन्द सेना विघटन से बच गई। लीग का प्रधान कार्यालय बगकाक से सिंगापुर लाया गया।

महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस बहुत पहले से प्रयत्न कर रहे थे कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जरमनी से जापान आकर भारत की स्वतन्त्रता के उस युद्ध मे सहयोग दें उन्होने जापान सरकार से नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया। आरम्भ म जापान सरकार असमजस मे पड गई। उनके सामने यह प्रश्न खडा हो गया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के आने पर वरिष्ठता का प्रश्न उठ खडा होगा। परन्तु रासबिहारी के विशेष आग्रह पर तथा स्वय नेताजी की जापान आने की तीव्र इच्छा को देख कर जापान सरकार ने जरमन सरकार से बात कर नेता जी को जापान लाने की व्यवस्था की।

एप्रिल १९४३ म रासबिहारी बोस अपने प्रधान कार्यालय सिंगापुर से तोकियो गए। १३ जून को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तोकियो पहुचे। समस्त सुदूर पूर्व के भारतीयो का एक प्रतिनिधि सम्मेलन ४ जुलाई १९४३ को सिंगापुर म बुलाया गया। रासबिहारी बोस नेताजी के साथ ३ जुलाइ १९४३ को सिंगापुर पहुचे।

श्री रासबिहारी बोस तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय स्वातत्र्य युद्ध के उन दोनो महान सेना नायको ने सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ निरीक्षण किया उसके उपरात वह ऐतिहासिक सम्मेलन आरम्भ हुआ।

सुदूर पूर्व के सभी देशो मे रहने वाले भारतीय स्त्री पुरुषो का विशाल जन समूह एकत्रित था। उस विशाल जन समूह के सामने भारत की स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त सघर्ष करने वाले दोनो महान क्रांतिकारी नेता खडे थे।

श्री रासबिहारी बोस ने आवेग और भावना से भरे शब्दो मे नेताजी सुभाष चन्द्र का उस जन समूह को इन शब्दो म परिचय दिया।

"मित्रो और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध मे मेरे साथियो आप मुझसे अब पूछ सकते हैं कि मैंने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए क्या कार्य किया। मैं आपके लिए क्या उपहार लाया हू। फिर उन्होंने नेताजी की ओर सकेत करके कहा।" मैं आपके लिए यह उपहार लाया हू। सुभाषचन्द्र बोस का आपको, भारत वासियो और आपको परिचय देने की आवश्यकता नही है। भारत की तरुणाई म जो कुछ सब श्रेष्ठ अनुकरणीय साहसिकता है और सबसे अधिक गतिशीलता है वे उसके प्रतीक हैं।

भारत म जो कुछ सवश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसका प्रतिनिधित्व करते है। मित्रो और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध म मेरे साथियो आज आपकी उपस्थिति मे मैं अपने पद को छोडता हू और श्री सुभाषचन्द्र बोस को पून एशिया की इंडिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष मनोनीत करता हू।

उपस्थित जन समूह स्तब्ध था ऐसा आत्म त्याग और निस्पृहता तो इस भौतिक वादी युग मे सुनी और देखी नही गई थी। सत्ता और अधिकार के लिए सत्ता धारी राजनीतिक नेता कौनसे जघन्य काय नही करते। सत्ता प्राप्त करने के लिए हत्या कुचक्र, देशद्रोह, विश्वासघात जैसे भयकर कुकम करने मे भी राजनेता नही चूकते। स्वतन्त्र भारत मे आज जो सत्ता के लिए अशोभनीय आपाधापी देखने को मिलती है वह उसका ज्वलन्त उदाहरण है। पर उस समय लोगो ने देखा कि जीवन पयन्त तिल-तिल कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को मिटा देने वाला वह महान क्रातिकारी तनिक भी विचलित हुए बिना सत्ता का दूसरे का सौंप कर प्रसन्न हैं। वह दृश्य देव दुर्लभ था इतिहास म ऐसे उदाहरण अधिक नही है। महाविप्लवी रासबिहारी बोस का यह कृत्य उनकी गहन देश भक्ति और महान उच्च व्यक्तित्व का परिचायक है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उस महान उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए महाविप्लवी नायक रासबिहारी के प्रति अपनी गहन श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने भाषण म कहा "पिछले महायुद्ध के समय भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणो को जोखिम म डालकर उन्होंने जो अद्भुत काय किये वे हमारी स्मृति म ही ताजे नही है बृटिश साम्राज्यवाद के कागजो और फाइलो म भी ताजे है।"

रासबिहारी बोस को नेताजी ने उन्हे आजाद हिंद सरकार का मुख्य परामश दाता नियुक्त किया जिसे रासबिहारी ने सहर्ष स्वीकार किया।

कुछ समय के उपरान्त यौ युद्धो का वह अजेय योद्धा गम्भीर रूप से बीमार हो गया। रासबिहारी मधुमेह के रोगी थे। उनका शरीर निबल हो गया था उनकी प्रिय पत्नी ताशिको और शत्रु द्वारा जापानी जहाज के डुबो दिये जाने के कारण उनके प्रिय पुत्र मसाहिदे के स्वगवास से उन्हे गहरा आघात लगा था और पिछले वर्षों मे इन्डियन इन्डिपेंडस लीग तथा भारतीय राष्ट्रीय सेना के सगठन काय म स्वास्थ्य की तनिक भी चिन्ता न कर अत्यन्त कठिन परिश्रम करने के कारण वह महान क्रातिकारी देशभक्त यौ युद्धो का अजय वीर योद्धा जिसने निरन्तर तीस वष से अधिक मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपने को मिटा दिया था जनवरी १९४५ म गम्भीर रूप से बीमार पडा और चिकित्सा के लिए तोकियो ले जाया गया।

उनकी बीमारी के दिनो मे जापान के सम्राट ने दोहरी किरणो वाले उगते सूय के द्वितीय आडर के जापान के अत्यन्त उच्च राष्ट्रीय सम्मान से उन्हें विभूषित

किया। सम्राट का प्रतिनिधि उस पदक को लेकर हास्पिटल मे स्वयं रासबिहारी को उससे विभूषित करने गया। एक विदेशी को सम्राट ने और उनके द्वारा समस्त जापान राष्ट्र ने उस महान देशभक्त और महान क्रातिकारी का अभिवादन किया। जापान ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान दिया।

जीवन के अंतिम क्षण तक उनकी यही अभिलाषा थी कि भारत स्वतंत्र हो। जीवन के सध्याकाल मे बहुधा वे अपनी इच्छा व्यक्त करते थे कि मैं भारत को स्वतंत्र देखकर मरना चाहता हूँ। स्वतंत्र भारत मे मैं अपनी जीवन लीला को समाप्त करू जिससे मातृभूमि की पावन भूमि मे मेरी मृत्यु हो।

२१ जनवरी १६४५ को वह महान क्रातिकारी देशभक्त अपने हृदय मे यह इच्छा लिए हुए कि दूसरे जन्म मे वह अपनी जन्म भूमि, बचपन की क्रीडा भूमि और यौवन की सग्राम भूमि भारत के दर्शन करेगा— चिरनिद्रा मे सो गया। उसका पार्थिव शरीर भारत माता की मिट्टी मे नही जापान मे भस्मसात हुआ।

जापान मे उनको जो श्रद्धा और आदर मिला वह इसी बात मे प्रगट होता है कि उनके शव को अंतिम सस्कार के लिए ले जाने के लिये जापान के सम्राट ने उस वाहन को भेजा जिसमे सम्राटो के शव ले जाये जाते थे।

उनके निधन पर उनकी महान सेवाओ का उल्लेख करते हुए नेताजी ने कहा था वे सुदूर पूर्व मे भारतीय स्वतत्रता आदोलन के जनक थे। उन्होंने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग और भारत की राष्ट्रीय सेना का निर्माण करके भारत की जो महान सेवा की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। जब उनकी बीमारी के दिनो मे नेताजी उन्हें देखने गए तो उनको एक मात्र चिन्ता भारत की स्वतत्रता की थी। वे असीम आशावादी थे इम्फाल का प्रथम आक्रमण विफल हो चुका था परन्तु रासबिहारी निराश नही थे उन्होंने नेताजी को विश्वास दिलाया कि उनका प्रयत्न सफल होगा भारत अवश्य आजाद होगा। २१ फरवरी १६४५ को जब उस महान देशभक्त का साकिय मे अंतिम सस्कार हुआ तो नेताजी ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की सुदूर पूर्व की सभी शाखाओ के भारतीयो को सामूहिक सभाए करने का आदेश दिया। २५ फरवरी को आजाद हिंद सरकार के मत्रिमण्डल की बैठक रासबिहारी के निधन पर शोक प्रकट करने के लिए हुई और सब सम्मत से आर्डर आव तेगे आजाद हिन्द" जो कि उस सरकार का सर्वोच्च सम्मान था सर्व प्रथम रासबिहारी बोस को मातृ भूमि के लिए की गई उनकी सेवा के उपलक्ष मे मृत्युपरात दिया गया। मत्रिमडल ने यह भी निश्चय किया कि तोकियो सैनिक अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ भारतीय कैडेट को रासबिहारी पदक दिया जाय। उस महान देशभक्त के लिए उन भारतीयो ने जो उस समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद से जूझ रहे थे जिनका जीवन प्रतिपल सकट मे था उन्होने उस वीर देशभक्त के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की परन्तु स्वतंत्र भारत की सरकार ने उस महान देशभक्त और भारत की स्वतत्रता के लिए अनवरत सघर्ष करने वाले वीर सेनानी के प्रति किसी प्रकार की श्रद्धा या सम्मान व्यक्त करने की आवश्यकता नही समझी।

स्वतंत्र भारत मे सरकार द्वारा उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने के लिए कोई राष्ट्रीय स्मारक नही बनाया गया लोकसभा की दीर्घा मे उनका चित्र नही लगाया गया दिल्ली मे उस स्थान पर जहा उन्होने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंक कर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य

को ललकारा था और चुनौती भी दी थी कोई स्तूप या शिला लेख नहीं लगाया गया। तार डाक विभाग ने उनका डाक टिकिट नहीं निकाला। रासबिहारी बोस की एक मात्र जीवित सन्तान श्रीमती हिगुची को भारत सरकार ने उनके पिता की मातृभूमि में आमन्त्रित कर सम्मानित नहीं किया। हम भारतीयों की इस चरम सीमा की कृतघ्नता को देख कर स्वयं कृतघ्नता ने लज्जा अनुभव की होगी। हम भारतीय जो आज सत्ता में हैं उनका यशोगान करते नहीं थकते पर उन देश भक्तों को याद रखने का भार उठाना भी पसंद नहीं करते कि जिन्होंने अपने को देश की स्वतन्त्रता के लिए कण-कण कर गला दिया और जिनकी हड्डियों पर भारत की स्वतन्त्रता का यह भवन खड़ा है। कृतघ्नता के गुण में हम संसार में बेजोड़ हैं। सर्वोपरि हैं।

अपने जीवन के दर्शन के मूल तत्व को व्यक्त करते हुए उस महान क्रांतिकारी ने २१ अप्रैल १९४२ को कहा था—

"मैं एक योद्धा हूं एक युद्ध और
अंतिम और सर्वोत्तम।"

'I was a fighter one fight more, the last and the best —
'Ras Behari Bose

परिशिष्ट—१

पंजाब के कुख्यात गवर्नर माइकेल ओडायर ने रासबिहारी बोस के सशस्त्र विद्रोह के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक "इंडिया ऐज आई न्यू इट" में लिखा है।

"इस संकट की स्थिति में १९१२–१३ में देहली और लाहौर षडयन्त्रों का संगठनकर्त्ता पंजाब में आया और विद्रोह का नेतृत्व अपने हाथों में लिया। वह अपने साथ एक चतुर और साहसी मराठा ब्राह्मण को जो पिंगले का अपना मुख्य सहायक के रूप में साथ लाया। वह सिक्ख क्रांतिकारियों के साथ अमेरिका से भारत आया था वह दो इस महान षडयन्त्र के सूत्रधार थे।

१९ फरवरी के प्रातः काल हमें अपने गुप्तचरों से ज्ञात हुआ कि रासबिहारी और पिंगले ने अपने मुख्य कार्यालय को लाहौर स्थानांतरित कर लिया है और उन्हें सन्देह हो गया है कि उनकी योजना का सरकार को पता चल गया है इस कारण उन्होंने २१ फरवरी के स्थान पर १९ फरवरी की रात्रि को विद्रोह आरम्भ करने का निश्चय किया है। उन्होंने सभी स्थानों पर और छावनियों में अपने सदेश वाहक इस परिवर्तन की सूचना देने के लिए भेजे हैं। तब हम कार्यवाही करनी पड़ी।

चार पृथक स्थानों में विद्रोहियों के मुख्य कार्यालयों पर पुलिस ने छापा मारा। पुलिस ने छापे का नेतृत्व बहादुर और साहसी पुलिस अफसर लियाकत हयात खां और सब सब सामग्रियां ले लिया। तेरह सशस्त्र क्रांतिकारी पकड़े गए। उनके साथ विद्रोह के लिए आवश्यक सामग्री भी बड़ी मात्रा में मिली, अस्त्र, शस्त्र बम बनाने का सामान क्रांतिकारी साहित्य और चार विद्रोहियों के झंडे मिले। उनमें एक झंडा मैंने ले लिया जिसे मैं स्मृति चिन्ह के रूप में अपने पास रखे हूं। दुर्भाग्यवश रासबिहारी और पिंगले हाथ नहीं आए।

दोनों भाग गए। कुछ सप्ताहों के उपरांत पिंगले मेरठ में बारहवीं कैवेलरी (अश्वारोही सेना) छावनी में पकड़ा गया। वह अपने साथ बंगाल से बम लाया जो कि विशेषज्ञों की राय में एक रेजीमेंट को नष्ट कर देने के लिए पर्याप्त थे।

रासबिहारी बोस ने सशस्त्र विद्रोह का संगठन और व्यवस्था बड़ी विस्तृत स्तर पर की थी। अंग्रेज सैनिक भारत में बहुत थोड़ी संख्या में थे व प्रथम महायुद्ध में योरोप के रणक्षेत्र में चले गए थे भारतीय सेनाएं भी संख्या में बहुत कम थीं उसमें से बहुत सी छावनियां के भारतीय सैनिक विद्रोह में साथ देने के लिए तैयार थे कि यदि पुलिस को उस विद्रोह की पूर्व सूचना न मिल जाती तो भारत प्रथम महायुद्ध के समय ही स्वतंत्र हो गया होता पर यह होना नहीं था।

परिशिष्ट–२

रासबिहारी बोस प्रचार और प्रकाशन के महत्व को जानते थे। यही कारण था कि उन्होंने दो पत्र निकाले नवीन एशिया (न्यू एशिया) व एशिया रिव्यू। वे जापान के प्रमुख पत्रों में भारत तथा एशिया के पराधीन देशों के सम्बन्ध में लिखते रहते थे और कतिपय पत्रों के सम्पादकीय लेख भी वे लिखते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत के सम्बन्ध में जापानी भाषा में पुस्तकें लिखीं उनमें से कुछ के शीर्षक निम्नलिखित हैं।

१ एशिया की क्रांति का सिंहावलोकन (१९२९) २ भारत (१९३०... ३ उत्पीड़ित भारत (१९३३) ४ भारतीयों की कहानियां (१९३५) ५ भारत... क्रांति (१९३६), ६ तरुण एशिया की विजय, ७ भारत का रुदन (१९३८),... भगवत गीता (१९४०), ९ भारत का इतिहास (१९४२), १० दासता की श्रृंखलाओं में जकड़ा भारत, ११ स्वतंत्र भारत, १२ स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष (१९४... रामायण (१९४२), १३ भारतीयों का भारत, (१९४३), १४ अन्तिम गान (टगोर की दोशेर कविता (१९४३) और १५ बोस की अपील (१९४४)।

क्या ही अच्छा हो कि भारत का शिक्षा मन्त्रालय श्री रासबिहारी बोस की ऊपर लिखी पुस्तकों का अंग्रेजी और हिन्दी तथा बंगला में अनुवाद करा कर प्रकाशित करे। एक विद्वान जापान में भेजा जाए जो वहां के समाचार पत्रों तथा श्री रासबिहारी बोस के पत्रों की फाइलों में से उनके लेख ढूंढ निकाले और उनको पुस्तकाकार प्रकाशित किया जावे। उन्होंने जो भारतीय राजनयिक नेताओं और भारतीयों के नाम अपने भाषण आकाशवाणी से प्रसारित किये उनका संकलन किया जावे। और उन्हें प्रकाशित किया जावे। यदि भारत सरकार का मन्त्रालय यह न करे तो कोई साहस प्रकाशक अथवा कलकत्ता विश्व विद्यालय इस कार्य को अपने हाथ में ले परन्तु लेखक का विश्वास नहीं है कि हम भारतीय जो सत्ताधारी निम्नकोटि व्यक्तियों का यशोगान करने उनकी विरुदावली लिखने और उनकी पूजा अर्चना करने के अभ्यस्त हैं वे इस ओर ध्यान देंगे।

अध्याय ६

ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी

(जतीन बाघा)

भारत सरकार के गोपनीय अभिलेख के अनुसार भारत मे सबसे अधिक खतरनाक क्रातिकारी ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का जन्म आठ दिसम्बर १८८८ को उनके मामा बसन्त कुमार चटर्जी के गृह नदिया जिले के काया नामक गाव मे हुआ था। उनका बालपन अपने मामा के यहा व्यतीत हुआ। बालक पन मे ज्योतीन्द्र नाथ मे एक तेजस्वी बालक के सभी गुण विद्यमान थे। सभी उनके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होते थे। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के शैशव काल मे ही उनके पिताश्री का स्वर्गवास हो गया अतएव उनका लालन पालन उनकी ममतामयी मातुश्री द्वारा हुआ। उनकी माता ने उनसे बालपन मे ही उनमे देशभक्ति और निभयता कूट कूट कर भर दी थी। बालक पन से ही ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को खेलो तथा व्यायाम म अधिक रुचि थी। व अपन विद्यार्थी जीवन मे केवल एक अत्यन्त कुशल और प्रतिभावान खिलाडी, कुशल तराक, अद्भुत कुशलता के धनी घुडसवार क्रीडा विशेषज्ञ ही नही रहे वरन वे एक निष्ठावान समाज सेवक और रोगियो की सेवा शुश्रूषा करने मे अत्यन्त रुचि लने वाले कार्यकर्ता सिद्ध हुए। बालक पन मे ही उन्होने एक अत्यन्त क्रुद्ध घोडे को जो सडक पर अपने भयकर आवेग से लोगो को आतकित कर रहा था बाल पकड कर वश मे करके सभी को आश्चर्य चकित कर दिया था।

१८९८ मे उन्होने कृष्णानगर ए वी स्कूल से प्रवेशिका (ऐंट्रेंस) परीक्षा उत्तीर्ण की और व उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कलकत्ता आए। उन्होने कलकत्ता के सेंट्रल कालेज मे प्रवेश ले लिया। युवक ज्योतीन्द्र नाथ के हृदय म देशभक्ति की उद्दाम गहन भावना हिलोरें मार रही थी। वे साधारण विद्यार्थियो की भाति केवल कालेज कक्षा के अध्ययन मात्र से सतुष्ट होने वाले नही थे। शीघ्र ही वे कलकत्ते मे उन व्यक्तियो के सम्पर्क मे आए जो भारत मे क्रातिकारी आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत थ।

१९०३ म युवक ज्योतीन्द्र नाथ के जीवन म एक स्मरणीय घटना घटी जिसने उनके जीवन को क्रातिकारी दिशा मे मोड दिया। कलकत्ता मे श्यामपुकुर स्ट्रीट म श्री जोगेन्द्र नाथ विद्याभूषण के मकान पर उनका श्री अरविन्द घोष तथा जतीन्द्र नाथ बनर्जी (जो बाद को स्वामी निरालम्ब के नाम से प्रसिद्ध हुए) से परिचय हुआ। बगाल म क्रातिकारी आन्दोलन के मन्त्र द्रष्टा श्री अरविन्द थे उन्होने ही बगाल म क्रातिकारी भावना अकुरित की थी और जतीन्द्र नाथ बनर्जी ने बगाल तथा उत्तर भारत म क्रातिकारी आन्दोलन का सगठन किया था। भारत के क्रातिकारी आन्दोलन के जनक उन महान क्रातिकारियो ने ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी को देश को स्वतन्त्र करने के लिए विप्लवी आन्दोलन मे दीक्षित कर दिया।

जहा ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी श्री अरविन्द और जतीन्द्र नाथ बनर्जी से प्रभावित हुए थे वहा अध्यात्मिक दृष्टि से वे अपने अध्यात्मिक गुरु श्री भोलानाथ गिरि महाराज स भी बहुत अधिक प्रभावित थे। श्री भोलानाथ ने केवल उन्हे अध्यात्मिक दीक्षा ही नही दी वरन उन्हे मातृभूमि की सेवा म अपने जीवन का अर्पण करने की प्रेरणा भी दी। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का स्वामी विवेकानन्द और माता शारदा देवी

के चरणों में बैठने तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कलकत्ते में ही उनका परिचय भारत की स्वतन्त्रता के लिए अथक श्रम करने वाली स्वतन्त्रता की देवी भगनी निवेदिता से हुआ। शीघ्र ही वे उनके प्रति आकर्षित हो गए और उनके साथ समाज सेवा का कार्य करने लगे। कलकत्ते में ज्योतीन्द्र नाथ ने प्रसिद्ध पहलवान खेन चरन गोहो से मल्ल विद्या की शिक्षा ली।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उद्बोधक श्री अरविन्द और क्रांतिकारी आन्दोलन के उत्तर भारत में संगठन कर्ता जतीन्द्रनाथ बनर्जी से क्रांतिकारी आन्दोलन में दीक्षित होकर, अपने अध्यात्म गुरु श्री भोलानाथ गिरी महाराज तथा स्वतन्त्रता की देवी भगनी निवेदिता से प्रेरणा पाकर युवक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने भारत माता की दासता की श्रृंखलाओं को काट कर उसे दासता की यातना से मुक्त करके स्वतन्त्र बनाने का संकल्प ले लिया और अपना समस्त जीवन का भारत माता के चरणों में अर्पित कर दिया। जिस महान जोखिम भरे कार्य करने का ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने संकल्प लिया था उसके लिए उन्होंने आवश्यक आध्यात्मिक बौद्धिक और शारीरिक तैयारी की थी।

१९०० में ज्योतीन्द्रनाथ ने कालेज शिक्षा समाप्त कर कुछ समय व्यावसायिक संस्थानों में स्टैनो का काम किया और ११ अगस्त १९०३ को वे बंगाल सचिवालय में स्टैनो नियुक्त हुए। १७ मई १९०४ को वे बंगाल सरकार के वित्त सचिव के स्टैनो नियुक्त कर दिए गए। १९०७ में उन्हें किसी विशेष सरकारी कार्य से दार्जलिंग भेजा गया। दार्जलिंग में उन्होंने बंगाल के क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति की शाखा बांधव समिति के नाम से स्थापित की। दार्जलिंग से ही उन्होंने सक्रिय रूप से क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लेना आरम्भ कर दिया।

उस समय भारत में अंग्रेज लोग अपने को शासक जाति का होने के कारण भारतीयों को अत्यन्त हीन दृष्टि से देखते थे और उनका अपमान करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। जब कोई अंग्रेज किसी भारतीय के साथ दुर्व्यवहार या अभद्र व्यवहार करता तो पुलिस या न्यायालय भी उसकी कोई सुनवाई नहीं करता था। एप्रिल १९०८ में सिलीगुरी रेलवे स्टेशन पर ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का दो अंग्रेज सैनिक अधिकारियों कैप्टेन मरफी और लैफ्टीनेंट सोमर विली से झगड़ा हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ ने दोनों गोरे सैनिक अधिकारियों की अच्छी तरह पिटाई कर दी। एकाकी ज्योतीन्द्रनाथ ने दो गोरे सैनिक अधिकारियों को उनकी उद्दंडता और भारतीयों के प्रति उनके अभद्र व्यवहार का उनकी पिटाई करके उन्हें ऐसा कठोर दण्ड दिया कि सभी दर्शक उनके शारीरिक बल को देख कर आश्चर्य चकित हो गए और समस्त बंगाल में उनका नाम प्रसिद्ध हो गया। दोनों गोरे सैनिक अधिकारियों ने उन पर दार्जलिंग में मैजिस्ट्रेट की अदालत में अभियोग चलाया परन्तु कुछ समय के उपरांत उन दोनों ने अपना अभियोग वापस ले लिया। सम्भवतः वे गोरे सैनिक अधिकारी उस अपमान और लज्जा से बचना चाहते थे कि जो उन्हें अभियोग चलाने पर उठानी पड़ती कि एक एकाकी भारतीय ने दो गोरे सैनिक अधिकारियों को भूलुण्ठित कर दिया। फिर भी मैजिस्ट्रेट ने ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को परामर्श दिया कि भविष्य में वे उचित व्यवहार करें। ज्योतीन्द्र नाथ ने मैजिस्ट्रेट से स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे स्वयं की सुरक्षा तथा अपने देश वासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए भविष्य में आवश्यकता

पड़न पर गोरा के साथ वैसी ही कार्यवाही नही करेंगे इसका कोई आश्वासन नही दे सकते । इसके उपरात जून १९०८ मे उनका कलकत्ता स्थानान्तरण हो गया ।

कलकत्ता आकर उन्होंने भारत को सशस्त्र विद्रोह के द्वारा स्वतन्त्र करने के उद्देश्य से देशभक्त युवकों को क्रान्तिकारी सगठन म सगठित करने का काय आरम्भ कर दिया । उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण शीघ्र ही (१९०८ १९०९) उनके आस पास देशभक्त क्रान्तिकारी युवको का एक दल एकत्रित हो गया । बलदव राय जनान मिश्र, ज्योतिष मजूमदार (चडी) अमरेश ताओलाल सुरेन्द्रचन्द्र मजूमदार (जिन्होने बाद मे आनन्द बाजार पत्रिका निकाली) दवी प्रसाद राय सुरा) सतीश सरकार चारू घोष, नलनी गोपाल सेन, फणीन्द्र नाथ राय क्षितिश चन्द्र सान्याल, नलनी कान्ता कार और अतुल कृष्ण घोष मुख्य थे ।

बगाल के युवक ज्योतीन्द्र नाथ को एक वीर स्वाभिमानी युवक नेता के रूप म देखने लगे था इसका कारण यह था कि १९ ६ म नदिया जिले म अपने गाव कोया के जगल मे अकेले ज्योतीन्द्र नाथ ने एक भयकर सिंह का केवल कटार से युद्ध करके मार दिया था । उनके उस वीरोचित तथा निर्भयता पूर्ण काय स तथा दो गोरे अग्रेज सनिक अधिकारियो का मान मर्दन करने के कारण व बगाल के युवको के प्रिय नेता बन गए थे । सिंह स युद्ध करने मे व बहुत घायल हो गए थे। डाक्टर सुरेश प्रसाद सर्वाधिकारी ने उनकी शुश्रूषा की थी । स्वस्थ होने पर ज्योतीन्द्रनाथ ने उस सिंह की खाल तथा वह कटार जिससे उन्होंने सिंह से युद्ध किया था उन्होंने कृतज्ञता सूचक डाक्टर सर्वाधिकारी को भेंट कर दी थी । उनके इस वीरोचित कार्य से व जतीन बाघा के नाम से प्रसिद्ध हो गए ।

कलकत्ता पहुच कर ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने अपने दल के युवको को क्रान्तिकारी काय तथा समाज सेवा का प्रशिक्षण देना आरम्भ कर दिया । उनका उद्देश्य य० था कि क्रान्तिकारी दल के क्रान्तिकारी सदस्य गावो म फैल जावेंगे और जन साधारण म राष्ट्रीय क्रान्तिकारी भावना का प्रसार करेंगे । ज्योतीन्द्र नाथ का विश्वास था कि गुरिल्ला युद्ध के द्वारा ही ब्रिटिश सरकार का अपदस्थ किया जा सकता है परन्तु व यह भी जानते थे कि छापामार युद्ध तभी प्रभावकारी और सफल हो सकता है कि जब जन साधारण म देश भक्ति की भावना जागृत हो और व राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन म प्रविष्ट हो । इसी उद्देश्य से उन्होंने 'आत्मोन्नति समिति" के नेता बिपिन बिहारी गागुली स सहयोग स्थापित किया और युवको के लिए एक सम्मिलित मेस स्थापित किया जहा युवक छात्र रहते तथा भोजन करते थे । ज्योतीन्द्र नाथ उस मेस को क्रान्तिकारी विचारों को प्रसारित करने तथा क्रान्तिकारी काय का सचालन करने का केन्द्र बनाना चाहते थे ।

जब ज्योतीन्द्र नाथ बगाल के युवको को क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए सगठित कर रहे थ तभी सरकार ने मानिक तल्ला गार्डन हाउस के क्रान्तिकारी सगठन के केन्द्र पर प्रहार किया । क्रान्तिकारी आन्दोलन के सभी नेता गिरफ्तार हो गए। उन पर अभियोग चलाए गए और उनमे से अधिकाश को आजीवन काला पानी तथा लम्बे कारावास का दण्ड दिया गया । उस घटना से बगाल का क्रान्तिकारी आन्दोलन नेतृत्व हीन हो गया । श्री अरविन्द भी गिरफ्तार हो गए परन्तु उन पर षडयन्त्र का अभियोग सिद्ध नही हो सका पर वे पांडीचेरी चले गए और उसके उपरान्त क्रान्तिकारी आन्दोलन

से उनका सम्बन्ध समाप्त हो गया ।

ज्योतीन्द्र नाथ का मुख्य लक्ष्य देश में देशभक्त क्रांतिकारी युवकों की सेना बना कर उनको छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर छापामार युद्ध के द्वारा अंग्रेजों को देश के बाहर निकालना था परन्तु यदि आवश्यकता हो तो वे राजनैतिक डकैतियों और अधिकारियों की हत्या को नैतिक दृष्टि से अवाञ्छनीय नहीं मानते थे। वे बृटिश साम्राज्य जैसे शक्तिशाली शत्रु से संघर्ष करने में वे सामान्य परिस्थितियों में बरती जाने वाली नैतिकता को अपने विचारों पर प्रभावित नहीं होने देते थे। हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर वे श्री अरविन्द के अनुयायी थे महात्मा गांधी के अनुयायी नहीं थे ।

२६ नवम्बर १६०८ को ज्योतीन्द्र नाथ ने श्री मन्मथ नाथ भौमिक ज्ञान राय, विनोय राय आदि को साथ लेकर नदिया जिले में रायता नामक स्थान पर डाका डाला और जो कुछ आभूषण आदि उन्होंने लूटे, उन्हें की सरकार की आभूषणों की दूकानों पर बेच दिए। इसके अतिरिक्त पुलिस सुपरिन्टेंडेंट पुलिस (गुप्तचर) शम्सुल आलम की हत्या में भी उनका महत्वपूर्ण योग था। यही नहीं कि उन्होंने शम्सुल आलम की हत्या का नैतिक समर्थन किया वरन उन्होंने अपने शिष्य सतीश सरकार की सहायता से वीरेन नाथ दत्त गुप्ता द्वारा उसकी हत्या करवा दी। वीरेन नाथ दत्त गुप्ता कलकत्ता अनुशीलन समिति का उत्साही तरुण सदस्य था। शमशुल आलम से क्रांतिकारी बहुत अधिक क्रुद्ध थे क्योंकि वह क्रांतिकारियों को दण्डित करवाने तथा यातना दिलवाने मे अत्यन्त गहरी रुचि लेता था। परन्तु तत्कालीन कारण यह था कि वह एक क्रांतिकारी की खोज मे एक मकान की तलाशी लेने गया तो उस गृह की महिलाओं को उसने अपशब्द कहे और उनका अपमान किया।

शमशुल आलम की हत्या से अधिकारी आतंकित और अत्यन्त भयभीत हो गए। उनकी मान्यता थी कि पिछले दिनों शमशुल आलम के अतिरिक्त पुलिस इंस्पेक्टर नन्दलाल बनर्जी तथा अलीपुर बम अभियोग मे सरकारी वकील को आवश्यक निर्देशन देने वाले पब्लिक प्रासीक्यूटर आशुतोष विश्वास की हत्याओं और कई डकैतियों के पीछे ज्योतीन्द्र नाथ का हाथ था। अस्तु उन्होंने २७ जनवरी १६१० के प्रातःकाल गिरफ्तार कर लिया उनके विरुद्ध हत्या सम्बन्धी कोई प्रमाण न मिलने के कारण ३० जनवरी १६०८ को रिहा कर दिये गए परन्तु रिहा होते ही उन्हें तुरन्त पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ सुरेशचन्द्र मजूमदार, ललित कुमार चटर्जी तथा निवारन चन्द्र मजूमदार को गिरफ्तार करके पुलिस ने हावड़ा भेज दिया और उन पर डकैती डालने का अभियोग चलाया गया। कुछ दिनों के पश्चात पुलिस ने पुनः ज्योतीन्द्र नाथ को अलीपुर सेंट्रल जेल भेज दिया (६ फरवरी १६१०)। पुलिस चाहती थी कि ज्योतीन्द्र नाथ पर शमशुल आलम की हत्या का अभियोग चलाया जावे। उन्होंने वीरेन नाथ दत्त गुप्ता के साथ एक घृणित चाल चली। एक समाचार पत्र में शमशुल आलम की हत्या के सम्बन्ध मे वीरेन के कृत्य की घोर निन्दा की गई थी। उन्होंने वह समाचार पत्र वीरेन को पढ़ने को दिया और कहा कि तुम्हारे कृत्य की सभी निन्दा करते हैं। आवेश में वीरेन कह गया कि अन्य व्यक्ति क्या करते हैं मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है मैं अपने नेता ज्योतीन्द्र नाथ की इच्छा को सर्वोपरि मानता हूँ। वीरेन के वक्तव्य का आधार लेकर पुलिस ने पुनः ज्योतीन्द्र नाथ का शमशुल आलम

की हत्या के अभियोग म फसाने का प्रयत्न किया। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ के वकील के आपत्ति करने पर २० फरव ी को अभियोग की सुनवाई नही हो सकी और दूसरे दिन बारेत को फासी हो गई। पुन ज्योतीन्द्र नाथ को हावडा षडयन्त्र अभियोग म गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर डकैतिया डालने का अभियोग चलाया गया परन्तु २१ फरवरी १६११ को ज्योतीन्द्र नाथ मुक्त हो गए।

यद्यपि हावडा अभियोग मे ज्योतीन्द्र नाथ मुक्त हो गए परन्तु सरकार ने उनको राजकीय सेवा से मुक्त कर दिया। अपने निर्वाह के लिए उन्होने ठकेदारी करना आरम्भ करदी। ठकेदारी उनके लिए केवल जीवन निर्वाह का साधन मात्र थी उनकी सारी शक्ति क्रातिकारी कार्यो मे लगती थी। अभियोग से छुट्टी पाकर उन्होने अपने क्रातिकारी सहयोगियो और अनुयायियो को पुन एकत्रित कर सगठित करने का भागीरथ प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय तक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का यश बगाल के क्रातिकारियो म फ ा गया था। व सभी उनके प्रशसक बन गए थे। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) हावडा अभियोग मे जेल जीवन म उनके साथ रह कर उनके भक्त और प्रशसक बन चुके थे और उ हान उन्ह अपना नता स्वीकार कर लिया था। चिगरी पोटा के फानी चक्रवर्ती ने क्रातिकारियो का ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के व्यक्ति व व उनकी प्रतिभा के विषय म बतलाया और उ हे उनका प्रशसक बना दिया था। १६१२ म कुशतिया के बिनोय राय के मकान पर प्रमुख क्रातिकारी ज्योतीन्द्र से मिले। उस सम्मेलन मे बिनोय राय, जतीन राय, गापनराय, शतीष सान्याल, नलनीकातकर, मन्मतनाथ भौमिक, नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) उनके निकट सहयोगी और मित्र हरी कुमार चक्रवर्ती उपस्थित थे सभी न उनका अपना नेता स्वीकार किया। नलनीकातकर तथा अतुल कृष्ण घोष पहले (१६०६) से ही उनके प्रशसक थे। जदुगोपाल मुखर्जी का यद्यपि ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी से १६१३ १४ मे प्रत्यक्ष सम्पर्क हुआ परन्तु नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य से उनकी प्रशसा सुन कर वे उनके भक्त बन चुके थे। इस प्रकार १६१२ तक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी बगाल के क्रातिकारियो के सर्वमान्य नेता बन गए।

१६१३ म बर्दवान और मिदनापुर जिलो म भयकर बाढ आई समस्त प्रदेश जल मग्न हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ के नेतृत्व म क्रातिकारी युवको न बाढ पीडितो का सहायता कार्य किया उससे क्रातिकारियो को दो बडे लाभ हुए एक तो व ग्रामीण जनता के सम्पर्क म आए। दूसरा बडा लाभ यह हुआ कि विभिन्न क्रातिकारी दलो के देशभक्त युवक बर्दवान और मिदनापुर जिलो म जब सेवा कार्य के लिए आए तो व एक दूसरे के अधिक निकट आए और उन्होने एक दूसरे को समीप से देखा यहा ही सर्वप्रथम जदुगोपाल मुखर्जी का ज्योतीन्द्र नाथ से सम्पर्क हुआ।

जब बाढ सहायता कार्य के समाप्त होने पर क्रातिकारी युवक कलकत्ता तथा अपने-अपने स्थानो को वापस लौटे तो यह विचार उत्पन्न हुआ कि विभिन्न छोटे बडे क्रातिकारी दलो को एक सूत्र मे बाधकर एक शक्तिशाली क्रातिकारी सगठन बना लेना चाहिए। उस समय बारीसाल दल अधिक सक्रिय और शक्तिशाली था। मार्च १६१५ म ज्योतीन्द्रनाथ कलकत्ते की दाक्षर घोष लेन म एक मेस की छत पर बारीसाल दल के नेताओ से मिले। उस सम्मेलन म नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य, जदुगोपाल मुखर्जी, अतुल कृष्ण घोष, नरेन घोष चौधरी, जोगेन बसु और मनोरजन गुप्ता तथा अन्य प्रमुख क्रातीकारी

उपस्थित थे। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जरमन सरकार की सहायता से जो सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया जा रहा है उसकी सफलता के लिए सब क्रांतिकारी दलों को एक सूत्र में यथाशक्य संगठित हो जाना चाहिए। यद्यपि उस समय दोनों दलों का कोई औपचारिक मिलन नहीं हुआ परन्तु दोनों दलों ने ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के नेतृत्व में कार्य करना स्वीकार कर लिया। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी अब जुगान्तर दल के सर्वोच्च नेता बन गए। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के दल का विपिन विहारी गंगुली के दल आत्मोन्नति समिति से पहले ही निकट था सम्बन्ध था प्रथम महायुद्ध के समय जो देश में सशस्त्र विप्लव की तैयारियां की जा रही थीं उसके कारण वे एक दूसरे के और भी अधिक निकट आ गए। बारीसाल क्रांतिकारी दल का १९१४ में ही आत्मोन्नति समिति से समझौता हो गया था कि वे दोनों मिलकर क्रांतिकारी कार्यवाही करेंगे। अस्तु ज्योतीन्द्र नाथ, बारीसाल तथा आत्मोन्नति समिति तीनों ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को अपना नेता स्वीकार करते थे। २६ अगस्त १९१४ को राडा कम्पनी के पिस्तौलों के सन्दूक की चोरी में तीनों दलों का सक्रिय सहयोग था। इसी समय पूरन दास का मदारीपुर दल भी ज्योतीन्द्र नाथ के निकट आ गया। जब सरकार ने मदारीपुर षडयन्त्र अभियोग को जो कि मदारीपुर दल के मुख्य क्रांतिकारियों पर उनके द्वारा अनेक डकैतियां डालने के सम्बन्ध में चलाया गया था प्रमाण के अभाव में वापस ले लिया तो पूरन दास के कतिपय अनन्य भक्त और अनुयायी चित्तप्रिय राय चौधरी, मनोरंजन सेन गुप्त, निरेनदास गुप्त राधाचरण प्रामाणिक और पालित पावन घोष भी ज्योतीन्द्र नाथ के साथ आ गए। ज्योतीन्द्र नाथ के नेतृत्व में अब सभी क्रांतिकारी दल संगठित हो गए थे केवल ढका अनुशीलन समिति और चन्दर नगर क्रांतिकारी दल पृथक थे। परन्तु अमरेन्द्र नाथ चटर्जी के माध्यम से श्रमजीवी समवाय के द्वारा उनका भी ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी से सम्बन्ध स्थापित हो गया। श्रमजीवी समवाय बंगाल के सभी क्रांतिकारियों के मिलने का गुप्त स्थान था। अमरेन्द्र नाथ चटर्जी का चन्दर नगर दल के शिरीशचन्द्र घोष मोतीलाल राय, और नरेन्द्र नाथ बनर्जी से घनिष्ट सम्बन्ध था साथ ही वे ढाका अनुशीलन समिति के अमृतलाल हजारा, तथा प्रतुल चन्द्र गंगुली से भी बहुत निकट थे। श्रमजीवी समवाय का सतीश सेन गुप्ता के द्वारा आत्मोन्नति समिति से भी घनिष्ट सम्बन्ध था। आरम्भ से ही ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी की अमरेन्द्र नाथ से घनिष्ट मित्रता थी और वे बहुधा श्रमजीवी समवाय में जाया करते श्रमजीवी समवाय में ही महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस का ज्योतीन्द्र नाथ से सम्पर्क स्थापित हुआ था।

अमरेन्द्र नाथ ज्योतीन्द्र नाथ और रासबिहारी बोस दक्षिणेश्वर में पंचवटी में मिले और यह निश्चय हुआ कि भारतीय सेनाओं में विद्रोह की भावना उत्पन्न करके विद्रोह किया जावे। यह भी निश्चय हुआ कि ज्योतीन्द्र नाथ बंगाल में विद्रोह का नेतृत्व करें और वे स्वयं (एप्रिल १९१४) वाराणसी उत्तर भारत के क्रांतिकारियों को संगठित करने के लिए चले गए। दो बार ज्योतीन्द्र नाथ वाराणसी जाकर उत्तर भारत के क्रांतिकारी संगठनों की स्थिति से परिचित हो गए थे। एक बार—दिसम्बर जनवरी १९१३–१४ में पहली बार वे स्वयं रासबिहारी बोस के साथ गए थे और उन्होंने सारी परिस्थिति का अवलोकन किया था। दूसरी बार जनवरी १९१५ में पुनः वाराणसी गए थे।

जब भारत १९१४ म प्रथम महायुद्ध छिड गया तो भारतीय क्रातिकारियो ने दुगने उत्साह से भारत म विप्लव करान की योजना को कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया। यह भारत क लिए अत्यन्त अनुकूल समय था। ब्रिटेन जीवन मरण के युद्ध में जूझ रहा था। भारत की अधिकाश गोरी सेनाए योरोप के रणक्षेत्र म लडने गई थीं और भारतीय सेनाए भी मध्यपूर्व के युद्ध मे फसी हुई थी भारत म बहुत थोडी सेनायें रह गई थी। उधर भारतीय क्रातिकारियो ने बर्लिन कमेटी के द्वारा जरमन सरकार स सम्बध स्थापित कर लिया था। जरमन सरकार न अस्त्र-शस्त्र तथा आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया था। परन्तु दुर्भाग्यवश देशद्रोहियो के विश्वासघात के कारण महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस द्वारा पेशावर से बगाल तक आयोजित विप्लव की योजना असफल हो गई (फरवरी १९१५)। रासबिहारी बोस की विप्लवी योजना असफल हो जाने पर ज्योतीन्द्र नाथ न दूसरे विप्लवी की योजना तैयार की। उनका मानना था कि भारत एकाकी ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड फेकने मे समर्थ नहीं होगा अतएव विदेशी सहायता को वे आवश्यक मानते थे। जरमनी बृटेन का घोर शत्रु था इस कारण उन्होंने जरमन सरकार से सहायता लेने का निश्चय किया। जरमन सरकार युद्ध छिडने से पूर्व ही भारत म ब्रिटिश विरोधी भावना स अवगत थी और युद्ध छिडने पर उसका लाभ उठाना चाहती थी। प्रथम महायुद्ध के छिडने पर जो भारतीय क्रातिकारी योरोप तथा अमरिका म थे वे बर्लिन पहुचे और उन्होंने प्रसिद्ध बर्लिन कमेटी की स्थापना की (सितम्बर १९१४) जिसने जरमन सरकार स अस्त्र-शस्त्र तथा धन की सहायता के लिए एक समझौता कर लिया। बाद को बर्लिन कमेटी का नाम बदल कर इडियन इडिपेंडेस कमेटी (भारतीय स्वतत्रता समिति) कर दिया गया। योजना यह थी कि भारत के अन्दर सशस्त्र विद्रोह हो और भारत की पश्चिमी और पूर्वीय सीमा पर बाहर से आक्रमण किया जाये। मार्च १९१५ म बर्लिन कमेटी के सदस्य जितेन्द्र नाथ लाहरी बर्लिन स जब भारत आए तो उन्होने सूचना दी कि जरमनी न अस्त्र शस्त्रो म लदे जहाज भारत भेजे ह। साथ ही उन्होने वीरेन चट्टोपाध्याय का यह सदेश भी दिया कि भारतीय क्रातिकारियो को बटाविया स्थित जरमन कौंसल के पास अपना दूत भेज कर उनसे सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। अमरेन्द्र नाथ के मकान पर प्रमुख क्रातिकारी नताओ की एक गुप्त सभा हुई जिसम ज्योतीन्द्र नाथ, अमरेन्द्र नाथ, हरिकुमार चक्रवर्ती अतुल कृष्ण घोष आदि उपस्थित थे। जब जितेन्द्र नाथ लाहिरी ने बर्लिन कमेटी का सदेश सुनाया तो सबो ने नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य को अपना दूत बना कर बटाविया भेजने का निश्चय किया। नरेन्द्र नाथ उस सभा म उपस्थित नही थ। श्री जदुगोपाल मुखर्जी का कहना है कि जितेन्द्र नाथ लाहरी न सर्वप्रथम बर्लिन कमेटी का सदेश उन्ह बतलाया और जदुगोपाल मुखर्जी ने ज्योतीन्द्र नाथ को जो कि फरार अवस्था मे खिदरपुर म छिपे हुए थे उनको बर्लिन कमेटी का सदेश सुनाया।

बर्लिन कमेटी का सदेश मिलन पर उत्तर पाडा म गगा के किनारे राम घाट पर अर्द्ध रात्रि का एक गुप्त बैठक हुई जिसम, ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के अतिरिक्त उत्तरपाडा के अमरेन्द्र नाथ चटर्जी, चन्द्र नगर के मोतीलाल राय शिरशिचन्द्र घोष अतुल कृष्ण घोष, मक्खन लाल सेन और विपिन बिहारी गगुली सम्मिलित हुए। इस गुप्त बैठक म विद्रोह खडा करन के पूर्व यथेष्ट अस्त्र शस्त्र तथा धन एकत्रित करने के

प्रश्न पर विचार किया गया। तथा अनवाक वटाविया और सफाई व जरमन कौंसिलों से शीघ्र सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय किया गया। ज्योतीन्द्र नाथ ने इस काम के लिए धन प्राप्त करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया और फरार क्रांतिकारियों को सुरक्षित स्थान पर छिपा कर रखने का काम अमरेन्द्र नाथ चटर्जी को सौंपा गया। जदुगोपाल मुखर्जी की अधीनता में क्रांतिकारियों ने एक विभाग विदेशों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए स्थापित किया था जदुगोपाल मुखर्जी ने श्यामाराम के द्वारा बैंगकाक से और नरेन भट्टाचार्य के द्वारा वटाविया से सम्पर्क स्थापित कर लिया। श्याम का केन्द्र बहुत सक्रिय था। श्याम के केन्द्र का बंगाल के क्रांतिकारियों से भोलानाथ चटर्जी के द्वारा सम्पर्क स्थापित था।

ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने एक सप्ताह में एक लाख रुपये प्राप्त करने के लिए राजनैतिक डकैतियों का आश्रय लिया। फलस्वरूप गार्डन रीच और बेलीघाटा की डकैतियां डाली गई १२ फरवरी १९१५ को ज्योतीन्द्र नाथ की आज्ञा से नरेन भट्टाचार्य ने ज्योतीन्द्र नाथ के अनुयायियों को साथ लेकर मैसर्स बर्ड कम्पनी के अठारह हजार रुपये लूट लिए। २२ फरवरी १९१५ को रात्रि के ९.३० बजे ज्योतीन्द्र नाथ के अनुयायियों ने फणीन्द्र नाथ चक्रवर्ती के नेतृत्व में बेलीघाटा के एक चावल के व्यापारी की मोटर पर डाका डाला और २२ हजार रुपए उड़ा लिए। ड्राइवर मारा गया और खजांची घायल हो गया। ३० अप्रिल १९१५ को क्रांतिकारियों ने नदिया जिले के प्रागपुर में डाका डाला। परन्तु लौटते समय पुलिस से मुठभेड़ हो गई जिसमें सुशील सेन मारा गया।

गार्डन रीच तथा बेलीघाटा की डकैतियों के कारण पुलिस बहुत चौकन्नी हो गई थी। उन्हें ज्योतीन्द्र नाथ पर सन्देह था। ज्योतीन्द्र नाथ ही वास्तव में इन डकैतियों के सूत्रधार थे। १७ नवम्बर १९१५ को कानवालिस स्ट्रीट की एक दूकान पर डाका डाला गया और १५ दिनों के बाद २ दिसम्बर १९१५ को कारपोरेशन स्ट्रीट में एक डाका डाला गया जिसमें २५ हजार रुपए मिले। यह सारी डकैतियाँ मोटर टैक्सी के द्वारा डाली गई थी। पुलिस बहुत सतर्क हो गई थी और ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी को किसी प्रकार गिरफ्तार करने के लिए आकाश पाताल एक कर रही थी। ज्योतीन्द्र नाथ उस समय पथुरिया घाटा स्ट्रीट के एक मकान में छिप कर सारी क्रांतिकारी कार्यवाहियों का निर्देशन कर रहे थे। पुलिस का भेदिया निरोध हलदर २४ फरवरी १९१५ को प्रातःकाल मकान में घुस आया और उसने ज्योतीन्द्र नाथ को देख लिया। उसने कहा अच्छा ज्योतीन्द्र नाथ तो तुम यहां हो। उसकी आवाज सुनते ही नरेन भट्टाचार्य विपिन गांगुली और अन्य क्रांतिकारी जो कि ज्योतीन्द्र नाथ के साथ थे बाहर निकल आए। जैसे ही निरोद हलधर ने वहां से जाने के लिए पीठ फेरी एक गोली उसकी रीढ़ को छेदती हुई निकल गई और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसको मरा समझ कर तीन युवक तो साइकिलों पर सवार होकर और शेष अपना सामान लेकर पैदल निकल गए।

पुलिस तुरन्त वहां पहुंची और निरोद को अस्पताल ले गई निरोद यद्यपि गम्भीर रूप से घायल हो गया था परन्तु होश में था। उसने बयान दिया कि ज्योतीन्द्र वहां था और उसीने मुझको गोली मारी थी। २६ फरवरी १९१५ को दो बजे मध्याह्न उपरांत निरोद हलदर की मृत्यु हो गई।

ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी कुछ दिनो तक कलकत्ते मे ही रहे। पुलिस का कहना था कि उन दिनो मे कलकत्ते मे जो अत्यन्त साहसिक क्रातिकारी कार्य हुए थे वे उनके ही कृत्य थे। परन्तु अब ज्योतीन्द्र नाथ के लिए कलकत्ते मे अधिक समय तक ठहरना खतरे से खाली नही था। क्रातिकारी चहते थे कि उनके नेता ज्योतीन्द्र नाथ को छिप कर रहने के लिए कोई निरापद स्थान खोज निकाला जावे। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ उस समय तक कलकत्ते से हटने के लिए तैयार नही थे जब तक कि उनके साथियो विपिन गगुली चित्तप्रिय आदि के लिए छिप कर रहने के लिए कोई निरापद स्थान न ढूढ लिया जावे।

मार्च १९१५ मे ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी, चित्तप्रिय, विपिन गगुली आदि बगनान चले गए। बगनान हाई स्कूल के मुख्य अध्यापक अतुल सेन ने उन्हे अस्थाई आश्रय दिया। उधर नलनी कान्तकार और नरेन भट्टाचार्य ने उडीसा के मयूरभज राज्य मे कासीपादा नामक स्थान ज्योतीन्द्र नाथ तथा उनके साथियो के छिपने के लिए सतीन्द्र नाथ चक्रवर्ती की सहायता से ढूढ निकाला। वहा स्थान ठीक करके नरेन भट्टाचार्य कलकत्ता वापस आए और नलनीकार ने वहा एक झोपडा ज्योतीन्द्र नाथ तथा उनके साथियो के लिए तैयार करवा लिया नरेन भट्टाचार्य ज्योतीन्द्र नाथ चित्तप्रिय तथा बालासोर के यूनीवर्सल ऐम्पोरियम के शैलेश्वर बोस को लेकर कासी-पादा पहुच गए।

भारत मे सशस्त्र विद्रोह का जो आयोजन ज्योतीन्द्र नाथ कर रहे थे उसके लिए आवश्यक था कि वे कलकत्ते से अपने साथियो से सम्पर्क बनाए रख सकें तथा जरमनी से जो अस्त्र शस्त्र आने वाले थे उसकी उचित व्यवस्था कर सकें। अस्तु वे सुदूर प्रदेश मे नही जा सकते थे यही कारण था कि कासीपादा के वन आच्छादित स्थान को उन्हाने अपने छिपने के लिए चुना था।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि ज्योतीन्द्र नाथ ने नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) को बटाविया मे जरमन कौंसल से सम्पर्क स्थापित करने धन तथा अस्त्र शस्त्र भिजवाने के लिए बटाविया भेजने का निर्णय किया था। अतएव नरेन्द्रनाथ कासीपादा मे ज्योतीन्द्र नाथ से मिलकर और आवश्यक निर्देशन प्राप्त कर अप्रैल १९१५ मे बटाविया चले गए। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) ने अपना नाम सी ए मार्टिन रख लिया तथा योरोपियन वेशभूषा मे वे भारत से बटाविया गए। बटाविया मे वे जरमन कौंसल से मिले उसके द्वारा उनका सम्पर्क थियोडर हैलफैरिच से हुआ वह बटाविया मे व्यापार करता था। उसने नरेन्द्र नाथ को बतलाया कि भारतीय क्रातिकारियो के लिए यथेष्ट राशि मे अस्त्र शस्त्र तथा कारतूस करांची भेजे गए हैं। नरेन्द्र नाथ ने स्याम, जावा तथा पूर्वीय देशो के अन्य भारतीय क्रांतिकारियो से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया। स्याम के प्रसिद्ध क्रातिकारी जो कि गदर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता थे उनसे नरेन्द्र नाथ को बहुत सहायता मिली।

सी ए मार्टिन (नरेन्द्र नाथ) और आत्माराम ने जून और अगस्त १९१५ में महीनो मे बहुत सा जरमन धन भारतीय क्रातिकारियो को भेजा। बटाविया और बैंकाक से जो पत्र तथा तार आदि भेजे जाते थे वे श्रमजीवी समवाय, हैरिसन रोड कलकत्ता, एस बी मुखर्जी सोभा स्टोन एण्ड लाइम कम्पनी, हैरी एण्ड सस के पते पर आते थे। हैरी एण्ड सस हरी कुमार चक्रवर्ती की दूकान थी। हरी कुमार चक्रवर्ती

ज्योतीन्द्र नाथ का विश्वसनीय अनुयायी और नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य का घनिष्ठ मित्र था। हरीकुमार चतुर्वेदी ने बालासार में यूनीवर्सल एम्पोरियम के नाम से एक साइकिलों की दुकान खोल दी जिसका संचालन शैलेश्वर वास करते थे। वास्तव में यह दुकान क्रांतिकारियों का गुप्त केन्द्र था जिसके द्वारा ज्योतीन्द्र नाथ कलकत्ते के क्रांतिकारियों से अपना सम्बन्ध स्थापित किए हुए थे।

उस समय भारतीय क्रांतिकारियों को यह समाचार मिल गया था कि जर्मनी ने भारतीय क्रांतिकारियों के लिए दो जहाजों में अस्त्र शस्त्र भेजने की व्यवस्था की है। इस समाचार से ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथियों का उत्साह बहुत बढ़ गया था। वे जर्मनी द्वारा भेजे गये अस्त्र शस्त्रों की तीव्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

वाशिंगटन में जर्मन दूतावास के सैनिक सहचारी (मिलीटरी अटची) फ्रान्ज वान पेपन के आदेश से न्यूयार्क स्थित क्रुप एजेंसी के हैंस टस्चर ने जनवरी १९१५ में बहुत बड़ी मात्रा में अस्त्र–शस्त्र तथा स्फोटास्त्र (आर्म्स तथा ऐम्यूनिशन) खरीदे दिखाने के लिए वे दस ट्रक भर कर अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र मैक्सिको के बन्दरगाह को भेजे गए पर वास्तव में वे भारत को भेजे गए थे।

बात यह थी कि बर्लिन कमेटी से जब जरमनी के विदेश मंत्रालय की स्वीकृति हो गई तो जरमन विदेशी कार्यालय ने वाशिंगटन स्थित अपने दूतावास को अस्त्र शस्त्र और स्फोटास्त्र भेजने तथा बटाविया स्थित अपने दूतों को भारतीय क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता के आदेश दे दिये थे।

अमरिकन दूतावास ने जो बहुत बड़ी राशि में अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र अमरिका में खरीदे उनको कैलीफोर्निया के बन्दरगाह सैन डियागो पर 'ऐनी लारसेन' जहाज पर लाद दिया गया। 'ऐनी लारसन' सैन डियागो से ६ मार्च १९१५ को चला। सेडीशन कमेटी रिपोर्ट के अनुसार 'एनी लारसन" जहाज पर तीस हजार राइफलें और प्रत्येक राइफिल के लिए चार सौ राऊंड स्फोटास्त्र (ऐम्यूनिशन) तथा दो लाख रुपये थे।

योजना यह थी कि ऐनी लारसन पहले मेक्सिको से दूर साकोरो द्वीप जावेगा। वह वहां मैवरिक जहाज की प्रतीक्षा करेगा। मैवरिक जहाज पर सारा सामान लाद लिया जावेगा। मैवरिक उसको भारत ले जावेगा ऐनी लारसन साकोरो द्वीप के तट पर तीन सप्ताह तक प्रतीक्षा करता रहा उसके पास पेय जल तथा खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। अस्तु एनी लारसन घूमता रहा और एक महीने के उपरान्त वाशिंगटन के हायक्वियम के बन्दरगाह पर पहुंचा तो संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने उसे जब्त कर लिया। उसको रहस्यमय जहाज के नाम से सम्बोधित किया गया।

इसी समय १६ मार्च १९१५ को सान फ्रांसिसको की स्टडर्ड आयल कम्पनी के एक पुराने तेल वाहक जहाज मैवरिक को जरमनी ने खरीद लिया। सैन फ्रांसिस्को के जरमन कौंसिल ने उसकी मरम्मत करवाई। २३ अप्रैल १९१५ को मैवरिक जहाज लाग ऐंजिल्स के समीप सैन पैड्रो से चला उस जहाज पर छद्म वेष में एक जरमन इंजिनियर तथा नाम मात्र के वेष में पांच भारतीय थे। वे अपने को ईरानी बतलाते थे। जरमन इंजिनियर अपने को स्वीडिश इंजिनियर घोषित करता था। योजना यह थी कि सभी राइफलें और मशीनगन तेल की टंकी में रखकर उसमें तेल भर

न्या जावे और स्फोटास्त्र (ऐम्यूनिशन) खाली टकी मे रख दिया जावे। यदि मार्ग म शत्रु के जहाज उसको रोकें तो उसको डुबो दिया जावे। मैवरिक को पहले सोकोरो द्वीप जाना था वहा ऐनी लारसन जहाज से अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र लेकर अनजेर, जावा जाना था। अनजेर पर उसे एक छोटी नौका मिलने वाली थी जिस पर सकेत चिह्न का झडा फहराता होगा। वह छोटी नाव जैसा मैवरिक जहाज के कप्तान को आदेश दे उसे उसके अनुसार करना था। यदि अनजेर पर वह नौका न मिले तो जहाज को बैंगकाक जाना था जहा एक जरमन पायलट एक छोटी नौका से जहाज पर आवेगा और जहाज तथा उसके माल को अपने अधिकार म ले लेगा इसी आशय की सूचनाए बटाविया, मनीला और होनो लूलू भेजदी गई।

परन्तु जब मैवरिक जहाज सोकोरो द्वीप पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ ऐनी लारसन जहाज उसकी प्रतीक्षा करने के उपरात चला गया। एक महीने मैवरिक इस आशा से प्रतीक्षा करता रहा कि ऐनी लारसन उसे मिल जावे। ऐनी लारसन के मिलने पर मवरिक हवाई द्वीप के हिलो बदरगाह की ओर चला और १४ जून १९१५ को वहा पहुचा। वहा पहुचने पर उसको एक जरमन जहाज के कप्तान से आदेश मिला कि वह हवाई द्वीप के दक्षिण पश्चिम म जानसन द्वीप को चला जावे और वहा ऐनी लारसन की प्रतीक्षा करे। परन्तु इस षडयत्र का समाचार स्थानीय पत्रो मे प्रकाशित हो गया अतएव मवरिक को आदेश हुआ कि वह जावा मे अनजेर बन्दरगाह चला जावे। मैवरिक २० जुलाई १९१५ को जावा पहुचा और बटाविया के बन्दरगाह तडजाग प्रिआले बन्दरगाह के बाहर दूर पर कुछ समय तक खडा रहा। डच अधिकारियो को सदेह हो गया और उन्होंने डच युद्धपोत के द्वारा उसको अपने अधिकार मे ले लिया।

योजना यह थी कि मैवरिक जहाज सुदरबन मे स्थित हुगली के मुहाने पर रायमगल स्थान पर अस्त्र शस्त्र उतारेगा। ज्योतीन्द्र मुकर्जी ने जहा पुलिस की दृष्टि से अपने को बचाने के लिए काप्तीपादा गाव मे आश्रय लिया था वहा वह जरमनी से आने वाले अस्त्र शस्त्रो की भी प्रतीक्षा कर रहा था। ज्योतीन्द्र के पास यह सूचना पहुच चुकी थी कि जरमनी ने 'मैवेरिक' तथा 'हैरी' जहाजो मे अस्त्र शस्त्र भेजे हैं। ज्योतीन्द्र ने यह तय किया कि सुदर बन के राय मगल नामक स्थान म उन जहाजो के अस्त्र शस्त्र उतार कर पूर्व निश्चित स्थानो म छिपा दिये जावें। इस कार्य के लिए उन्होने वहा के एक देशभक्त जमीदार नूर नगर के जतीन राय को क्रातिकारी दल का सदस्य बना लिया था। उस जमीदार ने अस्त्र शस्त्र जहाजो पर से उतार कर रात्रि मे उसे गन्तव्य स्थान पर पहुचा देने की सारी तैयारिया कर ली थी। बहुत सी लालटेनें तथा भरोसे के आदमी उसने इकट्ठे कर लिए थे क्योकि रात्रि म ही अस्त्र शस्त्र जहाजो से उतारे जा सकते थे। परन्तु देश को अभी परतत्र रहना था। जको स्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वास घात के कारण ब्रिटिश सरकार को यह पता लग गया कि जरमनी भारतीयो को अस्त्र शस्त्र तथा धन की सहायता दे रहा है। ब्रिटिश सरकार को इस बात का भी पता चल गया कि किन स्त्रोतो से भारतीय क्रातिकारियो के पास धन पहुँचता है और दो जहाज अस्त्र शस्त्र लेकर भारत जा रहे हैं। बात यह थी कि उस समय तक सयुक्त राज्य अमेरिका तटस्थ राष्ट्र था वह महायुद्ध म सम्मिलित नही हुआ था। अस्तु सभी परतत्र देशो के क्रातिकारियो का जो कि अपने देश को स्वतत्र करना चाहते थे उनका एक सम्मेलन अमेरिका मे हुआ।

जेकोस्लावाकिया भी आस्ट्रिया साम्राज्य की दासता से मुक्ति पाने का प्रयत्न कर रहा था। जेकोस्लावा किया के क्रांतिकारियों को फ्रेंच तथा ब्रिटिश सरकार से बहुत अधिक आर्थिक सहायता मिलती थी। उस अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारियों के सम्मेलन में भारतीय क्रांतिकारियों ने जेकोस्लाविया के क्रांतिकारियों को यह बतला दिया कि जरमन सरकार से हमारी संधि हो गई है। जब ब्रिटेन महायुद्ध में फंसा है हम जरमन सहायता से भारत में सशस्त्र विद्रोह के द्वारा ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकेंगे। जेकोस्लावा किया के क्रांतिकारियों ने भारतीय क्रांतिकारियों के साथ विश्वासघात किया और यह भेद फ्रेंच राजदूत को बतला दिया। फ्रेंच सरकार ने यह सूचना ब्रिटिश सरकार को दे दी। भारत में धर पकड़ आरम्भ हो गई ब्रिटिश सरकार ने धन आने के समस्त स्रोतों को बन्द कर दिया और अस्त्र शस्त्र ले जाने वाले उन दोनों जहाजों को भारत नहीं पहुँचने दिया। अमरिका तथा पूर्व के देशों में जो भारतीय क्रांतिकारी थे या तो उन्हें पकड़ लिया गया अथवा उनको वहां से जरमनी तथा तटस्थ राष्ट्रों को जाना पड़ा।

यह तो हम पहले ही कह आए हैं कि ऐनी लारसन' जहाज का मेवेरिक जहाज से सम्पर्क नहीं हो सका। वह जून के अन्त में संयुक्त राज्य अमेरिका लौट गया और उसके अस्त्र शस्त्र संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने जब्त कर लिए। मेवेरिक जहाज को जावा में डच सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया। 'हैनरी' जहाज मैनिला से पार हो गया उसमें अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र थे वह शंघाई पहुंचा। उन दिनों शंघाई पर लगभग ब्रिटेन तथा फ्रांस का अधिकार स्थापित हो गया था इस कारण उनके लिए 'हैनरी' को अपने कब्जे में ले लेना सरल था। उसके अस्त्र शस्त्र वहां पर उतार लिए गए और उसे सेलेबीज की ओर जाने दिया गया। जेकोस्लावाकिया के क्रांतिकारियों द्वारा वाशिंगटन के राजदूत को भारतीय क्रांतिकारियों की योजना का सारा भेद बतला देने का परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार भी चौकसी हो गई। हटिया, राय मंगल और बालासोर जहां इन जहाजों के अस्त्र शस्त्र उतरने थे वहां भी सरकार सतर्क थी। भारत सरकार ने गंगा के मुहाने में बहुत अधिक पुलिस नियुक्त करदी थी और पूर्वी तट पर नोआखाली चटगांव से उड़ीसा तक के सभी समुद्री स्थानों पर जहां कि जहाज अस्त्र शस्त्र उतार सकते थे पुलिस सतर्क थी।

विद्रोह की योजना—

जब बटाविया स्थित जरमन कौंसल में यह तय हो गया कि रायमंगल पर अस्त्र शस्त्र उतारे जावेंगे तो आत्माराम ने बंगकाक से १३ जून को वी के राय व और १७ जून को भोलानाथ चटर्जी को निम्न आशय के तार दिए। (१) माल भेज दिया गया है दस पंद्रह दिन में पहुंच जावेगा। (२) हाथीदांत और चंदन की नाव रवाना करदी गई दस दिन में पहुंच जावेगी।

यह तार पाकर क्रांतिकारी अस्त्र शस्त्रों को जतीन्द्र नाथ के निर्देशानुसार पूर्व निर्धारित स्थानों पर पहुंचाने की व्यवस्था में लग गए। नरेन भट्टाचार्य भी अस्त्र शस्त्र भिजवाने की व्यवस्था करके जून १९१५ में कलकत्ता लौट आए जिससे कि वे भी सशस्त्र विद्रोह में भाग ले सकें और व्यक्तिगत रूप से क्रांतिकारियों को जरमनी से कितनी और किस प्रकार की सहायता मिलेगी यह संदेश दे सकें। गदर द के आत्माराम ने बंगाल के एक वकील कुमुद नाथ मुकर्जी को संदेश देने और धन

देने के लिए कलकत्ता भेजा। वह ३ जुलाई १९१५ को कलकत्ता पहुचे सभी क्रांतिकारी नेताओं से मिल कर तथा थैली भेंट करके २४ जुलाई १९१५ को कलकत्ते से बटाविया होते बैंककाक वापस लौट गए। वे अपने साथ 'थ्योडोर हैलफेरिच" बटाविया के जरमन कौंसल के लिए भारतीय क्रांतिकारियों का यह सदेश भी लेते गए कि भारतीय क्रांतिकारियों को अस्त्र शस्त्रों, स्फोटकों तथा सैनिक प्रशिक्षण देने वाले सैनिक विशेषज्ञों का और आवश्यकता है।

भारतीय क्रांतिकारियों की योजना गुरिल्ला युद्ध (छापा मार युद्ध) आरम्भ करने की थी। मोटे रूप मे सशस्त्र विद्रोह की रूप रेखा नीचे लिखे अनुसार थी।

(१) सशस्त्र विद्रोह बालासोर के गावो से आरम्भ किया जाना था वहा देश की स्वतंत्रता की घोषणा करके तिरगा ध्वज फहराया जाने वाला था।

(२) बालासोर के गावो मे आरम्भ होकर विद्रोह बगाल की खाडी के तट की ओर फैलता और उसका लक्ष्य चांदीपुर गाव की सैनिक बैरिकों पर आक्रमण करना होता।

(३) इसके उपरात विद्रोहियों का लक्ष्य चक्रधरपुर के शस्त्रागार को लूटना था। इस उद्देश्य से चक्रधरपुर म एक दूकान खोल दी गई थी। उसका सचालन भोलानाथ चटर्जी कर रहे थे। जदगोपाल उसका निर्देशन करते थे।

(४) सिंघभूमि जिले के "कोलो" (आदि वासी जाति) का विद्रोह करने के लिए उकसा कर विद्रोह मिदनापुर और बीर भूमि जिलो में फैलता। वहा सतीश चक्रवर्ती को अजय नदी का पुल उडा देने के लिए नियुक्त कर दिया गया था।

(५) उसके उपरात बगाल नागपुर रेलवे को उडा देने का कार्यक्रम था। स्व० ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी रेल को उडाने वाले थे।

(६) अत म फोर्ट विलियम पर आक्रमण होता और भारतीय स्वतंत्रता का तीन रगों वाला ध्वज उस पर फहराया जाता।

खिदरपुर म इस विद्रोह की तैयारी करने के लिए एक केन्द्र खोला गया था। खिदरपुर स्कूल के अध्यापक दुर्गाचरण घोस और आशुतोष घोष उसके सचालक थे। उस केन्द्र म रोशनी से सकेत देने, झडी से सकेत देने, तार देने सकेत भाषा बनाने, आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। हजारों की सख्या म तिरगे झडे और खाकी वर्दिया तयार की गई थी। रेलवे के पुलों को उडाने के लिए डायनेमाइट इकट्ठा कर लिया गया था।

सडिशन कमेटी रिपोर्ट मे इस सम्बन्ध मे लिखा है कि क्रांतिकारियों का मानना था कि बगाल म जितनी सेना है उसको पराजित करने के लिए उनके पास आवश्यकता से अधिक सैनिक शक्ति है। उन्हे केवल भय था कि बगाल के बाहर से सेना न आ जाय। इसी उद्देश्य से उन्होने बगाल म आने वाली मुख्य तीन रेलों को नष्ट कर देने का निश्चय किया था। ज्योतीन्द्र नाथ बालासोर से मदरास रेलवे को ठप्प करने वाले थे। भोलानाथ चटर्जी बगाल नागपुर रेलवे को नष्ट करने के लिए चक्रधरपुर भेज गए थे। सतीश चक्रवर्ती अजय जाकर ईस्ट इडिया रेलवे के पुल को उडाने वाले थे। नरेन्द्र चौधरी और फणीन्द्र चक्रवर्ती को हटिया जाने का आदेश था जहां विद्रोहियों की सेना इकट्ठी होने वाली थी। विद्रोहियों की वह सेना पहले पूर्वीय बगाल के जिलों पर अधिकार करती और फिर कलकत्ते की ओर बढ़ती। कलकत्ते मे विद्रोही

दल नरेन भट्टाचार्य और बिपिन गांगुली के नेतृत्व में पहले कलकत्ते के तथा उसके आस पास के शस्त्रागारों पर अधिकार करता और फिर फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लेता और फिर कलकत्ता पर अधिकार करता (पृष्ठ ८२-८३ सेडिशन कमेटी रिपोर्ट)।

ज्योतीन्द्र नाथ का कहना था कि फोर्ट विलियम ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक है इस कारण उस पर अधिकार हो जाने से समस्त देश पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा और देश में विद्रोह की ज्वाला भभक उठेगी। यही कारण था कि वे फोर्ट विलियम को लेने पर बहुत बल देते थे।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जैकोस्लावाकिया के क्रांतिकारियों के विश्वासघात के कारण विद्रोह की सारी योजना असफल हो गई। श्रमजीवी समवाय, हैरी एण्ड सन्स आदि विद्रोही केन्द्रों पर छापे मारे गए। बहुत से क्रांतिकारी गिरफ्तार हो गए।

७ अगस्त १९१५ को कलकत्ते में, जब पुलिस ने कलकत्ते की हैरी एण्ड सन्स की दूकान पर छापा मारा तो उन्हें ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के काप्तीपादा में होने के संकेत मिले और बालासोर में यूनीवर्सल ऐम्पोरियम का पता चला। अस्तु पुलिस अधिकारी बालासोर के कलक्टर के साथ काप्तीपादा (६ सितम्बर १९१५ को) गए। काप्तीपादा जागीरदार के दीवान से मिले। ६ सितम्बर १९१५ को एक स्थानीय व्यक्ति ने ज्योतीन्द्र नाथ को सूचित किया कि काप्तीपादा के डाक बंगले में रात्रि को ठहरने के लिए हाथियों पर चढ़कर पुलिस आई है। ज्योतीन्द्र नाथ समझ गए कि पुलिस उनको गिरफ्तार करने के लिए ही काप्तीपादा आई है। अस्तु उसी रात्रि को चित्तप्रिय और मनोरंजन को साथ लेकर वे तलदिहा की ओर चल पड़े उन्होंने काप्तीपादा के मकान को छोड़ दिया। प्रातःकाल जब पुलिस ने उनके मकान की तलाशी ली तो वहां कोई नहीं था। जाने से पूर्व ज्योतीन्द्र नाथ ने सब पत्र इत्यादि नष्ट कर दिए थे उस मकान के आंगन में एक पेड़ था जिस पर गोलियों के निशान थे। उससे यह प्रतीत होता था कि निशाना लगाने का अभ्यास किया गया था। जब ज्योतीन्द्र नाथ को पता चला कि काप्तीपादा में पुलिस आ गई तो वे अंतिम युद्ध के लिए तैयार हो गए। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे शत्रुओं से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त करेंगे।

ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी अपने जीवन के प्रति कितने निर्मोही और उदासीन थे—यह एक घटना से पता चलता है जब ज्योतीन्द्र नाथ और चित्तप्रिय काप्तीपादा चले आए तो कुछ दिनों के पश्चात नरेन और मनोरंजन भी वहां पहुंच गए। गांव के उन्मुक्त वातावरण में वे खेल रहे थे। मनोरंजन के हाथ में एक मौसर पिस्तौल था। उसने व्यंग में नरेन की ओर पिस्तौल तान कर पूछा कि क्या तुम्हें मृत्यु से तनिक भी भय नहीं लगता। नरेन ने उत्तर दिया कि तुम परीक्षा करके देखलो मुझे मृत्यु से तनिक भी भय नहीं लगता आखिर हम मरना है। मनोरंजन का विश्वास था कि पिस्तौल में गोली नहीं है अस्तु उसने हंसी में घोड़ा दबा दिया। पिस्तौल में गोली भरी थी वह जाकर नरेन की टांग में लगी। परन्तु नरेन तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उन देशभक्त क्रांतिकारियों ने अपना जीवन मातृ भूमि की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया था फिर उन्हें जीवन से मोह क्यों होता। चिकित्सा की वहां कोई व्यवस्था नहीं थी। कुनैन की गोलियों को पीस कर उसके पाउडर को घाव में डा

लिया। कलकत्ता से जब डाक्टर ने आकर परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि गोली मांस में से होकर निकल गई हड्डी म चोट नहीं आई। कुछ समय के उपरांत नरेन का घाव ठीक हो गया।

जैकोस्लावाकिया के क्रांतिकारियों के विश्वासघात के फलस्वरूप जब भारत सरकार को जरमनी द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों को सहायता देने की सूचना मिल गई तो भारत सरकार को यह भी पता चल गया कि बटाविय और बैंगकाक में जरमन कौंसल के द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों को सहायता प्राप्त होती है और कलकत्ता की हैरी एण्ड सन्स तथा बालासोर में उसकी शाखा यूनीवर्सल ऐम्पारियल वास्तव में क्रांतिकारियों के सम्पर्क केन्द्र हैं अतः पुलिस उन पर दृष्टि रख रही थी।

काप्तीपादा म अपने आश्रय स्थान के अतिरिक्त ज्योतीन्द्र नाथ ने तलदिहा में एक दूसरा केन्द्र स्थापित कर दिया था जो काप्तीपादा से ६ मील की दूरी पर था। नरेन और ज्योतिश चन्द्र पाल वहा भेजे गए। वे वहां खेती करने और दूकान खोलने के लिए भेजे गए थे जिससे कि व ग्रामीण जनता में कार्य कर सकें। पुलिस से मुठभेड़ होने के ६ दिन पूर्व ही तलदिहा का केन्द्र खोला गया था।

यूनिवर्सल ऐम्पारियम की ५ सितम्बर १९१५ को तलाशी हुई। पुलिस ने शैलेश्वर और उनके साथी को गिरफ्तार कर लिया। उनको कठोर यातनायें देने पर भी उन्होंने कुछ नहीं बतलाया। निराश होकर पुलिस अधिकारी जब वहा से चलने वाले थे तब उन्हें एक कागज का टुकड़ा फर्श पर पड़ा मिल गया जिसमें काप्तीपादा का उल्लेख था। उस कागज के टुकड़े से काप्तीपादा का उन्हें पता चल गया। बालासोर के जिलाधीश ने तुरन्त एक सैनिक टुकड़ी लेकर तथा कलकत्ता से आए उच्च पुलिस अधिकारियों डैनहम और बड को साथ लेकर, व हाथियों पर सवार होकर काप्तीपादा आए। इतने अधिक अधिकारियों के साथ सेना की टुकड़ी होने से कारण गाव म हड़कम्प मच गया। गाव के लोग ज्योतीन्द्र नाथ को अत्यन्त श्रद्धा से देखते थे व उन्हें महात्मा कहते थे यही कारण था कि उनमें से एक ने दौड़ कर ज्योतीन्द्र नाथ को पुलिस तथा सेना के काप्तीपादा आने की सूचना दे दी।

यदि ज्योतीन्द्र नाथ चाहते तो वहा से तुरन्त ही चल कर रात्रि मे पुलिस की पहुच के बाहर हो जाते परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ अपने साथियों को खतरे में छोड़ कर अपनी सुरक्षा का स्वप्न मे भी ध्यान नही कर सकते थे। अस्तु सब कागज पत्रों को नष्ट करके ज्योतीन्द्र नाथ, चित्तप्रिय और मनोरंजन को साथ लेकर तलदिहा मे नरेन और ज्योतीश पाल को साथ लेने के लिए तलदिहा की ओर चल दिए। इसमें कई घंटों का समय नष्ट हो गया।

रात्रि पड़ जाने से जिला मजिस्ट्रेट ने प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा की और प्रात होते ही ज्योतीन्द्र नाथ के आश्रय स्थल की तलाश की। लक्ष्य भेद के लिए पेड़ पर बहुत ऊंचाई पर रखे गए तख्तों म तथा कच्ची दीवार म गोलियों के चिन्ह थे कुछ गोलियां और बारूद भी प्राप्त हुई परन्तु वहा कोई क्रांतिकारी नही था। पुलिस को पूछताछ से यह ज्ञात हो गया कि उनके कुछ साथी तलदिहा में रहते हैं।

उधर ज्योतीन्द्र नाथ तलदिहा से नरेन और ज्योतिश पाल को लेकर बालासोर रेलवे स्टेशन की ओर गए। वे हरिपुर अरिया गाव पहुचे जो बालासोर रेलवे स्टेशन से बहुत दूर नहीं था, परन्तु वहां जाकर उन्हें संदेह हो गया कि बालासोर

दल नरेन भट्टाचार्य और बिपिन गागुली के नेतृत्व मे पहले कलकत्ते के तथा उसके आस पास के शस्त्रागारो पर अधिकार करता और फिर फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लेता और फिर कलकत्ता पर अधिकार करता (पृष्ठ ८२-८३ सेडिशन कमेटी रिपोर्ट)।

ज्योतीन्द्र नाथ का कहना था कि फोर्ट विलियम ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक है इस कारण उस पर अधिकार हो जाने से समस्त देश पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा और देश मे विद्रोह की ज्वाला भभक उठेगी। यही कारण था कि वे फोर्ट विलियम को लेने पर बहुत बल देते थे।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जैकोरलावाकिया के क्रांतिकारियों के विश्वासघात के कारण विद्रोह की सारी योजना असफल हो गई। श्रमजीवी समवाय, हैरी एण्ड सन्स आदि विद्रोही केन्द्रो पर छापे मारे गए। बहुत से क्रांतिकारी गिरफ्तार हो गए।

७ अगस्त १९१५ को कलकत्ते मे, जब पुलिस ने कलकत्ते की हैरी एण्ड सन्स की दूकान पर छापा मारा तो उन्हें ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के काप्तीपादा मे होने के सकेत मिले और बालासोर मे यूनीवर्सल ऐम्पोरियम का पता चला। अस्तु पुलिस अधिकारी बालासोर के कलक्टर के साथ काप्तीपादा (६ सितम्बर १९१५ को) गए। काप्तीपादा जागीरदार के दीवान से मिले। ६ सितम्बर १९१५ को एक स्थानीय व्यक्ति ने ज्योतीन्द्र नाथ को सूचित किया कि काप्तीपादा के डाक बगले मे रात्रि को ठहरने के लिए हाथियो पर चढ़कर पुलिस आई है। ज्योतीन्द्र नाथ समझ गए कि पुलिस उनको गिरफ्तार करने के लिए ही काप्तीपादा आई है। अस्तु उसी रात्रि को चित्तप्रिय और मनोरजन को साथ लेकर व तलदिहा की ओर चल पड़े उन्होंने काप्तीपादा के मकान को छोड़ दिया। प्रातःकाल जब पुलिस ने उक्त मकान की तलाशी ली तो वहा कोई नहीं था। जाने से पूर्व ज्योतीन्द्र नाथ ने सब पत्र इत्यादि नष्ट कर दिए थे उस मकान के आगन मे एक पेड़ था जिस पर गोलियो के निशान थे। उससे यह प्रतीत होता था कि निशाना लगाने का अभ्यास किया गया था। जब ज्योतीन्द्र नाथ को पता चला कि काप्तीपादा मे पुलिस आ गई तो वे अंतिम युद्ध के लिए तैयार हो गए। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे शत्रुओं से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त करेंगे।

ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी अपने जीवन के प्रति कितने निर्मोही और उदासीन थे—यह एक घटना से पता चलता है जब ज्योतीन्द्र नाथ और चित्तप्रिय काप्तीपादा चले आए तो कुछ दिनों के पश्चात नरेन और मनोरजन भी वहा पहुच गए। गाव के उन्मुक्त वातावरण मे व खेल रहे थे। मनोरजन के हाथ मे एक मौजर पिस्तौल था। उसने व्यग मे नरेन की ओर पिस्तौल तान कर पूछा कि क्या तुम्हें मृत्यु से तनिक भी भय नहीं लगता। नरेन ने उत्तर दिया कि तुम परीक्षा करके देखलो मुझे मृत्यु से तनिक भी भय नहीं लगता आखिर हमे मरना है। मनोरजन को विश्वास था कि पिस्तौल मे गोली नहीं है अस्तु उसने हसी से घोड़ा दबा दिया। पिस्तौल मे गोली भरी थी वह जाकर नरेन की टाग मे लगी। परन्तु नरेन तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उन देशभक्त क्रांतिकारियो ने अपना जीवन मातृ भूमि की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया था फिर उन्हें जीवन से मोह क्यो होता। चिकित्सा की वहां कोई व्यवस्था नहीं थी। कुनैन की गोलियों को पीस कर उनके पाउडर को घाव मे भर

दिया। कलकत्ता से जब डाक्टर ने आकर परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि गोली मांस में से होकर निकल गई हड्डी में चोट नहीं आई। कुछ समय के उपरांत नरेन का घाव ठीक हो गया।

जैकोस्लावाकिया के क्रांतिकारियों के विश्वास घात के फलस्वरूप जब भारत सरकार को जरमनी द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों को सहायता देने की सूचना मिल गई तो भारत सरकार को यह भी पता चल गया कि बटाविया और बंगकाक के जरमन कौंसल के द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों को सहायता प्राप्त होती है और कलकत्ता की हैरी एण्ड संस तथा बालासोर में उसकी शाखा यूनीवर्सल ऐम्पोरियल वास्तव में क्रांतिकारियों के सम्पर्क केन्द्र हैं अस्तु पुलिस उन पर दृष्टि रख रही थी।

काप्तीपादा में अपने आश्रय स्थान के अतिरिक्त ज्योतीन्द्र नाथ ने तलदिहा में एक दूसरा केन्द्र स्थापित कर दिया था जो काप्तीपादा से ६ मील की दूरी पर था। नरेन और ज्योतिश चन्द्र पाल वहां भेजे गए। ये वहां खेती करने और दूकान खोलने के लिए भेजे गए थे जिससे कि वे ग्रामीण जनता में कार्य कर सकें। पुलिस से मुठभेड़ होने के ६ दिन पूर्व ही तलादिहा का केन्द्र खोला गया था।

यूनीवर्सल ऐम्पोरियम की ५ सितम्बर १९१५ को तलाशी हुई। पुलिस ने शैलेश्वर और उनके साथी को गिरफ्तार कर लिया। उनको कठोर यातनायें देने पर भी उन्होंने कुछ नहीं बतलाया। निराश होकर पुलिस अधिकारी जब वहां से चलने वाले थे तब उन्हें एक कागज का टुकड़ा फर्श पर पड़ा मिल गया जिसमें काप्तीपादा का उल्लेख था। उस कागज के टुकड़े से काप्तीपादा का उन्हें पता चल गया। बालासोर के जिलाधीश ने तुरन्त एक सैनिक टुकड़ी लेकर तथा कलकत्ता से आए उच्च पुलिस अधिकारियों डैनहम और बड को साथ लेकर, व हाथियों पर सवार होकर काप्तीपादा आए। इतने अधिक अधिकारियों के साथ सेना की टुकड़ी होने के कारण गांव में हड़कम्प मच गया। गांव के लोग ज्योतीन्द्र नाथ को अत्यन्त श्रद्धा से देखते थे व उन्हें महात्मा कहते थे यही कारण था कि उनमें से एक ने दौड़ कर ज्योतीन्द्र नाथ को पुलिस तथा सेना के काप्तीपादा आने की सूचना दे दी।

यदि ज्योतीन्द्र नाथ चाहते तो वहां से तुरन्त ही चल कर रात्रि में पुलिस की पहुंच के बाहर हो जाते परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ अपने साथियों को खतरे में छोड़ कर अपनी सुरक्षा का स्वप्न में भी ध्यान नहीं कर सकते थे। अस्तु सब कागज पत्रों को नष्ट करके ज्योतीन्द्र नाथ, चित्तप्रिय और मनोरंजन को साथ लेकर तलदिहा में नरेन और ज्योतीश पाल का साथ लेने के लिए तलदिहा की ओर चल दिए। इसमें कई घंटों का समय नष्ट हो गया।

रात्रि पड़ जाने से जिला मजिस्ट्रेट ने प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा की और प्रातः होते ही ज्योतीन्द्र नाथ के आश्रय स्थल की तलाश की। लक्ष्य भेद के लिए पेड़ पर बहुत ऊंचाई पर रखे गए तख्तों में तथा कच्ची दीवार में गोलियों के चिन्ह थे कुछ गोलियां और बारूद भी प्राप्त हुई परन्तु वहां कोई क्रांतिकारी नहीं था। पुलिस को पूछताछ से यह ज्ञात हो गया कि उनके कुछ साथी तलदिहा में रहते हैं।

उधर ज्योतीन्द्र नाथ तलदिहा से नरेन और ज्योतिश पाल को लेकर बालासोर रेलवे स्टेशन की ओर गए। वे हरिपुर अरिया गांव पहुंचे जो बालासोर रेलवे स्टेशन से बहुत दूर नहीं था, परन्तु वहां जाकर उन्हें संदेह हो गया कि बालासोर

रेलवे स्टेशन पर उतरा है।

अस्तु वे पीछे लौट गए और जगल को छोड कर खुले मैदान म आ गए। वे यह खोज रहे थे कि बच कर निकल जाने का क्या कोई दूसरा रास्ता हो सकता है।

जब कालीपादा मे क्रातिकारी नही मिले तो मैजिस्ट्रेट ने मयूरभज राज्य की पुलिस को यह आदेश दे दिये कि वे क्रातिकारियो की खोज जारी रक्खें और वह स्वय बालासार लौट गया। उसने सभी रास्ते जो बालासोर को जाते थे उनका लिए उन पर पहरा लगा दिया गया। क्योकि मैजिस्ट्रेट का विचार था कि क्रातिकारी बालासोर रेलवे स्टेशन पहुँचने का प्रयत्न करेंगे। मैजिस्ट्रेट ने जिले के प्रत्येक पुलिस मैन को आदेश द दिये कि वह जो भी अजनबी व्यक्ति दिखलाई पडे उस पर दृष्टि रक्खें। साथ ही उसने सारे प्रदेश मे यह समाचार प्रसारित करवा दिया कि कुछ बगाली डाकू जो जरमनी के एजेंट हैं उस प्रदेश मे घूम रहे है। जो उनकी सूचना पुलिस को देगा उसको पारितोषिक दिया जावगा।

एक दूकानदार जिसकी बालासोर म दूकान थी जहा वह प्रतिदिन जाता था जब आठ सितम्बर को बालासोर से घर (गाव) को लौट रहा था तब उसन नाव घाट पर एक पुलिस मैन को नाव के मल्लाह से यह कहते सुना कि जो भी बाहर का आदमी उधर आवे उस पर दृष्टि रक्खे और यदि कोई बाहरी आदमी दिखलाई दे तो उसकी पुलिस को सूचना दे दे। गाव म लौटने पर उसने अपने भाई जो किसान था उमसे यह बात कही और कहा कि वह भी ध्यान रक्खे।

६ सितम्बर बृहस्पतिवार को प्रात काल ६ बजे जबकि वह किसान अपनी नाव को नदी के किनारे खूट से बाध रहा था तो दूसरे किनारे पर पाच अजनबी लोग दिखाई पडे। उन्होने उसे आवाज दी कि हम लोग सरकारी आदमी हैं और नदी के पार जाना चाहते हैं। उसने यह कह कर उन्हे ले जाने से मना कर दिया कि उसकी नाव सरकारी नही है और इतनी छोटी है कि यदि वह इतने आदमियो को उसम सवार करले तो वह बोझ से डूब जावेगी। तब उन अजनबियो ने यह प्रस्ताव किया कि वह उनके कपडो और झोला को पार पहुचा दे। वे स्वय तैर कर नदी पार कर लेंगे। वह आदमी उनके कपडे और झोले भी ले जाने को तैयार नही हुआ। उसने सुझाव दिया कि थोडी ही दूर पर चार नावें हैं वह उनमे से किसी एक से नदी पार कर सकते हैं। इस पर ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी बताए हुए स्थान पर गए और नाव द्वारा उन्होने नदी पार की। उस समय उस किसान के मन मे अपने भाई की कही हुई बात का ध्यान आया और यह देखने के लिए कि वे कौन लोग है वह भी उस स्थान पर चला गया जहा वे लोग दूसरे किनारे पर उतरे थे। नदी के तट पर उतर कर वे अनजाने लोग जगल की तरफ चल दिए। तब उस आदमी ने चिल्ला कर कहा कि उधर कोई सडक नही है। इस पर वे अजनबी उस आदमी की ओर मुडे। तब तक उनके आस पास एक भीड जमा हो गई। उनम से एक व्यक्ति न उनसे पूछा कि वे कौन हैं। जब उसे कोई सतोष जनक उत्तर नही मिला तो उसको सदेह हो गया।

उसने आसपास के लोगो से कहा कि एक आदमी जाकर दफेदार को सूचना दे आवे वह तथा उसके अन्य साथी उन लोगो पर तब तक निगाह रक्खेंगे। वह अजनबी कुछ दूरी तक नदी के किनारे चलते रहे फिर वे बाध की सडक पर जो कि नदी के समानान्तर जा रही थी उस पर आ गए। क्योकि अजनबी यह तय नहीं कर पा रहे

थे कि किस रास्ते जाया जावे अस्तु उसी आदमी ने उनसे पूछा कि वे किधर जाना चाहते हैं वह उन्हें रास्ता दिखला देगा। उन अजनबी लोगो ने कहा कि वे रेलवे की (लाइन) पटरी पर जाना चाहते है इस पर उस आदमी ने उनसे कहा कि वे बाध की सडक पर उत्तर पश्चिम की ओर चले जावें। अतएव वे अजनबी उस सडक पर कुछ दूर तक गए पर कुछ मिनटो के उपरात वे गोविन्दपुर गाव के पास आराम करने के लिए बैठ गए। जब वे आराम कर रहे थे तो वह आदमी और अधिक गाव वालो को बुलाने के लिए वहा से खिसक गया। जब वह वापस लौटा तो उसने देखा कि वे अजनबी भागे जा रहे हैं। दफेदार के भाई ने दौड कर उनका रास्ता रोक लिया और उनसे उसके साथ थाने को चलने के लिए कहा। उन्होंने उसे धक्का देकर हटा दिया। जब दुबारा उसने उन्हे रोकना चाहा तो उन्होंने पिस्तौलें निकाल ली और उस भीड को जो तब तक बढ गई थी डराने के लिए हवा मे फायर किए। भीड उनसे कुछ दूर हो गई पर वह उनका पीछा बराबर कर रही थी। इस प्रकार वे अजनबी लोग ११ बजे दुमुदा गाव पहुच गए।

जब गाव वालो ने देखा कि उनकी गोली से किसी को कोई हानि नही पहुची तो उन्होंने उन अजनबियो का घेरा और उनके पास पहुचने का प्रयत्न किया। जब वह व्यक्ति उनसे पच्चीस कदम पर पहुच गया तो उन्होंने गोली चलाई। मनोरंजन के पिस्तौल की गोली राजू महन्ती के लगी और वह गिर गया। इस पर चार व्यक्तियो को छोड कर सभी गाव वाले भाग गए। दफेदार का भाई और अन्य तीन बालासोर पुलिस और मैजिस्ट्रेट को सूचना देने के लिए चल दिए। बालासोर उस स्थान से आठ मील था। ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी कुछ दूर चलने के उपरात बैठ गए और उन्होने थोडा जलपान किया। गाव वाले उनके पीछे थे उन्होने अब बाध की सडक को छोड दिया और पूर्व की ओर चलने लगे।

सडक पार करके एक छोटी नदी मिली उसको उन्होंने चलकर पार किया। उन्होने नदी पार करते समय अपने कपडा और रिवालवरो को अपने सर पर बाध लिया था। वे एक एक करके नदी को पार कर रहे थे। बीच बीच मे कभी कभी भीड को दूर रखने के लिए गोली चलाते जाते थे। उसके उपरात वे चसखड नामक गाव की ओर बढने लगे। एक धान के खेत मे एक पुराने तालाब के बाध पर एक ऊची बाभी पर (चीटियो द्वारा बनाया गया मिटटी का ऊचा ढेर जिस पर झाडिया उगी हुई थीं) खडे हो गए। वे उस स्थान से समस्त प्रदेश को देख सकते थे परन्तु झाडियो के कारण उनको कोई नही देख सकता था।

उसी समय बालासोर से आने वाले पुलिस और सेना दल बूढा बालग नदी के किनारे पहुच गया। मैजिस्ट्रेट ने पुलिस को दो दलो मे बाट दिया था। एक दल मयूरभंज की सडक से खेतो मे होता हुआ बढा और दूसरा मिदनापुर सडक से चला। दोनो दल उस स्थान पर आकर मिल गए जहा थानेदार ने एक सफेद झडा गाड दिया था। थानेदार दफेदार के साथ पहले ही वहा पहुच चुका था।

मैजिस्ट्रेट ने ३०३ स्पोर्टिंग राइफिल से गोली इस उद्देश्य से चलाई कि क्रातिकारी जान जाय कि पुलिस के पास लम्बी मार वाली राइफिलें हैं और आत्म समर्पण कर दें क्रातिकारियो ने भी गोली का जवाब गोली से दिया और लगभग बीस मिनट तक दोनो ओर से गोलिया चलती रही पुलिस दल मे कुछ लोग हताहत हो गए।

बीस मिनट के उपरांत गोली चलनी बंद हो गई और दो व्यक्ति हाथ ऊंचा उठा कर खड़े हो गए। मैजिस्ट्रेट ने गोली चलना रुकवादी। पुलिस दल सतर्कता पूर्वक सावधानी से आगे बढ़ा और क्रांतिकारियों के पास पहुंचा तो ज्ञात हुआ कि एक व्यक्ति मर चुका था और दो घायल हो गए थे। मैजिस्ट्रेट ने शेष को गिरफ्तार कर लिया और मृतक तथा घायलों के साथ उन्हें बालासोर ले आया। मृत शव को शव लय में भेज दिया गया घायलों को हास्पिटल भेज दिया गया और जो गिरफ्तार किए थे उन्हें हिरासत मे भेज दिया गया।

चित्त प्रिय राय चौधरी घटना स्थल पर ही मर गए। ज्योतीन्द्र नाथ बहुत अधिक घायल हो गए थे उन्हें ६ सितम्बर को ८.३० बजे रात्रि को हास्पिटल में भर्ती कर दिया गया। उनके पेट तथा बायें हाथ में गहरे घाव थे उनका बायां हाथ क्षत विक्षत हो गया था। ज्योतिश पाल के एक गोली पीठ की बाईं तरफ लगी और छाती से होकर निकल गई। ज्योतीन्द्र नाथ तथा ज्योतिश पाल को हास्पिटल ले जाया गया निरेन और मनोरंजन को कारागार भेज दिया गया। ज्योतीन्द्र का आपरेशन किया गया और पट्टी बांध दी गई। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ ने पट्टी को फाड़ दिया और टांकों को तोड़ दिया। पुनः रक्त बहने लगा और दूसरे दिन प्रातःकाल पांच बजे उस वीर की मृत्यु हो गई। अपनी मृत्यु को स्वयं निमन्त्रित कर वीर ज्योतीन्द्र नाथ ने अपनी बहिन की इच्छा पूरी कर दी। हावड़ा षडयंत्र अभियोग के समय उनकी बहिन ने ज्योतीन्द्र को लिखा था "मैं दूसरी बार शेर को पिंजड़े में बन्द हुआ न देखूं।"

ज्योतीष चन्द्र पाल का घाव ठीक हो गया उन्हें २२ सितम्बर को जेल भेज दिया गया। ज्योतिष चन्द्र पाल, मनोरंजन सेन गुप्त, और निरेन्द्र दास गुप्त पर १ अक्टोबर १९१५ को बारीसाल में विशेष अदालत में अभियोग चलाया गया। १६ अक्टोबर को मनोरंजन और निरेन को प्राण दण्ड तथा ज्योतिष चन्द्र पाल को चौदह वर्षों के लिए काले पानी की सजा हुई। मनोरंजन और निरेन को २२ नवम्बर १९१५ को बालासोर जेल में फांसी दे दी गई।

दस नवम्बर १९१५ को बालासोर हास्पिटल मे ज्योतीन्द्र नाथ की मृत्यु हुई। इस प्रकार उस महान क्रांतिकारी का अन्त हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ केवल एक साहसी वीर क्रांतिकारी नेता ही नहीं थे उनमें संगठन करने और अपने अनुयायियों को सर्वोच्च बलिदान करने की प्रेरणा देने की अपूर्व और अदभुत क्षमता थी। सभी क्रांतिकारी उन्हें अपना सर्वोच्च नेता और मार्ग दर्शक मानते थे। उन्होंने एक शक्तिशाली क्रांतिकारी संगठन खड़ा किया था और सशस्त्र क्रांति की भूमिका तैयार की थी। महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस भी उनसे बहुत प्रभावित थे और उनका आदर करते थे। नरेन भट्टाचार्य (एम एन राय) उनसे बहुत अधिक प्रभावित थे और उनके द्वारा ही क्रांतिकारी दल में दीक्षित थे।

जब ज्योतीन्द्र नाथ बालासोर हास्पिटल में घायल होकर पड़े थे तब कलकत्ता के वरिष्ठ योरोपियन पुलिस अफिसर टगार्ट और डेनहम ने उनके साहस और शौर्य से प्रभावित होकर उनसे अत्यंत आदर के साथ कहा "मुकर्जी मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?" वे मुस्कराये और बोले "धन्यवाद" "सब समाप्त हो चुका है। अन्तिम विदा।" केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के अधिकारी डेनहम ने ज्योतीन्द्र नाथ से हुए युद्ध की

जो विस्तृत रिपोर्ट भेजी थी उसमें उसने ज्योतीन्द्र नाथ के सम्बन्ध में लिखा था "ज्योतीन्द्र नाथ बंगाली क्रांतिकारियों में सबसे अधिक साहसी, वीर और खतरनाक क्रांतिकारी थे जब तक उनकी गोलियां समाप्त नहीं हो गईं वे बराबर युद्ध करते रहे।"

ज्योतीन्द्र नाथ केवल साहसी और वीर ही नहीं थे। वे अत्यन्त उदार हृदय स्नेहशील और उच्च कोटि के नैतिक तथा आध्यात्मिक व्यक्ति भी थे। जो भी उनके सम्पर्क में आता उनका बन जाता था। अपने समय में क्रांतिकारियों के वे सर्वमान्य नेता थे।

जब भारत में अंग्रेजी राज्य शासन का चरम सीमा का आतंक छाया हुआ था। सर्व साधारण व्यक्ति देश की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में चर्चा करने में भी भयभीत होता था तब इन क्रांतिकारियों ने सर पर कफन बांध कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी। यह उन्हीं क्रांतिकारियों के आत्म बलिदान का परिणाम है कि भारत वासियों में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उत्कट भावना जीवित रही वह मरी नहीं। इन क्रांतिकारी वीर बलिदानियों के बलिदान के फलस्वरूप देश में देश भक्ति की तीव्र भावना उत्पन्न हुई, उसकी नींव पर ही स्वतन्त्रता आन्दोलन का विशाल भवन खड़ा किया जा सका।

परन्तु आज की पीढ़ी उन देश भक्त क्रांतिकारियों को भूल गई जिन्होंने अपने प्राणों को भेंट चढ़ा कर देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति की चाह जीवित रखी। ज्योतीन्द्रनाथ जैसे महान देश भक्त बलिदानी को आज कोई नाम भी नहीं जानता। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। उनके शौर्य और बलिदान की गाथा किसी लेखक या कवि ने नहीं गाई। उनका कोई स्मारक नहीं बना उनका चित्र लोकसभा की दीर्घा में नहीं लगाया गया। डाक विभाग ने उनके चित्रों के टिकिट निकालने की भी आवश्यकता नहीं समझी। सत्ता की आपा धापी में हमारे राजनीतिज्ञ उन क्रांतिकारियों को तो भूल ही गए जिनकी हड्डियों पर स्वतन्त्रता का भवन खड़ा हो सका। सर्व साधारण भारतीय भी उन्हें भूल गए। हमारे इस लज्जाजनक आचरण और व्यवहार को देख कर स्वयं कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी।

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥"

के शायर के शब्दों में यदि हमने देश भक्त बलिदानियों की प्रेरणादायक स्मृति को स्थायी बनाकर देश में गहन देश भक्ति की परम्परा स्थापित की होती तो देश की आज जैसी निराशामय और दयनीय स्थिति है, वैसी नहीं होती।

सरदारसिंह राव राणा

भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त करने के लिए जिन भारतीय देश भक्तों और क्रांतिकारियों ने आजन्म स्वदेश से निर्वासित रहकर भारत के बाहर और देश के अन्दर भारत को स्वतन्त्र करने के लिए भागीरथ प्रयत्न किया और मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान की पावन परम्परा स्थापित की उनमें सरदारसिंह जी राव जी राणा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हम कृतघ्न भारतीयों ने उन महान देश भक्त बलिदानियों को विस्मृत कर दिया। हमने भारत की तरुण पीढ़ी को उनके त्याग और बलिदान की पावन और प्रेरणादायक गाथा नहीं सुनाई जिससे प्रेरणा लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त जन्म लेने वाली पीढ़ी भी देश के लिए त्याग करने का पाठ पढ़ती। उसी का यह परिणाम है कि आज भारत में देश के लिए त्याग करने की भावना कुण्ठित हो गई है और हमारी तरुणाई उन वीर बलिदानी क्रांतिकारियों का नाम भी नहीं जानती जिनके मांस और हड्डियों पर भारत की स्वतन्त्रता का यह भव्य भवन खड़ा हो सका है। तो यदि आज का शिक्षित युवक उस महान देश भक्त क्रांतिकारी सरदार सिंह राव राणा का नाम नहीं जानते तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हमारे इतिहासकारों और आज जो सत्ता में हैं उनकी विरदावलि के गायकों ने भी उन देश भक्त क्रांतिकारियों की नितांत उपेक्षा की जिन्होंने अपने प्राणों को देकर देश में स्वतन्त्र होने की भावना को जीवित रक्खा—मरने नहीं दिया।

सरदार सिंह जी रावजी राणा का जन्म ईसवी सन १८७० में भूतपूर्व लिम्बडी राज्य काठियावाड सौराष्ट्र में हुआ। उनका जन्म स्थान लिम्बडी के समीप कन्थारिया ग्राम है। सरदारसिंह जी ने लिम्बडी राजवंश में जन्म लिया था। राजवंश वालों को जागीर दी जाने की प्रथा उस समय देशी राज्यों में प्रचलित थी और उन्हीं वंशों से यदि आवश्यकता होती तो महाराजा किसी को गोद लेकर उसे सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित करता था। सरदार सिंह राजघराने में उत्पन्न होने के कारण बाल्यकाल में वैभव और विलास के वातावरण में पाले गए। उनके वंश को देश भक्ति उत्तराधिकार में मिली थी। उनके वंशजों को राणा की उपाधि इसलिए दी गई थी कि जब प्रात स्मरणीय महाराणा प्रताप मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए सम्राट अकबर जैसे शक्तिशाली सम्राट से बीस लम्बे वर्षों तक युद्ध कर रहे थे तो सरदार सिंह राव राणा के पूर्वजों ने अन्त तक महाराणा प्रताप के साथ रह कर मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया था। उनकी निष्ठा, देश भक्ति और वीरता के उपलक्ष्य में उनको राणा की उपाधि दी गई थी।

सरदारसिंह जी की प्रारम्भिक शिक्षा उनके गांव में ही हुई इसके पश्चात कुछ समय तक उन्होंने धारगपुरा के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। धारगपुरा से वे राजकोट आए और राजकोट हाई स्कूल में प्रवेश लेकर मैट्रिक परीक्षा के लिए अध्ययन करने लगे। १८९१ में राणा ने राजकोट हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बम्बई के प्रसिद्ध एलिफिंस्टन कालेज में प्रविष्ट हो गए। जब वे राजकोट में अध्ययन कर रहे थे तो वे उस समारोह में सम्मिलित हुए थे जो महात्मा गांधी के शिक्षा प्राप्त करने के लिए इङ्गलैंड जाने के समय राजकोट में हुआ था। राणा ने अपने एक पत्र में उस समारोह में एक दर्शक की भांति सम्मिलित होने

का गव के साथ उल्लेख किया है। सम्भवत तभी से उनके अ तर म यह भावना दृढ हो गई थी कि व भी उच्च शिक्षा प्राप्त करके विलायत जावेंगे।

एलिफिन्स्टन कालेज मे उन्हें स्वच्छद तथा नया वातावरण मिला। वे स्वभाव से ही चेतनाशील और क्रियाशील थे अस्तु उन्होंने कालेज की विभिन्न प्रवृत्तियो म भाग लेना, समाचार पत्र पढना, तथा देश की समस्याओ तथा राजनीति का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय साधारण परिवारो के युवको के लिए भी यह असाधारण बात थी। एक राजघराने के युवक के लिए देश की राजनीति मे रुचि लेने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी और वह उनके लिए खतरनाक भी थी।

जब वे कालेज मे अध्ययन कर रहे थे तभी १८८५ मे पूना मे कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। कांग्रेस अधिवेशन के लिए जब स्वय सेवको का दल सगठित किया गया तो उन्होंने उसमे अपना नाम दे दिया। उन दिनो सभी शिक्षित सभ्रात व्यक्ति अग्रेजी वेश भूषा धारण करते थे पर राणा काठियावाडी वेश भूषा म रहते थे। कांग्रेस के स्वय सेवक दल को सगठित करने वाले उनके व्यक्तित्व और वेश भूषा से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने राणा को कांग्रेस अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की निजी सेवा म रख दिया। श्री राणा की क्रियाशीलता कर्तव्य भावना और देश भक्ति के उदात्त विचारो से श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने हस्ताक्षरो सहित अपना एक चित्र तथा अपने अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति उन्हें (कांग्रेस अधिवेशन मे पढे जाने से पूर्व) दी थी। पूना कांग्रेस अधिवेशन मे पहली बार श्री राणा ने लोकमान्य तिलक का भाषण सुना। युवक हृदय पर लोकमान्य तिलक के ओजस्वी भाषण का ऐसा गहरा प्रभाव पडा कि व लोकमान्य तिलक के प्रशसक और क्रातिकारी विचारधारा के बन गए।

बम्बई के एलिफिन्स्टन कालेज से १८८७ म राणा ने बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की और २३ अप्रेल १८९८ को उन्होने कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लन्दन को प्रस्थान किया। उन दिनो भारत मे प्रत्येक ऊचे घराने के युवक की यह महत्वाकाक्षा रहती थी कि वह लदन से बार एट ला हो कर आवे क्योकि यही लोग भारत म शीर्ष प्रशासनिक पदो पर नियुक्त किए जाते थे। श्री राणा ने लदन के विधि महाविद्यालय (ला कालेज) मे १० मई १८९८ को प्रवेश लिया। यह सयोग की बात थी कि १० मई १८९८ को भारत की प्रथम सशस्त्र राज्य क्राति (१८५७ के विद्रोह) की ४१ वी वर्ष गाठ थी। नियति सम्भवत राणा को भारत के क्रातिकारी आदोलन के लिए तयार कर रही थी।

लदन म राणा ने अन्य भारतीय विद्यार्थियो की भाति अग्रेजी वेश भूषा को धारण करना स्वीकार नही किया। वे काठियावाडी वेश भूषा मे ही रहते थे। उनका कहना था कि उनका भारत म ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा की भावना तथा स्वदेशाभिमान को व्यक्त करने का यही उपाय सूझा था इस कारण साथियो और मित्रो के आग्रह करने पर भी उन्होंने अग्रेजी वेश भूषा को धारण करना स्वीकार नही किया। इसका परिणाम यह हुआ कि व भारतीयो मे चर्चा का विषय बन गए और उनका श्यामजी कृष्ण वर्मा से सम्पर्क स्थापित हो गया जो एक वर्ष पूर्व लदन आ गए थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रातिकारी विचार धारा के थे। जब रैण्ड की हत्या हुई और लोकमान्य तिलक को ६ वर्ष के लिए अडमन मे कारावास का दण्ड दिया गया और

श्यामजी कृष्ण वर्मा पर भी सरकार का सन्देह हो गया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत में रहना निरापद नहीं समझा और वे लंदन चले आए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ऐसे क्रांतिकारी भारतीयों का एक संगठन खड़ा करना चाहते थे जो भारत को स्वाधीन बनाने के लिए अपना जीवन अर्पण करें। राणा के अन्तर में भी यह भावना तीव्र वेग से प्रवाहित हो रही थी अस्तु वे दोनों ही अनन्य घनिष्ठ मित्र बन गए।

सर्व प्रथम दोनों दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में स्थापित इंडियन एसोसियेशन में कार्य करने लगे। इंडिया ऐसोसियेशन भारतीयों को कुछ राजनीतिक अधिकार दिए जाने के लिए इङ्गलैंड में वैधानिक आन्दोलन करती रहती थी। भला श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा सरदार सिंह रावजी राणा का यह भीख मांगने की नीति कैसे स्वीकार हो सकती थी। शीघ्र ही उनका दादा भाई नौरोजी से इस प्रश्न पर मतभेद हो गया और उन्होंने इंडिया एसोसियेशन से त्याग पत्र दे दिया। अब वे एक पृथक क्रांतिकारी संगठन खड़ा करने के प्रयत्न में लग गए।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने "इंडियन सोश्यालाजिस्ट" क्रांतिकारी पत्र निकालना शुरु किया जो सशस्त्र विद्रोह का समर्थक था। गुप्त रूप से यह भारत में पहुंचता था। इस कार्य में राणा उनके प्रमुख सहयोगी और सहायक थे। क्रांतिकारी संगठन को मूर्त रूप देने के लिए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने "होमरूल सोसाइटी" की स्थापना की। स्वयं श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा उसके अध्यक्ष और राणा उसके उपाध्यक्ष थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा सरदारसिंह राव राणा चाहते थे कि ब्रिटेन में जो भी भारतीय युवक विद्याध्ययन के लिए आते हैं उनसे सम्पर्क स्थापित कर उनको क्रांतिकारी संगठन में दाखिल किया जावे। इसी उद्देश्य से श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में एक मकान खरीद लिया जो "इंडिया हाउस" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहां भारतीय विद्यार्थी एकत्रित होते थे और देश की समस्याओं की चर्चा करते थे। क्रमशः इंडिया हाउस लन्दन में भारतीय क्रांतिकारियों का मुख्य केन्द्र बन गया और ब्रिटेन का गुप्तचर विभाग उस पर दृष्टि रखने लगा।

जुलाई १६०० में पेरिस में एक विशाल ऐतिहासिक प्रदर्शनी हुई। उसमें भारत के व्यापारी भी आये थे। राणा उस प्रदर्शनी को देखने पेरिस गए वहां उनकी बम्बई के एक प्रसिद्ध जौहरी से जान पहचान हो गई जो मोतियों की दूकान लेकर आया था और पेरिस को केन्द्र बना कर योरोपीय देशों में मोतियों का व्यापार करना चाहता था। उसने राणा से कहा कि वे उसकी फर्म में उसके साझीदार बन जावें। यद्यपि राणा का व्यापार करने का कोई विचार नहीं था परन्तु क्रांतिकारी संगठन को धन की आवश्यकता के विचार से तथा जौहरी के आग्रह से उन्होंने उसका भागीदार बनना स्वीकार कर लिया। आगे चलकर इस व्यापार से होने वाले लाभ से राणा ने भारतीय क्रांतिकारियों को बहुत आर्थिक सहायता दी और अनेक क्रांतिकारी योजनाओं का सम्पूर्ण व्यय स्वयं वहन किया।

भारत में सशस्त्र राज्य क्रांति के लिए यह आवश्यक था कि क्रांतिकारियों को सैनिक शिक्षा दी जाय तथा अस्त्र शस्त्र की व्यवस्था की जावे। इसी उद्देश से राणा ने रूसी क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया। लोकमान्य तिलक तथा श्री अरविन्द राणा के इस सम्बन्ध को जानते थे। उन्होंने श्री मदन जादव जो भारतीय सेना में उच्च पद पर कार्य कर चुके थे को 'पेरिस स्कूल आफ वार" में सैनिक

सम्मान मे नही निकला था और उसकी भस्मि को असख्य व्यक्ति साने चादी तथ साधारण डिब्बिया म भर कर ले गए तो भारतीय क्रातिकारियो ने कन्हाइलाल दत्त के शव की थोडी सी भस्मि इगलैंड म भारतीय क्रातिकारियो को भी भेज दी। भारतीय क्रातिकारियो ने लदन के इडिया हाऊस मे शहीद की भस्मि का स्वागत करने के लिए एक जलसा करने का निश्चय किया। परन्तु प्रश्न यह था कि उस जलसे का सभापतित्व कौन करे। श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा अन्य सभी क्रातिकारियो को भय था कि जो भी उस जलसे का सभापतित्व करगा उसको गिरफ्तार कर लिया जावेगा। श्री राणा ने उस जलसे का सभापतित्व करने के लिए अपने को प्रस्तुत किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हे बहुत मना किया क्योकि व नही चाहते थे कि राणा जेल चले जावें पर श्री राणा ने अपने मित्र के आग्रह को भी ठुकरा कर उस जलसे का सभापतित्व किया। उस जलसे म जितने भी भारतीय उपस्थित थे उन सबो ने कन्हाई लाल दत्त की भस्मि का मस्तक पर टीका लगा कर शपथ ली कि वे भारत से ब्रिटिश शासन का समाप्त करके ही रहग।

इस समारोह के कारण लदन के राजनीतिक क्षेत्र म सनसनी फैल गई। सरकार चौकन्नी हो गई और इडिया हाऊस पर ब्रिटन के गुप्तचर विभाग की वक्र दृष्टि हो गई। ब्रिटेन के गुप्तचर विभाग की इडिया हाउस पर इतनी कटोर निगरानी थी कि वहा रहकर गुप्त रूप स कोई राजनीतिक काय कर सकना सम्भव नही रहा। उधर श्री राणा ने कानून की पढाई भी समाप्त करली थी अस्तु वे लदन छोड कर पेरिस चले आए।

पेरिस मे उनका परिचय मैडम कामा स हुआ और वे दोनो ही क्रातिकारी कार्यों म एक दूसरे की सहायता करने लग। जब महान क्रातिकारी मैडम कामा स्टटगाट (जरमनी) मे अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन मे भारत की प्रतिनिधि के रूप मे भाग लेन गई तो सरदार सिंह राव राणा भी उनके साथ उस सम्मेलन में भाग लेन गए थे। ब्रिटिश प्रतिनिधियो के विरोध करने पर भी मैडम कामा तथा श्री राणा के उद्योग मे सम्मेलन ने भारत की पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसी ऐतिहासिक सम्मेलन म भाषण देते हुए मैडम कामा ने भारत के राष्ट्रीय ध्वज को फहराया था।

यह हम पहले ही कह चुके हैं कि हेमचन्द्र दास कानूनगो श्री राणा के पास रह कर बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे तो श्री राणा ने बम बनाने की विधि को विस्तार से विवेचना करने वाली एक महत्वपूर्ण पुस्तक जिसको पोलिश और रूसी क्रातिकारियो ने तैयार किया था उसका अग्रेजी म अनुवाद करवाया और उस अनुवाद की कई प्रतियां करवा द तथा भारत भिजवाई। इस पुस्तक की एक प्रति पुलिस को मानिकतल्ला गार्डन म स्थित क्रातिकारियो के केन्द्र म मिली थी। जिसकी भारतीय क्रातिकारी बहुत सी लिखित प्रतिया बना रहे थे। जिससे भारत मे प्रत्येक केन्द्र मे यह बम बनाने की पुस्तक पहुच सके। पुस्तक की दूसरी प्रति नासिक म जब गणेश सावरकर के मकान की तलाशी हुई तो वहा मिली और पुस्तक की तीसरी प्रति लाहौर मे भाई परमानन्द के एक बक्स म मिली। ब्रिटिश कोलम्बिया म विक्टोरिया म हुए षडयन्त्र की जब जाच पडताल हुई तो ज्ञात हुआ कि उस बम की पुस्तक की एक प्रति पेरिस स जनवरी १९१४ म हरनामसिंह साहरी के नाम भेजी गई थी। बम

की इस प्रसिद्ध पुस्तक की प्रतियो को श्री राणा ने ही भारत तथा अन्य देशो मे भारतीय क्रातिकारियो को भेजा था ।

परिस मे वे जो मोती का व्यापार करते थे उसका मुख्य उद्देश्य स्वय अपने लिए धन अर्जित करना नही था वरन देश मे राजनीतिक चैतन्य उदय हो, भारतीयो मे देश भक्ति की भावना जागृत हो और सशस्त्र क्राति की तैयारी के लिए जो काय किया जा रहा था उसके लिए अथ की व्यवस्था करने के लिए करते थे । यही कारण था कि वे देशभक्त राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ तथा क्रातिकारियो पर बहुत अधिक धन व्यय करते थे । उन्होने जो ऊपर वर्णित तीन छात्र वत्तिया दी थीं उनका उद्देश्य यह था कि राष्ट्रीय भावना वाले देशभक्त भारतीय युवक भी स्वतत्र राष्ट्रो मे जाकर स्वतत्रता क्या है इसका अनुभव प्राप्त करें और उसम उनकी देशभक्ति गहन हो । जब मैडम कामा ने 'ब दे मातरम' 'मदन तलवार' तथा 'इडियन फ्रीडम' पत्र निकाले तो सरदार सिंह राव राणा ही उनके प्रमुख सहयोगी और सहायक थे । श्री राणा के अथक परिश्रम तथा आर्थिक सहायता के परिणाम स्वरूप ही यह पत्र प्रकाशित हो सके और लोकप्रिय हुए ।

यही नहीं श्री राणा भारतीय क्रातिकारियो को विदेश से अस्त्र शस्त्र भेजने की व्यवस्था भी करते थे । वे विभिन्न उपायो से भारतीय क्रातिकारियो के पास रिवाल्वर और पिस्तौल आदि भिजवाते रहते थे । जिस पिस्तौल से नासिक के मैजिस्ट्रेट जैकसन की १९०९ मे कन्हार ने हत्या की और १९११ म तिनेवली के मैजिस्ट्रेट की हत्या की गई वे दोनो पिस्तौल उन्ही बीस स्वचालित ब्राऊनिग पिस्तौलो मे से थे जिन्हें १९०९ म श्री राणा ने इडिया हाऊस के रसोइए चतुभु ज अमीन के द्वारा लदन म वीर सावरकर के पास भेजे थे । श्री राणा ने एक बक्स के गुप्त तले म उन बीस ब्राऊनिग पिस्तौलो को छिपाकर, चतुभु ज अमीन को उस बक्स को वीर सावरकर को देने के लिए कहा था । सावरकर न उस बक्स को चतुभु ज अमीन के साथ भारत भेजा । बाद को जब चतुभु ज अमीन गिरफ्तार हुआ और पुलिस द्वारा घोर और क्रूरता पूर्ण यातनाए दिए जाने पर मुखबिर बन गया तो उसने यह बयान दिया था कि वह उस बक्स को जिसमे पिस्तौल थे पेरिस मे श्री राणा के मकान से बम्बई लाया था । मदनलाल धीगरा ने कर्नल वायली को जिस रिवाल्वर से मारा था वह भी श्री राणा ने ही सावरकर के पास भेजा था ।

मडम कामा ने देखा कि श्री राणा और सावरकर उनके दोनो सहयोगी फस जावेंगे तो क्रांतिकारी आदोलन को गहरा धक्का लगेगा । अस्तु उस वीर साहसी महिला न एक अप्रत्याशित आत्म बलिदान का साहसिक काय किया । वे परिस मे ब्रिटिश काउसिल के कार्यालय मे गई और इस आशय का लिखित बयान दे दिया कि यद्यपि यह सही है कि पिस्तौलो का बादस श्री राणा के मकान मे था परन्तु श्री राणा और श्री सावरकर को इसके सम्बन्ध मे कुछ भी ज्ञात नही था अस्तु वे दोनो निर्दोष हैं । उन पिस्तौलो को इकट्ठा करने के लिए मैं उत्तरदायी हू मैंने ही उन्हें बाक्स म रक्खा और चतुर्भुज अमीन के साथ मैंने ही उन्हें बम्बई भेजा था । अतएव अकेली मैं ही पिस्तौलो के सम्बन्ध मे सारे कार्यों के लिए उत्तरदायी हू । मैं अकेली दोषी हू ।

उस समय क्योकि वीर सावरकर को फ्रास की भूमि पर पकडने के कारण

ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय उलझनो मे फसा हुआ था अस्तु ब्रिटिश सरकार मैडम कामा के बयान पर कार्यवाही करके और अधिक उलझनो म फसना नही चाहती थी अस्तु सरकार ने उनके बयान पर कोई भी कार्यवाही नही की। परतु यह घटना मैडम कामा के साहस, शौय और साथियो के लिए आत्म बलिदान की उत्कट भावना पर सुदर प्रकाश डालती है।

श्री राणा केवल अस्त्र शस्त्र ही भारत के क्रातिकारियो को नही भिजवाते थे वे भारत म गुप्त रूप से क्रातिकारी साहित्य भी भेजते थे। उनका घर भारतीय क्रातिकारियो के लिए खुला हुआ था। श्री सावरकर, सेनापति बापट, हेमचद्रदास, अब्बास, लाला हरदयाल बहुत दिनो तक उनके आश्रय म रहे थे। जब सावरकर को इगलैंड म गिरफ्तार कर भारत लाया जा रहा था और वीर सावरकर ने समुद्र में कूद कर फ्रास की भूमि पर पहुचने की योजना बनाई थी तो श्री राणा एक मोटर म मैडम कामा तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि जैसे ही वीर सावरकर फ्रास की भूमि पर पैर रखे उन्हें वे ले जावें। परतु वीर सावरकर उस स्थान पर न पहुच कर दूसरे स्थान पर पहुचे और ब्रिटिश सैनिक जो उनका पीछा कर रहे थे उन्होने उन्ह गिरफ्तार कर लिया। उसके उपरात मैडमकामा तथा श्री राणा ने उन्ह छुडाने का बहुत प्रयत्न किया। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय मे अभियोग चला परतु वे सफल नही हुए और वीर सावरकर को भारत सरकार को सौंप दिया गया।

श्री राणा को भारत सरकार तथा ब्रिटिश सरकार अत्यन्त खतरनाक क्रातिकारी और ब्रिटिश शासन का घोर शत्रु मानती थी। रालेट कमेटी ने भी अपनी रिपोट म विप्लवकारी कार्यों का भारत म श्रीगणेश करने वाले मे उनको प्रथम स्थान दिया है। वे भारतीय क्रातिकारियो की प्रथम पीढी के प्रमुख व्यक्तियो म से एक थे। अतएव ब्रिटिश सरकार ने प्रथम महायुद्ध के पूव कई बार फ्रास की सरकार पर यह दबाव डाला कि वे राणा तथा मैडम कामा को फ्रास से निर्वासित कर भारत सरकार के सुपुर्द करदें पर उस समय फ्रैंच सरकार ने ब्रिटेन की प्राथना को अस्वीकार कर दिया था।

श्री राणा के क्रातिकारी कार्यो का परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार ने उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया। काठियावाड के पालीटिकल एजेंट के द्वारा भारत सरकार के विदेशी विभाग ने उनके माता पिता तथा उनके अन्य राजवश के सम्बधियो को यह आदेश दिया कि वे उनसे पत्र व्यवहार भी नहीं कर सकेंगे।

इन्ही दिनो ब्रिटेन के बादशाह पाचवे जाज पेरिस आए श्री श्यामजी कृष्ण को जैसे ही सम्राट के आगमन का समाचार मिला व पेरिस से जैनेवा चले गए। उन्होने श्री राणा को भी पेरिस छोड देने का परामश दिया परतु श्री राणा ने पेरिस नही छोडा। उसका परिणाम यह हुआ कि जब तक पाचवे जाज पेरिस मे रहे श्री राणा को पुलिस की कडी निगरानी मे रहना पडा।

सन १९१४ म जब प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ हुआ तो मैडम कामा और श्री राणा फ्रास स्थित भारतीय सेनाओ से सम्पक स्थापित कर भारतीय सनिको को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने की प्रेरणा देने लगे। उन्होने कई लेख लिखे कि यह भारत का युद्ध नही है उन्ह ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मजबूत बनाने के लिए अपना

बलिदान नही देना चाहिए। मैडम कामा और श्री राणा मार्सेलीज के समीप भारतीय सैनिक शिविर मे जाकर भारतीय सैनिको से सम्पर्क स्थापित करते थे। जब जरमनी ने फास पर आक्रमण कर दिया और भारतीय सेनाएं फ्रास की रक्षा के लिए पेरिस म आई तब ब्रिटिश सरकार ने फ्रास सरकार से माग की कि मैडम कामा और सरदार सिंह रावजी राणा को गिरफ्तार करके उनके सुपुर्द कर दिया जावे। फास उस समय अपने मित्र राष्ट्र की उपेक्षा नही कर सकता था। अस्तु फ्रास सरकार ने ६ सितम्बर १६१४ को श्री राणा को गिरफ्तार कर बोरोडेक्स जेल भेज दिया। श्री राणा की इस गिरफ्तारी का फ्रास की "मानव अधिकार सरक्षक समिति" तथा फ्रास के एक चम्बर ने जिसके श्री राणा सदस्य थे विरोध किया। उस विरोध का परिणाम यह हुआ कि ७ जनवरी १६१५ को उन्हें जेल से छोड दिया गया पर उनको परिवार सहित (उनकी जरमन पत्नी और पुत्र रणजीत) फ्रास के उपनिवेशन मार्टिनिक्यू द्वीप में नजरबन्द कर दिया गया। उस द्वीप के अस्वस्थकर जलवायु तथा नजरबन्दी मे शारीरिक और मानसिक कष्टो के कारण १६ वर्ष का पुत्र रणजीत जो पहले ही रोगी था उसका स्वास्थ्य तेजी से गिर गया और थोडे समय के उपरात २७ जनवरी १६१५ को उसकी मृत्यु हो गई। श्री राणा की जरमन पत्नी भी उस टापू के अस्वस्थ जलवायु और पुत्र शोक को सहन नही कर सकी। उनका स्वास्थ्य भी तेजी से गिरता गया और उनकी भी वहा मृत्यु हो गई।

मातृभूमि के लिए अपनी प्रिय जीवन सगिनी और पुत्र का बलिदान देकर पाच लम्बे वर्षों तक कारागार म रहकर जब युद्ध समाप्त हुआ तो श्री राणा कारागार से मुक्त हुए और १६२० म उस टापू से पेरिस आए। उस समय श्री विट्ठल भाई पटेल और मौलाना मुहम्मद अली पैरिस मे ही थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि श्री राणा पैरिस आ रहे हैं तो वे स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए पहुचे। उन दोनो नेताओ से ही श्री राणा को प्रथम बार ज्ञात हुआ कि महात्मा गाधी के नेतृत्व म भारत मे स्वतन्त्रता का आदोलन सबल हुआ है और राष्ट्रीय भावना तेजवान बनी है।

जब वे टापू से पेरिस आए तो वे नितात एकाकी थे उनका लाभदायक व्यापार नष्ट हो चुका था और उनका परिवार भी नष्ट हो चुका था। परन्तु उस साहसी देशभक्त ने निराशा को अपने जीवन को निष्क्रिय नही करने दिया। पेरिस मे आते ही उन्होने अपने व्यापार तथा राजनीति के सूत्रो को फिर सम्हाला और वे पुन सक्रिय हो गए। जब वे पेरिस आए तो उनकी अभिन्न मित्र भारतीय क्रातिकारियो की सवमान्य नेता मैडम कामा भी मुक्त कर दी गई थी। उनकी आयु अधिक हो चुकी थी और युद्ध काल म पेरिस से दूर एक गाव म दीर्घकालीन नजरबन्दी ने उनके स्वास्थ्य को जर्जर कर दिया था। जीवन का दीप बुझने वाला था और वे मातृभूमि की पावन गोद मे अनन्त विश्राम करने के लिए लालायित थी। श्री राणा ने उन्हें शीघ्र से शीघ्र भारत जाने की प्रेरणा दी और उनको भेजने की व्यवस्था मे दौड धूप की। बहुत प्रयत्न करने पर भारत सरकार ने मैडम कामा को भारत आने की आज्ञा दे दी।

मदनलाल धीगरा के बलिदान के उपरात श्यामजी कृष्ण वर्मा पेरिस मे एकाकी पड गए थे। मैडम कामा और श्री राणा का उनसे मतभेद हो गया था अन्य सभी भारतीय क्रातिकारी मैडम कामा के नेतृत्व मे कार्य कर रहे थे। तभी

मैडम कामा ने श्री राणा के सहयोग से वन्दे मातरम तथा मदन तलवार पत्र निकालना आरम्भ किया था। उधर ब्रिटिश सरकार की क्रूर दृष्टि तो उन पर थी ही। ब्रिटेन के समाचार पत्र उनके विरुद्ध विष वमन कर रहे थे। उनकी माग थी कि श्यामजी कृष्ण वर्मा को फ्रेंच सरकार से माग कर उन पर ब्रिटिश सम्राट के विरुद्ध विद्रोह भड़काने का अभियोग चलाया जावे। अतएव श्याम कृष्ण वर्मा प्रथम महायुद्ध से बहुत पहले ही पेरिस से जेनेवा चले गए थे।

जब ३१ मार्च १९३० को श्यामजी कृष्ण वर्मा का जेनेवा में स्वर्गवास हुआ और काशी विद्यापीठ तथा 'आज" पत्र के संस्थापक प्रसिद्ध देशभक्त शिव प्रसाद गुप्त जो उनकी मृत्यु के समय उनके पास थे—ने श्री राणा को उनकी मृत्यु का समाचार भेजा तो अपने पुराने मित्र के निधन पर अपने मतभेदों को भुलाकर जिनके कारण पिछले बीस वर्षों से उनके पारस्परिक सम्बन्धों मे खिंचाव था वे दौड़कर जेनेवा पहुंचे और श्यामजी कृष्ण वर्मा की पत्नी श्रीमती भानुमती वर्मा के साथ केवल सहानुभूति ही प्रदर्शित नही की वरन उनकी सम्पत्ति तथा विशाल पुस्तकालय की उचित व्यवस्था की। महीनो जेनेवा मे श्रीमती भानुमती वर्मा के पास रहकर उनकी इच्छा के अनुसार उन्होने पेरिस विश्वविद्यालय को बीस लाख फ्रैंक भारतीय छात्रों को छात्रवृत्ति देने के लिए दान देने की व्यवस्था की। श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम से जेनेवा विश्वविद्यालय को दस हजार फ्रैंक समाज शास्त्र विषय पर शोध ग्रन्थों को प्रकाशित करने के लिए दिए गए। दस हजार फ्रैंक जेनेवा हास्पिटल को दान दिए गये तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के अत्यन्त मूल्यवान संस्कृत और ओरियन्टल पुस्तकालय को "इन्स्टीट्यूट डी सिविलिजेशन इण्डियने सोरबोन' को भेंट कर दिया गया।

श्रीमती भानुमती वर्मा की इच्छानुसार श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की सम्पत्ति तथा विभिन्न संस्थाओं को दान देने की उचित व्यवस्था कर वे पेरिस लौट आए।

पेरिस में श्री राणा का गृह योरोप मे आने वाले सभी भारतीयों के लिए सदैव खुला रहता था। उनका आतिथ्य प्रसिद्ध था। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, विट्ठल भाई पटेल, सेनापति बापट, इन्द्र लाल याज्ञनिक, लाला हरदयाल वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय भाई परमानन्द आदि अनेक प्रसिद्ध भारतीय नेता उनके अतिथि रह चुके थे और उनके आतिथ्य की प्रशंसा करते थे।

जब गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर पेरिस आए और उनके सम्मान में दिए गए भोज में उन्होंने शान्ति निकेतन के पुस्तकालय के लिए पुस्तकों की अपील की तो श्री राणा ने अपने निजी पुस्तकालय को अपने स्वर्गीय पुत्र "रणजीत' के नाम पर शान्ति निकेतन को भेंट कर दिया।

लाला लाजपत राय तो जब भी पेरिस आते थे तब श्री राणा के पास ही ठहरते थे। उनके अतिरिक्त डाक्टर अन्सारी हकीम अजमल खां, पंडित मोतीलाल नेहरू श्रीमती सरोजनी नायडू तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी उनके मित्र थे और जब भी वे योरोप की यात्रा पर आते थे तो उनसे अवश्य ही मिलते थे।

श्री राणा इसी प्रकार जब निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे, द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। जब युद्ध आरम्भ हुआ उस समय श्री राणा विशी मे अपने कुछ पुराने फ्रांसीसी मित्रों के साथ थे। युद्ध आरम्भ होते ही उन्होंने पेरिस लौटना चाहा किन्तु जरमन सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया।

अप्रेल १९४१ मे जब नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जरमनी पहुच और उन्हें ज्ञात हुआ कि जरमन सरकार ने श्री राणा को नजरबन्द कर लिया है तो उन्होंने जरमन सरकार के इस कार्य की भत्सना की और कड़ा विरोध किया। जरमन सरकार ने नेताजी का मांग पर श्री राणा को मुक्त कर दिया और नेताजी श्री राणा से स्वय मिलने गए। जरमनी की नजरबन्दी से मुक्त होकर श्री राणा पेरिस वापस लौट आए। अब वे वृद्ध हो गए थे परन्तु उनका मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने का उत्साह पूर्ववत था। फ्रास में जो भी भारतीय थे उनका उन्होंने एक सगठन सगठन बनाया और २६ जनवरी को भारत का स्वाधीनता दिवस तथा १३ अप्रेल को जलियावाला दिवस उनके नेतृत्व मे धूमधाम से मनाया जाता था। सन १९४५ मे फ्रास पर जब मित्र राष्ट्रों का पुन अधिकार स्थापित हो गया तो इन्डियन सिक्यूरिटी पुलिस ने उन उत्सवो को मनाए जाने के आरोप म श्री राणा को बहुत तग किया विशेषत गुप्तचर विभाग के एक सिक्ख अधिकारी ने तो श्री राणा को बहुत कष्ट पहुचाया और यातनाए दी। उस वृद्धावस्था म मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने के उपलक्ष म जो भी यातनाए श्री राणा का दी गई उन्होने सहन की, पर वे झुके नहीं।

जब १५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ तो श्री राणा की प्रसन्नता का ठिकाना नही रहा। उनके जीवन का ध्येय और स्वप्न उस दिन पूरा हो गया। यद्यपि वे उस समय तक बहुत वृद्ध हो चुके थे परन्तु जिस व्यक्ति ने १८९८ स १९४७ तक पचास लम्बे वर्षों तक भारत की स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष किया था उस स्वतन्त्रता के वीर क्रान्तिकारी की स्वतन्त्र भारत के दर्शन करने की इच्छा बलवती हो उठना स्वाभाविक ही था। अस्तु श्री राणा श्रीमती डेनियल लेवी के साथ ६ दिसम्बर १९४७ को भारत आए। भारत आकर व सर्व प्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गाधी से मिलने गए उसके उपरान्त व सभी प्रमुख नताओ से मिले। राजनेताओ से मिलने के उपरान्त वे अपने सम्बन्धियो स मिलने सौराष्ट्र गए। सौराष्ट्र के राजाओ ने श्री राणा का सामूहिक स्वागत किया। उस भव्य समारोह मे पुरानी स्मृतिया उभर आई और प्रसन्नता से भावातिरेक होकर उनके नेत्रो म अश्रुकण झलकने लगे। श्री राणा भारत म तीन चार महीने रहकर २३ अप्रेल १९४८ को वापस पेरिस चले गए। उन्हें साम्प्रदायिक दगा और विशेषकर गाधीजी की हत्या स गहन वेदना हुई। पेरिस पहुच कर भी जीवन के अन्त समय तक उनको देश की ही चिन्ता रही। पेरिस से जो भी उनके पत्र आते थे उनम यही भावना व्यक्त होती थी कि राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अभी त्याग और तपस्या की आवश्यकता है। प्रत्येक भारतीय का देश सेवा का व्रत लना चाहिए तभी भारत राष्ट्र उन्नत होगा।

अस्सी वर्ष की आयु मे वह वृद्ध देश भक्त जिसने मातृभूमि को स्वतन्त्र बनाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन ही अर्पित कर दिया था १९४९ की दिसम्बर मास में पेरिस म चिरनिद्रा म सो गया। अत्यन्त लज्जा की बात है कि भारत म उस वीर देशभक्त क्रान्तिकारी के निधन का समाचार भी किसी समाचार पत्र न प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं समझी। भारत के स्वतन्त्र हो जाने के उपरान्त हमारे राजनीतिज्ञों म सत्ता प्राप्त करने के लिए अशोभनीय प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई। उस होड़ में

किसी को भी श्री सरदार सिंह राव जी राणा जैसे सच्चे देशभक्त क्रांतिकारी जिसने स्वदेश के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया, को याद करने का अवकाश नहीं मिला। किसी ने उनकी जीवन गाथा नहीं लिखी उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नहीं हुआ। हम भारतीयों की इस चरम सीमा की कृतघ्नता को देखकर स्वयं कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी।

अध्याय ८

केशरी सिंह बारहट

यह उन दिनो की बात है जब कि भारतीयो को दासता अखरने लग गई थी, और देशभक्त क्रांतिकारी युवक सशस्त्र विद्रोह के द्वारा भारत को अंग्रेजो की दासता से मुक्त करन का प्रयत्न कर रहे थे। महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस के नेतृत्व मे समस्त उत्तर भारत मे सैनिक विद्रोह की तैयारियां की जा रही थी। बगाल बिहार, पजाब, महाराष्ट्र तथा अन्य भागों मे क्रांतिकारी सगठन अत्यन्त सक्रिय हो उठे थे, और आने वाली सशस्त्र क्रांति की तैयारियां कर रहे थे। उस समय राजस्थान म भी सशस्त्र क्रांति करने के लिए एक क्रांतिकारी सगठन खडा हुआ। इस सगठन को राजस्थान मे खडा करने वालो मे ठाकुर केशरी सिंह बारहट तथा खरवा के राव गोपाल सिंह थे। श्री अर्जुनलाल सेठी और ब्यावर के देशभक्त व्यवसायी सेठ दामोदर दास राठी उनके सहायक थे। बारहट केशरी सिंह तथा रावगोपाल सिंह का सम्बध बगाल के क्रांतिकारी सगठन से था और वे महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस के निर्देशन मे राजस्थान मे सशस्त्र क्रांति का आयोजन कर रहे थे। बारहठ केशरी सिंह ने तो अपने समस्त परिवार को ही देश की स्वतत्रता के इस बलिदान यज्ञ मे आहुति दे दी थी। क्रांतिकारियों के रोमांचकारी इतिहास मे बारहट परिवार का जो गौरव पूर्ण भाग रहा है उसको बहुत कम लोग जानते हैं। उनके आत्म बलिदान की अमर कहानी अभी तक विस्मृत के गर्भ मे छिपी थी। हम भारतीयो ने क्रांतिकारी देशभक्तो की जसी लज्जाजनक उपेक्षा की है उसे देखकर स्वय कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी। जहा हम सत्तारूढ राजनीतिज्ञो का यशोगान करते नही थकते वहा हमने उन पागल देशभक्तो को जो अपने सर मे कफन बांध कर मां भारती की दासता की शृखलाओ को काटने के लिए अपने प्राणो की आहुति देते थे उनकी नितान्त उपेक्षा की और बारहट परिवार के अतुलनीय त्याग और बलिदान को तो बिलकुल ही भुला दिया। आज उसी क्रांतिकारी बारहट परिवार के प्रेरणा स्रोत ठाकुर केशरी सिंह की जीवन गाथा को पाठको के समक्ष उपस्थित करने का सौभाग्य लेखक को मिला है।

तत्कालीन राजपूताने मे मेवाड से सटा हुआ शाहपुरा नामक एक छोटा सा राज्य था जिस पर सिसोदिया राजपूतो का राज्य था। इस छोटे से राज्य की राजधानी शाहपुरा से लगभग दो कोस की दूरी पर 'देवपुरा' जिसे बारहट जी का खेडा भी कहते हैं नामक गांव था। प्राचीन काल मे यह गाव प्रसिद्ध चारण जाति के सौदा बारहट गोत्र को शाहपुरा नरेशो ने जागीर म दे रखा था। बारहट वश चारण जाति म अत्यन्त प्रसिद्ध और गौरवशाली था। इसी वश म श्री कृष्ण सिंह बारहट का जन्म हुआ जिन्होंने राजस्थान म चतुर राजनीतिज्ञ और प्रमुख नरेशो के परामर्शदाता के रूप म अत्यन्त स्याति अर्जित की। उन्ही बारहट कृष्ण सिंह के प्रथम पुत्र केशरी सिंह का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष ६ सम्वत १९२९ को अपने पैतृक ग्राम देवपुरा उपनाम बारहट जी का खेडा मे हुआ था। एक मास के उपरात ही माता का स्वर्गवास हो गया। शिशु केशरी सिंह बारहट का पालन पोषण ममतामयी मातामही ने किया।

शाहपुरा दरबार ने श्री कृष्ण सिंह को अपने वकील के रूप मे उदयपुर मे नियुक्त किया था। वे मेवाड सरकार तथा मेवाड रेजीडेंट के द्वारा भारत सरकार से शाहपुरा राज्य का प्रतिनिधित्व करते थे। शाहपुरा वकील के पद पर कार्य करते हुए कृष्ण सिंह जी तत्कालीन महाराणा सज्जनसिंह के सम्पर्क म आए। महाराणा उनकी

विद्वता और राजनीतिक चातुर्य से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें अपना परामर्श दाता बना लिया। पिता के उदयपुर रहने के कारण बालक केशरीसिंह की शिक्षा दीक्षा उदयपुर मे ही हुई। उदयपुर के राजकीय हाई स्कूल मे संस्कृत के अध्ययन की उचित व्यवस्था नही थी अतएव पिता ने काशी के प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ प० गोपीनाथ जी को बुला कर बालक किशोरसिंह को संस्कृत पढ़ाने के लिए रखा। श्री कृष्ण सिंह बारहट केवल ऊंचे दर्जे के विद्वान और राजनीतिज्ञ ही नही थे वे स्वाभिमानी देशभक्त भी थे। उन्ही की प्रेरणा से मेवाड के महाराणा ने श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे उद्भट विद्वान राजनीतिज्ञ और क्रांतिकारी को उदयपुर राज्य का प्रधान मंत्री नियुक्त किया था।

महाराणा सज्जन सिंह की मृत्यु के उपरान्त महाराणा फतह सिंह राज्य के सिंहासन पर बैठे। कृष्ण सिंह जी महाराणा फतहसिंह के भी अत्यन्त विश्वास प्राप्त परामर्शदाता बने रहे। उस समय तक भारत सरकार के वैदेशिक विभाग को श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा बारहट कृष्ण सिंह के सम्बन्ध मे कुछ संदेह हो गया अस्तु विदेशी विभाग ने महाराणा फतहसिंह पर यह दबाव डाला कि वे बारहट कृष्ण सिंह को अपने पास से हटा दें। जब जोधपुर के महाराणा जसवन्त सिंह को यह ज्ञात हुआ कि वैदेशिक विभाग के दबाव के कारण वे उदयपुर से हट रहे है तो वे उन्हें जोधपुर ले गए। परन्तु महाराणा फतहसिंह का बारहट कृष्ण सिंह पर इतना गहरा विश्वास था कि उन्होंने उनके पुत्र युवक केशरी सिंह को उनके स्थान पर नियुक्त कर अपने पास रख लिया। आरम्भ मे महाराणा ने और स्वयं केशरी सिंह ने किसी पर यह रहस्य प्रगट नही किया कि वे अपने पिता के स्थान पर महाराणा के परामर्शदाता का कार्य करते हैं। वे महाराणा फतहसिंह से रात्रि को बारह बजे के समय गुप्त रूप से मिलते थे।

युवक केशरी सिंह का विवाह सम्वत १९४७ मे कोटा राज्य मे कोटडी के कविराज देवीदान जी की बहिन माणिक कुंवर से हुआ था अतएव वे कभी कभी अपनी ससुराल जाया करते थे। महाराणा फतह सिंह की पुत्री का विवाह कोटा नरेश उम्मेदसिंह से हुआ था। अस्तु जब वे कोटा जाते तो कोटा दरबार मे भी उपस्थित होते थे। कोटा महाराव के अभिभावक गुरु मास्टर शिवप्रसाद जी युवक महाराणा के पास किसी ऐसे तेजस्वी चरित्रवान और योग्य व्यक्ति को रखना चाहते थे जो कि युवा महाराजा को गलत रास्ते जाने से रोक सके और उन व्यक्तियो के प्रभाव से बचा सके जो उन्हें कुमार्ग पर ले जाना चाहते थे। उधर विदेशी विभाग मे तथा कृष्ण सिंह के विरोधियो ने केशरीसिंह बारहट के विरुद्ध भी षडयन्त्र करना आरम्भ कर दिया। महाराणा फतहसिंह को केशरी सिंह जी ने परामर्श दिया कि महाराणा श्यामजी कृष्ण वर्मा को जो जूनागढ चले गए थे और स्थानीय कुचक्र के कारण उन्होंने जूनागढ के प्रधान मंत्री के पद का त्यागना पड़ा था पुन उदयपुर मे नियुक्त करलें और उन्हें कोटा जाने दें। महाराणा ने भारत के विदेशी विभाग की अनिच्छा होते हुए भी श्यामजी कृष्ण वर्मा की उदयपुर के प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्ति कर दी और श्यामजी कृष्ण वर्मा के परामर्श से श्री केशरी सिंह बारहट को कोटा महाराव के पास भेज दिया। इस प्रकार केशरी सिंह जी महाराव कोटा की सेवा मे आ गए।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट मे देशभक्ति स्वाभिमान और शौर्य जन्म जात था। पर विदेशियों का आधिपत्य देख कर अत्यन्त दुखी थे। देश दासता की शृंखलाओं

से जकड़ा था और भारतवासी निश्चेष्ट और निष्क्रिय होकर बैठे थे। यही नहीं समाज का सभ्रांत वर्ग विदेशी प्रभुओं के गुणगान करते नहीं थकता था। यह देख कर उनके अन्तर को गहन पीड़ा होती थी। ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने एक अत्यन्त उच्च और आदरणीय चारण वंश में जन्म लिया था जिसका राजपूताने के राजपूत नरेशों से घनिष्ट सम्बन्ध था। उनके पिताश्री उदयपुर तथा जोधपुर के नरेशों के विश्वास पात्र तथा परामर्शदाता थे। युवक केशरी सिंह देश की उन सब शक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे कि जो देश को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न कर रही थीं। अतएव उन्होंने महा विप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस से सम्बन्ध स्थापित किया जो देश में सैनिक विद्रोह कराने की योजना बना रहे थे। खरवा के ठाकुर गोपाल सिंह जी राठौर का भी रासबिहारी बोस से सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। ठाकुर केशरीसिंह तथा खरवा के ठाकुर गोपाल सिंह जी राठौर ने राजस्थान में क्रांति और विप्लव कराने के लिए एक संगठन 'वीर भारत सभा' के नाम से स्थापित कर लिया था और अनेक राजपूत नरेशों और जागीरदारों का समर्थन और सहयोग प्राप्त कर लिया था। उनको ब्यावर के सेठ दामोदर स्वरूप राठी और अर्जुनलाल सेठी की सहायता और सहयोग आरम्भ से ही था।

ठाकुर केशरी सिंह की मान्यता थी कि बिना देश में सशस्त्र क्रांति हुए देश स्वतन्त्र नहीं हो सकता। यही कारण था कि उन्होंने राजपूताने में सशस्त्र सैनिक क्रांति की योजना बनाई और राजपूत नरेशों को भी देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी आहुति देने के लिए प्रोत्साहित किया। खरवा ठाकुर श्री गोपालसिंह राठौर का भी राजपूत नरेशों में बहुत मान था वे और ठाकुर केशरी सिंह बारहट क्रांतिकारियों और राजपूत नरेशों के बीच एक विश्वसनीय कड़ी थे। ईडर तथा जोधपुर के शासक कर्नल सर प्रताप, बीकानेर के महाराजा श्री गंगासिंह का वीर भारत सभा से सम्पर्क था। उदयपुर के महाराणा फतहसिंह और कोटा के महाराव उम्मेद सिंह की सशस्त्र क्रांति की योजना से छिपी सहानुभूति थी। जोधपुर, उदयपुर तथा बीकानेर के जागीरदारों पर ठाकुर केशरी सिंह का बहुत अधिक प्रभाव था। वे उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने लगे और राजपूत तथा चारण जाति के युवकों को आने वाली सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार करने लगे।

ठाकुर केशरी सिंह यह भली भांति जानते थे कि केवल तत्कालीन राजपूताने में सशस्त्र क्रांति करने से कोई लाभ नहीं होगा सम्पूर्ण देश में एक साथ अनुकूल अवसर पर सशस्त्र क्रांति भड़क उठे तभी वह सफल हो सकेगी। अतएव उन्होंने देश में जो भी क्रांतिकारी संगठन थे उनसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। इसी उद्देश्य से उन्होंने मराठी, बंगला, गुजराती तथा भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं का अध्ययन किया जिससे कि वे विभिन्न प्रांतों के क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर सकें और देश के विभिन्न भागों में देश को स्वतन्त्र करने के लिए क्या प्रयत्न हो रहे हैं उनसे अवगत हो सकें।

१९०३ में जब के ठाकुर केशरी सिंह बारहट केवल ३१ वर्ष के थे तब उन्होंने अपने पिता श्री कृष्णसिंह बारहट से गृह कार्यभार से मुक्त होकर अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा में लगा देने की लिखित आज्ञा मांगी थी। इसी से उनके अन्तर में देश सेवा की जो उत्कट अभिलाषा थी, देश की दासता से जो उनका अन्तर पीड़ित था उसका

अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होने केवल महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस से ही सम्बन्ध स्थापित नही किया वरन् अभिनव भारत समिति' क्रांतिकारी सगठन से भी अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया और राजपूताने मे उसकी शाखा की स्थापना कर वाई। उन्होंने 'अभिनव भारत समिति की शाखा का अभीरचन्द और बृजमोहन माथुर को सचालक बनाया। अपने सहकर्मी और सहयोगियो ठाकुर गोपाल सिंह खरवा, सेठ दामोदर दास राठी, तथा श्री अर्जुनलाल सेठी के सहयोग से उन्होने तत्कालीन राजपूताने मे एक सबल क्रांतिकारी सगठन खडा कर दिया था और केवल अपने को ही नही अपने समस्त परिवार का ही देश की स्वतन्त्रता के इस यज्ञ में झोंक दिया था।

ठाकुर केसरी सिंह बारहट, तथा खरवा ठाकुर श्री गोपाल सिंह राष्ट्रवर और श्री अर्जुनलाल सेठी का श्यामजी कृष्ण वर्मा लोकमान्य बाल गगाधर तिलक तथा श्री अरविन्द से भी घनिष्ट सम्बन्ध था और वे उनके द्वारा प्रभावित थे। क्रांतिकारी भावना उनमें उन तीनो से ही मिली थी राव गोपाल सिंह खरवा स्वय कलकत्ता गए थे और उन्होने बगाल के क्रांतिकारियो से सम्बन्ध स्थापित किया था।

१९११ में ठाकुर केसरी सिंह बारहट ने क्रांति दल में अपनी सस्था से देश भक्ति की भावना वाले युवकों को भर्ती किया और उन्हे दिल्ली में मास्टर अमीर चन्द अवध बिहारी तथा बालमुकुन्द के पास क्रांतिकारी कार्यो का प्रशिक्षण लेने के लिए भेज दिया। उनमे श्री केशरी सिंह के भाई जोरावर सिंह बारहट पुत्र प्रताप सिंह बारहट और जामाता ईश्वरदान आसिया भी थे। जब मास्टर अमीरचन्द ने महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस से उनका परिचय कराया तो सहसा उन्होने कहा भारत वर्ष मे एक मात्र ठाकुर केशरी सिंह बारहट ही ऐसे क्रांतिकारी देशभक्त हैं जिन्होने केवल स्वय को ही नही अपने भाई, पुत्र और जमाता को भी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के बलिदान यज्ञ मे आहुति के रूप मे झोंक दिया है।

डाक्टर आर० सी० मजूम्दार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिस्ट्री आफ दी फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया' के भाग २ पृष्ठ ३१३ पर राजस्थान मे क्रांतिकारी सगठन के सम्बन्ध मे लिखा है—

"राजस्थान मे भी बगाल के नमूने का क्रांतिकारी सगठन बग भग के बाद शीघ्र ही खडा हो गया। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में उस सगठन के मुख्य सचालक राष्ट्रीय विचारो विशेषकर सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी सुधारो के प्रचारक थे। उस क्रांतिकारी सगठन को खडा करने का श्रेय तीन व्यक्तियो को था वे थे अर्जुनलाल सेठी, बारहट केशरी सिंह और खरवा के राव गोपाल सिंह। जैसा कि अन्य क्रांतिकारियो के साथ हुआ उन्होने अपनी देश सेवा का कार्य सुधारक के रूप मे आरम्भ किया और अन्त क्रांतिकारी के रूप में किया। यह परिवर्तन मुख्यत श्यामजी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य तिलक, और श्री अरविन्द के प्रभाव के कारण हुआ था। उन तीनो महान क्रांतिकारी नेताओ का इन तीनो पर गहरा प्रभाव पडा था क्योंकि वे लोग उनके घनिष्ट सम्पर्क मे आए थे। राव गोपाल सिंह ने कलकत्ता जाकर बगाल के क्रांतिकारियो से भी सम्बन्ध स्थापित किया था।

अर्जुनलाल सेठी का श्री रासबिहारी बोस के प्रमुख सहायक तथा मास्टर अमीरचन्द से घनिष्ट सम्बन्ध था। विष्णुदत्त नामक क्रांतिकारी अध्यापक उनको एक दूसरे से

मिलने और उनका सम्पर्क स्थापित करने वाली कडी का काम करता था।

क्रमश यह क्रांतिकारी सगठन राजस्थान के विभिन्न भागो मे फैल गया। बृटिश भारत से भागे हुए क्रांतिकारियो के लिए राजस्थान एक सुरक्षित आश्रम स्थल बन गया शचीन्द्र सान्याल के सगठन के दो सदस्य बनारस से सरवा बमो का निर्माण करने के लिए भेजे गए। दो अन्य बगाली क्रांतिकारियो को १९०८ से १९११ के बीच कुचामन के ठाकुर न आश्रय दिया था।

१९११ तक इस क्रांतिकारी सगठन मे बडी सख्या म युवक सम्मिलित हो गए और उनम स कुछ का मास्टर अमीर चन्द्र, अवध बिहारी और बालमुकन्द के पास क्रांतिकारी प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा गया। उन तरुण क्रांतिकारियो मे सबसे प्रसिद्ध ठाकुर केशरी सिंह के पुत्र प्रताप सिंह बारहट थे जिन्होंने श्री रासबिहारी बोस के द्वारा नियोजित अनेक षडयन्त्रो मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग लिया। वे एक शहीद की मौत मरे और उन्होने भयकर यातनाओ के सम्मुख अदम्य साहस और अद्भुत कष्ट सहिष्णुता का परिचय दिया।

इस क्रांतिकारी दल ने जून १९१२ म जाधपुर के महन्त की हत्या कर दी। इस काय की व्यवस्था बारहट केसरी सिंह ने की थी। महन्त की हत्या का उद्देश्य क्रांतिकारी कार्यों के लिए धन प्राप्त करना था। उस साधू (महन्त) को झूठे बहाने से कोटा लाया गया और दूध मे विष देकर मार दिया गया।

चेतावनी का चूंगटया

जबकि ठाकुर केसरी सिंह बारहट राजस्थान मे क्रांतिकारी दल का सगठन कर रहे थे और सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया कर रहे थे उसी समय एक ऐसी घटना घटी कि जिसस उनको अत्यन्त क्षोभ हुआ। उनका स्वाभिमान और शौर्य जाग पडा और उन्होंने अपने आश्रयदाता और सरक्षक महाराणा फतेहसिंह को चेतावनी दी। यह घटना उस क्रांतिकारी देशभक्त के साहस और निर्भयता का सुन्दर उदाहरण है।

यह उन दिनो की बात है जबकि भारत का शासन सूत्र लार्ड कर्जन जैसे मेधावी, साम्राज्यवादी, भारतीय राष्ट्रवाद के घोर शत्रु और शक्ति शाली लार्ड वायसराय कर्जन के हाथ मे था। लार्ड कर्जन भारत म राष्ट्रीयता की भावना को ही समाप्त कर देना चाहता था। बृटिश साम्राज्य की शक्ति अपरिमित है, उसकी प्रतिस्पर्द्धा म ससार की कोई शक्ति नही ठहर सकती और भारतीयो के हित मे यही है कि वे बृटिश सरकार की छत्र छाया मे दासता का जीवन व्यतीत करते रहे यह उसकी मान्यता थी। वह अपनी इस मान्यता का मूर्त रूप देना चाहता था। इसके अतिरिक्त वह स्वय शाही शान शौकत और वैभव का जीवन पसद करता था। सम्राट के प्रतिनिधि का तरह नही वरन वह सम्राट की भाति ही आचरण करता और यह कामना करता था कि भारतीय उसकी सम्राट की तरह ही पूजा अचना करें।

यही कारण था कि चतुर लार्ड कर्जन ने ऐडवर्ड सातवें के सिंहासनारूढ होने के दिन देहली मे अत्यन्त वैभवपूर्ण भव्य समारोह मनाने की योजना बनाई। योजना यह थी कि उस दिन भारत मे जितने भी राजे महाराजे थे वे सब अपने सामन्तो और अगरक्षको तथा राज्य चिन्हो और लवाजमेके साथ सजे हुए हाथियो तथा अश्वो पर सम्राट के प्रतिनिधि अर्थात लार्ड कर्जन के जुलूस मे उसके हाथी के पीछे चलें। समस्त दिल्ली सजाई जावे, सेनाए तथा सैनिक बैंड आगे चलें। जुलूस ऐसा भव्य हो कि

भारतीयों के जनमानस पर ब्रिटिश साम्राज्य की महान शक्ति का आभास अंकित हो जावे। जुलूस के अतिरिक्त लार्ड कर्जन ने एक विशाल दरबार का भी आयोजन किया था जिसमें भारत के सभी देशी नरेश सम्राट के प्रतिनिधि को नजराना भेंट कर ब्रिटिश सम्राट के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करें। दरबार ऐसा वैभवपूर्ण और शानदार हो कि मुगल सम्राटों का इतिहास चर्चित वैभव भी फीका पड़ जावे।

सभी देशी नरेशों को फरमान भेज दिए गए कि वे सम्राट के प्रतिनिधि के जुलूस और दरबार में अपने पूरे राजसी ठाट बाट से सम्मिलित हों। उस समय लार्ड कर्जन ने स्वयं सभी चालीस बड़े देशी राज्यों का दौरा किया कि जिससे वह महाराजों पर वांछित प्रभाव डाल सके।

जहां भारत के अन्य राज्यों के नरेशों ने इस निमन्त्रण का अत्यन्त उत्साह के साथ स्वागत किया, वे शाही जलूस और दरबार में सम्मिलित होने की तैयारियां करने लगे वहां मेवाड़ के स्वाभिमानी महाराणा फतह सिंह को देहली दरबार में जाना सम्मान सूचक नहीं लगा वरन् उन्हें मानसिक क्षोभ हुआ। मेवाड़ के महाराणा की ओर से अनेक प्रकार की अड़चनें शंकाएं और अपनी प्रतिष्ठा के प्रश्न खड़े किए गए। धूर्त लार्ड कर्जन जानता था कि स्वाभिमानी महाराणा को दबाया नहीं जा सकता अतएव उसने अत्यन्त विनम्र शब्दों में महाराणा को लिखा कि आप ब्रिटिश सम्राट के परम हितैषी हैं। उनके सिंहासन रोहण के उत्सव में आपके सम्मिलित होने से भारत में सम्राट के प्रति आस्था दृढ़ होगी। आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान का भारत सरकार पूरा ध्यान रखेगी। लार्ड कर्जन की यह युक्ति सफल हो गई सरल स्वभाव के महाराणा फतहसिंह ने दिल्ली दरबार में सम्मिलित होना स्वीकार लिया।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट को जब ज्ञात हुआ कि महाराणा फतहसिंह देहली दरबार में सम्मिलित होने जा रहे हैं तो उनका हृदय विषाद और क्षोभ से भर गया। महाराणा के इस निर्णय से उनका अन्तर क्षुब्ध हो उठा, उन्होंने महाराणा के कोप की चिंता न कर उन्हें चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझा। उन्होंने डिंगल भाषा में चेतावनी के तेरह सोरठे लिखे और उन्हें महाराणा साहब के पास भेज दिए।

उस समय तक महाराणा की स्पेशल उदयपुर से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। जब स्पेशल ट्रेन चित्तौड़गढ़ से आगे बढ़ी तब ट्रेन में ही वे सोरठे महाराणा फतेहसिंह के हाथ में दिए गए और उनकी आज्ञा से पढ़ कर सुनाए गए।

उन सोरठों को सुनकर महाराणा का मुखमंडल रक्तवर्ण हो गया, उनका क्षत्रित्व जाग उठा, बोले यदि यह सोरठे उदयपुर में मिल जाते तो हम वहां से प्रस्थान ही नहीं करते। खैर! बीच से लौट जाना उचित नहीं होगा। दिल्ली पहुंच कर देखा जावेगा।

इतिहास साक्षी है कि बारहट केशरी सिंह के उन सोरठों का महाराणा के हृदय पर ऐसा गहरा प्रभाव हुआ कि वे अपनी स्पेशल ट्रेन से उतरे ही नहीं, न जुलूस में सम्मिलित हुए और न दरबार में शामिल हुए। लार्ड कर्जन के संदेश की तनिक भी परवाह किए बिना अपनी स्पेशल ट्रेन को उदयपुर लौटने की आज्ञा दे दी। ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने लार्ड कर्जन को परास्त कर दिया।

प्यारे राम साधु की हत्या

डाक्टर मजूमदार ने जिस जोधपुर के महन्त की हत्या का उल्लेख किया है

उसका नाम प्यारे राम साधु था, वह अत्यन्त धनी था क्योंकि उसका जोधपुर के राज-घराने से घनिष्ट सम्बन्ध था। जब ठाकुर केसरी सिंह अपने पिता की मृत्यु के समय जोधपुर गए तो उन्हें वहां कुछ समय रुकना पड़ा। वहां उन्हें ज्ञात हुआ कि प्यारे राम महन्त राजघराने में दुराचरण फैला रहा है। उन्होंने वहां के ठाकुरों को बहुत धिक्कारा और कहा कि धिक्कार है तुम्हारे जीवन का जो तुम अपने राजघराने में इस कलंक स्वरूप दुराचारी को सहन करते हो। साथ ही क्योंकि वह महन्त बहुत धनी था परन्तु उसके पास जो धन था वह क्रांतिकारी कार्यों के लिए प्राप्त हो सकता था। अतएव शान्तिभानु लाहरी उस प्यारे राम महन्त को बद्रीनाथ की यात्रा के बहाने कोटा ले आया और वहां राजपूत छात्रावास में ठहराया। ग्रीष्मावकाश में छात्रावास बन्द था उसकी चाबी ठाकुर केशरीसिंह बारहट के पास थी। कोटा के राजपूत छात्रावास में आने के बाद उसका पता नहीं चला कि उसका क्या हुआ। अनुमान किया जाता है कि उसकी हत्या कर दी गई।

इधर बृटिश सरकार व गुप्तचर विभाग को ठाकुर केसरी सिंह बारहट पर सन्देह हो गया था क्योंकि उन्होंने सेनाओं के राजपूत अधिकारियों तथा सैनिकों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। उन्होंने राजस्थान और मध्य भारत के अनेक स्थानों पर राजपूत तथा चारण छात्रावास स्थापित कर युवकों में सशस्त्र क्रांति की भावना जागृति कर दी थी। यही नहीं उन्होंने कई नरेशों और अनेक जागीरदारों को भी देश की स्वतन्त्रता के महान यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए तैयार कर लिया था। योजना यह थी कि समस्त देश में एक साथ सैनिक क्रांति हो और सारे अंग्रेज अधि-कारियों को गिरफ्तार कर लिया जाय। कौन किस क्षेत्र में शांति तथा व्यवस्था का प्रबन्ध करेगा यह भी तय हो गया था। बृटिश सरकार चौकन्नी थी, ठाकुर केशरी सिंह बारहट श्री अर्जुनलाल सेठी तथा खरवा के राव गोपाल सिंह की गतिविधियों को गुप्तचर विभाग ध्यान पूर्वक देख रहा था। अर्जुनलाल सेठी अपने विद्यालय को जो कि वास्तव में क्रांतिकारी युवकों को प्रशिक्षण देने का केन्द्र था जयपुर से इन्दौर ले गए थे क्योंकि वहां के सेठ कल्याणमल बाफना ने विद्यालय के लिए भवन इत्यादि निर्माण कराने का उत्तरदायित्व लिया था। उसी समय बिहार के आरा जिले में निमाज के धनी महन्त की हत्या कर दी गई। अर्जुनलाल सेठी के विद्यालय के विद्यार्थी माणक चन्द, जयचन्द, मोती चन्द तथा ठाकुर केशरी सिंह के भाई जोरावर सिंह बारहट उसमें शामिल थे। उस सम्बन्ध में विद्यालय तथा छात्रावास की इन्दौर में तलाशी हुई। श्री अर्जुनलाल सेठी की तलाशी में पुलिस को दो पत्र मिले जिनकी भाषा सांकेतिक थी। उस पत्र में लिखा था कि 'पुराना आटा मछलियों को डाल दिया जाय।" ठाकुर केशरी सिंह के एक मित्र रामकरण तथा उनकी बहिन प्रभावती भी क्रांतिकारी दल के सदस्य थे। एक दिन प्रभावती ने अपने भाई रामकरण से कहा कि "मछलियां आटा खाकर मोटी हो गई होंगी।" अचानक गुप्तचर जो एक साधु के वेश में उस स्थान पर उपस्थित था समझ गया कि उस पत्र का इस वाक्य से सम्बन्ध है और यह किसी षड्यन्त्र का या क्रांतिकारी रहस्य को समझने की कुंजी है।

पुलिस ने छान बीन की और प्यारे राम महन्त के रहस्यमय ढंग से लापता हो जाने की दो साल पुरानी रिपोर्ट को निकाला। इन्दौर का पुलिस अधिकारी जिसने सेठी जी के विद्यालय और छात्रावास की तलाशी ली थी, वह शाहपुरा पहुंचा क्योंकि

ठाकुर केशरी सिंह बारहट कोटा से अपने पैतृक गृह शाहपुरा गए हुए थे। वह अपने साथ पालीटिकल एजेंट का पत्र भी ले गया था। राजाधिराज नाहरसिंह ने केशरी सिंह जी को गिरफ्तार करवा लिया। यही नहीं राजाधिराज ने केशरी सिंह तथा उनके भाइयों की सारी जागीर हवेली और सम्पत्ति भी जब्त करली। इन्दौर का पुलिस अधिकारी आमस्ट्रांग उन्हें इन्दौर ले गया। ठाकुर केशरी सिंह बारहट के क्रांतिकारी भाई जोरावर सिंह बारहट तथा पुत्र प्रताप सिंह बारहट पहले ही शाहपुरा से निकल गए थे क्योंकि गिरफ्तारियों की अफवाह जोरों पर थी और वे दोनों महाविप्लवी नायक रासबिहारी के साथ अनेक षडयन्त्रों में सम्मिलित थे अतएव वे शाहपुरा से ठाकुर केशरी सिंह बारहट की गिरफ्तारी से दो दिन पूर्व निकल गए और भूमिगत हो गए।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट को तीन महीने तक मऊ में सेना की कैद रखा गया और तदुपरान्त उन्हें कोटा लाया गया और उन पर तथा अन्य व्यक्तियों पर प्यारे राम की हत्या का अभियोग चलाया गया। भारत सरकार के उच्च पुलिस अधिकारी इस ऐतिहासिक अभियोग में आकाश पाताल एक कर रहे थे। कोटा के जज श्री बिशनलाल कौल निष्ठावान और न्याय प्रिय न्यायाधीश थे। भारत सरकार के उच्च पुलिस अधिकारियों ने उस अभियोग के सम्बन्ध में अभियोग चलाए जाने के पूर्व उनसे परामर्श किया। जब श्री कौल ने बताया कि ठाकुर केशरी सिंह बारहट पर अभियोग सिद्ध नहीं होगा तो कोटा राज्य पर राजनीतिक दबाव डलवाकर भारत सरकार ने श्री कौल को कोटा से हटवा दिया और उनके स्थान पर श्रीराम भार्गव को जज नियुक्त किया गया। जब भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के सर चार्लस क्लीवलैंड ठाकुर केशरीसिंह को क्रान्तिकारी दल से सम्बन्धित होना सिद्ध नहीं कर सके तब उन पर हत्या का अभियोग चलाया। इस सम्बन्ध में उनके अतिरिक्त शांत भानु लाहरी, हीरालाल जालौरी, लक्ष्मीलाल तथा रामकरण को भी गिरफ्तार किया गया। लक्ष्मी लाल सरकारी गवाह बन गए उन्होंने अपनी खाल बचाने के लिए उन देशभक्तों को फंसा दिया। श्री भार्गव ने ठाकुर केशरी सिंह बारहट शांत भानु लाहरी तथा राम करण को आजन्म कठोर कारावास (बीस वर्ष) और हीरालाल जालौरी को सात वर्ष का कारावास दिया। जोरावर सिंह फरार हो गए थे।

इस अभियोग का महत्व इसी से अनुमान किया जा सकता था कि तत्कालीन सभी अंग्रेजों द्वारा सम्पादित महत्वपूर्ण पत्र 'टाइम्स आफ इंडिया' आदि इस अभियोग का प्रतिदिन मुख पृष्ठ पर समाचार देते थे। लखनऊ के प्रसिद्ध बैरिस्टर नवाब हामिद अली खां ठाकुर केशरी सिंह बारहट के अभियोग में उनके पक्ष की पैरवी कर रहे थे। उन्होंने न्यायालय में ठाकुर केशरी सिंह बारहट की विद्वता, कवित्व शक्ति तथा देश भक्ति की प्रशंसा करते हुए जो तर्क पढ़े थी उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नवाब हामिद अली जैसा व्यक्ति जो अंग्रेजी शासन का प्रशंसक था और जिसके उच्च अंग्रेज अधिकारियों से निकट के सम्बन्ध थे वह भी ठाकुर केशरी सिंह की विद्वता देश भक्ति और उनके ऊंचे आदर्शों से अत्यन्त प्रभावित हो गया था। यद्यपि पुलिस ठाकुर केशरी सिंह के विरुद्ध हत्या का अभियोग सिद्ध नहीं कर पाई परन्तु राजनीतिक दबाव के परिणाम स्वरूप उनको आजन्म कठोर कारावास का दण्ड दे दिया गया।

भारत सरकार को यह भी सहन नहीं हुआ कि ठाकुर केशरी सिंह बारहट

को कोटा जेल म रहने दिया जावे। बात यह थी कोटा जेल में राज्य के उच्च पदाधिकारी, जागीरदार तथा सम्भ्रात व्यक्ति उनसे बहुधा मिलने जाते थे। भारत सरकार को यह सदेह हुआ कि जेल मे उनके साथ बहुत नरमी का व्यवहार किया जाता है अतएव भारत सरकार के वैदेशिक विभाग के दबाव से उन्हे कोटा जेल से हटा कर बिहार के हजारीबाग जेल मे भेज दिया गया। परन्तु जो व्यक्ति विद्वता, ज्ञान, स्वाभिमान साहस, देशभक्त और शौय का धनी हो उसके व्यक्तित्व का प्रकाश जहा भी वह रहे फैलता है। हजारीबाग जेल के सुपरिटेंडेंट कर्नल मीक और उनकी पत्नी घटनावश उनके व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित हुए। जब जेल के निरीक्षण के लिए आए तो उन्होने देखा कि ठाकुर केशरी सिंह कैदी के वस्त्र इतने साफ और स्वच्छ थे तथा उनका लोटा और तसला तथा कैदी की गठरी बनाने वाला धातुप्लेट चादी की तरह चमक रहा था। उन्हें उस कैदी के प्रति कौतूहल हुआ। बुलाकर पूछा। बारहट जी ने उत्तर दिया कि यद्यपि यह वस्तुएं कारागृह की हैं पर बीस लम्बे वर्षो तक मेरे उपयोग म आने वाली है अस्तु इन्हे स्वच्छ रखना मेरा कर्तव्य है। कर्नल मीक को बतलाया गया कि वे जब गेहूं बीनते हैं तो भारत का मानचित्र गेहूं के द्वारा बना कर अन्य बदियों को भारत के इतिहास भूगोल व भारत की सभ्यता के बारे म जानकारी देते हैं। यह जानकर कि बारहट केशरी सिंह संस्कृत के उद्भट विद्वान और कवि हैं श्रीमती मीक की जिज्ञासा और अधिक जागृत हो उठी। उनसे बात करके पति पत्नी उनके आकर्षक व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हुए और श्रीमती मीक नियमित रूप से उनसे संस्कृत पढने लगी।

कर्नल मीक के प्रयत्न से प्रथम महायुद्ध म विजय के उपलक्ष म श्री केशरी सिंह बारहट को पोलीटिकल विभाग ने मुक्त किये जाने का आदेश दे दिया। श्रावण कृष्ण ७ वि० स० १९७६ को वे हजारी बाग जेल से मुक्त हो गए।

कर्नल मीक से पचास रुपये उधार लेकर वे हजारी बाग से चले। वाराणसी म अपने गुरु स्वामी ज्ञानानन्द जी के दर्शन किए। उन्होंने अपने मित्रो को हजारीबाग जेल से ही सूचना दे दी थी। कोटा स्टेशन पर बडी सख्या मे उनके प्रशसक तथा स्नेही जन उनका स्वागत करने के लिए उपस्थित थे।

जब कोटा स्टेशन पर वे उतरे तो उनका भव्य स्वागत हुआ। एक मित्र ने पूछा कि आपको कुवर प्रतापसिंह की बरेली जेल में मृत्यु होने का समाचार कब मिला। तब बारहट जी ने कहा अभी आपस मिल रहा है। जब उन्हे बताया गया कि वीर प्रताप ने असहनीय यातनाए सहन कर भी महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस का तथा दल के साथी मेम्बर नही बतलाए तब उन्हे यातनाए देकर मार दिया गया तो ठाकुर केसरी सिंह ने कराह कर इतना ही कहा कि "माता का पुत्र माता के बधनो को काटने के लिए बलिदान हो गया।"

जब ठाकुर केसरीसिंह कारागार से मुक्त कर दिए गए तो कोटा राज्य ने भारत सरकार से शिकायत की कि भारत सरकार ने हमारे कैदी को बिना हमारी सहमति लिए क्यो छोड दिया? राज्य के अधिकार का प्रश्न था। भारत सरकार के वैदेशिक विभाग ने अपनी भूल स्वीकार की और भारत सरकार ने राज्य को लिखा कि राज्य सरकार की बिना पूछे ठाकुर केसरीसिंह बारहट को मुक्त कर देने मे भूल हुई पर वे कोटा म ही हैं कोटा राज्य की सरकार उन्हे पुन गिरफ्तार कर सकती है।

यह समाचार पाकर उनके राजनीतिक मित्र तथा सहयोगी बहुत चिंतित हो उठे। गणेश शंकर विद्यार्थी तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन बहुत चिंतित हो गए। उन्होंने आग्रह किया कि बारहट जी कोटा से बाहर निकल जावें। अपने मित्रों तथा शुभ चिंतकों को अत्यन्त चिंतित और अधीर जानकर ठाकुर केशरी सिंह बारहट कानपुर गए उन्हें समझाया कि मैं सदैव ब्रिटिश सरकार द्वारा देशी राज्यों के अधिकारों को हड़पने का विरोध करता रहा हूं अतएव मैं कोटा वापस जाऊंगा और यदि मैं पुनः गिरफ्तार हो जाऊं तो आप जो भी चाहें आंदोलन करना। यदि भारत माता की सेवा में समस्त जीवन खप जावे तो मैं अपने जीवन को सार्थक समझूंगा। कानपुर से ही उन्होंने कोटा के महाराव को एक पत्र लिखा उसमें उन्हें सूचित किया कि भारत सरकार ने मुझे कारागार में मुक्त करके कोटा रियासत का अपमान किया है यह मुझे भी स्वीकार नहीं है। कोटा राज्य की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की रक्षा के लिए मैं स्वयं कोटा जेल पर पहुंच जाऊंगा और शेष जीवन जेल में ही व्यतीत करूंगा जेलर को आदेश कर दिया जाय कि मैं जब वहां पहुंचूं तो मुझे जेल में रख लिया जावे। पत्र में उन्होंने कोटा जेल में पहुंचने की तारीख भी लिख दी।

निश्चित तारीख के पूर्व ही कोटा नरेश ने ठाकुर केशरी सिंह बारहट को बुला भेजा और कोटा के दीवान चौबे रघुनाथदास के समक्ष कहा कि उस समय भी हम यह नहीं चाहते थे कि तुम्हें कारागार का दण्ड दिया जावे परन्तु हम विवश थे। इस समय तो हमने रियासत के अधिकारों की रक्षा के लिए भारत सरकार से लिखा पढ़ी की या उसने अपनी भूल स्वीकार करली यही हमारी इच्छा थी तुम्हें पुनः कारागार में रखने की हमारी तनिक भी इच्छा नहीं है।

ठाकुर केशरी सिंह की इच्छा थी कि आगे देशी राज्यों में कार्य किया जावे। इसी उद्देश्य से उन्होंने श्री जमनालाल बजाज के सहयोग से वर्धा से राजस्थान केशरी पत्र निकालने का निश्चय किया और तत्सम्बन्धी तैयारियां करने में जुट गए परन्तु कारागार में जाने से पूर्व जो उन्हें यातनाएं दी गईं थीं उनके कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। इस कारण वे वर्धा में "राजस्थान केसरी" का कार्य न कर सके और पत्र का संपादन श्री विजयसिंह पथिक को सौंप कर वर्धा से चले गए। उनका शेष जीवन कोटा में ही व्यतीत हुआ।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट उद्भट विद्वान डिंगल भाषा के मूर्धन्य कवि राज न कि विशारद ही थे ही उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। यही कारण था कि उन्होंने अपने समस्त परिवार की मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आहुति दे दी। उनकी गहन देशभक्ति की भावना का किंचित अनुमान उस पत्र से लग सकता है जो बीस वर्ष की सजा होने पर उन्होंने हजारीबाग जेल से अपनी पुत्री को लिखा था। पत्र इस प्रकार था—

श्रीमती सौभाग्यवती चिरंजीवी बाई चिंतामणि प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर परम संतोष हुआ। मेरे सम्बन्ध में तुम लोग चिंताकाल न बिताकर स्वकर्तव्य धर्म पर ही मनन करो। भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कर्तव्य प्रत्येक मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होते हैं जो ऋण देश की प्रत्येक संतान पर चाहे वह पुरुष हो या स्त्री हो सब पर रहता है उसी कर्तव्य को पूर्ण करने, उस ऋण से मुक्त होने में ही हमारा कल्याण है। मेरे हिस्से का मेरे लिए

ही छोड दी वह भगवत परीक्षा का काल तीव्र गति से जा रहा है। उत्तीर्णता का माध्यम मेरे आंतरिक बल पर निर्भर है और उस अंतर में वह परीक्षक आदि गुरु स्वयं विराजमान है। तुम्हें सच्चे जीवन के रहस्य और जगद धर्म के मर्म को न जानने वाले हमारे कुटुम्ब पर आई हुई विपत्ति को देख कर नाना प्रकार के फैसले देते हुए बिना कीमत की टीका टिप्पणी मे लगे होगे और वे वाक्य तुम्हारे कानो तक भी पहुचते होगे परन्तु तुम्हारे धैर्य और विचारो पर मुझे सतोष है। तुम अवश्य यह जानकर सतुष्ट होगी कि भारत के एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश मे जागृति होने का प्रारम्भ अपने कुटुम्ब की महान आहुति से हुआ है। इस राजसूय यज्ञ म हम लोगो की बलि मगलमय हुई है। नाशवान शरीरो की तुच्छता और इस महा भारत अनुष्ठान की महत्ता मिला कर देखने से ही यह सब प्रतीत होगा। बाहर के आत्मीय जनो की कुशलता सदा चाहता हूँ यह समय बडी सावधानी का है। विश्वास किसी पर न करना हमारा मिलन अवश्य होगा। तुम्हारे पत्र मुझे मिल जाते हैं स्वयं प्रबंध है। मेरे प्रिय ईश्वर की जय हो।

जिस व्यक्ति को आजन्म कारावास हुआ हो। जिसका समस्त परिवार बृटिश सरकार के नृशस दमन का शिकार हो चुका हो उनके यह विचार इस बात के साक्षी हैं कि वह प्रत्येक क्षण केवल मातृभूमि के लिए ही जीवित रहता था। कितने भारतीय हैं जिन्होंने उन जैसी उदात्त देश भक्ति का परिचय दिया हो।

यद्यपि ठाकुर केशरीसिंह बारहट देशी नरेशो के आश्रय मे रहे परन्तु जब जब उन्हें प्रतीत हुआ कि वे पथ भ्रष्ट हो रहे हैं तब तब उन्होंने निस्सकोच उनकी भर्त्सना और आलोचना की। वास्तव मे ठाकुर केशरी सिंह राजस्थान मे मातृभूमि की स्वतंत्र के प्रयत्न के श्री गणेश करने वालो मे प्रमुख थे। खेद है कि स्वतत्र हो जाने के उपरात उन जैसे वीर साहसी और बलिदानी देशभक्त को देश भूल गया था।

यह हर्ष और सतोष की बात है कि शाहपुरा के प्रसिद्ध राजनीतिक नेता श्री गोकुललाल असावा की अध्यक्षता म "बारहट स्मारक समिति" ने ठाकुर केशरी सिंह बारहट, जोरावर सिंह बारहट और प्रताप सिंह बारहट की मूर्तियो की स्थापना कर उनके स्मारक का निर्माण करवाया है। २५ अप्रेल १९७६ को तीनो क्रातिकारियो की मूर्तियो का अनावरण अत्यन्त भव्य और उत्साह पूर्ण समारोह म राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री हरिदेव जोशी ने करते हुए उनके स्मृति ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए पच्चीस हजार रुपये राज्य सरकार द्वारा देने की घोषणा की थी। बारहट स्मारक समिति शीघ्र ही तीनो महान क्रातिकारियो के स्मृति ग्रन्थ को प्रकाशित करेगी।

चेतावनी का चूंगटया

(१)

पग पग भम्या पहाड,
धरा छाड राख्यो धरम।
(ईमू) महाराणा र मेवाड,
हिरदै बसिया हिन्द रे॥

अर्थात—पैदल पैदल पहाडो म भटकते फिरे और धरा (भूमि) का मोह छोड कर धर्म (कर्त्तव्य) की रक्षा की। इसी कारण महाराणा और मेवाड यह दोनो शब्द हिन्द के हृदय म बस गए।

(२)

घणा घलिया घमसान,
(तोई) राणा सदा रहिया निडर ।
(अब) पेखता फरमाण,
हलचल किम फतमल हुई ॥

अनेकानेक घोर घमसान युद्ध हुए तब भी महाराणा सदा निर्भय बने रहे। किन्तु अब केवल वृटिश सरकार के शाही फरमान को देखते ही हे! फतहसिंह महाराणा) यह हलचल कैसे मच गई।

(३)

गिरद गजा घमसाण,
नहचै घर माई नही ।
(ऊ) मावे किम महराण
गज दो सैरा गिरद मे ॥

निश्चय ही जिनके मदो मत्त हाथियो द्वारा रणभूमि मे उडा हुआ गर्दा (धूल) पृथ्वी म नही समाता था वह महाराणा उसके लिए दिया गया दिल्ली दरबार में स्थान (जगह) दो सौ गज के गिरदाव (घेर) म कैसे समा जायगा।

(४)

औरा ने आसान,
हाका हर वल हालणो ।
(पण) किम हालै कुलराणा
(जिण) हरवल साहा हाकिया ॥

अन्य राजाओ के लिए यह आसान है कि वे शाही सवारी म हकले जाने पर आगे आगे बढते चलें किन्तु वह प्रतापी गुहिल वंश जिसमे महाराणा ने जन्म लिया है उस तरह कैसे चलेगा जिसने मुगल बादशाहो को अपनी हरौल (हरावल) म हकाया था।

(५)

नरियद सह नजराण
झुक करसी सरसी जिका ।
(पण) पसरला किम पाण,
पाण छता थारो फता ॥

जिनके लिए सहज है वे सब राजा लोग तो झुक झुक कर नजराने दिया सकेंगे। परन्तु हे महाराणा फतहसिंह। तेरे हाथ म तलवार होते हुए नजराने के लिए तेरा हाथ कैसे फलेगा।

(६)

सिर झुकिया सहसाह
सिंहासण जिण सामने ।
(अब) रलणा पगत राह
फबै किम तोने फता ॥

जिस सिंहासन के सामने बादशाह के सिर झुके हैं उसके अधिकारी होते हुए

देश जिन्हें भूल गया]

हे पत्तहसिंह ! तुझे पक्ति मे आसन प्राप्त करना कैसे शोभा देगा ।

(७)

सकल चढावै सीस,
दान धरम जिणरो दियो।
सो खिताब वगसीस,
लेवण किम ललचावसी ॥

जिनके दिए हुए धम सयुक्त दान को ससार सिर पर चढाता है वह (हिंदू पति) खिताबो की बखशीश लेने के लिए कैसे ललचायेगा ?

(८)

दखेला हिंदवाण,
निज सूरज दिस नेह सू ।
पण तारा परमाण,
निरख निराशा न्हाक्सो ॥

समस्त हिंदू अपने सूय की ओर जब स्नेह सिक्त आखो से देखेंगे और उस समय वह एक तारे की तरह दृष्टिगोचर होगा तो अवश्य ही परिताप से निश्वास छोडेंगे ।

(६)

देखे अजस दीह,
मुलकेलो मन ही मना ।
दम्भी गढ दिल्लीह,
सीस नमता सीसवद ॥

हे शिशोदिया । तेरे सर को अपने सामने झुकता हुआ देख कर दिल्ली का वह दम्भी घमडी) दुग इस अवसर को अपने लिए अभिमान का समझ कर अहकार से मन ही मन मुस्करायेगा ।

(१०)

अन्त बेर आखीह,
पातल जे बाता पहल ।
राणा सह राखीह,
जिणरी साखी सिर जटा ॥

महाराणा प्रताप ने अपने अंतिम समय मे जो बातें पहले कही थी उनको अब तक सब महाराणाओ ने निभाया है और उसकी साक्षी तुम्हारे सिर की जटा दे रही है ।

(११)

कठण जमानो कौल,
बाधे नर हीमत बिना ।
(यो) वीरा हदो बाल,
पातल — सागे पेखिया ॥

मनुष्य अपने म हिम्मत न होने पर ही यह सिद्धात बाधा करता है कि जमाना कठिन है—इस वीर वाणी के रहस्य को प्रताप और सागा हृदयगम किए

हुए थे।

(१२)

अब लग सारा आस,
राण रीत कुल राखसी।
रहो सहाय सुखदास,
एकलिंग प्रभु आपरै॥

अब तक भी सबको आशा है कि महाराणा अपनी कुल परम्परा की रक्षा करेंगे। सुख राशि भगवान एकलिंग आपके सहायक बने रहे।

(१३)

मानमोद सीसोद,
राजनीत बल राखणो।
(ई) गवरमिण्ट री गोद,
फल मीठा दिठा॥

अपनी प्रसन्नता और प्रतिष्ठा को राजनीति के बल से कायम रखना चाहिए। इस गवर्नमेंट की शरण मे जाने से हे! फतहसिंह क्या कभी मधुर फल पाओगे।

ठाकुर केशरीसिंह बारहट के ऊपर लिखे डिंगल भाषा के सोरठो ने महाराणा के वंश परम्परागत स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत कर दिया वे दिल्ली दरबार मे सम्मिलित नही हुए। ठाकुर केशरीसिंह ने अपनी लेखनी के द्वारा उस दम्भी वायसराय लार्ड कर्जन को जिसके समक्ष भारत के राजे महाराजे भय से कापते थे, पराजित कर दिया।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट महाराणा फतहसिंह की सेवा मे रहे थे। महाराणा फतहसिंह ने ही उन्हें अपने जामाता कोटा के महाराव के पास भेजा था। साधारण व्यक्ति अपने आश्रय दाता फतहसिंह जैसे स्वाभिमानी नरेश को जबकि उन्होने दिल्ली दरबार मे जाने का निर्णय ले लिया था ऐसी चुभने वाली बातें कहने का स्वप्न मे भी साहस नही करता। परन्तु ठाकुर केशरी सिंह दूसरी धातु के बने थे। उन्होने जब यह देखा कि महाराणा ने दिल्ली दरबार मे सम्मिलित होने का निर्णय ले लिया है तो उनके नाराज होने की परवाह बिना किये उन्होने कडी चेतावनी देना अपना वक्तव्य समझा। यह घटना ठाकुर केशरी सिंह के साहस निर्भीकता और उज्ज्वल चरित्र का एक सुन्दर और सशक्त प्रमाण है।

कोटा षडयन्त्र अभियोग मे इन्दौर के इसपेक्टर जनरल पुलिस आम्सट्राग इन वेस्टिगेशन आफिसर थे। उस महत्वपूर्ण अभियोग मे बृटिश सरकार तथा भारत के सभी अंग्रेजी भारत विरोधी पत्र धुआधार बारहट केशरी सिंह के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। बृटिश सरकार चाहती थी कि उनको कठोर दण्ड दिया जाय। कोटा राज्य सरकार पर दबाव डाला जा रहा था। ठाकुर केशरी सिंह की ओर से भारत के प्रसिद्ध और प्रमुख बैरिस्टर लखनऊ के नवाब हामिद अली शाह पैरवी करने आए थे। यद्यपि नवाब हामिद अली शाह अंग्रेजो के प्रशंसक थे उनकी शिक्षा दीक्षा इङ्गलैंड मे ही हुई थी और बृटिश अधिकारी उनके निकट थे परन्तु वे ठाकुर केशरी सिंह के व्यक्तित्व से इतने अधिक प्रभावित हुए कि बहस कर चुकने के उपरान्त उन्होने स्पेशल जज कोटा की अदालत मे निम्नलिखित शेर कहे थे—

"यह इरशादे अदालत है, उठो तुम बहस को हामिद,
निगाहें मुलाजिमों की भी, मगर कुछ तुम से कहती हैं।
अदब से यह गुजारिश हो हुजूर अब गौर से दम भर,
इधर देखें कि ~दर्जे गून होकर दिल से कहती हैं।
सह का एक दरिया जो न देखा जायगा हरगिज,
बहेगा इस जमी पर खूबियां जिस जां पै रहती हैं।
इसी इजलास में याने कहेंगे किस्सा मुलजिम का,
वो मुलजिम दायरे एकता सभायें जिसको कहती हैं।
वो मुलजिम, उम्र जिसकी देश की खिदमत में गुजरी है,
वो मुलजिम, पानी होकर हड्डिया अब जिसकी बहती हैं।
वही मुलजिम बराबर कैद में जिसका हिरासत है,
बदन में हड्डिया जितनी हैं सब तकलीफ सहती हैं।
वो मुलजिम 'केसरी' जो जा औदिल से देश का हामी,
वो जिसकी खूबिया अखलाक का दम भरती रहती है।
बहुत शोहरत सुनी है आपके इसाफ की हमने,
अदालत गुस्तरी की नदिया हर सिम्त बहती हैं।
महाराज के साये में यही नायब रहे 'हामिद,'
रियासत की भलाई हो दुआयें हक से कहती हैं।

अध्याय ६

जोरावर सिंह बारहट

बीसवी शताब्दी के प्रथम दशान्द म भारत मे क्रांतिकारी भावना अत्यन्त उग्र हो गई थी। वग वग आन्दोलन ने देश भर मे एक नवीन राजनैतिक चैतय उत्पन्न कर दिया था। दासता की असहाय पीडा के कारण स्वाभिमानी देशभक्त भारतीय यह मानन लगे थे कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार कभी भी भारत के शोषण तथा उत्पीडन को समाप्त नही करेगी। अस्तु देश मे एक उग्र क्रातिकारी आन्दोलन उठ खडा हुआ था। सैनिको मे क्रातिकारी भावना भरने के लिए क्रातिकारी युवक क्रातिकारी साहित्य बाटने, बम बनाने के कारखान स्थापित करत, विदेशो से पिस्तौल तथा रिवाल्वर मगवाते और ब्रिटिश अधिकारियो और देशद्रोही अग्रेजो के चाटुकार भारतीयो को अपनी गोली का निशाना बनाते, अपन दल के लिए धन प्राप्त करने के लिए डाका डालते। घिर जान पर युद्ध करते हुए या तो वीरगति प्राप्त करत अथवा फासी के तख्ते पर 'वन्दे मातरम' का जयघोष करत हुए मातृभूमि की बलिवेदी पर आहुति दे देत थे।

उस समय उत्तर भारत मे महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस इस क्रातिकारी दल के सवमा य नेता और सगठनकर्ता थे। वे सेना मे क्रातिकारी भावना उत्पन्न कर एक महाविप्लव करने का आयोजन कर रहे थे। इसी उद्देश्य से उन्होने सभी प्रातो तथा राज्यो मे अपने सहायक और सहयोगियो का जाल बिछा दिया था। राजस्थान मे भी वे सक्रिय थे। इस विप्लव की महान योजना मे ठाकुर केसरीसिंह बारहट, महान देशभक्त, उद्भट विद्वान कवि और राजनीतिज्ञ उनके सहयोगी थे। राजपूताने के राज दरबारो मे उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। उदयपुर महाराणा उनका बहुत सम्मान करते थे। काटा के महाराणा न उनकी ख्याति सुनकर उन्हे उदयपुर के महाराणा से माग लिया था और वे काटा महाराणा की सेवा म आ गय थे। उस समय उनका श्री रासबिहारी बोस से सम्पक हुआ और वे उस महान विप्लव की योजना मे रासबिहारी बोस के सहयागी बन गये थे।

क्रातिकारी काय को राजस्थान मे आगे बढाने के लिए उन्होने अपने पुत्र कुवर प्रताप सिंह बारहट, अपने छोटे भाई जोरावर सिंह बारहट तथा अपने जामाता ईश्वरदान आसिया का रासबिहारी बास के अत्यन्त विश्वास प्राप्त प्रसिद्ध क्रातिकारी मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली भेज दिया था। जब मास्टर अमीरचन्द ने उन तीनो क्रातिकारी युवका का श्री रासबिहारी बोस से परिचय कराया तो उन्होने कहा था "देश भर म ठाकुर केसरी सिंह बारहट ही एक ऐसे क्रातिकारी देशभक्त हैं जिन्होने केवल अपने को ही नही अपन भाई पुत्र और जामाता को भी मातृभूमि की बलिवेदी पर आहुति देने के लिए भेज दिया है।

दिल्ली मे मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर वे तीनो वापस राजस्थान मे आकर क्राति के काय मे जुट गय प्रताप सिंह बारहट महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस के अत्यन्त विश्वास पात्र सहायक बन गये थे। राजस्थान मे क्रातिकारी दल के व सगठनकर्ता थे। वे अपने चाचा श्री जोरावर सिंह के साथ सेना मे क्रातिकारी विचारो का प्रचार करते और देशभक्त युवको को दल में सम्मिलित करने लगे।

उसी समय ब्रिटिश सरकार ने कलकत्ते मे भारत की राजधानी को हटाकर

दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। बात यह थी कि बंगाल में क्रांतिकारी इतने सक्रिय थे कि ब्रिटिश सरकार कलकत्ता से राजधानी हटा देश के किसी भीतरी भाग में ले जाना चाहती थी। उस समय ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ ने सरकार को परामर्श दिया कि अत्यन्त प्राचीन काल से दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से भारत दिल्ली को राजधानी के रूप में देखता रहा है। मुगल बादशाहों के समय भी दिल्ली ही भारत की राजधानी थी। भारत के राजे महाराजे, नवाब तथा सामान्य जन का दिल्ली से मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक सम्बन्ध है। कलकत्ता जिसका निर्माण अंग्रेजों ने किया उसका भारतीय जनमानस के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अस्तु यदि कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया जाय तो भारतीय जन समुदाय पर उसका अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडेगा और भारतीय इस परिवर्तन का हार्दिक स्वागत करेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने सरकार को यह भी परामर्श दिया कि भारतीय सम्राट में ईश्वरीय अंश मानते हैं अस्तु यदि सम्राट स्वयं भारत आकर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा करें तथा बंग भंग समाप्त कर दें तो इससे भारतीयों के मानस पर इसका अच्छा प्रभाव पडेगा।

अस्तु इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए १२ दिसम्बर १९११ को एक विराट दरबार किया और स्वयं सम्राट जार्ज पंचम भारत आये। उस दरबार में सभी देशी नरेश, जागीरदार भूस्वामी, उद्योगपति, धर्माचार्य तथा सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। भारत के सभी शीर्ष व्यक्ति उस दरबार में उपस्थित थे। सम्राट ने घोषणा की कि सरकार कलकत्ते के स्थान पर अब दिल्ली को राजधानी बनावेगी क्योंकि वह इन्द्रप्रस्थ के महान ऐश्वर्य का पुनरुद्धार करना चाहती है। इस दरबार का भारत के जनमानस पर अनुकूल प्रभाव पडा था। ब्रिटिश सरकार इससे प्रसन्न और संतुष्ट थी। यही कारण था जब नयी दिल्ली का निर्माण हो गया तो सरकार ने नयी राजधानी के उद्घाटन समारोह का भी उसी शान शौकत तथा गौरवशाली ढंग से मनाने का आयोजन किया।

योजना यह थी कि कलकत्ते से वायसराय लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन जब नयी दिल्ली पहुंचे तो भारत के सभी देशी नरेश, जागीरदार, व्यापारी, उद्योगपति तथा अन्य सम्भ्रान्त जन उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजाया जावे और वहां से वायसराय तथा वायसरीन सजे हुए हाथी पर बैठ कर जलूस में दिल्ली में प्रवेश करें। समस्त दिल्ली सजाया जावे, सभी देशी नरेश अपने अंगरक्षकों के साथ जुलूस में चलें। जुलूस में देशी राज्यों तथा भारत सरकार की सेनाएं हों जुलूस ऐसा भव्य हो कि भारतीय चकित हो जावें और ब्रिटिश साम्राज्य की महान शक्ति को देख सकें। ब्रिटेन अजेय है कोई शक्ति उसे पराभूत नहीं कर सकती यह प्रभाव डालने के लिए ही यह सारी योजना की गयी थी।

उधर महान विप्लवी नायक रासबिहारी बोस ब्रिटिश शासन के केन्द्र दिल्ली में भारत के सभी वर्गों के शीर्षस्थ लाखों की संख्या में उपस्थित जन समूह में ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के प्रतीक वायसराय का उसकी सेना और अंग–रक्षकों की आंख के सामने मारकर ब्रिटिश शक्ति को चुनौती देने तथा भारतीयों के मानस पर जो आतंक और भय छाया हुआ था उसको समाप्त करने की योजना बना रहे थे। अतएव उन्होंने अपने भरोसे के शिष्यों और सहयोगियों को दिल्ली बुला भेजा। जोरावर सिंह

बारहट तथा प्रताप सिंह बारहट को रासबिहारी बोस का सदेश मिला । वे दिल्ली पहुंच गये ।

लार्ड हार्डिंग की सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ते से जब वायसराय को लेकर दिल्ली पहुंची तो उनका सम्राट के समान भव्य स्वागत हुआ । तोपो की गडगडाहट से समस्त प्रदेश गूंज उठा । भारत के समस्त देशी नरेश स्वागत के लिए नव निर्मित स्टेशन के प्लेटफार्म पर उपस्थित थे । स्वागत की औपचारिक रस्मो के समाप्त होने पर लार्ड हार्डिंग तथा वाइसरीन एक बहुत ऊंचे हाथी पर जो कारचोबी की भूल से सुसज्जित था और जिस पर गगा-जमुनी सोने चांदी का हौदा रखा था सवार हुए और वह शानदार जुलूस चला । उस जुलूस को देखने के लिए लाखो की सख्या मे भारत के विभिन्न प्रांतो तथा विदेशो से यात्री आये थे । जुलूस के मार्ग पर जितनी इमारतें थी दर्शको से खचाखच भरी हुई थी । लार्ड हार्डिंग के पीछे बलरामपुर राज्य का जमादार महावीर सिंह सोने का छत्र लिए बैठा था । वायसराय के हाथी के पीछे देशी नरेश तथा सर्वोच्च सैनिक अधिकारी थे । आगे सेनाए चल रही थी । सैनिक बैंड मोहक ध्वनि से बज रहे थे ।

जैसे ही जुलूस चांदनी चौक पहुंचा कि गगनभेदी धडाका हुआ । लार्ड हार्डिंग तथा महावीर सिंह के बीच बम फूटा । हौदे का पिछला भाग ध्वस्त हो गया । महावीर सिंह मरकर उल्टा लटक गया । वायसराय के कंधे मे चार इंच लम्बा घाव हो गया । उनके कंधे की हड्डी दिखाई देने लगी उनकी गर्दन मे दाहिनी ओर कई घाव हो गये । उनका दायां नितम्ब भी जख्मी हो गया । वे बेहोश हो गये । उनके घावो से रुधिर बह रहा था । उसी समय भीड मे से एक आवाज आयी "शाबाश बहादुर ।"

पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया । सभी मकानो की तलाशी ली गयी किन्तु बम फेंकने वाला ऐसा गायब हुआ कि पकडा न जा सका । भारत सरकार तथा सम्राट तक देशी नरेशो ने अपराधी को पकडवाने वाले को पारितोषिक की जो घोषणाए की उनकी राशि कई करोड रुपये था । परन्तु भारत की पुलिस तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर अपराधी का पता न लगा सके । भारत सरकार क्रोध से उन्मत्त हो उठी । सैकडो व्यक्तियो को सदेह मे पकड लिया गया । महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस, मास्टर अमीरचन्द, अवधबिहारी, बालमुकुन्द, प्रतापसिंह, जोरावर सिंह बसन्त विश्वास, भाटलाल हनुमन्त सहाय तथा कुछ अन्य क्रांतिकारी उस घटना के समय वहां थे । वे सब भूमिगत हो गये कुछ समय के उपरांत अमीरचन्द अवधबिहारी बालमुकुन्द, बसन्त विश्वास पकडे गये । उन पर यह अपराध तो सिद्ध नही हो सका कि उन्होने वायसराय पर बम फेंका परन्तु उनके पास क्रांतिकारी साहित्य निकला और विस्फोटक पदार्थ मिले । अतएव उन पर राजद्रोह तथा षडयन्त्र का अभियोग चला और उन चारो को प्राणदण्ड दे दिया गया ।

रासबिहारी बोस जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह नही पकडे जा सके । रासबिहारी बाद को जापान चले गये, प्रतापसिंह पकडे गये । उनको कठोर यातनाए देकर ब्रिटिश सरकार ने बरेली जेल मे मार डाला । उनके पिता ठाकुर केसरीसिंह बारहट को इससे पूर्व ही कोटा अभियोग मे बीस वर्ष का कठोर कारावास हो गया था और वे हजारीबाग जेल मे कैद थे । प्रतापसिंह बारहट से सरकार ने कहा कि यदि वे का भेद बतला दें तो उनके पिता को छोड दिया जावेगा । उनकी समस्त जागीर

और सम्पत्ति जो जप्त हो गयी है लौटा दी जावेगी। बाबा जोरावर सिंह पर से वारंट हटा लिया जावेगा। उनकी जागीर वापस दे दी जावेगी। उसको स्वयं को छोड़ दिया जावेगा। उनकी माता उनके लिए बिलख-बिलख रोती रहती हैं। तो उस वीर युवक ने उस प्रस्ताव को धृणापूर्ण ठुकरा कर कहा, मेरी मां को रोने दो, जिससे कि दूसरों की माताओं को न रोना पड़े। जोरावर सिंह पुलिस और गुप्तचरों के हाथ नहीं आए और पच्चीस वर्षों तक पहाड़ों और जंगलों में छिप रहे।

बम फैंकने के उपरांत जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह कई दिनों तक दिल्ली में ही छिप रहे। उसके उपरांत रात्रि को पैदल दिल्ली से निकले। दिल्ली से जाने भी बाहर जाने के साधन थे रेल आदि सभी पर गुप्तचरों की कड़ी निगाह थी। स्टेशन पर तलाशी होती थी। इस कारण जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह ने जमुना पार कर पैदल राजस्थान की ओर यात्रा करने का निर्णय किया। जमुना में भीषण बाढ़ थी उसको तैर कर रात्रि में पार करना कठिन था। कई घण्टों तक वे लोग रेल के पुल की लोहे का गर्डर पकड़े हुए लटकते रहे। फिर किसी तरह वे नदी को तैर कर पार कर गये। नदी के किनारे दो वास्टदिलों का सदर हो गया। जोरावर सिंह ने उन्हें अपनी तलवार से यमलोक पहुंचा कर प्रताप सिंह को जो बहुत अधिक थककर अशक्त हो गये थे, पीठ पर डाल लिया और उन्हें ले गए।

जोरावर सिंह को आग षडयन्त्र केस में प्राणदण्ड हुआ था। वे फरार थे। अस्तु वे प्रताप को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा कर चल दिये। लगातार पच्चीस वर्ष तक वह वीर पहाड़ों, जंगलों में घूमता रहा किन्तु भारत सरकार के गुप्तचर पुलिस तथा देशी राज्यों की पुलिस उन्हें पकड़ न सकी। कई बार वे बाल बाल बच गये, नहीं तो वे पकड़ जाते।

एक बार उदयपुर में जब कि वे घूमते हुए वहां पहुंचे तो एक ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर को उन पर संदेह हो गया कि वे सम्भवतः ठाकुर जोरावर सिंह हैं। उसने उदयपुर राज्य के मन्त्री से रेजीडेंट के द्वारा उन्हें पुलिस की हिरासत में ले लिया। महाराणा भोपाल सिंह को जब पता चला तो उन्होंने वहां के एक प्रमुख चारण को कहला दिया कि यदि पुलिस तुमसे पूछे तो जोरावर सिंह को पहचानना नहीं। क्योंकि ठाकुर केशरी सिंह और उनके छोटे भाई जोरावर सिंह उदयपुर में रहे थे और राजस्थान के चारणों में उनका बहुत सम्मान और प्रतिष्ठा थी अस्तु वहां के प्रमुख चारण कवि को बुलाया गया। महाराणा भूपालसिंह के संकेत के अनुसार उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि वे जोरावर सिंह नहीं हैं। परन्तु भारत सरकार का गुप्तचर संतुष्ट नहीं हुआ। जोरावर सिंह पर कोटा राज्य तथा बिहार सरकार का वारंट था अतएव उसने इस बात का आग्रह किया कि कोटा की पुलिस के किसी अधिकारी को बुलाया जावे। अतएव उदयपुर के अधिकारियों ने कोटा सरकार को लिखा कि एक व्यक्ति जिसकी सूरत ठाकुर जोरावर सिंह से मिलती है यहां हिरासत में ले लिया गया है। भारत सरकार के गुप्तचर को उस पर संदेह है अस्तु किसी उच्च अधिकारी को उसे पहचानने को भेजो। कोटा की सरकार ने अपने इन्सपेक्टर जनरल पुलिस श्री रामदास को उदयपुर भेजा। श्री रामदास धर्म संकट में पड़ गये यदि वे स्पष्ट कह देते कि वे जोरावर सिंह नहीं हैं तो बहुत सम्भव था कि आगे यदि यह सिद्ध हो जाता कि वे ही जोरावर सिंह थे तो स्वयं इन्सपेक्टर जनरल संकट में पड़ जाते। अतएव उन्होंने जोरावर सिंह को देख कर

लिख कर दे दिया कि मैं शपथ पूर्वक कहता हू कि न तो मैं यह कह सकता हू कि यह जोरावर सिंह है और न मैं यही कह सकता हू कि वह जोरावर सिंह नही है। इस बीच जोरावर सिंह ने अपना आचरण, व्यवहार और मनोबल इतना ऊचा रखा, अपने मस्तिष्क के सतुलन को ऐसा स्वाभाविक बनाए रखा कि देखने वाला यह कल्पना भी नही कर सकता था कि वे कोई सदिग्ध व्यक्ति हैं। साधू वेष मे व जब भजन गाते थे तो सुनने वालो को भक्ति रस मे डूबा देते। इस सबका परिणाम यह हुआ कि वे उदयपुर से बचकर निकल गये।

श्री जोरावर सिंह का शेष जीवन जगलो और पहाडो मे व्यतीत हुआ। २५ लम्बे वर्षों तक वे पुलिस और गुप्तचरो की आख मे धूल भाक कर मालवा प्रदेश मे रहे। सीतामऊ राज्य मे एकलगढ के श्री जगदीशदान जी के पास वे बहुधा आया करते थे उनकी उनसे घनिष्टता थी। उन्होंने उनके विषय मे लिखा है —

वे हमारे यहा अमरदास वैरागी साधु के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होने मुझे बम फेंकने की घटना इस प्रकार सुनाई थी। दिल्ली मे जब लार्ड हार्डिंग सजे हुए हाथी के होदे पर बैठ कर जुलूस मे निकले तो गोला मैंने स्वय एक ऊचे मकान पर से फेंका। हम लोग चार पाच साथी थे। चार दिन तक हम दिल्ली मे ही छिपे रहे। पाचवें दिन हम लोग बिखर गये। दिल्ली से पाचवें दिन जब निकले तो एक दिन मे पच्चीस मील पैदल चले। एक गुप्तचर हमारा पीछा कर रहा था। हम अहमदाबाद पहुचे परन्तु गुप्तचर ने पीछा नही छोडा तो हम बासवाडा, डूगरपुर की ओर चल पडे। परन्तु हमारा पीछा हो रहा था। जब हम बासवाडा की सीमा को पार कर रहे थे तब उस गुप्तचर ने नाकेदार को आवाज देकर कहा कि इस व्यक्ति को पकड लो। नाकेदार ने मुझे पकडना चाहा। मैंने अपनी लाठी से उस पर प्रहार किया। वह वहीं धराशायी हो गया और मैं बचकर निकल गया।

पच्चीस वर्षों तक जोरावर सिंह सीतामऊ राज्य के पहाडो और जगलो मे रहे। किसी प्रकार सीतमऊ के तत्कालीन महाराजा रामसिंह को यह पता चल गया कि वे सीतामऊ राज्य मे रह रहे हैं। ब्रिटिश सरकार के कृपाभाजन बनने के लिए वे जोरावर सिंह को गिरफ्तार कर भारत सरकार को सौंप देने का विचार कर रहे थे। श्री जोरावर सिंह को एक विश्वस्त सूत्र से यह पता चला तो उन्होंने महाराजा के पास रहीम का नीचे लिखा दोहा लिख भेजा —

"सर सूखे पछी उडे, और कही ठहरायें।
कच्छ मच्छ बिन पच्छ के, कह रहीम कह जाय॥"

महाराजा रामसिंह का यह दोहा पढ कर विचार बदल गया और उन्होंने उसके उपरात श्री जोरावर सिंह को पकडवा कर ब्रिटिश सरकार को दे देने का विचार छोड दिया।

श्री जोरावर सिंह ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका इस सम्बन्ध मे राजस्थान के वरिष्ठ राष्ट्र कर्मी और प्रसिद्ध पत्रकार श्री रामनारायण चौधरी ने लेखक को बतलाया कि प्रतापसिंह बारहट तथा श्री छोटेलाल जैन ने उन्हें बतलाया था कि लार्ड हार्डिंग पर बम श्री जोरावर सिंह ने फेंका था। श्री प्रतापसिंह तो उस काड मे उपस्थित ही थे और श्री जोरावर सिंह के साथ थे। श्री रामनारायण चौधरी प्रताप सिंह बारहट के मित्र तथा सहपाठी थे उनके क्रातिकारी कार्यों से उनका सम्बन्ध था। छोटेलाल जी

श्री चौधरी जी के मित्र तथा सहपाठी थे। श्री चौधरी ने इस सम्बन्ध में मुझे नीचे लिखे अनुसार सूचना भेजी थी—

हार्डिंग बम केस में मेरे सहपाठी छोटेलाल जी भी अभियुक्त थे। केशरीसिंह बारहट के पुत्र प्रतापसिंह उस काण्ड में शरीक ही थे। उन दोनों ने मुझे बतलाया कि बम जोरावर सिंह ने डाला था। बोस बाबू (रासबिहारी) तो शरीर से ही इतने भारी थे कि यह फुर्ती का काम उनके बस का नहीं हो सकता था। बारहाल मेरे पास तो इन दो साथियों के कथन का ही आधार है और उनके लिए मैं यह मान ही नहीं सकता कि वे असत्य बात कहें।' (रामनारायण चौधरी)

इसके अतिरिक्त एक साक्षी और हैं श्रीमती राजलक्ष्मी देवी। वे ठाकुर केसरी सिंह बारहट की पौत्री हैं। वीरवर जोरावर सिंह ने १९३७ में अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से जब कि वे १४ वर्ष की थीं दिल्ली में चांदनी चौक में उस स्थान को बताकर कहा था कि इस जगह से बुर्का पहन कर मैंने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। उनके पति श्री फतह सिंह मानव जो कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा में उच्च अधिकारी हैं उन्होंने इस कथन की पत्र द्वारा पुष्टि की है। लेखक के पूछने पर श्री फतहसिंह मानव ने उस बम काण्ड के विषय में नीचे लिखा विवरण भेजा था—'आपने लार्ड हार्डिंग पर जोरावर सिंह जी द्वारा बम फेंके जाने के सम्बन्ध में पूछा है। उसके लिए मैं इतना ही कह सकता हूं कि १९३७ में उस वीर पुरुष ने स्वयं दिल्ली में अपनी पौत्री को चांदनी चौक में वह स्थान बता कर इस बात का उल्लेख किया था कि इस जगह से मैंने बुरका पहने हुए लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। उस महान देशभक्त की इस युक्ति को असत्य मानने का कोई कारण विद्यमान नहीं है कि यह बात पहली बार उन्होंने घटना के २५ वर्ष बाद कही थी। और वह भी अपनी पौत्री को जिसकी उम्र उस समय चौदह साल की थी। एक दादा अपनी पौत्री से ऐसी बात किसी और अभीष्ट को लेकर नहीं कह सकता," (फतहसिंह मानव 'अतिरिक्त जिलाधीश' कोटा) लेखक स्वयं श्रीमती राजलक्ष्मी देवी से मिला और उन्होंने ऊपर दिए विवरण की पुष्टि की।

आज तक यह प्रश्न विवादग्रस्त बना हुआ है कि वास्तव में लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका। श्री जोरावर सिंह की मृत्यु १९३९ में हुई। वे जीवन के अन्त तक इस तथ्य को किसी से नहीं कह सकते थे, उन पर वारंट था और लार्ड हार्डिंग पर बम अभियोग में वे फरार थे। जो दो चार व्यक्ति इस तथ्य को जानते थे वे भी उनके जीवन काल में इस तथ्य को प्रकट नहीं कर सकते थे।

बंगाल के अधिकांश क्रांतिकारी इतिहास लेखकों ने बसन्त विश्वास द्वारा बम फेंकने की बात कही है। रोल आफ आनर के लेखक कालीचरण घोष का कहना है कि फांसी के पूर्व बसन्त विश्वास ने सम्भवतः किसी मित्र या सम्बन्धी पर यह तथ्य प्रगट कर दिया था कि बम उसने फेंका था इस कारण बंगाल में यही मान्यता सब प्रचलित है कि बसन्त विश्वास ने ही लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था।

उधर जापान में श्री रासबिहारी बोस की पुत्री श्रीमती हिगूची का कहना है कि उनके पिता (श्री रासबिहारी बोस) ने उन्हें बतलाया था कि लार्ड हार्डिंग पर बम उन्होंने फेंका। यही कारण है कि अधिकतर क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास लेखक इस प्रश्न पर मौन हैं और यह प्रश्न विवादग्रस्त बन गया है। स्वयं रासबिहारी

बोस ने वेगवाक सम्मेलन मे कहा था कि मैंने ३० वप पूव दिल्ली मे वायसराय पर बम फेंका था।

इसमे तो तनिक भी सदेह नही है कि बम फेंकने की सम्पूर्ण योजना श्री रासबिहारी बोस के मास्तष्क की उपज थी। वे स्वय घटना स्थल पर उपस्थित थे। उन्होने ही चदननगर से बम मगवाए थे। कौन बम फेंकेगा, कहा से बम फेंका जावेगा, बुर्का पहिन कर स्त्रियो मे मिल कर किस इमारत पर से चान्दनी चौक मे जुलूस पहुचने पर बम फेंका जावेगा, बम फेंक कर किस प्रकार निकला जावेगा। कौन साथी कहां रहेंगे और क्या करेंगे यह सारी योजना उनकी थी। वे ही उस काड के सूत्रधार थे। परतु वे शरीर से भारी थे अतएव इस फुर्ती का काम कि बम फेंक वहा से उतर कर भीड मे सम्मिलित हो सके उनके लिए कठिन था। साथ ही जिस सैनिक विप्लव का वे आयोजन कर रहे थे उसके सवमान्य नेता होने के कारण नेता स्वय ऐसे खतरे का काम करे इसकी सम्भावना कम है। पर इसका श्रेय इनका अवश्य दिया जा सकता है क्योकि सम्पूर्ण योजना उनकी ही थी।

लेखक ने लाला हनुवन्त सहाय से प्रार्थना की थी कि व इस पर प्रकाश डालें क्योकि वे ही अकेले क्रातिकारी हैं जो बम काण्ड के समय वहा उपस्थित थे और श्री रासबिहारी बोस ने उनको यह उत्तरदायित्व सौंपा था कि बम फेके जाने के उपरात बम फेंकने वालो के बाहर निकल जाने की व्यवस्था वे करें। परतु व जो कि साधिकार इस तथ्य पर प्रकाश डाल सकते है मौन रहना पसन्द करते हैं। उन्होने लेखक को लिख भेजा "लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका इस विवाद म मैं पडना नही चाहता" (हनुवन्त सहाय) श्री बसन्त विश्वास ने बम फेंका इस सम्बन्ध मे लेखक को एक साक्षी मिली है। श्री ईश्वरदान आसिया जो ठाकुर केसरीसिंह बारहट के जामाता हैं उन्होने लेखक से कहा कि मास्टर अमीरचन्द ने फासी के पूव उनसे कहा था कि बम बसन्त विश्वास ने फेंका।

प्रतापसिंह बारहट तथा छोटेलाल जी ने श्री रामनारायण चौधरी से कहा कि बम श्री जोरावर सिंह ने फेंका। स्वय श्री जोरावर सिंह ने अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से तथा अपने घनिष्ठ मित्र श्री जगदीशदान से यही बात कही थी जब वे सीतामऊ के जगलो और पहाडो मे छिपे थे। अस्तु, यह भी असत्य नहीं हो सकता। अस्तु लेखक की मान्यता यह है कि महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस ने बसन्त विश्वास तथा जोरावर सिंह दोनो को ही बम फेंकने का उत्तरदायित्व सौंपा हो जिससे कि यदि एक का फेंका बम चूक जावे तो दूसरे का बम कारगर हो। साथ ही दोनो ने बुर्का पहिन कर स्त्रियो के झुड म सम्मिलित हो इमारत के उपर से बम फेंका इससे भी यह सिद्ध होता है कि बम फेंकने के लिए जो युक्ति काम मे लाई गई वह एक जैसी ही थी। अस्तु इसम तनिक भी सन्देह नही कि श्री जोरावर सिंह तथा बसन्त विश्वास ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका और लगभग २६ वर्षों तक जगल और पहाडो मे भटकते रहे परतु पुलिस के हाथ नही आये।

जोरावर सिंह ने राजस्थान के महान प्रतिष्ठित चारण वंश म जन्म लिया उनके पिता श्री कृष्णसिंह का राजस्थान के राजदरबारो म बहुत मान आदर था। वे महाराणा सज्जन सिंह के अत्यन्त विश्वास पात्र परामर्शदाता तथा मन्त्री थे। उन्हीं के परामर्श से महाराणा सज्जनसिंह न प्रसिद्ध क्रातिकारी श्री श्यामकृष्ण वर्मा को

मेवाड़ का प्रधान मंत्री नियुक्त किया था। शाहपुरा में श्री जोरावर सिंह की जागीर और हवेली थी। अपनी योग्यता के परिणाम स्वरूप जोधपुर महाराजा ने श्री जोरावर सिंह को महारानी के महलों का प्रबन्धक नियुक्त किया था। यदि वे चाहते तो वैभव-पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते थे। परन्तु उनके हृदय में जो देशभक्ति की प्रबल वेगवती धारा बह रही थी उसके वशीभूत हो उन्होंने सब कुछ त्याग दिया और श्री रासबिहारी बोस के क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गये। उनकी जागीर और हवेली तथा अन्य सभी सम्पत्ति जब्त करली गयी। २६ वर्षों तक वे पहाड़ और जंगलों में पुलिस की आंख बचा कर भटकते रहे और उनकी वीर पत्नी श्रीमती अनोप कुंवर बाई अनेक कष्ट सहकर भी एक वीर महिला की भांति उनको देश को स्वतंत्र करने के कार्य को करते रहने के लिए प्रेरणा देती रही। अज्ञातवास में जोरावर सिंह कभी-कभी गुप्त रूप से आकर अपने परिवार वालों से मिलते रहते थे।

वीरवर जोरावर सिंह का १९ ९ में निमोनिया हुआ। वे अज्ञात अवस्था में फिरते थे। किसी अस्पताल में चिकित्सा नहीं करा सकते थे। ऐसी भयंकर रुग्ण अवस्था में वे कोटा आये और उस क्रांतिकारी वीर ने वहां अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। जिस वीर ने जीवन के सभी भौतिक सुखों को त्याग कर जीवन पर्यन्त मातृभूमि की स्वतंत्रता का अलख जगाया उसको उसके देशवासी भूल गये। उनका कोई स्मारक नहीं बना, डाक टिकट नहीं निकाला गया। उनकी जीवन गाथा नहीं लिखी गयी स्वयं स्वतन्त्रता भी हम लोगों के आचरण को देख कर लज्जित होती होगी।

हर्ष और संतोष की बात है कि २५ अप्रेल १९७६ को उनके जन्म स्थान शाहपुरा (भीलवाड़ा-राजस्थान) में उनकी मूर्ति की स्थापना की गई है।

अध्याय १८

प्रतापसिंह बारहट

'मेरी मा को रोने दो जिससे अ य किसी की मा न रोय" प्रतापसिंह बा

यह उन दिनो की बात है जब भारत आजाद नही हुआ था। यहा अ का राज्य था। भारतवासी दासता की पीडा से कराह रहे थे, परन्तु कतिपय सा भारतीय युवक अग्रेजो की दासता के जुये का उतार कर फेंकने का प्रयास कर थे। गुलामी की पीडा से उन देशभक्त क्रातिकारी युवको म अग्रेजो के राज्य को उ फेंका का अभूतपूर्व जोश पैदा हो गया था। यद्यपि सब साधारण भारतीय जन अ की दासता की पीडा से दुखी हो कराह रहा था और वह यह भी भली प्रकार ज गया था कि यदि भारतीय इज्जत के साथ ससार मे सर ऊचा कर जीना चाहते हैं हमे देश को स्वतत्र कराना होगा, पर तु देश को स्वतत्र करने के लिए जो त्याग म बलिदान की तैयारी चाहिए वह बहुत कम लोगो मे थी। भारतीय अग्रेजो के अत्याच और आतक से इतने भयभीत थे कि सब साधारण भारतीय देश की बात कहने म डरता था।

उस समय इस देश म कुछ ऐसे साहसी और वीर युवक भी थे जो देश लिए अपने प्राणो का बलिदान करन म भी नही हिचकते थे। व गुप्त क्रातिकारी स ठन स्थापित करते और देश के लिए मरने की शपथ लते। बम बनाते, ब दूकें औ गोली बनाने के कारखाने खड करते विदेशो से छिप कर अस्त्र शस्त्र मगवाते सैनि छावनियो मे जाते और भारतीय सैनिको को देश का आजाद करने के लिए अग्रेजो विरुद्ध उठ खडे होने विप्लव करने के लिए उकसाते। छिप छिपे विद्रोह और क्रा का सदेश छपाकर सैनिक छावनियो मे और स्कूलो तथा कालेजो म बाटते और दे भक्त युवको को अपने दल का सदस्य बनाते। उनकी योजना थी कि जब क्राति क तैयारी पूरी हो जाय तो सब छावनियो के सैनिक एक साथ विद्रोह कर दें। अग्रेज को कैद कर लिया जाये और स्वतत्रता का युद्ध छेड दिया जाये। उनका मानना थ कि यदि सैनिको ने विद्रोह कर दिया तो समस्त भारत म क्राति भडक उठगी। उस समय प्रथम महायुद्ध के कारण भारत मे अग्रेजी सेनाए तो थी ही नही, भारतीय सेनाए भी बहुत कम थी वे योरोप के रणक्षेत्र मे लड रही थी। अस्तु देश भर मे जब विद्रोह भडक उठगा तो अग्रेज टिक नही सकेंगे। देश आजाद हो जायगा।

इस क्रातिकारी दल के नेता वीर रासबिहारी बोस थे। उन्होन समस्त उत्तर भारत म बगाल, बिहार, उडीसा, उत्तर प्रदेश, पजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश म अपने दल को सगठित किया था। जब विप्लवी महानायक रासबिहारी बोस राज स्थान म अपने क्रातिकारी दल के सगठन करने की बात सोच रहे थे उस समय उन्हें एक ऐसे क्रातिकारी युवक नेता की खोज थी जो राजस्थान के देशी राज्यो म दल के कार्य का सगठन कर सकता।

यह सन १९११ की घटना है जबकि रासबिहारी बोस राजस्थान म क्रातिकारी दल का काय करने के लिए किसी साहसी और वीर युवक की खोज म थे। उनके अभिन्न मित्र तथा साथी दल के वरिष्ठ और मान्य सदस्य मास्टर अमीरचन्द दिल्ली मे एक युवक को उनके पास लाये वह युवक और कोई नही प्रतापसिंह बारहट थे। रासबिहारी बोस से उन्होने कहा कि प्रताप सिंह बारहट पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। व योग्य साहसी और वीर हैं। रासबिहारी बोस ने प्रतापसिंह को दल का सदस्य बना लिया। कुछ दिनो मे ही प्रतापसिंह बारहट ने

रासबिहारी बोस का पूरा विश्वास प्राप्त कर लिया और वे उनके दाहिने हाथ बन गये।

क्रांतिकारी वीर प्रतापसिंह का जन्म प्रसिद्ध बारहट परिवार में हुआ था। उनके पितामह श्री कृष्ण सिंह बारहट प्रकाण्ड विद्वान और देशभक्त थे। राजपूताने और मध्य भारत के राज दरबारों में उनका बहुत मान था। जटिल राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने में दक्ष थे कई राज्य के नरेशों ने उन्हें जागीर देकर सम्मानित किया था। उदयपुर के महाराणा के वे परामर्शदाता थे। उन्हीं के परामर्श पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त श्री श्याम कृष्ण शर्मा को महाराणा ने मेवाड़ राज्य का प्रधान मंत्री नियुक्त किया था। बारहट परिवार चारण जाति में योग्यता और देशभक्ति के लिए प्रसिद्ध था। अपनी आन को व प्राण देकर भी रखना जानते थे। प्रतापसिंह के पिता ठाकुर केसरी सिंह बारहट का उदयपुर और कोटा राज दरबारों में बहुत मान था। यद्यपि वे देशी राज्यों में ऊँच पद पर थे परन्तु छिपे छिपे उनका सम्बन्ध क्रांतिकारी दल से था। उन्होंने अपने छोटे भाई ठाकुर जोरावर सिंह बारहट, अपने जामाता श्री ईश्वरदान आसिया और पुत्र प्रतापसिंह बारहट को मास्टर अमीरचन्द के पास भेज दिया था। मास्टर अमीरचन्द ने उनको क्रांतिकारी कार्य करने का प्रशिक्षण दिया था। भेष बदल कर राजकीय कार्यालयों से गुप्त समाचार प्राप्त करना, बम बनाना, क्रांतिकारी दल को संगठित करने, सैनिकों तथा युवकों से किस प्रकार सम्पर्क स्थापित किया जाय इत्यादि सभी प्रकार का प्रशिक्षण मास्टर अमीरचन्द ने ही उन्हें दिया था। श्री ईश्वरदान आसिया ने लेखक को बताया कि एक बार उन्होंने मास्टर अमीरचन्द को ही धोखा दे दिया। जब भेष बदल कर वे उनके पास गये, उनसे बातचीत की तो मास्टर अमीरचन्द भी उनको पहचान नहीं सके बहुत देर तक बात कर चुकने के उपरांत उन्होंने मास्टर अमीरचन्द को बतलाया कि वे कौन हैं, तो मास्टर अमीरचन्द उनसे बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत शाबासी दी। मास्टर अमीरचन्द के पास जब बारहट परिवार के वे तीनों युवक क्रांतिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। तभी मास्टर अमीरचन्द प्रतापसिंह बारहट से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। यही कारण था कि उन्होंने रासबिहारी बोस से प्रतापसिंह बारहट को राजस्थान में क्रांतिकारी दल का दायित्व देने की सिफारिश की थी। जब मास्टर अमीरचन्द ने प्रतापसिंह बारहट ठाकुर जोरावर सिंह बारहट तथा ईश्वरदान आसिया को रासबिहारी बोस से मिलाया तो विप्लवी महानायक रासबिहारी बोस बहुत प्रसन्न हुए और बोले "ठाकुर केसरी सिंह बारहट एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने स्वयं अपने को अपने भाई, पुत्र और जामाता को मातृ भूमि की दासता की शृंखलाओं को काटने के लिए बलिदान कर देने का वीरतापूर्ण पावन संकल्प किया है।

वीर प्रतापसिंह का जन्म सम्वत १६५० की जेष्ठ शुक्ला नवमी को उदयपुर में हुआ था। उस समय उनके पिता श्री ठाकुर केशरी सिंह बारहट महाराणा उदयपुर के सलाहकार थे। बाद को कोटा के महाराव उम्मेदसिंह ने उनकी प्रशंसा सुनकर उन्हें कोटा बुला लिया था। अतएव उनका बालकपन कोटा में व्यतीत हुआ। वहीं उनकी शिक्षा दीक्षा आरम्भ हुई। कुछ समय के उपरांत वे डी० ए० वी० स्कूल, अजमेर में विद्याध्ययन के लिए प्रविष्ट हुए थे। उनके पिता ठाकुर केशरी सिंह बारहट कहा करते थे कि अंग्रेजों द्वारा चलाए गए विश्वविद्यालय गुलामों को उत्पन्न करने वाले साँचे हैं

जहाँ भारत के युवकों को गुलामी में ही प्रसन्न रहने का पाठ पढ़ाया जाता है। इसीलिए प्रतापसिंह ने मैट्रिक की परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं समझी। उसी समय प्रसिद्ध देश भक्त और क्रांतिकारी श्री अर्जुनलाल सेठी ने 'जैन वर्धन विद्यालय' की जयपुर में स्थापना की थी। यों वह एक शैक्षणिक संस्था थी, परन्तु वास्तव में वह देशभक्त क्रांतिकारी युवकों को तैयार करने का साधन था। प्रताप सिंह श्री अर्जुन लाल सेठी के पास चले आये। वहाँ रहकर प्रताप सिंह की देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने की भावना और भी दृढ़ हो गई। जब सेठी जी अपने विद्यालय को जयपुर से हटा कर इन्दौर ले गये तब उनके पिता ठाकुर केशरीसिंह बारहट ने दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त और क्रांतिकारी मास्टर अमीरचन्द के पास उन्हें भेज दिया। उनके साथ उनके काका ठाकुर जोरावर सिंह बारहट तथा बहनोई श्री ईश्वरदान आसिया भी मास्टर अमीरचन्द के पास क्रांति का पाठ पढ़ने के लिए भेजे गये। ये मास्टर अमीरचन्द संस्कृत विद्यालय के हैड मास्टर थे, परन्तु वे श्री रासबिहारी बोस के अन्य मित्र, विश्वास पात्र और क्रांति दल में प्रमुख थे। उस समय गुप्त रूप से जो विद्रोह की तैयारियाँ हो रही थीं उनमें उनका बहुत बड़ा हाथ था। मास्टर अमीरचन्द ने प्रतापसिंह बारहट की प्रतिभा और उनकी वीरता को परख लिया था। वे उनकी आशा में चढ़ गये थे। यही कारण था कि उन्होंने रासबिहारी बोस से राजस्थान में क्रांतिकारी दल तथा विद्रोह का संगठन करने का दायित्व प्रतापसिंह बारहट को देने की सिफारिश की थी। श्री रासबिहारी बोस ने कुछ दिनों प्रतापसिंह को अपने पास रखा। उन्हें विप्लव का संगठन कैसे करना, चाहिए इसकी शिक्षा देकर रासबिहारी बोस ने युवक प्रताप सिंह को राजपूताने में सैनिक छावनियों में भारतीय सैनिकों और देशभक्त युवकों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए होने वाली क्रांति में भाग लेने के लिए तैयार करने के लिए भेज दिया।

प्रताप सिंह उस समय केवल बीस वर्ष के थे। इतनी कम आयु में ही वे क्रांतिकारियों के सर्वमान्य नेता बन गये। वे घूम घूम कर आज़ादी की लड़ाई के लिए राजपूताने के सैनिकों तथा युवकों को तैयार करने लगे। उनके नेतृत्व में राजपूताने में क्रांतिकारी संगठन बहुत शक्तिशाली बन गया।

श्री रासबिहारी बोस चाहते थे कि कोई ऐसा कार्य किया जाय जिससे कि अंग्रेजी सरकार की धाक समाप्त हो जावे उनकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगे और उनका आतंक समाप्त हो। भारतीयों में यह विश्वास उत्पन्न हो जाय कि अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े होने का साहस उत्पन्न हो गया है। उन्हें शीघ्र ही ऐसा अवसर मिल गया। अंग्रेजों ने कलकत्ते को खतरनाक समझ कर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया था। वायसराय ने बड़ी धूम धाम और शान शौकत का आयोजन किया था। वह भारतीयों के हृदय पर यह अंकित कर देना चाहते थे कि ब्रिटिश सत्ता के अधीन रहने और ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय को अपना प्रभु और सर्वोच्च मानने में गौरव अनुभव करते हैं। यही कारण था कि देशी राज्यों के सभी नरेश उनके सामंत ब्रिटिश प्रान्तों के जमींदार तथा ताल्लुकेदार व्यापारी, उद्योगपति, धर्माचार्य कुछ सैनिक तथा नागरिक अधिकारी एवं सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था। समस्त भारत के सर्वोच्च व्यक्ति उस समारोह में उपस्थित थे। भारत सरकार के अधिकारी उस समारोह को भव्य बनाने में कोई कसर उठा नहीं रख रहे थे। सम्पूर्ण देश का ध्यान उस भव्य समारोह की ओर आकर्षित हो गया था।

उधर विप्लवी महानायक रासबिहारी बोस लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना तैयार कर रहे थे। सरकार ने जैसा भव्य आयोजन किया था उसी के अनुरूप क्रान्तिकारियों ने भी लार्ड हार्डिंग पर बम चलाने की योजना तैयार की थी। रास बिहारी बोस अमीरचन्द बालमुकुन्द अवध बिहारी, बसन्त विश्वास तो देहली में थे ही। रासबिहारी बोस ने प्रताप सिंह बारहट तथा उनके चाचा जोरावर सिंह को इस अवसर पर और बुला भेजा इनके अतिरिक्त और क्रान्तिकारी इस योजना में सम्मिलित थे। रासबिहारी बोस ने अपने साथी क्रान्तिकारियों के सहयोग से लार्ड हार्डिंग पर बम चलाने की योजना तैयार की।

दिल्ली के स्टेशन को उस दिन खूब सजाया गया था। जैसे ही लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन प्लेटफार्म पर आकर रुकी, लाल किले से तोपों की गड़गड़ाहट के साथ उनकी सलामी की घोषणा की गई सभी देश के राज्यों के नरेशों और अधिकारियों ने उनकी अगवानी की। फिर वायसराय को एक बहुत ऊंचे हाथी पर जिस पर सोने व चांदी का हौदा रखा गया था और बहुमूल्य कारचोबी के फूलों से सुसज्जित था, बिठाया गया। सेना की टुकड़िया कूच कर रही थी। और सैनिक बैंड मोहक ध्वनि बजा रहे थे। पीछे देशी राज्यों के नरेश अपने सम्पूर्ण राजसी ठाठ में चल रहे थे, इस प्रकार वह शानदार जुलूस दिल्ली की ओर चला मारा दिल्ली शहर उस जुलूस को देखने के लिए उमड़ आया था। देश के कोने कोने और विदेश से लाखों व्यक्ति उसको देखने आये। जुलूस के मार्ग पर सभी मकानों पर अपार भीड़ खचाखच भरी थी। जब वह जुलूस चांदनी चौक पहुँचा और पंजाब नेशनल बैंक की इमारत के सामने आया तो एक भयंकर धड़ाका हुआ। एक बम लार्ड हार्डिंग के हौदे की पीठ पर लगा बलरामपुर राज्य का जमींदार महावीर सिंह जो लार्ड हार्डिंग पर छत्र लगाए हुए था मर कर हौदे में लटक गया। लार्ड की पीठ दाहिने कन्धे, गर्दन और दाहिने कुल्हे पर गहरी चोट आई और वह बेहोश हो कर हौदे में लुढ़क गया। भीड़ में से आवाज आई "शाबाश।" असंख्य जासूस पुलिस और सेना की चौकसी के रहते हुए लाखों की भीड़ में सभी की आंखों में धूल झोंक कर बहादुर साथी हाथ से बम फेंक कर चलते हुए हाथी पर निशाना लगाना बड़े जोखिम, साहस और धैर्य का काम था। सारे जुलूस में मानो भूचाल आ गया। पुलिस और सेना ने सारी भीड़ को घेर लिया। सब सड़कें रोक ली गई। मकान इमारतों को घेर लिया गया। पुलिस और सेना ने कोना कोना छान डाला किन्तु बम फेंकने वाला ऐसा गायब हुआ कि पुलिस कोई पता नहीं लगा सकी। संसार के प्रत्येक देश में लम्बे समय तक चर्चा होती रही। स्काटलेंड यार्ड के संसार प्रसिद्ध जासूस बुलाए गए। सरकार ने एक लाख रुपये के इनाम की घोषणा की। देशी राज्यों के नरेशों ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने के लिए लाखों रुपये के पारितोषिक की घोषणाएं की परन्तु सब व्यर्थ। बम फेंकने वाले का कोई पता नहीं लगा।

आज तक यह रहस्य ही बना हुआ है कि बम किसने फेंका। लेखक की मान्यता है कि बम प्रताप सिंह के चाचा जोरावर सिंह और बसन्त विश्वास ने फेंका परन्तु सारी योजना के सूत्रधार रासबिहारी बोस थे और इसका कार्य रूप में परिणित करने में रासबिहारी बोस, जोरावर सिंह बसन्त विश्वास, मास्टर अमीरचन्द, बालमुकुन्द, हनुमन्त सहाय और अवध बिहारी का सक्रिय सहयोग था। उनके

सम्मिलित प्रयत्नो से ही यह काय सिद्ध हुआ था। प्रताप सिंह और जोरावर सिंह बच कर निकले और यमुना के किनारे आये। नदी में बाढ़ थी। तास घण्टे तक प्रताप सिंह कभी तैरते कभी गोता लगाते और कभी पुल के खम्भे तथा जजीर को पकड़ कर लटकते रहे। जब अधेरा हुआ तो उन्होने तैर कर नदी पार की। प्रताप सिंह बहुत थक गये थे किनारे पर पहुचे तो पुलिस कांस्टेबिलो को उन पर सन्देह हो गया। जोरावर सिंह ने दोनो को तलवार से धराशायी कर दिया और प्रताप सिंह का पीठ पर उठा कर ले गये।

प्रताप सिंह अब छिपे छिपे राजपूत सैनिको मे विप्लव के लिए काय करने लगे। वे कभी राजपूताने मे कभी पजाब मे और कभी हैदराबाद दक्षिण जाते और क्रांति के काय को आगे बढाते। रासबिहारी बोस के पीछे पुलिस हाथ धो कर पडी हुई थी। प्रताप सिंह और उनके बहनोई ईश्वरदान आसिया को देहली षडयत्र मे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, परन्तु कोई प्रमाण न मिलने के कारण छोडना पडा। उधर प्यारेराम साधु के सम्बन्ध म कोटा षडयत्र के मुकदम म उनके पिता केशरी सिंह बारहट पर मुकदमा चला और उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। आरा षडयत्र के मुकदमे मे जोरावर सिंह को प्राण दण्ड की सजा हुई परन्तु वे फरार हो चुके थे। केशरी सिंह बारहट तथा जोरावर सिंह की लाखो की सम्पत्ति जब्त करली गई। उनके मित्र तथा सम्बन्धी उनसे बात करना भी पसद नही करते थे। इस पारिवारिक विपत्ति की तनिक भी चिन्ता न कर वे क्रांति का काय पूरे उत्साह से करते रहे। वे क्रांति का सगठन करने के लिए बराबर घूमते थे। पुलिस उनकी परछाई भी नही छू पाती थी। रासबिहारी बोस बम काण्ड के उपरात दिल्ली से काशी और वहा से नवदीप चले गये थे वहा से छिप कर वे विद्रोह की योजना को सफलतापूवक कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रहे थे। अपने नेता स आगे क्रांति के काम को आगे बढाने के लिए परामश और आदेश लेने के लिए प्रताप सिंह छिप कर नवदीप पहुचे। यह भयकर खतरे का काम था परन्तु प्रताप सिंह मानो सकट से खेलने के लिए ही पैदा हुए थे। अपने नेता से परामश और आदेश लेकर वे नवदीप (बगाल) से राजस्थान चले आए और उनके आदेश के अनुसार काम करने लगे।

उस समय तक प्रताप सिंह के नाम गिरफ्तारी का पुन वारट निकल गया था। पुलिस उनके पीछे पडी थी, परन्तु वे गुप्त रूप से क्रांति का काम कर रहे थे। पिता श्री केशरी सिंह बारहट को आज म कारावास होने पर प्रताप सिंह ने जेल म उन्हे सदेश भेजा "आप तनिक भी चिन्ता न करें प्रताप सिंह अभी जिन्दा है।' प्रताप सिंह पुलिस की आख बचाकर राजस्थान म घूम घूम कर क्रांतिकारी सगठन को दृढ करने मे लगे हुए थे।

इसी दौड धूप म जब प्रताप सिंह हैदराबाद से बीकानेर जा रहे थे, जोधपुर के पास 'आशानाडा" स्टेशन मास्टर से मिलने के लिए उतरे। पुलिस के भय से वह पुलिस का भेदिया बन गया था। प्रताप सिंह को इसकी कोई खबर नही थी। स्टेशन मास्टर न धोखा देकर उन्हे पकडवा दिया।

प्रताप सिंह को बरेली जेल म रखा गया। भारत सरकार का गुप्तचर विभाग बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि प्रताप सिंह विप्लवी नायक रासबिहारी बोस तथा क्रांतिदल के प्रमुख नेताओं का अत्यन्त विश्वास पात्र है। उन्हें क्रांतिकारी दल

म कौन-कौन से व्यक्ति हैं वे कहा हैं, लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका और क्रातिकारी दल का भावी कार्यक्रम क्या है उन्हें सभी कुछ ज्ञात है। वे उस समय केवल २२ वर्ष के युवक थे। गुप्तचर विभाग की मान्यता थी कि उनसे सारा भेद जान लेना कठिन नही होगा।

प्रताप सिंह के बरेली जेल म पहुचते ही चार्ल्स क्लीवलैंड भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निर्देशक बरेली आये और प्रताप सिंह को भाति भाति के प्रलोभन दिये जाने लगे। तुम्हें बहुत ऊचा पद मिलेगा, लाखो रुपयो का पारितोषिक दिया जावगा। तुम्हारे पिता जो आज म कारावास का दण्ड भुगत रहे हैं उन्हें छोड दिया जायेगा। तुम्हारे चाचा जोरावर सिंह के प्राण दण्ड की आज्ञा वापस ले ली जावेगी। वायसराय से अभयदान दिलवाया जायेगा। तुम्हारे पिता चाचा की लाखो रुपये की जो सम्पत्ति जब्त कर ली गई है वह तुम्ह वापस दिला दी जायगी। परन्तु चार्ल्स क्लीवलैंड को यह ज्ञात नही था कि प्रताप सिंह उस परिवार का रत्न है जो प्राण दकर भी विश्वासघात नही करते। प्रताप सिंह टस से मस नहीं हुए। जब प्रताप सिंह से चार्ल्स क्लीवलैंड पराजित हो गये तो उन्होंन उनकी कोमल भावनाओ को छुआ। उन्होने प्रतापसिंह से कहा "मा तुम्हारे लिए निरन्तर रोती रहती हैं वे अत्यन्त दुखी हैं यदि तुमने सरकार की सहायता नही की और तुम्ह दण्ड मिला तो वे तुम्हारे वियोग मे प्राण त्याग देंगी। वीर वर प्रताप सिंह ने चार्ल्स क्लीवलैंड को जो उत्तर दिया वह भारतीय क्रातिकारी इतिहास म प्रसिद्ध है उन्होंने कहा तुम कहते हो कि मेरी मा मेरे लिए दिन रात रोती है और बहुत दुखी है। मेरी मा को रोने दो। मैने अच्छी तरह से सोच कर देख लिया है मैं अपनी मा को हसाने के लिए हजारो माताओ को रुलाना नही चाहता। अगर मैं अपने साथी क्रांतिकारियो की माताओ को रुलाने का कारण बना तो वह मेरी मृत्यु होगी और मरी मा के लिए घोर कलक होगा।"

जब चार्ल्स क्लीवलैंड हार गया, प्रताप सिंह ने किसी का नाम या भेद नही बताया तो उन्हें तरह तरह की भयकर यातनाए दी जाने लगी। प्रतिदिन उनको यातनाए दी जाती परन्तु वह वीर तनिक भी विचलित नही हुआ। अग्रेजी सरकार के यातना देने के विशेषज्ञ गये परन्तु वीर प्रताप सिंह को विचलित न कर सके। निर्दयी अग्रेजी सरकार ने उन्हें तरह तरह की यातनाए देकर मार डाला परन्तु उनसे क्रातिकारियों के सम्बन्ध म वह किंचित भेद भी न जान सकी।

उनकी वीरता की प्रशसा भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के डाईरेक्टर जनरल चार्ल्स क्लीवलैंड ने नीचे लिखे शब्दों मे की थी—

'मैंने आज तक प्रताप सिंह जैसा वीर और विलक्षण बुद्धि का युवक नही देखा। उसे तरह-तरह से सताये जाने मे कोई कमी नही रखी गयी। परन्तु वाह रे वीर धीर बालक टस से मस नही हुआ गजब का कष्ट सहने वाला था। हमारी सब युक्तिया बेकार हुई। हम सब हार गये उसी की बात अटल रही। वह विजयी हुआ।"

जब प्रताप सिंह बरेली जेल मे यातनाए देकर मार डाले गये उस समय उनकी आयु बाईस वर्ष की थी। सारा जीवन उनके सामने पडा था। उन्होंने अपने प्राणो को बचाने के लिए लाखो रुपयो ऊचा पद, सम्पत्ति, पिताजी और चाचा का छुटकारा और अभयदान यह सब लेकर भी साथियो के साथ विश्वासघात नही किया।

प्रताप सिंह जैसे देश भक्तों के बलिदान का ही फल है कि देश स्वतंत्र हुआ। लेकिन जिन्होने अपना बलिदान देकर देश को स्वतंत्र बनाया उन्हें देश भूल गया। हमारी सरकार ने उनकी पावन स्मृति की रक्षा करने की आवश्यकता नहीं समझी। उनका कोई स्मारक नहीं बना यहां तक कि उनके नाम का डाक टिकट भी नहीं निकला। हम लोगो की कृतघ्नता देख कर कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी। शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान मे अभी हाल मे २५ अप्रेल १९७६ को वीरवर प्रताप सिंह बारहट की मूर्ति स्थापित की गई है।

अध्याय ११
राव गोपाल सिंह खरवा

भारत को बृटिश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्त करने का १८५७ का प्रथम सशस्त्र स्वतन्त्रता संग्राम असफल हो गया था। अंग्रेजो के सभ्यता को लज्जित करने वाले अमानवीय दमन और नृशंस अत्याचारों से ऐसा प्रतीत होने लगा मानो देश मे स्वतन्त्रता प्राप्त करने की भावना निर्मूल हो गई हो, देश मे मृत्यु जैसी स्तब्धता छा गई। यद्यपि सशस्त्र क्रांति के प्रमुख नेता या तो वीर गति को प्राप्त कर चुके थे अथवा भारत से बाहर निकल गए थे इस कारण बाह्य रूप से ऐसा दिखता था कि देश मे स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना समाप्त हो गई परन्तु जन साधारण मे व्यापक क्षोभ था जो परिस्थितिवश प्रकट नही हो रहा था।

परन्तु बीसवी शताब्दी के आरम्भ में भारत के अधिकाश प्रदेशो मे क्रांतिकारी दल सगठित हो गए थे और सशस्त्र क्रांति के द्वारा देश को स्वतन्त्र करने की तैयारियाँ की जा रही थी। बग भग के उपरात तो समस्त भारत मे क्रांतिकारी शक्तिया और अधिक बलवती और सक्रिय हो उठीं और भारत वासियों का रोष फूट पडा। बगाल, बिहार, उडीसा में अनुशीलन समिति तथा युगान्तर जैसी क्रांतिकारी पार्टिया सगठित हो गई थी तथा उत्तर प्रदेश तथा पजाब मे भी क्रांतिकारी सगठन खडे हो गए थे। महाराष्ट्र मे अभिनव भारत समिति सशस्त्र क्रांति की योजना बना रही थी।

प्रथम महायुद्ध के समय भारतीय क्रांतिकारी विदेशो और विशेष कर जरमनी से सम्बन्ध स्थापित कर देश म सशस्त्र क्रांति की योजना तैयार कर रहे थे। जो भारतीय विदेशो मे और विशेष कर कनाडा और सयुक्त राज्य अमेरिका मे बस गए थे उनमे भी क्रांति की अग्नि प्रज्वलित हो उठी थी व भी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए सशस्त्र क्रांति का आयोजन कर रहे थे। वहा गदर पार्टी का गठन हो चुका था।

उस समय उत्तर भारत म महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस के नेतृत्व मे देश व्यापी सैनिक विद्रोह की व्यूह रचना की जा रही थी। उनकी प्रेरणा से राजस्थान म भी एक क्रांतिकारी सैनिक सगठन के जन्मदाता ठाकुर केशरी सिंह बारहट और खरवा के राव गोपाल सिंह थे। उन्होंने 'वीर भारत सभा' के नाम से इस सगठन को खडा किया था। खरवा के राव गोपाल सिंह राष्ट्रवर का राजस्थान मध्य भारत तथा देश के अन्य राजपूत नरेशो से घनिष्ट सम्बन्ध था वे उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। केशरी सिंह बारहट ने प्रसिद्ध चारण वश में जन्म लिया था इस कारण राजस्थान के शासको से उनका भी गहरा सम्बन्ध था। उन दोनो ने राजस्थान के राजपूत नरेशों तथा जागीरदारो को उनके प्राचीन गौरव का स्मरण दिला कर, अग्रेजो की दासता मे मुक्त होने की प्रेरणा दी और उनको वीर भारत सभा का सदस्य बनाया। कुछ महाराजे तो वीर भारत सभा के सदस्य ही बन गए थे पर अधिकाश की सहानुभूति उन्होने प्राप्त करली। छोटे जागीरदार तो बहुत बडी सख्या म उसके सदस्य बन गए। वीर भारत सभा म केवल जागीरदार ही नही सैनिक बडी सख्या मे सदस्य बने थे। बात यह थी कि राव गोपाल सिंह खरवा का लक्ष्य सैनिक विद्रोह कराना था अतएव उन्होने सैनिको की ओर विशेष ध्यान दिया और उन्हें क्रांति के मन्त्र की दीक्षा दी। राष्ट्रवर गोपाल सिंह का राजपूत राजाओं से क्योकि रुधिर का और निकट का सम्बन्ध था इस कारण उन्होने राजपूत नरेशो मे क्रांतिकारियो का साथ देकर भारत को स्वतंत्र करने और स्वय स्वतत्र शासक बनने की महती महत्वाकाक्षा जागृत करदी।

क्रांतिकारी संगठन को गति देने, राष्ट्रवर गोपाल सिंह खरवा की सहायता करने तथा क्रांतिकारियो के लिए अस्त्र शस्त्रो को इकट्ठा करने के लिए रासबिहारी बोस ने १६०६-१० मे भूपसिंह नामक क्रांतिकारी युवक (जो बाद को राजस्थान मे विजय सिंह पथिक के नाम से प्रसिद्ध हुए) को राजस्थान म भेजा। भूपसिंह (पथिक जी) खरवा राव गोपाल सिंह के निजी सचिव बन गए। उस समय राजस्थान मे राज्यों की सेना मे आधुनिक ढग की राइफिलो को खरीदा जा रहा था और पुरानी तोड़ेदार हैड्री मार्टिन बदूकों को निकाला जा रहा था अस्तु पुरानी बदूकें बहुत अधिक सख्या मे उपलब्ध थीं। क्रांतिकारियों ने यह अवसर अनुकूल देखा और महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस ने भूपसिंह (पथिक जी) को उन बदूको और कारतूसो को भारी सख्या मे खरीदने के लिए भेजा। खरवा राव गोपाल सिंह के निजी सचिव बन जाने से उनका सम्पर्क राजघरानो और जागीरदारो से भी हो गया और बदूको की खरीद आसान हो गई किसी को सदेह भी नही हुआ। कारतूसो की कमी को पूरा करने लिए पुराने कारतूसो को पुन भरने, नए कारतूस बनाने, पुरानी टूटी हुई बदूको की मरम्मत करने का काम सीखने के लिए के लिए भूपसिंह (पथिक जी) ने रेलवे वर्कशाप मे काम करना प्रारम्भ कर दिया। खरवा राव गोपाल सिंह ने पथिक जी की सहायता से पुराने कारतूसो को भरने, नए कारतूस बनाने तथा बदूको की मरम्मत करने के कई गुप्त कारखाने राजपूताने मे स्थापित कर दिए।

इस समय भारत के क्रांतिकारी देश मे जो भी अस्त्र-शस्त्र मिल सकते थे उनको बडी मात्रा मे इकट्ठा कर लेना चाहते थे। स्थान स्थान पर क्रांतिकारियो ने बम बनाने के कारखाने भी स्थापित किए थे। खरवा राव गोपाल सिंह इस सम्बध म स्वय कलकत्ता गए थे और उन्होने बगाल के क्रांतिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। श्री रासबिहारी बोस के प्रमुख सहायक और सहयोगी श्री शचीन्द्र सान्याल ने बनारस से दो बम बनाने म विशेष दक्षता प्राप्त क्रांतिकारियो को राव गोपाल सिंह खरवा के पास बम बनाने के लिए भेजा। उन्होंने अपने यहा बम बनाने का एक कारखाना स्थापित किया था। उस समय क्रांतिकारियो की नीति यह थी कि भिन्न भिन्न क्षेत्रो मे भिन्न भिन्न नेताओ के मार्ग दर्शन म क्रांतिकारी सगठन खडे किए जावें, कोई एक केन्द्रीय सगठन और एक नेता न हो। क्रांतिकारी सगठन का यह ढाचा इसलिए आवश्यक था कि यदि गुप्तचरो को किसी एक क्षेत्र के क्रांतिकारी दल या कार्यकर्ताओं के सम्बध म पता चल भी जावे तो अन्य क्षेत्रो के दल तथा उनसे सम्बधित क्रांतिकारियो पर कोई आच न आवे। इसी कारण हम देखते हैं कि प्रत्येक प्रात या प्रदेश मे भिन्न भिन्न क्रांतिकारी दल और अलग अलग नेता थे। बगाल मे ही कई क्रांतिकारी दल थे। यही कारण था खरवा राव गोपाल सिंह और बारहट केशरी सिंह ने 'वीर भारत सभा' नाम से एक क्रांतिकारी दल राजस्थान म अलग से खडा किया था।

भारतीय क्रांतिकारियो का विदेशो म भी सम्बध था। बर्लिन कमेटी' ने जरमनी के विदेश मत्री से एक सधि करली थी। बर्लिन कमेटी (भारतीय क्रांतिकारियो का सगठन) ने जरमनी से अस्त्र शस्त्र भेजने और कतिपय विशेषज्ञो का देन के सम्बध मे सधि की थी और यह निश्चय हुआ था कि जरमनी भारत के पूर्व तथा पश्चिमीय तटो पर बडी मात्रा मे अस्त्र शस्त्र पहुचावेगा। पर तु दुर्भाग्यवश जबकि सयुक्त राज्य [illegible] मे उन सभी देशो के क्रांतिकारियो का जो कि दास थे, एक अन्तर्राष्ट्रीय

सम्मेलन हुआ तो भारतीय क्रांतिकारियों ने जरमनी से हुई संधि की चर्चा की और यह बतला दिया कि जरमनी से जहाज भारत के क्रांतिकारियों के लिए अस्त्र शस्त्र लेकर पहुंचेंगे। संयोगवश रशिया से क्रांतिकारियों का वृटिश सरकार से अपने क्रांतिकारी कार्यों के लिए सहायता मिलती थी उन्होंने वृटिश सैनिक विभाग को इस संधि की सूचना दे दी। फिर क्या था वृटिश सरकार ने सिंगापुर में तथा भारत में क्रांतिकारियों पर घातक प्रहार किया। कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका से गदर पार्टी के क्रांतिकारी जो कामागाटामारू जहाज से भारत आ रहे थे उन पर तथा भारत में जो क्रांतिकारी थे उन पर दमन का दावानल फूट पड़ा। जो जरमन जहाज अस्त्र शस्त्र लेकर भारत आ रहे थे वे बीच मार्ग में ही रोक लिया गया। चेकोस्लोवाकिया के क्रांतिकारियों के इस विश्वासघात के कारण वृटिश सरकार सतर्क हो गई और उसने विदेशों में जो भारतीय क्रांतिकारी थे केवल उनका ही पीछा नहीं किया वरन भारत में क्रांतिकारियों की गतिविधियों का पता लगाने के लिए गुप्तचरों का एक जाल बिछा दिया और सैनिक छावनियों पर विशेष रूप से सतर्क दृष्टि रक्खी गई।

यह विषयान्तर है परन्तु राजस्थान में खरवा राव गोपाल सिंह सैनिक विद्रोह की जो तैयारियां कर रहे थे उसके महत्व को समझने के लिए उसका उल्लेख करना आवश्यक था।

राव गोपालसिंह खरवा देश के क्रांतिकारियों और देशी राज्यों के शासकों के मध्य मुख्य कड़ी थे। सन १६१४ के दिसम्बर मास में बनारस में भारत के समस्त क्रांति दलों के नेताओं का एक गुप्त सम्मेलन हुआ और देश में सशस्त्र क्रांति की पूरी योजना तयार कर ली गई। क्रांतिकारी बंगाल पंजाब से सिंगापुर तक सभी अंग्रेजी सैनिक छावनियों में पहुंचे थे उन्होंने सभी सैनिक छावनियों में घुस कर उनकी सैनिक स्थिति का पूरा परिचय प्राप्त कर लिया था। उस समय भारत में केवल पन्द्रह हजार गोरे सैनिक भारत की सारी छावनियों में थे अधिकांश हिन्दुस्तानी सेनाएं क्रांति और विद्रोह का आरम्भ होने पर देश की स्वतंत्रता के लिए शस्त्र उठाने को तैयार थी। क्रांतिकारियों की योजना थी कि पहले लाहौर, रावलपिंडी और फिरोजपुर की छावनियों की सेनाएं विद्रोह करेंगी और क्रांतिकारियों और जनता के सहयोग से वहां के भारतीय पहरेदारों के सहयोग से शस्त्रागारों पर अधिकार कर लेंगी। उसके साथ ही देश के अन्य भागों में भी विद्रोह होगा।

अजमेर नसीराबाद में राव गोपाल सिंह ने हिन्दुस्तानी खानसामा और चपरासियों को इस बात पर राजी कर यह व्यवस्था करली थी कि क्रांति का संकेत पाते ही वे अपने अंग्रेज अधिकारियों को सोते में पकड़ कर चुपचाप क्रांतिकारियों के हवाले कर देंगे।

२१ फरवरी १६१५ को सशस्त्र क्रांति आरम्भ करने की तिथि निश्चित थी। उस दिन करतार सिंह अपने अपने दल के साथ फिरोजपुर में भारतवर्ष के सबप्रथम सबसे बड़े शस्त्रागार पर अधिकार करने वाला था। राजपूताने में राव गोपाल सिंह सेठ दामोदर दास राठी और भूपसिंह को अजमेर नसीराबाद और ब्यावर पर अधिकार कर लेने का दायित्व था।

राजपूताने में राव गोपाल सिंह भूपसिंह (पथिक जी) के साथ २१ फरवरी १६१५ को खरवा स्टेशन के समीप जंगल में अपने दो हजार सशस्त्र क्रांतिकारी सैनिकों का दल लेकर सतर्क थे और संकेत पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रात्रि को दस बजे

अजमेर से जो ट्रेन अहमदाबाद जाती थी उसमे सदेश वाहक आने वाला था। खरवा स्टेशन के निकट जगल म वह बम का धडाका करके सशस्त्र क्रांति के शुभारम्भ की सूचना देने वाला था। निश्चय था कि बम का धडाका होते ही राव गोपाल सिंह खरवा तथा भूपसिंह पूर्व निश्चय के अनुसार आक्रमण कर देंगे। परन्तु ट्रेन निकल गई धड नहीं हुआ। राव गोपाल सिंह खरवा भूपसिंह (पथिक) अपने सशस्त्र दल को ले प्रतीक्षा करते रहे।

दूसरे दिन सदेशवाहक ने लाहौर म घटी घटनाओ और सशस्त्र क्रांति विफल हो जाने की सूचना दी। गुप्तचरो ने उस सशस्त्र विद्रोह का भेद लगा लिय और सरकार सावधान हो गई। सैनिक शस्त्रागारो के भारतीय पहरेदारो को बदल दिया गया। सैनिक छावनियो की भारतीय सेनाओ का स्थानान्तर कर दिया गया वे दूर ले जाई गई। शस्त्रागारो पर केवल गोरे सैनिक ही रखे गये भारतीयो को हटा दिया गया। इस प्रकार क्रांतिकारियो ने जिन भारतीय सैनिक अधिकारियो से सम्बध स्थापित कर लिया था वह छिन्न भिन्न कर दिया गया। १६ फरवरी के प्रात काल लाहौर, अमृतसर फिरोजपुर आदि म क्रांतिकारियो के गुप्त अड्डो पर छापा मारा गया, वहा एक दिन क्रांतिकारी पकड लिए गए और राष्ट्रीय झडा और स्वतन्त्रता के युद्ध का घोषणा पत्र जो कि बडी सख्या मे बाटे जाने वाले थे वे तथा अन्य गुप्त कागज पकड लिए गए। अनेक क्रांतिकारी शस्त्रागारो पर आक्रमण करने के व्यर्थ प्रयास गोलियो के शिकार बन गए। इस प्रकार वह देश व्यापी सशस्त्र क्रांति विफल हो गई।

क्रांति के विफल हो जाने का समाचार पाकर राव गोपाल सिंह खरवा तथा भूपसिंह (पथिक जी) ने तीस हजार हंडी मार्टिन बन्दूकें और बहुत बडी राशि म गोला बारूद सब ले जाकर गुप्त स्थानो पर गाड दिया और दो हजार सशस्त्र क्रांतिकारी सैनिको का दल बिखर गया।

इस घटना के लगभग सात आठ दिना के उपरान्त राव गोपाल सिंह को अपने क्रांतिकारी भेदियो के द्वारा यह सदेश प्राप्त हुआ कि अजमेर का अग्रेज कमिश्नर शीघ्र ही उनको तथा उनके साथियो को गिरफ्तार करने के लिए आ रहा है। राव गोपाल सिंह ने भूपसिंह से मत्रणा की उन लोगो ने यह निर्णय किया कि चुपचाप आत्म समर्पण कर अग्रेजो की जेल म अनिश्चित काल तक बन्द रहने अथवा चार डाकुओ और हत्यारो की भाति फासी पर लटकाए जाने की अपेक्षा युद्ध करते हुए मरना अधिक श्रेयस्कर है। बात यह थी कि राव गोपाल सिंह राष्ट्रवर यद्यपि बीसवी शताब्दी मे उत्पन्न हुए थे परन्तु उन्हे देख कर या उनसे बात करके किसी को भी यह भान होता था कि वह पद्रहवी शताब्दी के किसी स्वाभिमान शौर्य और वीरता के प्रतीक राजपूत नरेश से बात कर रहा है जो आन पर मर मिटना जानता है।

लम्बा कद बलिष्ट शरीर उन्नत ललाट, चौडा वक्ष लम्बे और कठोर भुज दण्ड आखो म अपूर्व तेजस्विता, मुख मण्डल पर अन्तर के स्वाभिमान और शौर्य की नैसर्गिक आभा सब मिला कर उनका व्यक्तित्व इतना अधिक तेजमय था कि कोई भी व्यक्ति उनसे मिल कर और बात करके प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। लेखक को जब खरवा मे उनके प्रथम दर्शन करने और उनके सानिध्य म कुछ समय रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो उसको प्रतिक्षण यह अनुभव हुआ कि वह अपनी मातृभूमि को

विदेशियों की दासता से मुक्त करने के प्रयत्न में अपने प्राणों को निछावर कर सकने वाले एक मध्य युगीन स्वाभिमानी और शौर्यवान राजपूत नरेश से बात कर रहा हो। उनको देख कर लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप की परम्परा अभी समाप्त नहीं हुई है।

राव गोपाल सिंह जैसे स्वाभिमानी और वीर पुरुष का यही निर्णय हो सकता था कि युद्ध करते हुए मरा जावे। अस्तु राव गोपाल सिंह, भूप सिंह (पथिक जी) मोडसिंह, रलियाराम और सवाई सिंह को साथ लेकर रात्रि के समय जबकि गढ में सभी सो रहे थे यथेष्ट मात्रा में अस्त्र शस्त्र तथा कारतूस लेकर और आठ दस दिन की भोजन सामग्री लेकर निकले और समीप के जंगल में शिकार के लिए बने हुए शिकारी बुर्ज में मोर्चा बन्दी करके जा डटे। प्रातःकाल अजमेर का अंग्रेज कमिश्नर एक सैनिक टुकड़ी लेकर खरवा पहुंचा। राव गोपाल सिंह रात्रि में ही गढ को छोड़ कर चले गए थे अस्तु उसने उनकी खोज की और जंगल में उस शिकारी बुर्ज (औदी) को चारों ओर से घेर लिया। कमिश्नर ने राव गोपाल सिंह को आत्म समर्पण करने के लिए तो कहा परन्तु राव गोपाल सिंह आत्म समर्पण करने के लिए तो वहां आए नहीं थे अतएव खरवा राव ने घृणा पूर्वक कमिश्नर के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कमिश्नर ने जब देखा कि खरवा राव लड़ने के लिए तैयार है तो उसे भय हुआ कि यदि युद्ध हुआ तो इस बात की अधिक सम्भावना थी कि आस पास की जनता में रोष उत्पन्न हो जावे और वह उनके विरुद्ध उमड पड़े। बात यह थी कि राव गोपाल सिंह को वहां की जनता अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखती थी और राजपूत तो उन्हें अपना सर्वोच्च नेता स्वीकार करते थे। इसके अतिरिक्त राव गोपाल सिंह को राजपूताने के कई महाराजाओं का आदर और सम्मान प्राप्त था। कमिश्नर के साथ जो सेना की टुकड़ी थी उस पर भी कमिश्नर को भरोसा नहीं था कि यदि खरवा राव से युद्ध हुआ तो उनके प्रभाव के कारण वे सैनिक विद्रोही नहीं हो जावेंगे। यदि खरवा राव युद्ध करते हुए मारे गए जिसके लिए वे कृत संकल्प थे तो राजपूताने में भयंकर क्षोभ और उत्तेजना फैल जाने का भय था जिसके लिए कमिश्नर तैयार नहीं था। यही नहीं भारत सरकार के वैदेशिक विभाग का भी उसको यही संकेत था कि जहां तक सम्भव हो गोली न चलने दी जावे, नहीं तो उसके परिणाम गम्भीर हो सकते हैं।

अतएव अजमेर के अंग्रेज कमिश्नर ने राव गोपाल सिंह को कहलाया कि अभी तक उन पर कोई अभियोग या आरोप नहीं लगाया गया है केवल इस संदेह में कि उनका सम्बन्ध उस क्रांतिकारी दल से है कि जो देश में सशस्त्र क्रांति करने का उपक्रम कर रहा था उनको जाब्ते के अनुसार हिरासत में लेने भर का उसे आदेश मिला है। यह भी सम्भव है कि उन पर कोई आरोप सिद्ध न हो। ऐसी दशा में व्यर्थ में सरकार से युद्ध करके अपने ऊपर एक नया अपराध मोल लेना बुद्धिमानी नहीं होगी। दोनों पक्षों में लम्बे तर्क वितर्क के उपरांत यह समझौता हुआ कि उन्हें किसी हवालात या जेल में न रख कर उन्हें एकान्त स्थान में नजरबन्द किया जावेगा जहां आस पास जंगल हो जिसमें वे शिकार कर सकें क्योंकि वे शिकार करके ही मांस खाने के अभ्यस्त हैं। उन्हें जंगल में जाने और शिकार कर सकने की छूट होगी और उसके लिए अस्त्र शस्त्र रखने तथा घोड़े रखने की सुविधा होगी। उनके उस जंगल में आने जाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होगा और उनके निवास स्थान के आस पास जहां तक दृष्टि

जावे पुलिस या सेना की कोई पहरा नही होगा जिससे कि उन्हें कैदी होने का भान हो।

इस शर्त को कमिश्नर ने स्वीकार कर लिया और उन्हें मेवाड की सीमा पर टाटगढ मे नजर बन्द कर दिया गया। जहा राव गोपाल सिंह खरवा (पथिक जी) तथा उनके साथी नजर बन्द किये गए उसके चारो ओर सघन वन था जहा वे लोग शिकार खेलते थे। उनके अपने निवास स्थान से जंगल मे तीन तीन मील तक जाने की खुली छूट थी। नजर बन्द हो जाने के पन्द्रह दिन उपरात ही भूपसिंह (पथिक जी) की गिरफ्तारी का वारंट टाटगढ पहुच गया। बात यह थी कि लाहौर और फिरोजपुर षडयंत्रों के सम्बन्ध मे गिरफ्तारिया हुईं तो उनमे सोमदत्त नामक व्यक्ति मुखबीर बन गया उसने षडयन्त्र मे सम्मिलित होने वालो मे भूपसिंह का भी नाम बतलाया। भूपसिंह को अपनी गिरफ्तारी के वारंट की पूर्व सूचना मिल चुकी थी। वे रात्रि के निविड अंधकार मे टाटगढ से निकल गए और मेवाड के कतिपय जागीरदारो तथा जनता के सहयोग से भूमिगत हो गए। वे पकडे नही जा सके। आगे चलकर अज्ञातवास मे उन्होने अपना नाम बदल कर विजय सिंह पथिक रख लिया, भूमिगत अवस्था मे बाल और दाढी बढाली और बिजोलिया के किसानो का संगठन किया।

इसी सम्बन्ध मे केसरी सिंह बारहट के यहा जो तलाशियां हुईं उनमे अंग्रेजी सरकार को वीर भारत सभा के सदस्यो की सूची हाथ लग गई। उससे यह स्पष्ट हो गया कि खरवा के राव गोपाल सिंह का क्रांतिकारियो से सम्बन्ध था। वीर भारत सभा के सदस्यो की सूची मिल जाने तथा तत्सम्बन्धी अन्य कागज पत्रो से यह भी सदेह दृढ हो गया कि राजपूताने के कतिपय राजपूत राजाओ की क्रांतिकारियो के प्रति सहानुभूति थी। इस कारण राजपूताने के राजे और महाराजे भी भयभीत हो उठे अब वे क्रांतिकारियो से सम्पर्क रखने मे कतराने लगे। भारत सरकार ने राजाओ के उन समस्त सैनिक अधिकारियो को उत्तरी अफ्रीका की रणभूमि मे लडने के लिए भेज दिये जिन पर क्रांतिकारियो के साथ होने का तनिक भी सदेह था। बहुतो को राज्यो की सेनाओ से हटा दिया गया और उन पर कडी निगरानी रक्खी गई। यही नही भारत सरकार ने इस सशस्त्र क्रांति की सूचना पाने के उपरात भारतीय सेनाओ को युद्ध के मोर्चों पर विदेश भेज दिया और गोरे सैनिको को बाहर से बुलाकर भारतीय सेना मे उनकी संख्या बढ़ादी। इस प्रकार प्रथम महायुद्ध के काल मे भारतीय क्रांतिकारियो की सशस्त्र क्रांति की योजना विफल हो गई। बंगाल के कतिपय क्रांतिकारी मारे गए और रास बिहारी बोस तथा कुछ अन्य क्रांतिकारी विदेश चले गए। वे विदेशो से भारतीय क्रांतिकारियो को अस्त्र शस्त्र भेजने का प्रयत्न करते थे।

भूपसिंह के टाटगढ से निकल जाने के उपरात अवसर पाकर खरवा के राव गोपाल सिंह भी अपने साथियो के साथ टाटगढ से निकल गए। कई महीनो तक वे इधर उधर छिपते और भटकते रहे पर उन्हें कही निरापद आश्रय नही मिला क्योंकि राजपूताने के राजे और जागीरदार अत्यंत भयभीत हो उठे थे। समस्त राजपूताने में गुप्तचरो का एक जाल बिछा हुआ था कोई भी राजा या जागीरदार उनको आश्रय देने का साहस नही कर सकता था। अज्ञातवास मे भटकते हुए वे किशनगढ़ राज्य में स्थित सलेमाबाद जो राठौड राजपूतो का एक प्रसिद्ध ठाकुरद्वारा था, पहुंचे। किसी देशद्रोही ने खरवा राव के वहां पहुंचने की सूचना किशनगढ़ भेजा। समाचार मिलते

ही किशनगढ के दीवान पोनास्कर सशस्त्र सैनिको सहित सलेमाबाद पहुचे और उन्होने मदिर को घेर लिया। खरवा ठाकुर गोपाल सिंह ने मदिर के फाटक बन्द करवा दिए और मदिर के ऊचे बुज पर मोर्चा बन्दी कर जम गए।

दीवान पुनास्कर न राव साहब से पूछा "क्या इच्छा है ?" राव गोपाल सिंह ने निर्भीकता से उत्तर दिया "जिस प्रतिष्ठा के लिए हमने टाटगढ छोडा है और निरतर जगलो मे भटक रहे हैं उसकी रक्षा शरीर म प्राण रहते करना।"

दीवान पुनास्कर ने घबडा कर चीफ कमिश्नर तथा वायसराय को सूचना भेजदी।

जिस समय राव गोपाल सिंह सलेमाबाद के मदिर मे घिरे हुए थे उसकी सूचना पथिक जी के पास भाणा गाव म पहुची। समाचार मिलने पर काकरोली के देशभक्त युवको ने पथिक जी के नेतृत्व म खरवा राव की सहायता करने का निश्चय किया। पथिक जी के नतृत्व मे वे साहसी युवक ऊटो पर चढ कर सलेमाबाद की ओर चल पडे। रात भर मे लम्बा रास्ता पार करके जब वे सलेमाबाद पहुचे तो उन्हे ज्ञात हुआ कि उनक पहुचने के पूव ही राव गोपाल सिंह, मोडसिंह तथा उनके साथियो न कुछ शर्तो पर अग्रेजी सेना के अधिकारियो का आत्म समपण कर दिया था। भारत सरकार ने उन्हे तिहार (देहली के समीप) जल मे नजर बन्द कर दिया। १६२० तक राव गोपाल सिंह तिहार जेल म नजर बन्द रहे। १६२० के उपरात वे नजरबन्दी से मुक्त हुए। अजमेर के इन्सपैक्टर जनरल पुलिस श्री के ने उन्हे आश्वासन दिया था कि उन्हें राजनीतिक बन्दी के रूप मे रखा जावेगा।

नजर बन्दी से रिहाई के उपरात राव गोपाल सिंह सन १६२० म अजमेर मे होने वाले प्रथम दिल्ली व अजमेर, मेरवाडा प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्ष चुन गए।

२८ माघ १६२० को अजमेर मरवाडा राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए अपने भाषण मे राव गोपाल सिंह खरवा ने जो विचार व्यक्त किये थे व उनके अन्तर के विचारो का सही चित्रण करते हैं।

'मैं पाच वष तक नजर बन्दी भोगते हुए जन्म स्थान और निज प्रान्त से बाहर रह कर कल ही यहा पहुचा हू और आज आपने मुझे इस राजनैतिक सम्मलन का सभापति बनाया। जो कुछ दृश्य आज इस समय देख रहा हूँ, उससे मुझको भारी परिवतन प्रतीत हो रहा है। हिन्दुस्तान के सब प्रान्तो मे राजपूताना पिछडा माना जाता है। परन्तु इस समय यहा के लोगो म जैसी राजनैतिक जागृति हुई है, उसको देखते हुए उसे पीछे नही कहा जा सकता। इस सभा मे जसा उत्साह हम लोग दिखा रहे है उससे भविष्य म आशा बडी प्रबल हो चली है। ईश्वर वह दिन शीघ्र दिखलाने वाला है जब राजपूताना किसी से पीछे नही किन्तु अपने पूवजो के समान कर्त्तव्य पालन मे सबसे आगे रहेगा।

वास्तव म देखा जाय तो एक वर्ष नहीं, दो वष नही, दस वर्ष नही, बीस वर्ष नही किन्तु निज देश की स्वतन्त्रता, मान, गौरव और मर्यादा की रक्षा के लिए एक हजार वष तक तलवार चलाने वाले धर्म परायण महानुभावो का खून जिन लोगो की रगो मे वह रहा है, उनमे का एक आदमी आपके सामने सेवा म खडा है।

इस समय सारे देश म हलचल मची हुई है राष्ट्रीय भाव दिन पर

दिन बढ़ता चला जाता है जिसका कि हमारी सैभा एक प्रमाण है। इस सारी हलचल का कारण राजनीतिक स्वत्व का भेद भाव है। पेट की रोटी के पीछे पर असबाब की पोटरी, हाथ में गज लिए योरोप से हिन्दुस्तान में आकर घर-घर फिरने वाले बनियों ने युक्ति और धूर्तता के आश्रय से यहां राज्य जमाने का प्रपंच रचा। इसमें इङ्गलैंड के व्यापारी सफल हुए। देश के लोगों ने साधारण राजनैतिक स्वत्व जब अधिकारियों से मांगे तो उनकी सुनाई नहीं की गई। इससे शासकों और शासितों में परस्पर बैर भाव बढ़ता गया अधिकारियों की दमन नीति से दुखी होकर देश के स्थानों में आत्म त्यागी उग्र प्रकृति के लोगों ने उस दमन नीति के प्रतिकार में तमंचे, बम वगैरह से काम लेने का रास्ता पकड़ा।

अधिकारियों ने देश सेवा जैसे पवित्र काम को कलंकित साबित करने की विधि रची और सैकड़ों आदमियों को दण्ड देने और उनको बुरा साबित करने का निष्फल प्रपंच रच कर भी उनको बुरा साबित न कर सके। मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूं जिसके साथ यही घटना हुई है। मुझे अनेक प्रकार से कष्ट तो दिए ही गए परन्तु उस पर कलश चढ़ाया गया कि जब मैं जेल में था तब श्रीमान लार्ड चैम्सफोर्ड ने सन १६१७ के नवम्बर मास में यहां अजमेर मेरवाड़ा के इस्तमरारदारों के दरबार में भाषण करते हुए कोई कारण प्रकट किए बिना ही फरमाया कि मैंने अपने कामों से साथी इस्तमरारदारों और अपने निज वंश के सुनाम पर धब्बा लगाया।"

मैं श्रीमान लार्ड चैम्सफोर्ड को चैलेंज करता हूं कि कोई मुझे कलंकित साबित करने वाला सिद्ध करे। क्या सरकार का और क्या हमको दोनों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि देशभक्ति होने वाले राष्ट्र द्रोही नहीं हो सकते। स्वदेश सेवा जैसे परम पवित्र कर्तव्य पूर्ण मेरे कार्य पर अधिकारियों ने उलटा रंग चढ़ाया और मुझे नजरबन्द कर दिया। रियासत जब्त करली गई और श्रीमान लार्ड चेम्सफोर्ड ने मुझको वंश के सुनाम पर धब्बा लगाने वाला कह कर दुर्व्यवहार की हद करदी। क्या यह न्याय की बात है?

अधिकारियों को शर्म आनी चाहिए

पाठक कल्पना करें कि अंग्रेजी शासन काल में वायसराय को खुल आम इस प्रकार चुनौती कितने जागीरदार या नरेश दे सकते थे। बात यह थी कि जब राव गोपाल सिंह खरवा की राजगद्दी पर बैठे तभी से उनका अंग्रेज अधिकारियों से संघर्ष खड़ा हो गया था संवत् १६५६ में राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा। स्थिति इतनी भयंकर हो उठी कि पतियों ने अपनी पत्नियों को और माताओं ने अपने बच्चों को बेच दिया। सारा प्रदेश मृत्यु की विभीषिका से उत्पीड़ित था। खरवा राव गोपाल सिंह का हृदय द्रवित हो उठा। जागीर के पास इतना धन तो था नहीं कि वे अपनी प्रजा के प्राणों की रक्षा कर सकते अस्तु राव साहब ने लाखों रुपये ऋण लिया परन्तु अपने प्रजा के प्राणों की रक्षा की। दुर्भिक्ष में अपनी प्रजा की प्राण रक्षा के लिए उनके इस सद्प्रयत्न के कारण उनका चारों ओर यश फैल गया। एक कवि ने उनके प्रजा प्रेम का स्मरण करते हुए लिखा था।

'मंय लायो भूपति मेता, दुमल छपनो देस,
पाली प्रजा गोपालसी, परम धरम चहु पस।"

प्रजा के लिए राव साहब ने जागीर की स्थिति को देखते हुए बहुत अधिक

ऋण ले लिया था। अजमेर मेरवाड़ा के कमिश्नर ने उनके समक्ष यह प्रस्ताव रक्खा कि यदि वे अपने अधिकार त्याग देने के लिए तैयार हों तो सरकार उनको ऋण दे देगी। परन्तु निर्भीक और साहसी राव गोपाल सिंह ने दृढ़ता पूर्वक इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कमिश्नर मिस्टर मिचड ने उनको धमकाया तो राव गोपाल सिंह का क्षत्रित्व जाग उठा। उन्होंने कठोर शब्दों में कमिश्नर की भर्त्सना की और उन्हें चलता कर दिया। कुछ ही समय के उपरांत 'मसूदा' ठिकाने के उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर राव साहब का संघर्ष तत्कालीन कमिश्नर श्री मलविन से हो गया। मसूदा की गद्दी के दो दावेदार होने के कारण सरकार ठिकाने को जब्त करने की दुरभि संधि कर रही थी। जब खरवा राव गोपाल सिंह को यह ज्ञात हुआ कि सरकार मसूदा के ठिकाने को जब्त करना चाहती है तो उन्होंने एक आन्दोलन खड़ा कर दिया और सरकार को चुनौती देते हुए घोषणा की कि "यदि सरकार ने मसूदा को जब्त करने का प्रयास किया तो राठौड़ों का बच्चा-बच्चा मसूदा का हकदार बन कर विद्रोही बन जायगा और उस राह में अग्रसर होने वाला पहला व्यक्ति मैं होऊंगा।" खरवा राव गोपाल सिंह के इस मसूदा आंदोलन से भयभीत होकर सरकार ने मसूदा को जब्त करने का विचार छोड़ दिया किन्तु जहां खरवा राव की यश कीर्ति फैल गई वहां वे भारत सरकार की आंखों में कांटे की भांति खटकने लगे।

जब राव गोपाल सिंह ने महाविप्लवी रासबिहारी बोस और श्री अरविन्द से सम्पर्क स्थापित किया वे कलकत्ता जाकर उनसे मिले और राजस्थान में क्रांतिकारी दल खड़ा किया तो सरकार को उनके विरुद्ध कोई प्रमाण न मिलने के कारण वह प्रत्यक्ष कुछ नहीं कर सकी परन्तु जब क्रांति का प्रयत्न असफल हो गया तो सरकार ने उन्हें संदेह में नजरबन्द कर दिया। पांच लम्बे वर्षों तक वे नजरबन्द रहे। नजरबन्दी से मुक्त होने के उपरांत उनका समस्त जीवन मातृ देश के लिए अर्पित था। आरम्भ में वे कांग्रेस में सम्मिलित हुए परन्तु उनका अहिंसा में विश्वास नहीं था इस कारण वे उससे अलग हो गए।

राव गोपाल सिंह की दृढ़ इच्छा शक्ति तथा धर्म के प्रति दृढ़ आस्था का चमत्कार पूर्ण प्रमाण हम उनकी मृत्यु के समय की घटना में देखने को मिलता है। जीवन के अंतिम दिनों में राव साहब अधिकतर अस्वस्थ रहने लगे थे। वे कृष्ण के भक्त थे अतएव सारा समय कृष्ण भक्ति में लगता था। उनके मित्र तथा चिकित्सक अजमेर के प्रसिद्ध डाक्टर श्री अम्बालाल जी थे उन्होंने उनकी मृत्यु के समय की घटना का 'एक भक्त के महाप्रयाण का चमत्कारिक दृश्य" शीर्षक लेख में जो कि कल्याण के 'गीता तत्वांक खंड तीन' में पृष्ठ १२३० पर प्रकाशित हुआ है इस प्रकार वर्णन किया है, हम उसके कुछ अंश यहां देते हैं।

'मृत्यु के लगभग दो मास पूर्व उनके शरीर में उदर विकार के लक्षण प्रकट हुए। मैंने ऐक्स रे द्वारा परीक्षा कराई एवं निश्चय हुआ कि आंतों का कैंसर रोग है। वेदना इतनी भयंकर थी कि मर्फिया के इंजेक्शन से भी आराम नहीं मिलता था किन्तु इस भीषण वेदना में भी मन को आश्चर्यजनक रूप से एकाग्र करके वे कृष्ण ध्यान में नियम पूर्वक बैठते थे। वेदना की रेखा उनके ललाट पर तनिक भी न रहती थी।

मृत्यु के पहले दिन सायंकाल मैंने उनको निवेदन किया कि अब अधिक समय नहीं है यदि आपको कोई वसीयत आदि करनी हो तो शीघ्र करें। विष (Toxemia)

के कारण आप रात्रि मे मूर्छा की अवस्था म अवश्य हो जावेग। राव साहब कहने लगे यह असम्भव है कि गोपाल सिंह इस शुभ नक्षत्र मे हिजडे की मौत मर जाय, शुभ ग्रह आने पर ही गोपाल सिंह मरेगा, आप देखते जाइए, भगवान श्री कृष्ण क्या करते हैं। मृत्यु से भी दो दो हाथ होगे।

मेरे आश्चर्य की सीमा नही रही जब मैं प्रात काल ५ बजे उठा मैंने उन्हें ध्यान मे बैठे देखा। ध्यान पूरा होने पर व कहने लगे, डाक्टर साहब आज हिचकी बन्द है वमन भी बन्द है दस्त भी स्वत एक महीने बाद आज ही हुई है। मैं बहुत अच्छा हू हल्का हू शरीर नही रहेगा किन्तु भगवान के भजन मे विघ्न न हो इसलिए श्री कृष्ण ने यह बाधायें दूर कर दी हैं शुभ ग्रह भी आ गया है।

करीब १० बजे मैं आया तो देखा कि उनकी नाडी जा रही है। मैंने कहा "राव साहब अब करीब आधा घण्टा शेष है" राव साहब कहने लगे नही अभी पाव घण्टा शेष हैं घबरायें नही। सवा दो बजे मैं पहुचा नमस्कार किया। मुझे गीता सुनाने को कहा। जब व गीता सुन रहे थे तब उनका मस्तिष्क कितना स्वच्छ था। उस समय भी व किसी किसी पद का अर्थ पूछते थ। ठीक मृत्यु से पाच मिनट पूर्व व आसन पर बैठ गए। गगा जल पान किया तुलसी पत्र लिये गगाजी की माटी का ललाट पर लेप किया, एव वृन्दावन की रज सर पर रक्खी। हाथ जोड कर ध्यान करने लगे।

कहने लगे डाक्टर साहब अब आपका चेहरा नहीं दिख रहा है किन्तु भगवान श्री कृष्ण के दर्शन हो रहे है।

महात्मन अब कूच हो रहा है। यह श्री कृष्ण खडे हैं उनके चरणो में लीन हो रहा हू।

हरि ओउम तत् सत् हरि ओउम, बस एक सेकिण्ड मे महाप्रस्थान हो गया। हम सब विस्फरित नेत्रो से देखते रह गए।

जीवन भर देश की स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष करने वाले तथा अपना सर्वस्व देश के लिए अर्पण कर देने वाले ब्रिटिश सत्ता के समक्ष न झुकने वाले और मृत्यु से भी लड कर इच्छा मृत्यु मरने वाले उस महान क्रान्तिकारी देश भक्त महापुरुष को देश भूल गया। हमने उन बलिदानियो के बलिदान की कथा को देश को नहीं सुनाया जिनकी हड्डियो से इस देश की स्वतन्त्रता के भवन की नीव रखी गई है। आज की पीढी को यह ज्ञात ही नही है कि लाखो क्रान्तिकारी देश भक्तो के आत्म त्याग के फल स्वरूप ही हम स्वतत्र हुए हैं। जिस देश ने महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस को भुला दिया और जो प्रातः स्मरणीय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के प्रति उदासीन हो सकता है उनको भी भुला देने का उपक्रम कर रहा है यदि उस देश ने खरवा के राव गोपाल सिंह को भुला दिया तो यह हमारी कृतघ्नता की परम्परा के अनुकूल ही है इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है।

राव गोपाल सिंह तथा श्री केशरी सिंह बारहट के सम्बन्ध म डायरेक्टर क्रिमिनल इटलीजस (गुप्तचर विभाग के निदेशक) ने नीचे लिखे अनुसार रिपोर्ट दी था।

गोपाल सिंह और केसरी सिंह बृटिश भारत के क्रान्तिकारियो से मिले हुए थे, और वे बृटिश भारत के षडयन्त्रो मे सक्रिय भाग ले रहे थे। जब ठाकुर गोपाल सिंह से उनकी इन कार्यवाहियो के बारे म स्पष्टीकरण करने को कहा गया तो वे टर बार गोलमाल वक्तव्य देते रहे और साथ ही षडयन्त्रकारी कार्य करते रहे और उनके अधिकार म

अग्नि अस्त्रों का एक असाधारण रूप से बड़ा शस्त्रागार था।"

(फौरेन पोलिटिकल विभाग, गोपनीय १ मार्च १९१७ संख्या १ से २९ तक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली)।

राव गोपाल सिंह ने बंगाल के क्रांतिकारियों और उत्तर भारत में महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लिया। वे स्वयं कलकत्ता गए थे और अनुशीलन समिति के मुख्य व्यक्तियों से मिले थे। शचीन्द्रनाथ सान्याल के द्वारा राव गोपाल सिंह ने दो बंगाली बम विशेषज्ञ बुलाये थे जो खरवा में बम तैयार करते थे। राव गोपाल सिंह ने अपना गुप्त शस्त्रागार में बहुत बड़ी संख्या में अस्त्र शस्त्र एकत्रित कर लिए थे।

मनीलाल ने अपने बयान में कहा था कि राव गोपाल सिंह का रासबिहारी बोस से निकट का सम्बन्ध था। प्रथम महायुद्ध के समय रासबिहारी बोस के नेतृत्व में जो २१ फरवरी १९१५ को विद्रोह आरम्भ होने वाला था वे उसमें सम्मिलित थे। उसने अपने बयान में यह भी कहा था कि राव गोपाल सिंह को आशा थी कि जब विद्रोह आरम्भ हो जावेगा तो जोधपुर में सर प्रताप तथा बीकानेर के महाराजा से भी सहयोग मिलेगा मनीलाल के बयान के अनुसार राव गोपाल सिंह लाहौर षड्यन्त्र में भी सम्मिलित थे। (सरकारी गवाह मनीलाल का बयान—वैदेशिक तथा राजनीतिक विभाग गोपनीय १ मार्च १९१७) संख्या १ से २९ तक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली।

अध्याय १२

जब लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया

दिल्ली का राजधानी बनाना —बंग भंग आन्दोलन के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि भारत की राजधानी कलकत्ता से हटा कर दिल्ली ले जाई जावे। बात यह थी कि बंगाल में उग्र क्रांतिकारियों ने जनमानस को क्षुब्ध कर दिया था और सर्व साधारण में अंग्रेजो के प्रति घृणा और रोष उत्पन्न हो गया था। बंगाल क्रांतिकारियों का गढ था, आए दिन उच्च सरकारी अधिकारियो पर क्रांतिकारी आक्रमण करते थे, इससे भारत सरकार गम्भीर रूप से चिंतित हो उठी थी। उसकी समझ में आ गया कि बंगाल जैसे खतरनाक प्रांत में राजधानी रखना निरापद नहीं है। उस समय ब्रिटिश कूटनितिज्ञो ने सरकार को यह परामर्श दिया कि अत्यन्त प्राचीनकाल से इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से समस्त भारत इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को देश की राजधानी के रूप में देखता रहा है। भारत के राजे महाराजे और नवाब तथा जन साधारण का दिल्ली से मनोवैज्ञानिक तथा भावना का सम्बन्ध रहा है अस्तु कलकत्ता जिसका निर्माण अंग्रेजो ने किया और जिसका भारतीय जनमानस के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है यदि उसके स्थान पर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी बनाया जाय तो उसका भारतीय जनता पर अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा और वह इसका स्वागत करेगी। इसके अतिरिक्त उनकी यह भी धारणा थी कि भारतीय लोग परम्परागत विश्वास के कारण सम्राट को ईश्वर का अंश मानते है अतएव स्वयं सम्राट को भारत आकर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा करनी चाहिए साथ ही बंग भंग को भी समाप्त कर देना चाहिए। इससे भारत और विशेष कर बंगाल का जनमानस जो आज क्षुब्ध है वह भी शांत हो जावेगा।

इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए दिल्ली में १२ दिसम्बर १९११ को एक विराट दरबार किया गया। स्वयं सम्राट पांचवें जार्ज दरबार में भाग लेने के लिए इंगलैंड से भारत आए। उस ऐतिहासिक दरबार में भारत के सभी राजे महाराजे नवाब, जागीरदार भूस्वामी, धार्मिक उद्योगपति व्यवसायी तथा अन्य क्षेत्रो के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस प्रकार से समस्त भारत के शीर्ष पुरुष वहां आए हुए थे। उस दरबार में सम्राट ने स्वयं घोषणा की थी कि भारत की राजधानी कलकत्ता के स्थान पर अब दिल्ली होगी। क्योंकि सरकार चाहती है कि प्राचीन इन्द्रप्रस्थ के गौरव और ऐश्वर्य का पुनरुद्धार हो। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी घोषणा की कि भारत और विशेष कर बंगाल की जनता के असंतोष को ध्यान में रख कर प्रजा वत्सल सम्राट बंगभंग को समाप्त करते हैं, और पूर्वी तथा पश्चिमी बंगाल का एक प्रांत बना दिया जाता है। नई दिल्ली का शिलान्यास भी सम्राट के हाथो से ही कराया गया। इस वैभवपूर्ण दरबार का भारत के जनमानस पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। भारत वासियों ने सम्राट भक्ति का अपूर्व प्रदर्शन किया। ब्रिटिश सरकार इससे अत्यन्त प्रसन्न और संतुष्ट थी। यही कारण था कि सरकार ने नई राजधानी के उद्घाटन और गृहप्रवेश समारोह को भी उसी शानशौकत और गौरवपूर्ण ढंग से मनाने का निश्चय किया।

लार्ड हार्डिंग का जुलूस—

योजना यह थी कि कलकत्ता से वायसराय लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन जब

दिल्ली आवे तो भारत के सभी राजे महाराजे, नवाब तथा अन्य सभी गणमान्य आमन्त्रित व्यक्ति स्टेशन पर उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजाया जावे और वहा से वायसराय वायसरीन के साथ सजे हुए हाथी पर बैठकर जुलुस मे दिल्ली मे प्रवेश करें। देश के सभी राजे महाराजे अपने अग रक्षको के साथ और अपने राजसी ठाट बाट मे वायसराय के पीछे उनके जुलूस म रहें। समस्त दिल्ली सजाया जावे। उस विशाल जुलूस मे अस्त्र शस्त्रो से सज्जित कूच करती हुई भारत सरकार और देशी राज्यो की सेनाए हो। जुलूस ऐसा भ य और प्रभावोत्पादक हो कि उसे देख कर भारतीय आश्चर्य चकित हो ज वें और ब्रिटिश साम्राज्य की महान शक्ति और वैभव का दशन कर सकें। ब्रिटिश सरकार इस अवसर का उपयोग इस प्रकार करना चाहती थी कि भारतीय जनमानस पर यह छाप पडे कि ब्रिटिश शक्ति अजेय है, उसका वैभव अतुलनीय है, ससार की कोई भी शक्ति उसको चुनौती नही द सकती।

जहा एक ओर ब्रिटिश सरकार और उसका यशोगान करने वाले सम्राट भक्त चाटुकार भारतीय इस अवसर का उपयोग भारतीया की ब्रिटिश साम्र ज्य के प्रति भक्ति को दृढ करने के लिए करना चाहते थे वहा दूसरी ओर भारतीय सशस्त्र क्रांति के अग्रदूत महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस ब्रिटिश शासन के केन्द्र दिल्ली मे, ब्रिटिश सत्ता और शक्ति के प्रतीक गवनर जनरल को उनकी सेना और अगरक्षका की आखों के सामन लाखो भारतीया के मध्य समाप्त करके ब्रिटिश शक्ति का चुनौती देने की योजना बना रहे थे।

जब लाड हार्डिग की सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ता से २३ दिसम्बर १९१२ को प्रात काल दिल्ली पहुची तो उनका शाही स्वागत हुआ। भारत के सभी देशी नरेश उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर उपस्थित थे। जब स्वागत की सभी औपचारिक रस्मे पूरी हो गई तो लाड हार्डिग एक बहुत ऊचे हाथी पर जो बहुमूल्य कारचोबी की झूलो से सुसज्जित था और जिस पर चादी सोने का गगा–जमुनी भारी हौदा रखा हुआ था सवार हुए और वह विशाल और भव्य जुलूस चला। लाड हार्डिग के पीछे बलरामपुर का जमादार 'महावीर सिंह' सोने के काम का अत्यन्त सुन्दर छत्र सम्राट के प्रतिनिधि पर लगाए हुए पीछे बैठा था। वायसराय की बाई ओर लेडी हार्डिग बैठी थी और उनके पीछे उनका निजी सेवक खडा था। लाड हार्डिग के पीछे देशी राज्यो के नरेश तथा भारत सरकार के सर्वोच्च अधिकारी तथा सैनिक अधिकारी चल रहे थे। उस जुलूस को देखने के लिए लाखो की सख्या मे भारत के विभिन्न भागो से तथा विदेशो से दशक यात्री आए थे। जुलूस के माग पर जितनी भी इमारतें थी व दशका से खचाखच भरी थी। जुलूस के आगे सेनाए चल रही थी और सैनिक बड मोहक ध्वनि बजा रहे थे।

बम विस्फोट

जैसे ही जुलूस चादनी चौक के मध्य मे पजाब नेशनल बैंक के भवन के सामने पहुँचा कि गगनभेदी भयानक धड़ाका हुआ और एक बम हौदे के पिछले भाग पर आकर फटा। लाड हार्डिग और छत्रधारी जमादार महावीर सिंह के बीच मे बम फटा था। हौदे में लाड हार्डिग का जो सिंहासन था उसके पश्च भाग के कारण, जो ऊचा था, बम विस्फोट का वायसराय पर पूरा आघात नही हुआ परन्तु हौदे का पिछला भाग पूरा रूप से ध्वस्त हो गया। मोटा और भारी उस सोने चादी के हौदे का पिछला भाग उड

गया। छत्रधारी महावीर सिंह मर कर लटक गया उसके पैर हाथी की रस्सी मे फसे हुए थे। लेडी हार्डिंग के पीछे जो सेवक खडा था वह बुरी तरह घायल हो गया था। वायसराय भी भीषण रूप से जख्मी हो गये थे। बम विस्फोट का एक छोटा सा भाग छिटककर वायसराय के दाहिने कधे को जख्मी करता हुआ निकल गया था। वायसराय के कधे मे चार इच लम्बा और डेढ इच गहरा घाव हो गया था उनके कधे की हड्डी दिखलाई पड रही थी, उनकी गर्दन मे दाई ओर अनेक घाव हो गए थे और उनका सीधा नितम्ब भी जख्मी हो गया।

स्वय लार्ड हार्डिंग ने उक्त घटना का वर्णन इस प्रकार किया है। "वह एक अत्यन्त मनमोहक प्रभात था और हाथियो का वह जुलूस भारतीय शान शौकत तथा रगीनी का सुन्दर और भव्य चित्र प्रस्तुत कर रहा था। हम क्वीन्स गार्डन मे से गुजरे जहा से जनता को हटा दिया गया था। कुछ समय के उपरात देहली की मुख्य सडक चादनी चौक मे जुलूस घुसा जहा असख्य जन समूह एकत्रित था। जनता ने मेरा अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया। तालियो की गडगडाहट और स्वागत सम्बन्धी शोर से कान बहरे हो रहे थे। मैं तीन सौ गज से अधिक दूरी पर नही गया होऊगा कि एक भयानक धडाका हुआ। मेरा हाथी रुक गया, चारो ओर मृत्यु जैसा सन्नाटा छा गया। मेरा शिरस्त्राण सडक पर पडा था। मैंने अपनी पत्नी की ओर दृष्टि डाली वे सुरक्षित थी तुरन्त ही मैंने हौदे के पीछे देखा तो मुझे पीला पाऊडर दिखलाई दिया मैंने कहा कि वह बम था। मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या मेरे चोट लगी है तो मैंने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि मेरी पीठ पर भीषण आघात लगा है और किसी ने खौलता गरम पानी मुझ पर उडेल दिया है। पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी ने मेरे शिरस्त्राण को भाले की नोक पर उठाकर मुझे दिया और आज्ञा देने की याचना की। मैंने कहा कि जुलूस को आगे बढने दो। परन्तु जब जुलूस थोडी ही दूर गया होगा कि मेरी पत्नी ने पीछे मुडकर देखा तो मै बुरी तरह घायल हो गया था और जो सेवक मेरे पीछे राजछत्र लिए खडा था वह मर चुका था। उसका शरीर हौदे की रस्सियो में फसा हुआ था। उन्होने मुझसे मृत जमादार के सम्बन्ध मे कहा और मैंने तुरन्त हाथी को रुकवा दिया। जबकि मृत जमादार के शरीर को हटाया जा रहा था तो अधिक रक्त बह जाने के कारण मै बेहोश हो गया और जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मैं सडक के किनारे लेटा हुआ हू और मेरी प्राथमिक चिकित्सा हो रही है। मुझे एक मोटरकार मे बेहोशी की अवस्था मे वायसराय भवन मे पहुचा दिया गया।

मुझे बाद को याद आया कि मेरा निजी भारतीय सेवक जो कि उससे पूर्व वाले दिन मेरे साथ शिकार में था और जिसने खाकी शिकारी वर्दी पर चमकदार गहरे लाल रग की पोशाक पहन रक्खी थी वह विनीफ्रेड (लेडी हार्डिंग) के पीछे खड़ा था। बम विस्फोट के बाद मैंने उसको हाथी पर से खाकी पोशाक मे, वह जुलूस की वर्दी म नहीं था उतरते देखा। मैंने पूछा कि तुम खाकी वर्दी म यहा क्यो आए। बाद को पता चला कि बम के विस्फोट ने उसकी जुलूस की वर्दी को चिथडे-चिथडे करके उडा दिया था और उसके शरीर पर तीस चालीस छोटे बडे घाव थे। मैंने उससे जो कुछ कहा वह उसने नही सुना क्योकि उसके दोनो कानो के कर्णपट(इयर ड्रम)फट गए थे जैसा कि मेरे एक कान का भी कर्णपट फट गया था। मेरा कान तो ठीक हो गया परन्तु बेचारा उसके उपरात सदव के लिए बहरा हो गया। मैंने उसके लिए दुगनी

पैंशन की व्यवस्था कराई।

एक विचित्र बात है कि बम विस्फोट इतना तीव्र और भयानक था कि वह ६ मील दूर तक सुनाई दिया था परन्तु न विनीफ्रेड (लेडी हार्डिंग) और न मैंने ही उसको सुना। मेरा अनुमान है कि हमारी श्रवण शक्ति बम के कारण आवाज सुनने के पूर्व ही नष्ट हो गई होगी।

मेरे जख्म जो कि बहुत कष्टदायक थे उनके अच्छा होने मे बहुत समय लग गया। अनेक छोटे आपरेशन करने पड़े क्योंकि बम की किरचों को शरीर से निकालना था उसमें स्क्रू (पेंच) कीलें ग्रामोफोन की सुइयां आदि थी।

लेडी हार्डिंग ने बम कांड को जो विवरण दिया है वह वायसराय के उपरोक्त विवरण से मिलता जुलता है। केवल उसमे केवल एक नया तथ्य है जो इस प्रकार है।

"जब हम चांदनी चौक से निकल रहे थे जहां चारो ओर जयजयकार और तालियो की ध्वनि सुनाई दे रही थी मुझे एक साथ धक्का लगा और मैं आगे की ओर गिर गई। जब मैं उठ कर अपनी जगह बैठ गई तो मेरी आंखो के आगे अंधेरा सा प्रतीत हुआ और सर मे भीषण भनभनाहट के कारण मेरी श्रवण शक्ति जाती रही। हाथी रूक गया था। उस समय भीड मे निस्तब्ध शान्ति थी। वायसराय के आदेश पर जब जुलूस फिर आगे बढा तो लोग चिल्लाने लगे थे और मैंने सुना कि कुछ आवाजें कह रही थी शाबाश बहादुर।"

पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया। सभी मकानो की तलाशी ली गई परन्तु किसी को भी पकड़ा नही जा सका। भारत सरकार तथा प्रत्येक देशी नरेश ने अपराधी को पकडवाने वाले को पुरस्कार घोषित किए। सभी पुरस्कारो की राशि मिल कर कई करोड रुपए हो गई परन्तु भारत का गुप्तचर विभाग, पुलिस तथा लंदन के स्काटलैंडयार्ड के प्रमुख गुप्तचर विभाग के अधिकारी भी बम फेंकने वाले का पता नही लगा सके।

क्रांतिकारी ने इस कांड की प्रशंसा करते हुए गुप्त रूप से एक विज्ञप्ति वितरित की। उसमें लिखा था —"गीता, वेद, कुरान सब हमें आदेश देते हैं कि मातृभूमि के शत्रु को फिर वह चाहे किसी जाति, सम्प्रदाय रंग और धर्म का क्यो न हो, मारना हमारा धर्म है। अन्य बड़े और छोटे क्रांतिकारी कार्यों की हम बात नही करते परन्तु गत दिसम्बर मास में देहली में जो देवी शक्ति प्रकट हुई वह इस बात का निस्सदेह प्रमाण है कि भारत के भाग्य को स्वयं भगवान बदल रहे हैं।"

भारत की राजधानी में सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय पर विशाल जुलूस में जो कि भारतीयो पर ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए आयोजित किया गया था सेना, पुलिस और गुप्तचरो से घिरे होने पर भी क्रांतिकारियो ने बम फेंक कर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को चुनौती दी थी अतएव भारत सरकार क्रोध और ग्लानि से खीज उठी। सब कुछ प्रयत्न करने पर भी यह पता नही लग सका कि बम फेंकने वाला कौन था।

घटना के दो वर्षों के उपरांत कहीं जाकर सरकार को पता चला कि इस षडयन्त्र के जनक रासबिहारी बोस थे। दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिंटेंडट डी० पेटी ने ग्यारह नवम्बर १६१४ को बम कांड के बारे जो रिपोर्ट दी उसमे उन्होने यह बतलाया कि १६११ मे कलकत्ता के डलहौजी स्क्वायर मे और उसी वर्ष मिदनापुर

मे, तथा १९१२ म मौलवी बाजार (सिलहट जिला) म और १९१३ म लाहौर म (दोनो स्थानो पर गार्डन को मारने के लिए) और देहली म लार्ड हार्डिंग को मारने के लिए जो बम फेंके गए थे व एक ही प्रकार के थे अतएव उनका क्रांतिकारियो के एक ही समूह न बनाया होगा, और उन्होंने ही उसका उपयोग किया होगा। रिपोर्ट के अन्त मे डी० पत्री ने लिखा "इस अनाचार का कर्त्ता बसन्त विश्वास था और रासबिहारी बोस प्रधान कुटिल षडयन्त्रकारी था।"

देहली षडयन्त्र अभियोग

इस घटना के थोड़े समय पश्चात कलकत्ता के राजा बाजार मे शशांक मोहन हाजरा जिनका दूसरा नाम अमृत हाजरा भी था राजनीतिक डकैती के सम्बन्ध में उनके मकान की तलाशी मे कुछ कागज पत्र मिले तथा बम खोल मिले जो लार्ड हार्डिंग पर फेंके गए बम के खोल जैसे थे। उस तलाशी मे मिले कागज पत्रो के आधार पर दिल्ली के मास्टर अमीरचन्द के मकान की तलाशी ली गई। तलाशी मे एक बम की टोपी लिबर्टी नामक क्रांतिकारी विज्ञप्ति का मास्टर अमीरचन्द के हाथ का लिखा मटर और कुछ पत्र मिले। जिसके परिणाम स्वरूप अन्यो के साथ दीनानाथ गिरफ्तार कर लिया गया।

कायर देशद्रोही दीनानाथ भयभीत होकर सरकारी गवाह बन गया। अपने बयान मे दीनानाथ न यह तो कहा कि वायसराय पर बम फेंकने का काम रासबिहारी बोस के नेतृत्व मे लाहौर के विप्लववादी दल का है, परन्तु वायसराय पर बम फेंकने की घटना के सम्बन्ध में वह कुछ भी न बता सका कि किसने बम फेंका और उसमे कौन कौन सम्मिलित थे।

रासबिहारी बोस और उनके शिष्य तथा अन्य सहयोगी जोरावर सिंह बार हट और प्रताप सिंह फरार हो गए थे। परन्तु रासबिहारी बोस के दल के अन्य प्रमुख क्रांतिकारी दीनानाथ की गवाही के पश्चात गिरफ्तार कर लिए गए। अन्त म मार्च १९१४ म सरकार ने नीचे लिखे अभियुक्तो पर मुकदमा चलाया—

दीनानाथ, सुलतानचन्द, मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी, भाई बालमुकुन्द, बसन्त कुमार विश्वास बलराज, छोटेलाल, लाला हनुवन्त सहाय, चन्नदास, मन्नुलाल, रघुबर शर्मा, रामलाल और खुशीराम। दीनानाथ और सुलतानचन्द★ सरकारी गवाह बन गए इस कारण उनको छोड दिया गया। सेशन जज ने ५ अक्टोबर, १९१४ को अवध बिहारी मास्टर अमीरचन्द और भाई बालमुकुन्द को प्राण दण्ड, तथा बलराज लाला हनुवन्त सहाय और बसन्तकुमार विश्वास को आजन्म कालेपानी की सजा देकर शेष सबको छोड दिया। पंजाब के गवरनर भारत के शत्रु सर माइकेल ओडायर को बम फेंकने वाले का पता न लगने स बहुत अधिक क्रोध था। उसने बसन्त विश्वास को प्राण दण्ड दिए जाने के लिए उच्च न्यायालय मे अपील की। उच्च न्यायालय ने बसन्त विश्वास को भी प्राण दंड की सजा दे दी। प्रिवी काऊंसिल ने दंड की पुष्टि करदी। ११ मई १९१५ को अवधबिहारी मास्टर अमीरचन्द भाई बालमुकुन्द देहली

★ सुलतानचन्द एक अनाथ लडका था मास्टर अमीरचन्द ने उसका पालन पोषण किया था और उसको अपना दत्तक पुत्र स्वीकार किया। जिस दिन उस नराधम ने अपने पालन कर्ता पिता के विरुद्ध गवाही दी अदालत म उपस्थित सभी उसे धिक्कारने लगे। मास्टर अमीरचन्द को गहन वेदना हुई और कृतघ्नता भी उस दिन लज्जित हो गई।

जेल मे और बसन्त विश्वास अम्बाला जेल मे मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के अपराध मे बन्दे मातरम का घोष करते हुए फासी के तख्ते पर चढ़ गए। जब बसन्त विश्वास को प्राण दण्ड होना निश्चित हो गया तो उसने सम्भवत किसी मित्र सम्बन्धी या पुलिस अधिकारी को यह बतलाया कि बम उसने फेंका था। यही कारण था कि डी० पैटी ने अपनी रिपोर्ट मे उसको उस काड का कर्त्ता कहा था। यद्यपि न्यायालय मे यह तनिक भी सिद्ध नही हो सका कि किसने बम फेंका था परन्तु चार व्यक्तियों को फासी दे दी गई। यद्यपि इस बात का कोई प्रमाण नही मिला और न सरकार कोई साक्षी ही उपस्थित कर सकी कि जिससे यह सिद्ध हो सकता कि लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाले कौन लोग थे पर न्याय का दावा करने वाली ब्रिटिश सरकार ने देहली बम काड के सम्बन्ध मे चार क्रातिकारियो को फासी देदी। तब से आज तक यह रहस्य ही बना हुआ है कि लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका। इस सम्बन्ध में क्रातिकारी इतिहास लेखको ने तीन नामो की चर्चा की है। कुछ लेखक यह मानते हैं कि स्वय रासबिहारी बोस ने बम फेंका था, अधिकाश क्रातिकारी और विशेषकर बगाल के क्रातिकारी मानते हैं कि बम बसन्त विश्वास ने फेंका था। राजस्थान के कतिपय क्रातिकारी तथा बारहट परिवार के लोगो की मान्यता है कि बम बारहट जोरावर सिंह ने फेंका था। हम यहा तीनो के सम्बन्ध मे विस्तार से चर्चा करेंगे।

यदि इस सम्बन्ध मे कोई व्यक्ति साधिकार कह सकता है तो वे दिल्ली के लाला हनुमन्त सहाय है। वे ही अकेले जीवित क्रातिकारी है जो बम काण्ड के समय वहा उपस्थित थे और रास बिहारी बोस ने उनको यह उत्तरदायित्व सौंपा था कि बम फेंके जाने के उपरात बम फेंकने वालो के बाहर निकलने की व्यवस्था वे करें। परन्तु वे जो साधिकार इस तथ्य पर प्रकाश डाल सकते है मौन रहना पसद करते है। लेखक के पत्र के उत्तर मे उन्होने लेखक को लिख भेजा 'लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका इस विवाद म मैं पडना नही चाहता।" (हनुमन्त सहाय)

स्वय रासबिहारी बोस ने बैंगकाक सम्मेलन म इडियन इडिपेंडस लीग के अध्यक्ष पद से जो भाषण दिया था उसम उन्होने कहा था—

It is about thirty years ago I threw a bomb at the Viceroy and as I was active member of the Lahore Delhi and Banaras conspiracies I had to leave my country and to seek foreign help

'आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व मैंने वायसराय पर बम फेंका था और क्योकि मैं लाहौर दिल्ली और बनारस षडयन्त्रो म सक्रिय था मुझे अपना देश त्याग देना पडा और विदेशो स सहायता मागनी पडी (रासबिहारी बोस) रासबिहारी बोस स्मारक समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक—रासबिहारी बोस पृष्ठ २२२।"

रासबिहारी बोस की पुत्री श्रीमती हिगुची ने भी यही कहा था। 'मेरे पिता ने दिल्ली मे लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था (हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, १६ मार्च १९६१)'

श्रीमती हिगुची ने यह बात श्री कुशवन्त सिंह को जब वे टोकियो में उनसे मिलने गए थे तब कही थी। उन्होने "फादर थ्रू ए बाम्ब" शीर्षक लेख म जो हिन्दुस्तान टाइम्स न्यू दिल्ली १६ मार्च १९६१ में प्रकाशित हुआ था यह तथ्य लिखा था। स्वय श्री रासबिहारी बोस ने श्री टी० पोट्टलोराम से टोकियो मे कहा था "मैंने ही हार्डिंग पर

पंजाब नेशनल बैंक की इमारत से बम फेंका था("प्रदीप जानवर २७ फरवरी, १९६८)"

श्री रासबिहारी बोस की एक मात्र जीवित सतान उनकी पुत्री न कई बार सीमा स जा उनस टोकियो म मिले कहा कि "मेरे पिता न मुझे बतलाया कि उन्होंने लाड हार्डिंग पर बम फेंका था।"

बसन्त विश्वास ने बम फेंका था ऐसा अधिकांश क्रांतिकारी और विशेषकर बगाल के क्रांतिकारी मानते हैं। "रोल आव आनर" के लेखक श्री कालीचरण घोष ने लेखक को लिखा था कि फांसी के पूर्व बसन्त विश्वास ने किसी जेल अथवा पुलिस अधिकारी तथा अपने किसी मित्र या सम्बन्धी से यह बात कही थी। इस कारण बंगाल में प्रत्यक व्यक्ति यही मानता है कि बसन्त विश्वास ने ही बम फेंका था।

लेखक को श्री ईश्वरदान आसिया जो कि मास्टर अमीरचन्द के साथ रह कर श्री रासबिहारी बोस के क्रांतिकारी दल म काम करते थे और और आज भी अपने गाँव (मेगटिया) जिला उदयपुर म रहते हैं बतलाया कि मास्टर अमीरचन्द न उनको बतलाया था कि लाड हार्डिंग पर बसन्त विश्वास न बम फेंका था। इसके अतिरिक्त दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिंटेंडेंट डी० पेटी न भी अपनी रिपोर्ट म यही लिखा था 'Real author of the outrage was Basant kumar Biswas 'कि उस काड का वास्तविक कर्ता बसन्त विश्वास था।" अभी हाल म श्री जम्स कैम्प बेल केर आ० सी० यस की पुस्तक "पालिटिकल ट्रबल इन इंडिया—१९०७ १९१७ का भारतीय संस्करण प्रकाशित हुआ है उसमें इस घटना का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है कि बसन्त विश्वास ने देहली के युवक जैसे वस्त्र पहन कर बम फेंका और रासबिहारी उसके पास खड़े थे। वह गोल टोपी लगाए था। (पृष्ठ ३३०)★

जोरावर सिंह बारहट भी अपने भतीजे प्रताप सिंह बारहट के साथ इस काड म उपस्थित थे। दोनों ही रासबिहारी के अत्यन्त विश्वास पात्र क्रांतिकारी कार्यकर्त्ता थे और मास्टर अमीरचन्द के द्वारा उनका रासबिहारी बोस से सम्पर्क स्थापित हुआ था। श्री केशरी सिंह बारहट ने अपने भाई जोरावर सिंह बारहट, पुत्र प्रताप सिंह बारहट और जामाता ईश्वरदान आसिया को मास्टर अमीरचन्द के पास क्रांतिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त करने भेजा था मास्टर अमीरचन्द के द्वारा उनका सम्पर्क श्री रासबिहारी बोस से हुआ था। राजस्थान के क्रांतिकारियों तथा बारहट परिवार के लोगों का मत है कि हार्डिंग पर बम जोरावर सिंह बारहट ने फेंका था। लेखक को इस सम्बन्ध मे दो विश्वासनीय साक्षी प्राप्त हुए हैं। राजस्थान के वरिष्ठ राष्ट्रकर्मी प्रसिद्ध लेखक तथा सपादक श्री रामनारायण चौधरी ने लेखक को नीचे लिखा पत्र इस सम्बन्ध मे लिखा था।

'लाड हार्डिंग बम केस म मेरे सहपाठी और मित्र छोटे लाल जैन अभियुक्त थे। मेरे सहपाठी और मित्र ठाकुर केशरी सिंह के पुत्र प्रताप सिंह उस काण्ड म शरीक ही थे। उन दोनों न मुझे बतलाया कि बम जोरावर सिंह न डाला था। बोस बाबू (रासबिहारी) शरीर से ही इतने भारी थे कि यह फुर्ती का काम उनके बस का नहीं हो सकता था। बारहाल मेरे पास तो इन दो साथियों के कथन का ही आधार है और उनके लिए मैं यह मान ही नहीं सकता कि व असत्य बात कहें (रामनारायन चौधरी)'

★ जेम्स कैम्पबेल केर का मत है कि जब बम फेंका गया तो हाथी चादनी चौक के उत्तर की ओर घलिया कटरा के सामने था। उसी म पंजाब नेशनल बैंक था। कम्प की मान्यता थी कि विश्वास ने बम सड़क के किनारे से फेंका(पृष्ठ ३२४)

श्री रामनारायण चौधरी के अतिरिक्त एक साक्षी और हैं श्रीमती लक्ष्मी देवी। वे ठाकुर केसरी सिंह की पौत्री है। वीरवर जोरावर सिंह बारहट ने १९३७ मे अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से जबकि व १४ या १५ वर्ष की थी दिल्ली म उस स्थान को बतलाकर कहा था कि इस जगह से उन्होंने बुर्का पहिन कर लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। यह बात उन्होने पटना के २५ वर्षों के उपरात अपने भाई की पौत्री राजलक्ष्मी देवी से कही थी। एक पितामह अपनी पौत्री से ऐसी बात किसी और अभीष्ट को लेकर नही कह सकता। अस्तु इसमे सदेह करने का प्रश्न नहीं रहता। श्रीमती राजलक्ष्मी देवी राजस्थान प्रशासनिक सेवा के एक उच्च अधिकारी श्री फतहसिंह मानव की पत्नी हैं। जोरावर सिंह को आरा (नीमाज) षडयन्त्र अभियोग मे प्राण दण्ड मिला था। वे फरारी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। प्रसिद्ध क्रातिकारी ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने अपने भाई जोरावर सिंह पुत्र प्रताप सिंह और दामाद ईश्वरदान आसिया को मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों का प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा था और उनके द्वारा ही *उनका सम्पर्क रासबिहारी बोस से हुआ था। रासबिहारी बोस का प्रतापसिंह* और जोरावर सिंह पर अटूट विश्वास था। जोरावर सिंह जीवन के शेष वर्षों म भूमिगत रहने पर विवश हो गए। उन्होने अपना नाम अमरदास वैरागी रख लिया था और वे मालवा के पहाडो और जगलो मे रहत थे।

सीतामऊ के एकलगढ़ गाव मे वे अपने एक हितैषी मित्र श्री जगदीशदान जी से मिलने आया करते थे। उनके पुत्र श्री मणिराज सिंह जगावत न लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने स्वय यह बात उनके पिता से कही थी कि लार्ड हार्डिंग पर उन्होने बम फेंका था। सेमलखेड (सीतामऊ) के श्री शक्तिदान जी की भी जोरावर सिंह से घनिष्टता थी, उन्होने भी लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की बात उनसे कही थी। स्वय ठाकुर जोरावर सिंह तथा उनके हितैषी और मित्र जिन्ह यह भेद ज्ञात था उनके जीवन काल मे इस तथ्य को प्रगट नही कर सकते थे। जोरावर सिंह का १९३९ मे स्वर्गवास हुआ। इस कारण सर्व साधारण मे इसकी जानकारी नही हुई।

आज तक यह एक विवाद का विषय बना हुआ है कि लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका। श्री रासबिहारी बोस ने स्वय बम फेंकने की बात कही है। मास्टर अमीरचन्द न श्री ईश्वरदान आसिया से कहा कि वसन्त विश्वास ने बम फेंका। पुलिस रिपोर्ट भी वसन्त विश्वास को बम फेंकने वाला स्वीकार करती है। प्रताप सिंह बारहट ने तथा छोटेलाल जी न रामनारायन चौधरी से कहा कि बम जोरावर सिंह जी ने फेंका तथा स्वय जोरावर सिंह ने अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी तथा कतिपय मित्रो से बम फेंकने की बात कही।

लेखक ने इस सम्बन्ध में अधिक छानबीन की तो उसे श्री केशवचन्द्र ने बतलाया जो राजस्थान के प्रसिद्ध क्रातिकारी नेता अर्जुनलाल सेठी के विश्वास पात्र शिष्य थे। सेठी जी का रासबिहारी बोस तथा मास्टर अमीरचन्द से घनिष्ट सम्बन्ध था, वे रासबिहारी बोस के दल के एक प्रमुख कार्यकर्ता थे, जयपुर म एक विद्यालय चलाते थे और क्रातिकारी युवक तैयार करते थे। सेठी जी ने केशवचन्द्र को बतलाया कि जब लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया तो उस समय वहा चार व्यक्ति थे स्वय रासबिहारी बोस, जोरावर सिंह, वसन्त कुमार विश्वास और एक मुसलिम युवक था जिसका नाम उन्हें याद नही रहा। इस तथ्य की पुष्टि श्री जोरावर सिंह के द्वारा एकलगढ़ के

श्री जगदीशदान को बम काड के सम्बध मे दिए गए विवरण से भी होती है जो इस प्रकार है "दिल्ली मे जब लार्ड हार्डिग सजे हाथी के हौदे पर बैठकर जुलूस मे निकले तो गोला (बम) मैंने स्वय एक मकान पर से फेंका। हम लोग चार साथी थे। चार दिन तक हम दिल्ली मे ही छिपे रहे पाचवें दिन हम लोग बिखर गए।[1]

एक विचारणीय तथ्य यह है कि बम काड के सम्बन्ध मे घटना के दो वर्षों के उपरात दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेडेंट डी० पैटी ने १२ नवम्बर १९१४ को जो सरकार को रिपोर्ट दी उसमें उन्होंने बाम्स शब्द का उपयोग किया है। उनके शब्द है Before Delhi Bomb, two machines of very similar type have already been used in India The first of these was thrown in Dalhousie Square Calcutta at the beginning of March 1911 but failed to explode The second exploded in Midnapur in the house of an informer about a fortnight before the Delhi outrage occurred'

देहली के बमो के पूर्व ही ठीक उसी प्रकार के दो यत्रो का भारत मे उपयोग किया जा चुका था। पहला कलकत्ता के डलहौजी स्क्वायर मे मार्च १९११ के आरम्भ मे फेंका गया परन्तु वह फटा नही। दूसरा मिदनापुर मे देहली बम काड के लगभग एक पखवाड़े के पूर्व पुलिस के एक भेदिये के घर मे फटा था। अवश्य ही रिपोर्ट मे यह स्पष्ट रूप से कहीं नही कहा गया कि वायसराय पर एक से अधिक बम फेंके गए। परन्तु 'बाम्स' शब्द मे यह आभास मिलता है कि पुलिस अधिकारी को सम्भवत यह सन्देह था कि हो सकता है कि एक से अधिक बमो का प्रयोग किया गया हो।

यदि ऊपर लिखे तथ्यो का विश्लेषण करें तो महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस ने स्वय घोषणा की कि उन्होंने बम फेंका, उनकी पुत्री श्रीमती हिगूची का भी यही कहना है। उधर मास्टर अमीरचन्द ने श्री ईश्वरदास आसिया से कहा था कि बम बसन्त विश्वास ने फेंका। पुलिस रिपोर्ट मे भी बसन्त विश्वास को उस काड का जनक बताया गया है। श्री प्रताप सिंह बारहट जो घटना स्थल पर उपस्थित थे और जो कि रासबिहारी बोस के अत्यन्त विश्वास पात्र और निकट थे तथा छोटे लाल जैन जो देहली बम केस मे स्वय अभियुक्त थे उन्होंने श्री रामनारायन चौधरी से कहा कि बम बारहट जोरावर सिंह ने फेंका था। स्वय जोरावर सिंह ने कई व्यक्तियो से यह बात कही थी। इन तीनो कथनो पर अविश्वास करने का कोई कारण नही दिखता। महान क्रातिकारी रासबिहारी बोस, मास्टर अमीरचन्द जोरावर सिंह प्रताप सिंह बारहट तथा छोटेलाल ऐसे व्यक्ति थे जो असत्य बात कह ही नही सकते थे।

इसमें तनिक भी सदेह नही कि बम फेंकने की सम्पूर्ण योजना श्री रासबिहारी बोस के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। वे स्वय घटना स्थल पर उपस्थित थे। उन्होंने ही चन्दननगर (फ्रेंच भारत) से बम बनाने के विशेषज्ञ मनीन्द्र नायक द्वारा बने हुए बम मगवाये थे जिन्हें अमर चटर्जी ने बसन्त विश्वास के द्वारा रासबिहारी बोस के पास भेजा था। बम कौन फेंकेगा, कहा से बम फेंका जावेगा बुर्का पहिन कर, स्त्रियो मे मिल कर किस इमारत पर से चादनी चौक मे जुलूस पहुचने पर बम फेंका जावेगा बम फेंक कर किस प्रकार निकला जावेगा कौन साथी कहा रहेंगे और क्या करेंगे, यह सारी योजना उनकी थी। वे ही उस काड के वास्तविक सूत्राधार थे। जिस प्रकार महान नेता या गुरु अपने अनुयायियो अथवा शिष्यो द्वारा कोई कार्य का सपादन

अपनी दख रेख मे करवाये तो वह कृत्य उसी का माना जावेगा । इसी प्रकार महान क्रांतिकारी रासविहारी वास का इसका श्रेय दिया जाना उचित है और यदि उन्होने इस आशय की घोषणा की कि तीस वर्ष पहले उन्होने वायसराय पर बम फेंका था तो वह गलत नही था । परन्तु वे शरीर से बहुत भारी थे (मोटे) । यह आश्चर्य जनक फुर्ती का काम था कि बुर्के मे से हाथ निकाल कर बम फेंक कर वहा से उतर कर भीड़ मे मिल जाना । अतएव इस बात की सम्भावना कि रासबिहारी बोस ने स्वयं बम फेंका हो कम है । यही कारण है कि बम उन्होने स्वयं फेंका इसमे बहुतो को सदेह है । इसके अतिरिक्त वे क्रांतिकारियो के सवमान्य नेता थे और उस समय वे भारत व्यापी सैन्य विप्लव के आयोजन म सलग्न थे । ऐसी दशा मे क्रांतिकारियो का सर्वोच्च नेता जो देश व्यापी सैनिक विद्रोह की व्यूह रचना कर रहा हो बम फेंक कर स्वयं अपने को खतरे मे डाले इसमे बहुतो को सदेह है ।

जहा तक बसन्त कुमार विश्वास और जोरावर सिंह का प्रश्न है लेखक की मान्यता है कि सम्भवत रासविहारी वास ने दानो को ही बम फेंकने का काय सौंपा हो । जहा तक जोरावर सिंह का प्रश्न है ऐसे प्रमाण मिलते है कि व गोला फेंकने का पहले से ही अभ्यास करते थे । वे लाठी, तलवार और गोली चलाने मे दक्ष थे, बलिष्ठ, सुडौल, फुर्तीले युवक थे । 'राजस्थानी आजादी के दीवाने' पुस्तक म लेखक श्री हर प्रसाद अग्रवाल ने रणबांकुरा ठाकुर जोरावर सिंह दीपक मे उन्होने लिखा है—

"हाथ उनका इतना सधा हुआ था कि ऊपर ओढ़ी हुई चादर का पल्ला ऊपर उठा तेजी के साथ हाथ से बम निकाल देते थे ' इससे पता चलता है कि चादर या बुर्का ओढ़कर गोला फेंकने का उन्होने अभ्यास किया था । अवश्य ही श्री रासविहारी बोस के आदेशानुसार वे चादर ओढ़ कर गोला फेंकने का अभ्यास कर रहे थे । उनके सम्बन्धियो और परिवार वालो ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है । स्पष्ट है कि श्री रासबिहारी वास ने उन्हें बम फेंकने के लिए चुना था ।

बसन्त विश्वास भी इक्कीस वर्ष के फुर्तीले युवक थे, उनको ही अमर चटर्जी ने कुछ बम (कतिपय लेखक दस की संख्या लिखते है) देकर रासविहारी बोस के पास भेजा था । बसन्त कुमार विश्वास रासविहारी बोस के अत्यन्त निकट विश्वास पात्र साथी थे । स्वयं रासबिहारी के पास देहरादून म उनके रसोइये के रूप म रहकर उन्होने क्रांतिकारी काय की शिक्षा और दीक्षा प्राप्त की थी । नारायणदास फर्नीचर के व्यापारी ने बसन्तकुमार विश्वास को पहचान कर कहा था २३ दिसम्बर, १९१२ को वह रासबिहारी बोस के साथ प्रातःकाल आए थे और चांदनी चौक की ओर गए थे । स्पष्ट है कि बसन्त विश्वास उस दिन देहली मे थे ।

सम्भवत रासबिहारी बोस ने श्री जोरावर सिंह बारहट तथा बसन्त कुमार विश्वास दोनो को ही लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का उत्तरदायित्व सौंपा था । जिससे कि यदि एक का बम निशाना चूक जाये तो दूसरे का कारगर हो । साथ ही दोनो ने बुर्का पहिन कर स्त्रियो के झुंड म सम्मिलित हो इमारत के ऊपर से बम फेंका इससे भी यह सिद्ध होता है कि बम फेंकने के लिए जो युक्ति काम मे लाई गई वह एक जैसी थी । यदि दोनो ने बम फेंका हो तो इतनी सावधानी तो अवश्य ही बरती गई होगी कि दोनो ने एक ही स्थान पर खडे होकर बम नही फेंका होगा, क्योकि ऐसा करने से पकडे जाने का खतरा अधिक था । बम फेंकने के उपरांत जोरावर सिंह प्रताप सिंह के

साथ दिल्ली से निकल गए और फिर पच्चीस छब्बीस वर्षों तक मेवाड़ तथा मालवा के पहाड़ी तथा वन आच्छादित प्रदेश में पुलिस तथा गुप्तचरों से अपने को बचाकर फिरते रहे। यद्यपि प्रताप सिंह तो पकड़े जाने तक रासबिहारी बोस से इस घटना के उपरांत मिले परन्तु जोरावर सिंह का फिर उनसे या बसंत कुमार विश्वास से मिलना नहीं हुआ। बसन्त कुमार विश्वास पकड़े गए और उनको फांसी हो गई। रासबिहारी बोस देश त्याग कर जापान चले गए और मास्टर अमीरचन्द आदि साथियों को फांसी दे दी गई। अस्तु इस बात की सम्भावना है कि जोरावर सिंह तथा बसन्त कुमार विश्वास दोनों ने ही लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका हो। दूसरे ने क्या किया उसका उन्हें पता न हो अतएव दोनों ने ही यह सही दावा किया है कि बम उन्होंने फेंका था।

इस सम्बन्ध में एक तथ्य और है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। जोरावर सिंह बारहट पर आरा (नीमाज) षड्यन्त्र अभियोग में वारंट था व फरार थे उनको उस अभियोग में प्राणदण्ड दिया जा चुका था। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक था कि रासबिहारी बोस उन्हें बम फेंकने के लिए चुनते। जोरावर सिंह फरार अवस्था में ही लार्ड हार्डिंग बम कांड में सम्मिलित हुए थे। रासबिहारी बोस भारत व्यापी सशस्त्र विप्लव कराने की योजना को कार्यान्वित कराने का उस समय प्रयत्न कर रहे थे, वे क्रांतिकारी दल के सर्वमान्य नेता थे, अतएव वे स्वयं बम को फेंकने में डालते इसकी सम्भावना कम है। अस्तु वस्तु स्थिति का विश्लेषण करने से हम इसी निश्चय पर पहुंचते हैं कि लार्ड हार्डिंग पर बसन्त कुमार विश्वास और ठाकुर जोरावर सिंह बारहट दोनों ने ही सम्भवतः बम फेंका था।

कुछ दिनों के उपरांत प्रताप सिंह बारहट मारवाड़ के आशानाडा स्टेशन मास्टर के विश्वासघात के फलस्वरूप गिरफ्तार कर लिए गए और बनारस षड्यन्त्र अभियोग में उन्हें पांच वर्ष का कठोर कारावास हुआ। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सर चार्ल्स क्लीवलैंड ने बहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु वे क्रांतिकारी दल के भेदों को उनसे न जान सके। उनसे कहा गया कि यदि तुम रासबिहारी बोस के दल के भेद बता दो तो तुम्हारे पिता ठाकुर केसरी सिंह बारहट का आजन्म कारावास का दंड माफ कर दिया जावेगा चाचा जोरावर सिंह पर से वारंट वापस ले लिया जावेगा उनके प्राण दण्ड की सजा माफ करदी जावेगी, परिवार की जागीर हवेली और सम्पत्ति जो जब्त करली गई है वापस करदी जावेगी, तुम्हें पारितोषिक मिलेगा परन्तु वह महान देशभक्त वीर विचलित नहीं हुआ तब उसकी कोमल भावनाओं को जाग्रत करने का प्रयत्न किया गया उनसे कहा गया कि तुम्हारी मां बिलख बिलख कर तुम्हारी याद में रात दिन रोती है। उस वीर युवक ने उत्तर दिया मेरी मां को रोने दो जिससे कि अन्य सैंकड़ों क्रांतिकारियों की माताओं को न रोना पड़े यदि मैं अपने दल के भेद प्रगट करता हूं तो यह मेरी मृत्यु होगी। अन्त में उस महान क्रांतिकारी युवक को ब्रिटिश सरकार ने बरेली जेल में यातनायें देकर मार डाला।

जोरावर सिंह ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों की आंख में धूल डालकर पहाड़ों और जंगलों में २५–२६ वर्षों तक भटकते रहे अन्त में १९३९ में निमोनिया से उनका फरारी की अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया।

लाला लाजपतराय इस बम काण्ड से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने उसके सम्बन्ध में लिखा था —

"जिस आदमी न १९१२ ई० के दिल्ली दरबार के मौके पर लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका उसन एक स्मरणीय याद रखने लायक काम किया। उस आदमी की दिलेरी व बहादुरी अपना सानी नहीं रखती। इससे भी अधिक हौसला दिलाने वाली बात यह है कि एक शक्तिशाली शानदार साम्राज्य के सब साधन व शक्ति उस वीर का पता लगाने मे आज म असमर्थ साबित हुई है।" (आत्मकथा लाला लाजपतराय)

परिशिष्ट

जहा यह निश्चय पूवक नही कहा जा सकता कि लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका था वहा यह भी विवाद का विषय बन गया है कि बम कहा से फेंका गया था। जेम्स कैम्प बैल कैर आई० सी० यस जो भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक का निजी सचिव था—ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पोलीटिकल ट्रबल इन इडिया (१९०७-१९१७) म पृष्ठ ३२४ पर इस सम्ब ध मे नीचे लिखा विवरण प्रस्तुत किया है —

"जब बम फेंका गया तब वायसराय का हाथी इमारतो के एक समूह (ब्लाक) के सामन था जिसे घूलिया कटरा कहते है और जो देहली के प्रमुख भाग चादनी चौक के उत्तर म स्थित है। धूलिया कटरा एक विशाल चौकोण ब्लाक है जिसके मध्य मे एक खुला मैदान (बडा आगन) है। इस इमारत का जो भाग सडक के सामने था उसमें पजाब नेशनल बैंक था। बम काड के आखो देखे साक्षियो न तथा जुलूस मे नियुक्त सर्वोच्च राजकीय अधिकारियो ने बम कहा से फेंका गया था इस सम्ब ध म जो वक्तव्य दिए वे भ्रमोत्पादक और परस्पर विरोधी थे। लम्बे समय तक सरकारी क्षेत्रो मे यह मा यता बनी रही कि बम पजाब नेशनल बक की इमारत से फेंका गया। इस सम्बन्ध मे अत्य त विस्तृत और गहरी जाच से यह सिद्ध नही हुआ कि बम पजाब नेशनल बक की इमारत पर स फेंका गया और अब इस बात की सम्भावना प्रतीत होती है कि हो सकता है कि बम उस पटरी (पेवमट) पर से फेंका गया हो जो कि उस चौडी सडक (३५५) के मध्य में थी। अ य बिन्दुओ पर भी साक्षी प्राप्त कर सकना अत्य त कठिन था। बहुत लम्बी और विस्तृत जांच जो कि लाहौर से सिलहट (असम) तक के विशाल क्षेत्र म की गई उससे व मूल्यवान सकेत मिले जिनसे सारा षडयन्त्र स्पष्ट हो गया। उन कारणो से जिनके बारे मे आगे कहा जायेगा किसी भी न्यायालय म तत्सम्ब धी मुकदमा प्रमाणित नही किया जा सका। पर इस सीमा के रहते हुए भी उस काड के मुख्य तथ्यो का पता लग गया था।'

उक्त सरकारी विवरण से भी यह सिद्ध होता है कि आंखो देखे साक्षियो के वक्तव्य भ्रमोत्पादक और परस्पर विरोधी थे। बम कहां से फेंका गया इस सम्ब ध मे जुलूस म उपस्थित आखों देखे साक्षियो मे जिनमे जुलूस मे नियुक्त सर्वोच्च राजकीय पुलिस अधिकारी भी थे, मतभेद था, वे एक मत नही थे। यह तथ्य इस बात की सम्भावना प्रगट करता है कि बम एक स्थान से नही दो स्थानो से फेंके गए और दो व्यक्तियो ने फेंके।

भाई परमान द रासबिहारी बोस के निकटतम सहयोगी और मित्र थ। उन्होने अपने कई लेखो मे वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का श्रेय स्वय रासबिहारी बोस को दिया था। श्री धमवीर से उन्होंने स्वय कहा था कि बम रासबिहारी बोस ने फेंका था। भाई परमानन्द ने लाहौर के 'हिन्दू' मे एक लेख म लिखा था कि

रासबिहारी लार्ड हार्डिंग पर बम फेंक कर दिल्ली से निकल गए और उसी दिन उन्होंने सायकाल को देहरादून में एक सार्वजनिक सभा कर उसमें इस काण्ड की भर्त्सना की।

भारत के गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री क्लीवलैंड ने इस सम्बन्ध में ३१ मार्च १९१५ को एक लम्बा नोट लिखा था जिसमें नीचे लिखे अनुसार विवरण दिया था।

"अमृतसर के मीरन कोट का मूल सिंह जो गदर पार्टी का नेता था और बाद को सरकार का मुखबिर बन गया उसने बतलाया कि एक रासबिहारी का अत्यन्त विश्वास पात्र सहयोगी पिंगले उसके पास आया, उसके साथ एक बंगाली था उसका मूलसिंह ने जो हुलिया बतलाया वह ठीक रासबिहारी का ही हुलिया था। मूलसिंह ने उससे बात करते हुए पूछा कि क्या वह जानता है कि देहली में वायसराय पर बम किसने फेंका था, उसने कहा 'हां' बाद को कपूरथला के रामसरनदास ने बतलाया कि उसी बंगाली ने बम फेंका था। पिंगले ने भी मुझे यही कहा कि बम फेंकने वाला वही व्यक्ति था। बाद को स्वयं उसने ही मुझसे स्वीकार किया कि बम मैंने ही फेंका था।"

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि हनुवन्तसहाय ही देहली षड्यन्त्र के क्रान्तिकारियों में एक मात्र जीवित हैं। वे जानते हैं कि बम किसने फेंका परन्तु उन्होंने शपथ ले रखी है वे यह प्रगट नहीं करना चाहते कि बम किसने फेंका। अभी कुछ वर्ष हुए श्री बलराज (देहली षड्यन्त्र के दूसरे जीवित क्रान्तिकारी) ने दिल्ली में अपनी मृत्यु के पूर्व अपने छोटे भाई से क्रान्तिकारी दल के एक संकेत शब्द (कोड वर्ड) को श्री हनुवन्त सहाय तक पहुंचा देने का आदेश दिया परन्तु बलराज के छोटे भाई ने वह संदेश (जो संकेत शब्द में था) लाला हनुवन्त सहाय तक नहीं पहुंचाया। जब लाला हनुवन्त सहाय को श्री बलराज की मृत्यु के उपरान्त यह ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त दुखी हुए। सम्बन्धित व्यक्तियों का अनुमान है कि उस संकेत संदेश का सम्बन्ध २३ दिसम्बर १९१२ की लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की घटना से था।

इस सम्बन्ध में स्वयं चटर्जी ने लिखा है "जब मैं लंदन में था तो रासबिहारी ने मुझे एक पत्र में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने की घटना का ब्यौरा लिखा था और मुझे उन्होंने इसलिए धन्यवाद दिया था कि मैंने उन्हें उस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया था।

ब्रम्बले की साक्षी

पी० ब्रम्बले, डी० आई०जी० पुलिस यू० पी० ने अपनी गवाही में कहा था—

जैसे ही मैंने चांदनी चौक में ईस्ट इंडिया रेलवे बुकिंग आफिस को पार किया मैंने अपने पीछे भयानक धड़ाके की आवाज सुनी मैं जान गया कि वह बम है पर उसके साथ ही वाड के छज्जे पर से आवाज आई 'शाबाश मारा' वह सराहना और हर्ष पूर्ण आवाज थी मैं समझ गया कि कोई गम्भीर घटना घटी है। मैंने अपने घोड़े को पीछे घुमाया तो देखा कि हिज ऐक्सीलेंसी (वायसराय) के हौदे की पीठ से धुआं निकल रहा है। मैं हाथी के पास आया तो देखा कि छत्र हौदे के पीछे गिरा हुआ था और जमादार का मृत शरीर हौदे के पीछे लटक रहा था। हौदे की पीठ उड़ गई थी। हिज ऐक्सीलेंसी बेहोश होकर हौदे में गिर गए थे। मैंने हाथी को रूकवाया और उन्हें नीचे उतारा।

वायसराय की सुरक्षा के लिए सैंकड़ों की संख्या में उच्च पुलिस अधिकारी सैनिक अधिकारी जो गुप्तचर पुलिस का कार्य कर रहे थे और लंदन के प्रसिद्ध स्काटलैंड

याड के गुप्तचर और हजारो की सख्या म पुलिस कास्टेबिल तथा पोशाक म जुलूस म उपस्थित थे। पुलिस और सेना न तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया, सभी मकानो की तलाशी ली गई परन्तु बम फेंकने वाला ऐसा अदृश्य हुआ कि सब कुछ प्रयत्न करने पर भी जो लोग चादनी चौक के मकानो मे जुलूस देखने के लिए इकट्ठे थे उनको रोक कर उनकी जाच करने पर भी बम फेंकने वाले का कोई पता नही लग सका। खान बहादुर फतेह मुहम्मद न पजाब नेशनल बैंक के भवन को सैनिको से घिरवा लिया सबकी तलाशी ली पर तु सब व्यर्थ हुआ। बम फेंकने वाला ऐसा अदृश्य हुआ कि पुलिस उसकी परछाई को भी न पकड सकी।

माइकेल ओडायर का कथन

भारत द्रोही कुख्यात माइकेल ओडायर जो उस समय पजाब का गवरनर था उसने अपनी पुस्तक इडिया एज आई नो इट" मे पृष्ठ १६६ पर इस सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है 'दो बगाली जो कलकत्ता से बम लाए थे और उन्हाने लाहौर मे लारेस क्लब के पास बम रक्खा था जिससे कि क्लब का चपरासी मारा गया। उन दोनो को फासी हुई थी। दूसरे बगाली ने फासी लगने के कुछ दिन पूर्व गुप्तचर विभाग के अधिकारियो को बतलाया कि उसने एक मुसलमान स्त्री के वेष म बुर्के म अन्दर चादनी चौक म पजाब नेशनल बैंक के सामने खडे होकर बम फेका था जिससे वायसराय का छत्रधारी मारा गया और वायसराय जख्मी हो गया।' ओडायर ने उन दोनो बगालियो का नाम नही दिया।

अमरेन्द्रनाथ चटर्जी का मत

अमरेन्द्रनाथ चटर्जी ने अपनी पुस्तक भारतेर स्वाधीनतार इतिहास' मे इस घटना के सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है 'आम तौर पर यह विश्वास किया जाता है कि बसन्त ने एक स्त्री के वेष मे एक इमारत की छत से बम फेंका। रासबिहारी उसके सुरक्षित निकल जाने की व्यवस्था करके उसी रात्रि को देहरादून लौट आए।' अमरेन्द्र नाथ चटर्जी को यह जानकारी स्वय बसन्त कुमार से प्राप्त हुई थी। बसन्त कुमार हार्डिंग बम काड के कुछ समय उपरात अपने पैतृक स्थान नदिया जाते हुए कलकत्ता रुका था और श्रम जीवी समवाय" मे उसने यह बात स्वय अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से कही थी।

मोतीलाल राय का मत

श्री अरविन्दु के क्रातिकारी शिष्य मोतीलाल राय चन्दरनगर क्रातिकारी दल के सर्वमान्य नेता थे जब रासबिहारी बोस अपनी रुग्ण माता को देखने के लिए देहरादून से चन्दर नगर गए तो मोतीलाल राय से उनके प्रिय क्रातिकारी शिष्य शिरीष चन्द्र घोष के साथ मिले थे और उनमे इतने अधिक प्रभावित हुए थे कि उन्होने आत्म समर्पण योग को अपना ध्येय बना लिया था। इसी बीच रासबिहारी बोस की माता का स्वर्गवास हो गया और क्योंकि उनकी छुट्टी समाप्त हो गई और वे देहरादून वापस लौट गए। इसके उपरात सितम्बर १९११ म वे लम्बी छुट्टी लेकर पुन चन्द्रनगर आए। उस समय रासबिहारी बोस, मोतीलाल राय, शिरीष चन्द्र घोष तथा प्रतुल चन्द्र गगोली म वार्तालाप हुआ और उस समय इस विचार की सृष्टि हुई कि लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेका जावे। उनका उद्देश्य भारतीयो मे क्षोभ को व्यक्त करना और नौकरशाही को आतकित करना था।

मोतीलाल राय का मत था कि वायसराय पर बम फेंकने का विचार शिरीष चन्द्र घोष के मस्तिष्क की उपज थी। प्रतुलचन्द्र गगाली ने भी इसकी पुष्टि की है। रासबिहारी बोस ने उस विचार का कार्यरूप में परिणित करने का तुरंत निश्चय कर लिया। अमरेन्द्रनाथ चटर्जी के "श्रमजीवी समवाय" में बसंत कुमार विश्वास काम करता था। रासबिहारी बोस ने बसंत कुमार को इस कार्य के लिए चुना। वे उसे अपने साथ देहरादून ले आए और उसे इस कार्य के लिए प्रशिक्षण देने लगे। बसंत कुमार विश्वास को आवश्यक प्रशिक्षण देकर उन्होंने बालमुकुन्द की सहायता से लाहौर में पापुलर डिस्पेंसरी में कम्पाऊडर रखवा दिया। २१ दिसम्बर १९१२ को बसंत विश्वास लाहौर से देहली आ गया और मास्टर अमीरचन्द के मकान पर ठहरा। २३ दिसम्बर १९१२ को स्वयं रासबिहारी देहली पहुंच गए।

जहां तक बम फेंके जाने का प्रश्न है मोतीलाल राय का कहना है कि बसंत कुमार विश्वास ने एक सुन्दर स्त्री के वेष में चांदनी चौक के एक मकान की छत पर से बम फेंका। बसंत कुमार विश्वास को अमरेन्द्र नाथ चटर्जी ने भेजा था और रासबिहारी बोस ने उसे इस कार्य के लिए चुना था। अमीरचन्द के मकान पर बसंत कुमार विश्वास ने स्त्री का वेश धारण किया और लक्ष्मी बाई नाम रख कर वह रासबिहारी बोस के साथ घटना स्थल पर गया। बम फेंक कर उसने स्त्री के कपड़े उतार कर फेंक दिये और भीड़ में मिल गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि चन्दर नगर में श्री मोतीलाल राय के साथ जब बम फेंकने की योजना पर विचार हुआ तो बसंत कुमार विश्वास द्वारा स्त्री वेष में बम फेंकने की बात तय हुई होगी। पर बसंत कुमार विश्वास ने स्वयं अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से कहा था कि उसने सड़क पर से बम फेंका था। उधर ठाकुर जोरावर सिंह ने कहा था कि उन्होंने बुर्का ओढ़ कर पंजाब नेशनल बैंक की इमारत पर से बम फेंका था। जब रासबिहारी बोस ने चन्दर नगर से वापस लौट कर योजना पर और अधिक गम्भीरता से विचार किया होगा तो यह सोच कर कि कहीं निशाना चूक न जाय अस्तु केवल एक नहीं दो व्यक्तियों को यह कार्य भार देना चाहिए अस्तु उन्होंने जोरावर सिंह को भी यह कार्य सुपुर्द किया। यही कारण है कि बसंत कुमार विश्वास ने सड़क पर से और जोरावर सिंह ने बुर्का ओढ़ कर पंजाब नेशनल बैंक की इमारत से बम फेंका।

यह जो संदेह और भ्रम प्रचलित हो गया कि बम सड़क पर से फेंका गया अथवा पंजाब नेशनल बैंक की इमारत से फेंका गया उसका कारण यह है कि सभी जानकार लोगों ने यह मान लिया कि एक बम फेंका गया। सभी तथ्य इस बात के सूचक हैं कि एक व्यक्ति ने नहीं दो व्यक्तियों ने बम फेंके। बम फेंके जाने के उपरांत बसंत कुमार विश्वास और जोरावर सिंह कभी नहीं मिले। बसंत कुमार विश्वास को फांसी हो गई और जोरावर सिंह फरार होकर २५ २६ वर्ष तक जंगलों और पहाड़ों में भटकते रहे। फांसी लगने से पूर्व बसंत कुमार विश्वास ने अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से तथा गुप्तचर और जेल अधिकारियों को बतलाया कि बम 'मैंने फेंका था" पर ठाकुर जोरावर सिंह २५ वर्षों तक फरार रहे वे किसी से यह नहीं कह सकते थे कि बम उन्होंने फेंका। जो उनके निकट सम्बंधी और मित्र इस तथ्य को जानते थे वे भी इस तथ्य को प्रगट नहीं कर सकते थे।

अध्याय १३

क्रांतिकारी देश भक्त—सूफी अम्बा प्रसाद

महान क्रांतिकारी सूफी अम्बा प्रसाद का जन्म मुरादाबाद में कानूनगोयान मुहल्ले में सन १८६२ ई० में अपने पैतृक गृह में हुआ था। उनकी जन्म तिथि उनके परिवार के सदस्यों को भी ज्ञात नहीं है। अनेक बार उनके घर तथा प्रेस की क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने के कारण तलाशी हुई और पुलिस उनकी पुस्तकें और सम्पूर्ण कागज पत्र उठा कर ले गई, अतएव उनकी जन्म तिथि के बारे में कोई लेख उपलब्ध नहीं है।

सूफी जी के पिता गोविन्द प्रसाद जी मुरादाबाद के नवाब नन्बू खां के यहां सात रुपये मासिक वेतन पर लेखन कार्य करते थे। नवाब नन्बू खां ने सन् १८५७ ई० में भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में विद्रोह का झंडा खड़ा किया था। १८५७ की सशस्त्र क्रांति में रुहेलखंड क्रांति का प्रमुख केन्द्र था। मुरादाबाद में ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया था। मुरादाबाद में केवल नवाब तथा सैनिकों ने ही विद्रोह नहीं किया वरन वहां साधारण नागरिकों ने स्वतन्त्रता की घोषणा की और स्वतन्त्रता के लिए ब्रिटिश शासन से लम्बे समय तक घनघोर युद्ध किया। जब स्वतन्त्रता का वह युद्ध असफल हो गया तो ब्रिटिश शासन ने अत्यन्त निर्दयता पूर्वक दमन किया। नवाब नन्बू खां को भयंकर यातनाएं देकर बन्दूकों से मारा गया। सब साधारण को भयभीत करने के लिए नृशंसता पूर्वक कत्ले आम किया गया। हजारों को तोपों के मुंह पर बांध कर उड़ा दिया गया जिससे उनके शरीर के चिथड़े होकर उड़ गए और उनके परिवार के लोग उनका अन्तिम संस्कार भी न कर सके। क्योंकि मुरादाबाद ने मानवता को लज्जित करने वाले अंग्रेजों के उस नृशंस और अमानवीय वीभत्स अत्याचार को देखा था और उसके शिकार हुए थे, अतएव वहां के स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध, उस रोमांचकारी तथा हृदय को दहलाने वाले दृश्य को भूल नहीं सकते थे। १८५७ तथा १८५८ की उस क्रूरतापूर्ण कहानी को मुरादाबाद के निवासी याद कर ब्रिटिश शासन के प्रति यदि गहरी घृणा को अपने हृदयों में पोषित कर रहे थे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

ऐसे समय जबकि मुरादाबाद की जनता में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गहरी घृणा फैली हुई थी स्वतन्त्रता के उस प्रथम युद्ध के चार वर्ष उपरान्त १८६२ में सूफी अम्बा प्रसाद का जन्म हुआ। बाल्यकाल में जब बालक अम्बा प्रसाद भारत की स्वतन्त्रता के उस प्रथम युद्ध की गाथा अपने अग्रजों से सुनता तो आत्म विभोर हो उठता। वह उस युद्ध की कहानी सुनाने का आग्रह करता और जब वह किशोर अवस्था में शिक्षा प्राप्त करने लगा तो उसे उस क्रांति की कहानी और अधिक विस्तार से सुनने को मिली। क्योंकि १८५७-५८ की क्रूर और रोमांचक गाथा मुरादाबाद के प्रत्येक स्त्री पुरुष को ज्ञात थी कुछ समय पूर्व ही वे उस अग्नि में से होकर निकले थे। अतएव अम्बा प्रसाद के कोमल तथा भावनामय हृदय पर देश को स्वतन्त्र करने की दृढ़ भावना अंकित हो गई।

जन्म से ही उनके दाहिने हाथ में अंगुलियां नहीं थीं। केवल हथेली का ही कुछ भाग था, अतएव वे बायें हाथ से ही सारा कार्य करते थे परन्तु उनका लेख अत्यन्त सुन्दर था। वे व्यंग में बहुधा कहा करते थे भाई हमने १८५७-५८ में स्वतन्त्रता के युद्ध में देश के शत्रुओं अर्थात अंग्रेजों से युद्ध किया था। युद्ध में हाथ कट गया और हमारी वीरगति हो गई। अब पुन: देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने के लिए पुनर्जन्म हुआ

है। हाथ की अगुलियां कटी की कटी आ गई।

उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा जालंधर मुरादाबाद में हुई। मुरादाबाद की शिक्षा समाप्त कर वे बरेली कालेज बरेली में उच्च शिक्षा प्राप्त करने चले गए। बरेली कालेज से उन्होंने स्नातक (बी ए) की उपाधि प्राप्त की और कानून की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। जब वे अंतिम वर्ष में थे तभी बरेली में ही उनका विवाह हो गया। उस समय जो युवक कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हो उसका विवाह हो जाना एक सामान्य बात थी। उनकी पत्नी का नाम सुदर्शना देवी था।

शिक्षा समाप्त कर कुछ समय बरेली में और बाद में मुरादाबाद में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। उस समय लोग उन्हें मास्टर अम्बा प्रसाद जी के नाम से सम्बोधन करते थे। उनका वैवाहिक जीवन शीघ्र समाप्त हो गया पांच वर्ष के उपरांत ही उनकी स्नेहमयी प्रिय पत्नी का स्वर्गवास हो गया और वे गहरे शोक में डूब गए। परिवार के अग्रजों ने उन्हें बहुत समझाया कि वे दूसरा विवाह करलें क्योंकि उस समय उनकी आयु पच्चीस वर्ष के लगभग थी और वे तरुण थे परन्तु उन्होंने दृढ़ता पूर्वक दूसरा विवाह करना अस्वीकार कर दिया। अपनी प्रिय दिवंगत पत्नी के प्रति उनका स्नेह और श्रद्धा इतनी गहन थी कि उन्होंने अपने बड़ों के आग्रह को अस्वीकार कर दिया।

अम्बा प्रसाद जी ने स्वयं मैडम ब्लावतस्की थियासफी की संस्थापक से थियासफी की दीक्षा ली थी अस्तु उन्होंने हिंदू दर्शन का गम्भीर अध्ययन तो किया ही था अन्य धर्मों का भी गहन अध्ययन किया। अपनी प्रिय पत्नी के स्वर्गवास के उपरान्त शोकमग्न अम्बा प्रसाद जी रामगंगा के किनारे घण्टों बैठ कर सोचते और गम्भीर विचार करते। लम्बे समय तक उनकी यह दशा रही लोग तब से उन्हें सूफी जी कहने लगे और मास्टर जी से अब वे अब सूफी अम्बा प्रसाद जी हो गए। उन्होंने सूफी धर्म की विधिवत किसी सूफी गुरु या फकीर से दीक्षा नहीं ली थी। उनके गम्भीर आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक विचारों के कारण ही लोग उन्हें सूफी जी कहने लगे थे।

सूफी जी के अन्तर में देश को स्वतन्त्र करने की भावना तीव्र से तीव्रतर हो रही थी। अध्यापन के द्वारा उन्हें अपने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य का मार्ग बना सकना कठिन दिखाई देने लगा। उन्होंने अध्यापन कार्य समाप्त कर पत्र निकाल कर जन जन में स्वतन्त्रता की भावना जागृत करने का निश्चय कर लिया।

वे अरबी फारसी और उर्दू के प्रकाण्ड विद्वान थे और अंग्रेजी पर भी उनका अधिकार था। उनकी लेखन शैली अत्यन्त हृदयग्राही और चुटीली थी वे ऐसी सजीव भाषा लिखते कि वह पाठक के मन को छू लेती थी। जहां वे लेखनी के धनी थे वहां उनकी वाणी में चमत्कार था। वे अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता थे। जब वे भाषण देते तो मानो ओजपूर्ण वाणी की अविरल धारा बहने लगती और श्रोता उसमें बहने लगते।

देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य से उन्होंने 'सुदर्शन' प्रेस स्थापित कर पत्र निकालना आरम्भ कर दिया। वे जानते थे कि उनके पत्र पर शीघ्र ही सरकार का आक्रमण होगा अस्तु उन्होंने पहले से ही कई नामों से पत्रों का रजिस्ट्रेशन करवा लिया जिससे कि यदि एक पत्र बन्द हो तो दूसरे नाम से क्रांतिकारी विचारों का प्रचार और प्रकाशन होता रहे।

अस्तु १८८० में उन्होंने मुरादाबाद से "सितार ए हिन्द" पत्र निकाल कर क्रांति की अग्नि प्रज्ज्वलित करना आरम्भ कर दिया। जब 'सितार ए हिन्द' पर

शासन का बार हुआ तो उन्होंने "जाम्युल-मन्तूम" निकाला और जब उसको बन्द करना पड़ा तो 'चार पूज" निकाला।

"सितार ए हिन्द" में जब सूफी जी अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा क्रांति के स्फुलिंग छोड़ने लगे तो सरकार चौंकी और उन पर शासन के विरुद्ध जन साधारण को भड़काने तथा मिथ्या प्रचार करने के लिए अभियोग चलाया गया। मुरादाबाद के डिप्टी कलक्टर सिराजउद्दीन ने उनके विरुद्ध फैसला दे दिया। अराजकता फैलाने के अपराध में उनको तीन महीने के कठोर कारावास का दंड दिया गया। सूफीजी ने सेशन में अपील की उन्होंने अपने अभियोग की स्वयं पैरवी की और यह सिद्ध कर दिया कि उनके लेख राजद्रोहात्मक नहीं हैं अस्तु सेशन के न्यायालय ने उन्हें मुक्त कर दिया।

अब सूफी जी ने सितार ए हिन्द के अगले संस्करण में एक कार्टून प्रकाशित किया उसमें प्रदर्शित व्यक्ति ठीक वैसे ही कपड़े पहने था जैसे कि डिप्टी कलक्टर सिराज उद्दीन पहिनते थे, परन्तु उनका मुख सुअर जैसा था। कार्टून के नीचे लिखा था "जो हाकिम इंसाफ नहीं करेगा उसका कयामत के दिन यही रूप होगा।"

मुरादाबाद के समीप ही रामपुर राज्य था। वहां के नवाब अत्यन्त विलासी और दुश्चरित्र थे, प्रजा अत्याचार से पीड़ित थी। सूफीजी अपने पत्र में नवाब के व्यक्तिगत जीवन तथा उनके भ्रष्ट शासन की कड़ी आलोचना करते थे। एक बार जनता का रोष फूट पड़ा, रामपुर नगर में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई तो नवाब कुछ दिनों के लिए मुरादाबाद चले आए। सूफीजी ने अपने पत्र में मोटे अक्षरों में लाल स्याही से शीर्षक छापा 'नवाब आए कि भाग आए' नवाब साहब ने उन पर मानहानि का अभियोग चलाया। न्यायालय में सूफीजी ने स्वयं पैरवी की और कहा कि उर्दू में "भाग्य" को "भाग" ही लिखा जा सकता है मेरा अर्थ तो यह था कि नवाब साहब के आने से मुरादाबाद वालों के भाग्य जाग गए हैं। सूफी जी की कठोर आलोचना से क्रुद्ध होकर नवाब ने सितार ए हिन्द का रामपुर राज्य में प्रवेश वर्जित कर दिया। सूफीजी ने अपने पत्र का एक विशेषांक निकाला और शीर्षक दिया "यह रामपुर नहीं हरामपुर है।" उनके पत्र की सैकड़ों प्रतियां गुप्त रूप से रामपुर पहुंचती थी।

ब्रिटिश शासन सूफी जी को अत्यन्त खतरनाक समझने लगा था अतएव सरकार उनको गिरफ्तार कर लेना चाहती थी। वे भूमिगत हो गए परन्तु पत्र बराबर निकलता था और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह की भावना को जागृति करने का कार्य अबाध गति से करता था। वे पुलिस की आंखों में धूल झोंकने तथा भेष बदलने की कला में सिद्ध हस्त थे।

एक बार पुलिस ने उनके प्रेस पर छापा मारा। सूफीजी प्रेस में ही थे। प्रेस के मकान में अलमारी के आकार का बहुत बड़ा ताख था। सूफी जी भगवान रामचन्द्र का एक बहुत बड़ा चित्र ताख के अगले भाग (सामने) रख कर उसको पुष्पों से भली भांति सजा कर उसके पीछे छिप गए, वे कद के नाटे थे। उन्होंने इसका लाभ उठाया और पुलिस प्रेस का कोना-कोना खोज कर वापस चली गई। कुछ दिनों के उपरांत पुलिस ने पुनः उस मकान को घेर लिया। सूफी जी एक परदेदार डोली में बैठ कर जिसे चार कहार कंधा पर उठाए थे मकान के पिछले गुप्त द्वार से निकल गए। एक बार सूफी जी जब अपने मकान में थे पुलिस ने मकान को घेर लिया। एक पुराना घाघरा और ओढ़नी पहिन कर बूढ़े और मल का टोकरा सिर पर रख कर मेहतरानी

के रूप मे घू घट निकाल कर वे निकले। पुलिस वालो ने फाटक पर पूछा कि क्या सूफी अम्बा प्रसाद मकान म हैं। अपनी आवाज बदल कर स्त्री योचित कोमल स्वर म उन्होंने उत्तर दिया कि मैं तो पाखाना कमाने आई थी मुझे मालूम नही अदर जाकर देखलो। बहुत बाद को पुलिस को पता चला कि मेहतरानी के रूप में सूफी जी ही उनके घेरे मे निकल गए।

पर आखिर सूफी जी कब तक इस प्रकार बचते, अत में वे गिरफ्तार कर लिए गए और उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। जज की अदालत से उन्हें डेढ वर्ष का कठोर कारागार का दड मिला। उनकी सम्पूर्ण जायदाद जब्त करली गई। उनके कागज पत्र पुस्तकें आदि पुलिस ले गई। २६ अक्तूबर, १८६७ को उन्हें १८ महीने का कठोर कारावास हुआ।

यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि सूफी जी ने उस समय विदेशी वस्तुओं विशेष कर विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार और स्वदशी वस्तुओ का अपनाने का आन्दोलन खडा किया जबकि भारत मे स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात भी नही हुआ था। भारत मे बगभग के आन्दोलन के साथ स्वदशी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था पर सूफी जी ने उससे बहुत पहले १८६० से ही स्वदेशी का व्रत धारण करने के लिए जनता का आवाहन करना आरम्भ कर दिया था। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का और स्वदेशी वस्त्र धारण करने का आन्दोलन राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने १६२१ के सत्याग्रह आन्दोलन के साथ आरम्भ किया था पर सूफी जी १८६० से अपने प्रेस के सामने विदेशी वस्त्रो की होली जलाया करते थे।

देश को स्वतत्र करने के लिए वे सशस्त्र क्रान्ति म विश्वास रखते थे। अतएव वे अपने पत्र तथा भाषणो द्वारा उग्र राजनीतिक जागरण का काय तो करते ही थे परन्त वे उतने ही उग्र सामाजिक क्रान्तिकारी थे। वे मुसलमानो तथा अछूतो से तनिक भी छुआछूत नही करते थे। उनके साथ खाना पीना और उठना बठना वे बिना किसी सकोच के करते थे। इस दृष्टि से वे उन्नीसवीं शताब्दी के नही इक्कीसवीं शताब्दी के व्यक्ति थे। यही नही कि व अछूतो से भेद भाव नही रखते थे वरन उन्होंने एक मेहतर दम्पत्ति को अपने प्रेस मे नौकर रख लिया था। प्रेस मे जहा सूफी जी रहते थे वही वे दोनो स्त्री पुरुष भी रहते थे और मेहतरानी उनका भोजन बनाती थी। वे उसीका बनाया हुआ भोजन लेते थे। १८६० के उस अत्यन्त रूढिग्रस्त वातावरण मे महतरानी द्वारा बनाए गए भोजन खाने का और मेहतर दम्पत्ति के साथ एक मकान म रहने का साहस सूफी जी जैसा महान क्रान्तिकारी ही कर सकता था। उनके इस सामाजिक क्रान्तिकारी आचरण से सभी उच्च जाति के हिंदू उनके प्रति उदासीन थे कट्टर लोग उनका विरोध करते थे परन्तु सूफी जी अडिग रहे।

जब सूफी जी डेढ वर्ष का कारावास भोग कर मुक्त हुए तो उन्होंने पुन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी ओजस्वी लेखनी से लेख लिखना आरम्भ कर दिया। अब पुलिस उनके पीछे पड गई आए दिन उनके प्रेस की तलाशी होती, उनके प्रेस मे काम करने वालो को धमकाया जाता उन्हे परेशान किया जाता। अस्तु सूफी जी ने सोचा कि कुछ समय के लिए मुरादाबाद से बाहर चले जाना चाहिए। मुरादाबाद छोडने का एक दूसरा कारण भी था। उनके मन म यह विचार मथन चल रहा था कि देशी [illegible] सेना को

क्रांति के लिए तैयार किया जाव और अस्त्र शस्त्र एकत्रित किये जावें। वे स्वय तो सेना मे प्रवेश पा नही सकते थे क्योकि उनका सीधा हाथ बेकार था और वे नाटे थे।

अतएव सूफी जी मुरादाबाद से दक्षिण हैदराबाद गए। निजाम उनके अरबी फारसी और उर्दू के प्रकाड पाडित्य तथा अंग्रेजी भाषा पर उनके असाधारण अधिकार को देख कर अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होने सूफी जी को ऊचा वेतन पद तथा मकान आदि की सुविधा देकर अपनी सेवा मे रखना चाहा परन्तु सूफी जी विलासिता और आराम का जीवन व्यतीत करने के लिए तो हैदराबाद गए नही थे उन्होने देखा कि हैदराबाद मे उनके लक्ष्य की पूर्ति नही हो सकती अतएव उन्होने निजाम के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

सूफी जी केवल एक सफल पत्रकार, लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता ही नही थे। उन्होंने अनेक ग्रथो की रचना की थी। आज किसी को भी इस बात की पूर्ण जानकारी नही है कि उन्होने कितने ग्रथो की रचना की थी क्योकि अनेक बार उनके प्रेस तथा मकान की पुलिस ने तलाशी ली थी और उनके कागज पत्र तथा पुस्तकें आदि वह उठा ले गई थी। उनके रचे हुए जिन ग्रथो का कतिपय पत्रो मे उल्लेख मिलता है जो ईरान से भारत मे लोगो के पास आए उनसे पता लगता है कि उनकी रची हुई नीचे लिखी पुस्तकों के नाम उनके ईरान भक्त जानते थे।

(१) जिन्दा जावद, (२) जिन्दा करामात, (३) जाम ए उलूम, (४) तीर ब-हदफ, (५) इतमा ए जिदेन, (६) जामे जम, (७) इल्मियात की किताब, (८) इल्म कियफा, (९) इल्म कास ए सर (१०) मार गुजीदा का अजीब व गरीब इलाज, (११) कर्नल एलकाट के लैक चस का उर्दू तजुर्मा, (१२) उर्दू डिक्शनरी, (१३) इलाज शमशी भाग २।

पजाब पहुँच कर उन्होने "बागी मसीहा" करके एक पुस्तक लिखी थी जिसे सरकार ने जब्त कर लिया था।

इसका कोई लेख नही मिलता कि सूफी जी ने आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति का कब और कहा अध्ययन किया अथवा किससे उन्होने चिकित्सा करना सीखा पर वे निधन तथा नगरवासियो की निशुल्क चिकित्सा और सेवा करते थे आधाशीशी (सर दर्द) तथा बिच्छू काट की चिकित्सा के वे विशेषज्ञ माने जाते थे।

जब वे मुरादाबाद से पत्र निकालते थे सम्भवत उस समय से ही उनका लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह से सम्पर्क स्थापित हो गया था। वे सूफी जी के लेखों से प्रभावित थे और जब सूफी जी हैदराबाद म थे तो लाला जी की प्रेरणा तथा निर्देशन म निकलने वाले 'हिन्दुस्तान पत्र" मे सूफी जी लिखा करते थे। उनकी लेखनी के चमत्कार से सभी प्रभावित होते थे उन्हे हैदराबाद मे ही "हिन्दुस्तान" पत्र के सम्पादकीय विभाग म काम करने का निमत्रण मिला और वे निजाम के प्रलोभन को ठुकरा कर पजाब चले आए। उन्होने देख लिया था कि हैदराबाद म उनके लक्ष्य की पूर्ति की सम्भावना नही है। हिन्दुस्तान मे वे "शफर बाबा" के नाम से नियमित रूप से लिखते थे उनके लेखो मे क्रांति का स्वर मुखरित होता था।

जिस समय सूफी जी पजाब पहुचे उस समय पजाब मे राष्ट्रीय चैतन्य जाग्रत हो रहा था। लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह उसकी प्रेरक शक्तिया थी अब क्रातिकारी सूफी अम्बा प्रसाद के पहुच जाने से क्रातिकारी आदोलन तीव्र हो उठा।

क्रांतिकारी आदोलन को तीव्र बनाने के लिए अनुकूल परिस्थितियां भी उपस्थित हो गई। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशाब्द म पजाब की आर्थिक स्थिति भयावह हो उठी थी। कई वर्षों से निरन्तर फसलें नष्ट हो रही थी और पजाब म भयकर दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई। १८६७ स १६०० के वर्षों मे पजाब म इन दुर्भिक्षो के कारण हजारो की सख्या म मृत्यु हुई थी। ग्राम जनता इन भयकर दुर्भिक्षों के कारण त्रस्त थी ही, सरकार ने १६०६ मे मालगुजारी और सिचाई (आबपाशी) म बहुत अधिक वृद्धि कर दी। बात यह थी कि पजाब में जो नहरो का जाल बिछाया गया था नहर उपनिवेश स्थापित किए गए थे शुष्क और अर्द्ध मरुभूमि मे जो जलधारा बहने लगी थी उसके परिणाम स्वरूप किसानो को लाभ हुआ था उनकी आर्थिक स्थिति कुछ सुधरी थी। सरकार ने मालगुजारी और सिचाई की दरो मे अत्याधिक वृद्धि करके किसाना को उस लाभ से वचित कर देना चाहा। यही नही १६०७ म सरकार ने भूमि हस्तान्तरकरण कानून (लैंड ऐलीनियशन ऐक्ट) बना कर भूमि के स्वामित्व पर कुछ प्रतिबंध लगा दिए जिसके कारण नहर उपनिवेशो मे भूमि की कीमतें बहुत गिर गई। इन सब कारणो से पजाब के किसानो म घोर असतोष उत्पन्न हो गया।

सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद ने इस असतोष को सगठित और शक्तिशाली बनाने के लिए किसान आदोलन खडा कर दिया। आगे चल कर इस आदोलन म आगा हैदर, तथा सैयद हैदर रिजा भी उनके साथ आ गए और लाला लाजपतराय ने उसका नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद न 'भारतीय देश भक्त मडल" तथा "भारत माता सोसायटी' नामक दो क्रांतिकारी सगठन खडे कर किसान आदोलन को शक्तिशाली बनाने तथा ग्रामीण जनता की सेवा करने के लिए स्थायी माध्यम उपलब्ध कर दिए।

पजाब भारतीय सेना का सैनिक दला था। सिक्ख जाट, पठान भारतीय सेना की रीढ थे अतएव यह स्वाभाविक था कि पजाब सरकार पजाब किसान आन्दोलन से चौकन्नी उठी उसने दमन करना चाहा। साप्ताहिक पत्र 'पजाबी' के सपादक और प्रकाशक को आदोलन का समर्थन करने के अपराध म गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हे ढाई वर्ष के कठोर कारावास का दड दे दिया गया। सूफी अम्बा प्रसाद तथा सरदार अजीत सिंह के 'देशभक्त मडल तथा भारत माता सोसायटी ने अत्यन्त उग्र और शक्तिशाली जन आदोलन खडा कर दिया।

२२ फरवरी, १६०७ को दमन के विरुद्ध विरोध दिवस मनाया गया सम्पूर्ण पजाब मे जन आदोलन भडक उठा। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद सारे पजाब मे दौरा कर रहे थे उनके ओजस्वी भाषणो से पजाब मे अभूतपूर्व उत्साह फूट पडा। उसी समय पजाब म प्लेग का प्रकोप हुआ हजारो की सख्या मे सर्व साधारण जन चिकित्सा के अभाव मे मर गए।

मालगुजारी सिंचाई की दरो म अत्याधिक वृद्धि दुर्भिक्ष, प्लेग से ग्रामीण जन सख्या त्रस्त और क्षुब्ध तो थी ही, उस पर सरकार के दमन से समस्त पजाब मे भयकर असतोष व्याप्त हो गया। सूफी अम्बा प्रसाद और सरदार अजीत सिंह अपने भाषणो से उस असतोष की अग्नि को और अधिक भडका रहे थे। उन्होंने उस किसान आदोलन को देश की स्वतत्रता के आदोलन का रूप दे दिया। वे रात दिन गावो म घूम कर प्रचार करते, उनके क्रांतिकारी भाषणो के परिणाम स्वरूप केवल किसानो म ही नही सैनिको म भी घोर असतोष और अशांति उत्पन्न हो गई।

सूफी अम्बा प्रसाद और अजीत सिंह अपने भाषणों में केवल बढ़ी हुई माल गुजारी और सिंचाई की ही बात नहीं करते थे वे किसानों से कहते कि जब तक भारत से अंग्रेजों को निकाल बाहर नहीं किया जाता तब यह कष्ट दूर नहीं हो सकते। यह सब हमारी दासता का अभिशाप है। वे कहते कि तीस करोड़ भारतीय यदि निश्चय करलें तो ब्रिटिश शासन और सत्ता को भारत से उखाड़ फेंका जा सकता है। अतएव अंग्रेजों से मत डरो उनकी सैनिक शक्ति से भयभीत न हो सेना में अधिकांश तुम्हारे भाई बन्धु हैं, यदि मरना है तो भारत माता को स्वतन्त्र करने के पावन यज्ञ में मरो और वीर गति प्राप्त करो। माता की स्वतन्त्रता के युद्ध में मरना इस प्रकार भूख और प्लेग से कीड़े मकोड़ों की तरह मरने से कहीं श्रेष्ठ और गौरवमयी होगी।

"भारतीय देशभक्त मंडल" और "भारत माता—सोसायटी" (समिति) के धुआंधार प्रचार से और सरदार अजीत सिंह सूफी अम्बा प्रसाद और उनके क्रान्तिकारी सहयोगियों के द्वारा प्रज्ज्वलित अग्नि के परिणाम स्वरूप केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं रावलपिंडी, लाहौल अमृतसर आदि बड़े नगरों में भी विशाल प्रदर्शन हुए। रावलपिंडी में सेना और उग्र प्रदर्शनकारियों में जम कर युद्ध हुआ। रावलपिंडी के पांच प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित वकीलों ने प्रदर्शनकारियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। सरकार ने उन पांचों वकीलों को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दे दी। सूफी अम्बा प्रसाद तथा सरदार अजीत सिंह ने इसका विरोध करने के लिए एक विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया। प्रातःकाल से ही न्यायालय के अहाते में बहुत बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी एकत्रित होने लगे। सरकार ने भयभीत होकर वकीलों के विरुद्ध निकाली गई आज्ञा (सम्मन) वापस लेली।

इस आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि सेनाओं में भी असंतोष उत्पन्न हो गया और अशांति के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। क्योंकि भारतीय सेनाओं में पंजाब के सैनिक बहुत बड़ी संख्या में थे। पंजाब के ग्रामीण परिवारों से वे आए थे अपने भाई बन्धुओं पर होने वाले दमन से क्षुब्ध थे। भारतीय क्रान्तिकारी पंजाबी सैनिकों के इस असंतोष का लाभ उठा कर उन्हें क्रान्ति के लिए उकसा रहे थे और उनका भारतीय सेनाओं से सम्पर्क स्थापित हो गया। इनकी जाट रेजीमेंट में एक सैनिक विद्रोह के षड्यन्त्र का सरकार को पता चल गया। उस जाट रेजीमेंट का एक भाग जो कलकत्ता के फोर्ट-विलियम में नियुक्त था—उसको बंगाल के युगान्तर क्रान्तिकारी दल ने विद्रोह करने के लिए तैयार कर लिया था।

इससे भारतीय सेनाओं के तत्कालीन प्रधान सेनापति लार्ड किचनर शंकित हो उठे। उन्होंने ब्रिटेन के प्रधान मंत्री को लिखा "कि जब तक इनग्रामीण कृषि सम्बन्धी कानूनों में संशोधन नहीं किया जाता और लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को गिरफ्तार नहीं किया जाता मैं भारतीय सेनाओं की राजभक्ति का आश्वासन नहीं दे सकता। यदि मेरे सुझाव का अमान्य किया गया तो मैं पद से त्याग पत्र दे दूंगा।"

उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सम्पूर्ण भारत में असंतोष और क्षोभ की अग्नि धधक रही हो। १६०५ में बंगभंग के परिणाम स्वरूप, जो उग्र क्रान्तिकारी आन्दोलन तथा बहिष्कार आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था उसमें सम्पूर्ण बंगाल क्षुब्ध था। उसकी चिनगारियां महाराष्ट्र में पहुंच रही थीं और लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में महाराष्ट्र में भी उग्र क्रान्तिकारी भावना जागृत हो चुकी थी। पंजाब धधक रहा था,

और १६०७ का वप भारत की स्वतन्त्रता के प्रथम युद्ध १८५७ का स्वण जयन्ती वप था। १८५७ की सशस्त्र क्रांति को पचास वप पूरे हो रहे थे। ब्रिटेन और भारत में ब्रिटिश अधिकारियों और राजनीतिज्ञो को यह आशका थी कि भारतीय क्रांतिकारी सशस्त्र विद्रोह का प्रयत्न करेंगे। उस समय यह साधारण चर्चा सुनाई पडती थी कि उस वप पुन भारत मे सशस्त्र विद्रोह होगा। ब्रिटिश सरकार सजग और सतक थी।

लार्ड किचनर के प्रस्ताव का परिणाम यह हुआ कि १८१८ के विनियम तीन के अन्तगत लाल लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को बिना अभियोग चलाए गिरफ्तार कर कारागार मे ब द कर देने की आज्ञा प्रसारित करनी गई। लाला लाजपत राय को तो तुर त गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु सरदार अजीत सिंह सरलता से हाथ नही आए वे फरार हो गए पर तु अ तत गिरफ्तार कर लिए गए और लाला जी और अजीत सिंह दोनो को ही माडले बरमा में भेज दिया गया।

किसानो के असतोष को शात करने के लिए पजाब सरकार के दबाव डालने पर भी कि इससे पजाब सरकार की जनता की दृष्टि मे सरकार की प्रतिष्ठा गिर जावेगी वायसराय "मिटो" ने भारत सचिव "मारले" से सहमति लेकर पजाब के माल गुजारी और सिंचाई की दरो मे वद्धि करने के बिलो को स्वीकृत प्रदान नही की। किसान आदोलन का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव पडा था कि तत्कालीन पजाब के लैफ्टीनेंट गवरनर "सर डेनियल इबटसन" ने अपने प्रतिवेदन मे लिखा कि सम्पूण पजाब मे ब्रिटिश विरोधी भावना की लहर फैली हुई है। ब्रिटिश विरोधी प्रचार इतना उग्र है कि सम्पूण प्रा त म गम्भीर अशाति उत्पन्न हो गई।"

लाल लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह के गिरफ्तार हो जाने पर आदो लन का नेतृत्व सूफी अम्बा प्रसाद के कधो पर आ गया पर तु उन्हें लालच द फलक, भाई परमान द, पिंडीदास और सरदार अजीत सिंह के भाई किशन सिंह का सहयोग प्राप्त था। पजाब मे इस समय भयकर दमन का चक्र चल रहा था धरपकड वहत वड पैमाने पर हो रही थी अस्तु सूफी अम्बा प्रसाद सरदार अजीत सिंह के भाई किशन सिंह तथा भारत माता सोसायटी के मत्री महता आन द किशोर के साथ नेपाल चले गए। सूफी जी की योजना यह थी कि वहा बैठकर सशस्त्र विद्रोह का सगठन किया जाव और नेपाल के शासको से भी भारत म सशस्त्र विद्रोह के लिए सहायता प्राप्त की जावे। परतु नेपाल का वास्तविक शासक राणा प्रधान मत्री का एक प्रकार से कैदी था। सारी सत्ता प्रधानमत्री के हाथ मे थी। उसने सूफी अम्बा प्रसाद को गिरफ्तार कर भारत वापस भेज दिया। वे लाहौर लाए गए और उन पर 'इडिया' नामक पत्र म लेख लिखने तथा राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। किन्तु उनके विरुद्ध कोई प्रमाण न मिल सकने के कारण वे छूट गए।

सूफी जी ने एक चमत्कार और किया। उन्हें यह पता चला कि पजाब सरकार उनके "हि दुस्तान" मे प्रकाशित एक लेख पर पुन उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाने पर विचार कर रही है अस्तु वे छिप कर काश्मीर चले गए। उन्होने वहां काश्मीर राज्य के अग्रेज रैजीडैंट के बगले पर झाड़ देने और सफाई करने की नौकरी करली। उन्होने वहा अपने को एक अपढ निरक्षर भत्य के रूप मे ही प्रदर्शित किया। उस समय ब्रिटिश सरकार रूस से बहुत शकित और भयभीत थी क्योकि जारशाही रूस की दृष्टि भारत पर थी। काश्मीर रूस से मिला हुआ है ब्रिटिश कूटनीतिज्ञो का विचार

था कि भारत की सीमा सुरक्षा की दृष्टि से कश्मीर पर भारत सरकार का सीधा शासन होना चाहिए। अस्तु भारत सरकार का वैदेशिक विभाग यह षडयन्त्र रच रहा था कि कश्मीर को हड़प लिया जावे। कश्मीर का अंग्रेज रेजीडेंट इस आशय के जाली पत्र तथा दस्तावेज आदि बनवा रहा था कि यह प्रमाणित किया जा सके कि कश्मीर के महाराजा रूस से साँठ गाँठ कर रहे हैं और इस आधार पर महाराजा को अपदस्थ कर कश्मीर को ब्रिटिश राज्य में मिला लेने का भयंकर कुचक्र और षडयन्त्र रचा जा रहा था। अपढ बने हुए नौकर को विदेशी विभाग के अंग्रेज अधिकारियों से अंग्रेजी में रेजीडेंट से हुई बातों से इस षडयन्त्र का ज्ञान हो गया था। अतएव एक दिन अनुकूल अवसर पाकर उन्होंने रेजीडेंट की उस अलमारी में से जिसमें गोपनीय कागज रहते थे। कश्मीर को हड़पने सम्बन्धी षडयन्त्र के सभी कागज पत्र और दस्तावेज आदि निकाल लिए और वे सीधे कलकत्ता गए वहां जाकर उन्होंने वे सभी कागज पत्र "अमृत बाजार पत्रिका" के यशस्वी संपादक मोतीलाल घोष को दे दिये और षडयन्त्र का सारा हाल उन्हें बतला दिया। श्री मोतीलाल घोष ने उन पत्रों के चित्र अमृत बाजार पत्रिका में छाप कर षडयन्त्र का भंडाफोड़ कर दिया। भारत के राजनीतिक क्षेत्र में भूकम्प आ गया। उसका परिणाम यह हुआ कि कश्मीर समाप्त होने से बच गया। सूफी जी बाद को अपने मित्रों से व्यंग में कहा करते थे। भाई हमने कश्मीर को हड़पे जाने से बचा दिया पर कश्मीर के महाराजा ने हमको एक शाल भी भेंट नहीं किया। इसी प्रकार उन्होंने अम्बाला के डिप्टी कमिश्नर के यहां गूंगे बनकर फर्राश की नौकरी करली। कमिश्नर साहब की कोठी पर अंग्रेज अधिकारियों से जो प्रशासन और किसान आंदोलन सम्बन्धी गुप्त बातें होती वे सारी की सारी अमृत बाजार पत्रिका में प्रकाशित होतीं। कमिश्नर परेशान था गुप्तचर परेशान थे पर उस गूंगे नौकर पर किसी को संदेह नहीं हुआ।

कुछ समय के उपरांत सरदार अजीत सिंह छूट कर आ गए पुनः वे दोनों क्रांतिकारी संगठन को सुदृढ़ करने में जुट गए। १६०८ में सरदार अजीत सिंह और सूफी जी ने क्रांतिकारी साहित्य प्रकाशित करने के उद्देश्य से "भारत माता बुक सोसायटी" स्थापित की। सूफी जी द्वारा लिखित "बागी मसीहा" अथवा 'विद्रोही ईसा' इसी प्रकाशन संस्था ने प्रकाशित की थी जिसे बाद में सरकार ने जब्त कर लिया।

इसी वर्ष १६०८ में लोकमान्य तिलक पर केसरी और मराठा में लिखे लेखों पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया और उन्हें ६ वर्ष के कारावास का दंड दे दिया गया। १६०६ में सूफीजी ने क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य से 'पेशवा" पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। उस समय भारत में क्रांतिकारी भावना वेगवती हो उठी थी। महाराष्ट्र, मद्रास, बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन अत्यंत शक्तिशाली और तीव्र हो उठा था। भारत सरकार उस अग्नि से पंजाब को अछूता रखना चाहती थी क्योंकि पंजाब उनका सैनिक क्षेत्र था अतएव सरकार द्वारा पंजाब में भयंकर दमन आरम्भ हो गया। देशभक्त मंडल के सभी सदस्य साधू का भेष धारण कर पर्वतीय प्रदेश में चल गए परन्तु गुप्तचरों ने वहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा।

सरकार ने अजीत सिंह, किशन सिंह, अम्बा प्रसाद सूफी, लालचन्द फलक नन्द गोपाल, ईश्वरी प्रसाद मुंशीराम और जियाउल हक पर राजद्रोह का अभियोग चलाया। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद नहीं पकड़े जा सके वे गुप्त रूप

से भारत से निकल कर ईरान चले गए। भारत सरकार को यह ज्ञात हो गया था कि सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद जो फरार हैं भारत से निकल कर विदेशों में जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। अतएव भारत की सीमा पर कड़ी निगरानी की व्यवस्था की गई थी जिससे कि वे भारत की सीमा को पार न कर सकें। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद किस प्रकार भारत की सीमा पार कर ईरान पहुंचे उसकी बहुत लम्बी भयानक और रोमांचकारी कहानी है। सूफी अम्बा प्रसाद कभी स्त्री का भेष धारण करते, सरदार अजीत सिंह मुसलमान फकीर का वेश धारण करते। एक बार तो सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद को बड़े बड़े लकड़ी के सन्दूकों में बन्द होकर ऊंटों की पीठ पर सन्दूकों को लदवा कर जाना पड़ा। परन्तु भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अपने जीवन को अर्पित कर दिया था अतएव वे इस अत्यन्त जोखिम और कष्ट भरी यात्रा से घबराये नहीं और किसी प्रकार परशिया (ईरान) पहुंच गए। परशिया (ईरान) में हैदराबाद के मिर्जा अब्बास तथा अन्य क्रांतिकारी पहले से पहुंचे हुए थे। जो १९०६-७ में युगान्तर दल के सम्पर्क में आए थे और अलीपुर षडयन्त्र में उनका नाम था वे ईरान चले गए और क्योंकि वे सूफी मत के विद्वान थे वे वहां सूफी धर्म का प्रचार तथा ब्रिटिश विरोधी भावना उत्पन्न करने लगे।

यद्यपि परशिया (ईरान) स्वतन्त्र राष्ट्र था परन्तु प्रथम महायुद्ध के पूर्व ही उस पर ब्रिटेन का बहुत अधिक प्रभाव हो गया था। इस प्रकार से वह ब्रिटेन के प्रभाव क्षेत्र में आ गया था वह नाम मात्र को स्वतन्त्र था। परशिया (ईरान) पर ब्रिटेन का इतना गहरा प्रभाव और नियन्त्रण था कि परशिया की सरकार ने अपनी राजस्व प्रणाली का पुनसंगठन करने के लिए एक अमरिकन विशेषज्ञ स्कुस्टर को आमन्त्रित किया। परन्तु ब्रिटेन का विरोध करने पर उसे राजस्व प्रणाली के पुनसंगठन का विचार छोड़ देना पड़ा और उस विशेषज्ञ को परशिया शीघ्र छोड़ने पर विवश कर दिया गया। स्कुस्टर ने अपने कटु अनुभव "दी स्ट्रैंगलिंग आफ परशिया" नामक पुस्तक में विस्तार से लिखे हैं।

अस्तु सूफी अम्बा प्रसाद और अजीत सिंह के परशिया (ईरान) पहुंच जाने पर भी वे सुरक्षित नहीं थे। ब्रिटिश सरकार को जब यह ज्ञात हो गया कि वे परशिया (ईरान) पहुंच गए हैं तो ब्रिटिश गुप्तचर उनको वहां भी गिरफ्तार करने का प्रयत्न करने लगे। पर सूफी अम्बा प्रसाद का फारसी भाषा का प्रकाण्ड पांडित्य तथा सूफी धर्म और दर्शन के गहन ज्ञान ने उसकी सहायता की। ईरान में सूफी धर्म को मानने वाले बहुत बड़ी संख्या में हैं। सूफी अम्बा प्रसाद के फारसी भाषा में धार्मिक प्रवचनों ने उन्हें आदर और श्रद्धा का केन्द्र बना दिया। ईरान के लोग उन्हें 'हिन्दू पीर' कहते थे वे मस्जिदों में प्रवचन करते और फारसी की शिक्षा देते थे। यही कारण था कि वे ब्रिटिश गुप्तचरों से बच सके।

परशिया (ईरान) में यद्यपि सामन्ती वर्ग तथा शेखों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने खरीद लिया था परन्तु सब साधारण में ब्रिटिश विरोधी भावना व्याप्त थी, क्योंकि वे देख रहे थे कि धीरे धीरे ब्रिटेन और रूस ईरान को अपने आधीन देश बना कर बांट लेने का षडयन्त्र कर रहे हैं। अस्तु सूफी जी और सरदार अजीत सिंह ने ब्रिटिश विरोधी संगठन खड़ा कर राष्ट्रीय भावना वाले ईरानियों का सहयोग प्राप्त कर लिया। सूफी अम्बा प्रसाद ने वहां फारसी में 'आबहयात' पत्र निकाला और ब्रिटेन विरोधी प्रचार करने लगे।

उस समय संसार पर प्रथम विश्व युद्ध के बादल मंडरा रहे थे। भारतीय क्रांतिकारी योरोप, अमरिका म सक्रिय थे। वे अपने प्राणों को हथेली पर रख कर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नशील थे और स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर सम्पूर्ण योरोप में उनका पीछा कर रहे थे। जब प्रथम विश्व व्यापी युद्ध छिड़ गया और टर्की भी जरमनी के साथ युद्ध मे शामिल हो गया तो भारतीय क्रांतिकारी और भी अधिक सक्रिय हो उठे। बर्लिन कमेटी न जरमन सरकार से संधि करली और राजा महेन्द्र प्रताप और बरकतउल्ला के नेतृत्व म एक मिशन परशिया और अफगानिस्तान आया। भारतीय क्रांतिकारियो का प्रयत्न यह था कि जरमनी से ईरान और अफगानिस्तान की ओर से पश्चिम सीमा पर और गदर पार्टी के क्रांतिकारी सुदूर पूर्व की ओर से भारत की पूर्वी सीमा पर सैनिक अभियान करें, तथा जरमनी से मिले हुए अस्त्र शस्त्रों की सहायता स महाविप्लवी नायक ' रासबिहारी बोस" तथा "जतिन-बाघा" के नेतृत्व मे भारत मे सशस्त्र क्रांति हो।

सरदार अजीत सिंह तो कुछ दिवस ही टर्की चले गए अतएव ईरान म भारतीय क्रांतिकारी केन्द्र का संचालन भक्त सूफी अम्बा प्रसाद के कंधो पर आ गया। परन्तु वे अत्यंत मुस्तैदी से भारत की स्वतंत्रता के इस अभियान म जुट गए। राजा महेन्द्र प्रताप, बरकत उल्ला खां तथा बर्लिन कमेटी के अन्य क्रांतिकारियो तथा जरमनी और टर्की के सैनिक मिशन से उन्होंने सम्बन्ध स्थापित कर लिया।

ब्रिटिश सरकार इस गठबंधन स बहुत भयभीत हो गई क्योंकि टर्की का सुल्तान मुस्लिम जगत का खलीफा था अतएव मुसलमान जनता उसको अत्यन्त श्रद्धा स अपने धार्मिक नेता के रूप मे देखती थी। अब ब्रिटिश सरकार ने परशिया म जो भी ब्रिटिश विरोधी केन्द्र थे उन पर अपना सैनिक अधिकार स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

शीराज म सूफी अम्बा प्रसाद न ब्रिटिश विरोधी अभियान खडा कर दिया। जब ब्रिटिश सेना ने शीराज पर अधिकार करना चाहा तो युद्ध हुआ। स्वयं सूफी अम्बा प्रसाद एक हाथ रहते हुए भी पिस्तौल से लडे। पराजय होने पर ब्रिटिश अधिकारियो ने सूफी जी तथा उनके अन्य साथियो को गिरफ्तार कर लिया। उनका कोर्ट मार्शल हुआ और उन्हें गोली मार देने का निर्णय किया गया। व कैद कर लिए गए।

जिस कोठरी म व कैद थे प्रातःकाल जब उन्हे गोली मारने के लिए ले जाने के लिए,कोठरी खोली गई तो देखा गया कि वे समाधि अवस्था म हैं। केवल उनका शव शेष है वे महाप्रयाण कर चुके हैं।

२१ (इक्कीस) जनवरी १६१७ को यह महान क्रांतिकारी देशभक्त भारत माता को स्वतंत्र करने के प्रयत्न मे विदेश (शीराज-ईरान) म चिर निद्रा म सो गया उसे अपनी मातृभूमि की गोद म मरने का भी सौभाग्य प्राप्त नही हुआ।

ब्रिटिश अधिकारियो ने यह प्रचार किया कि सूफी अम्बा प्रसाद ने आत्म हत्या करली पर ईरान म सूफी जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले ईरानवासी यह मानते थे कि ब्रिटिश अधिकारियो ने उन्हें विष दिया था। बात यह थी कि जब ब्रिटिश अधिकारियो ने सूफी अम्बा प्रसाद को कैद किया तो ईरान सरकार ने कहा कि उनके विरुद्ध यदि आवश्यकता हुई तो ईरान की अदालत मे अभियोग चलाया जावेगा। परन्तु ब्रिटिश अधिकारियो ने यह सोच कर कि ईरान म सूफी जी को बहुत श्रद्धा और आदर की

दृष्टि से देखा जाता है अस्तु ईरान के अधिकारी उन्हें मुक्त कर देंगे। ईरान की सरकार की इस माग का ठुकरा दिया। अतएव उन्होने उन्हें ईरान सरकार के सुपुर्द न कर जहर देकर मार दिया।

दैनिक मिलाप के सम्पादक श्री रणवीर सिंह ने 'ईरान मे पाच दिन" शीर्षक लेख मे लिखा है। ईरान पहुचने के कुछ दिन बाद ही सूफी अम्बा प्रसाद जी ने अपना नाम बदल लिया। ईरान के लोग उन्हें "सूफी मोहम्मद हुसैन" के नाम से जानते थे। इस नाम से व कई अखबारो म लेख लिखते थे। उन अखबारो के नाम थे "हयात" जामजिम, "बरकबरीद" और "इस्तकाम।' अन्तिम समाचार पत्र आजाद हिन्द सोसायटी प्रकाशित करती थी। सूफी साहब 'मुहम्मद हुसैन' के नाम से उसका सपादन करते थे। वे बच्चो का अरबी और अग्रेजी पढाने का काम भी करते थे। आज से कुछ वर्ष पूर्व भारत मे ईरान के राजदूत "अली असगर हिकमत" न मुझे स्वय बतलाया कि "सूफी साहब मुझे अग्रेजी पढाते थे" कई वर्ष तक वे शीराज के अन्दर हमारे मेहमान खाने मे रहते रहे।"

"शीराज के ब्रिटिश कौंसल के सैनिको न जब सूफी अम्बा प्रसाद और उनके साथियो का कैद कर लिया तो ईरान की सरकार ने कहलाया कि वह सभी कैदियो को ईरानी सरकार के हवाले कर दे। यदि उस पर अभियोग चलना होगा तो ईरान की सरकार चलायेगी। परन्तु अग्रेजो ने इस बात को स्वीकार नही किया। अग्रेजो ने अपनी सैनिक अदालत बिठाई और १७ जनवरी को उस सैनिक न्यायालय ने सब अभियुक्तो के विरुद्ध प्राण दंड का निर्णय दे दिया।"

- "२१ जनवरी को प्रात काल जब उनकी कोठरी खोली गई तो सूफी साहब समाधि अवस्था मे दीवार के सहारे बैठे मिले। उनका मृत शरीर था प्राण निकल चुके थे। अग्रेजो ने यह प्रचार किया कि सूफी जी ने जहर खाकर आत्म हत्या करली है लेकिन ईरानियो ने चिल्ला चिल्ला कर कहा कि सूफी साहब को अग्रेजो ने जहर दिया है।"

"सूफी जी के बलिदान के उपरात उनके नीचे लिखे साथियो को प्राण दण्ड दिया गया। सरदार बसन्त सिंह गोंदा (उपनाम अब्दुल अजीज) गेंदाराम सिंधी, जितेन्द्र नाथ उपनाम दाऊद अली। सूफी जी को शीराज मे ही गाडा गया और उनके भक्तो ने उनका मजार बना दिया। पर उसका अब कोई चिन्ह शेष नही रहा क्योंकि वहां अब फुटबाल का खेल मैदान बन गया है।"

खेद है कि भारत माता के उस सपूत को जिसने जीवन पर्यन्त मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए युद्ध किया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद से युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की और माता की बलिवेदी पर अपने प्राणो का उत्सर्ग कर दिया देश उसे भूल गया। उसका कोई स्मारक नही बना, उसकी यशोगाथा नही गाई गई उसकी आज तक कोई जीवनी प्रकाशित नही हुई। हम भारतियो की कृतघ्नता का इससे अधिक लज्जा जनक उदाहरण इतिहास मे ढूढने पर भी नहीं मिल सकता।

देश ही नहीं मुरादाबाद जहा सूफी जी का जन्म हुआ, बालपन और युवा अवस्था व्यतीत हुई, वहा भी कोई उन्हें नही जानता। उनके कोई सतान तो थी नहीं मुरादाबाद मे कानून गोयान मुहल्ले म उनका पैतृक गृह अज भी खडा है, जहा उनका जन्म हुआ था। वह 'भटनागर उपकारक फड" के अधिकार मे है और उसमें

किरायेदार रहते हैं।

आज राजनीतिक सत्ता की इस अशोभनीय होड मे हम भारत वासी भूल गए कि जिन बलिदानी वीरो की हड्डियो पर भारत की स्वतन्त्रता का यह भव्य भवन खडा है यदि हमने उनके प्रेरणादायक जीवन की पावन गाथा आने वाली पीढियो को नही सुनाई तो मातृभूमि की बलिवेदी पर आहुति देने की वह परम्परा समाप्त हो जावगी। और हमारी स्वतन्त्रता खतरे मे पड जावेगी।

जिस कवि ने गाया था—

शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा॥

वह क्या जानता था कि भारतवासी स्वतन्त्र हो जाने के उपरात अपने उन शहीदों को जिनके बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतन्त्र हुआ विस्मृत कर देंगे।